
कविकुलगुरु - कालिदास - संस्कृत - विश्वविद्यालयः

कविकुलगुरू कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल.क्र M-2776 विषय धर्मशास्त्र

नाव वैशाख मास महात्म

लेखक/लिपीकार

पृष्ठ 128 काळ पुर्ण/ अपुर्ण

M- 2776

वैशाखमास महात्म


नारद
अंबरीष.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ मनुष्योंमें उत्तम नरनारायण, सरस्वतीदेवी और व्यासजीको नमस्कार करके जयशब्दका उच्चारण करै ॥ १ ॥ सूतजी कहनेलगे कि राजा अंबरीषने परमेष्ठी ब्रह्माजीके पुत्र नारदजीसे फिर वैशाखमाहात्म्यका प्रश्न किया ॥ २ ॥ अंबरीष बोले कि हे ब्रह्मन्! जैसे जैसे आपने सम्पूर्ण महीनाओंके माहात्म्य वर्णन किये सो सब मैने पहिले सुन लियेहैं ॥ ३ ॥ इन सबमें वैशाखमास निश्चयही सर्वोत्तमहै, इससे वैशाखमाहात्म्यको विस्तार

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ नारायणंनमस्कृत्यनरंचैवनरोत्तमम् ॥ देवींसरस्वतींव्यासंततोजयमुदीरयेत् ॥ १ ॥ ॥ सूतउवाच ॥ भूयोप्यंगभुवंराजाब्रह्मणःपरमेष्ठिनः ॥ पुण्यंमाधवमाहात्म्यंनारदंपर्यपृच्छत ॥ २ ॥ ॥ अंबरीषउवाच ॥ ॥ सर्वेषामपिमासानांत्वत्तोमाहात्म्यमञ्जसा ॥ श्रुतंमयापुराब्रह्मन्यदाचोक्तंतदात्वया ॥ ३ ॥ वैशाखःप्रवरोमासोमासेष्वेतेषुनिश्चितम् ॥ इतितस्माद्विस्तरेणमाहात्म्यंमाधवस्यच ॥ ४ ॥ श्रोतुंकौतूहलंब्रह्मन्कथंविष्णुप्रियोह्यसौ ॥ केचविष्णुप्रियाधर्मामासेमाधववल्लभे ॥ ५ ॥ तत्राप्यस्यतुकर्तव्याःकेधर्माविष्णुवल्लभाः ॥ किंदानंकिंफलंतस्यकिमुद्दिश्याचरेदिमान् ॥ ६ ॥

पूर्वक सुननेकी मेरी अत्यन्त अभिलाषा है, हे ब्रह्मन् ! यह मास विष्णु भगवान्‌को ऐसा प्रिय क्यों है, इस मासमें विष्णुप्रिय कौनकौनसे धर्म हैं ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ इनमेंसेभी कौन कौनसे धर्म कर्त्तव्य हैं जो विष्णुको प्यारे हैं कौनसा दान कर्त्तव्य है और उसका फलभी क्या है तथा इस मासमें कौनसे देवताकी उपासना करनी चाहिये ॥ ६ ॥

वैशाखमासमें माधव भगवान्की पूजाकी सामग्री कौनकौनसी है हे नारदजी ! ये सब मेरे सामने विस्तारपूर्वक कहो मैं श्रद्धा करके सुनू हूं ॥ ७ ॥ श्रीनारदजी बोले कि मैंनेभी ब्रह्माजीसे यही प्रश्न किया और प्रथम भगवान्ने लक्ष्मीजीसे मासमाहात्म्य कहे सोई ब्रह्मजीने मेरे प्रति कहे ॥ ८ ॥ इन बारह मासोंमें कार्त्तिक, माघ और वैशाख ये तीनमास उत्तमहैं और इन तीनोंमेंभी वैशाखमास परमोत्तमहै ॥ ९ ॥ यह माताकी तरह सब जीवोंको



कैर्द्रव्यैःपूजनीयोसौमाधवोमाधवागमे ॥ एतन्नारदविस्तार्यमह्यंश्रद्धावतेवद ॥ ७ ॥ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ ॥ मयापृष्टःपुराब्रह्मा मासधर्मान्पुरातनान् ॥ व्याजहारपुराप्रोक्तंयच्छ्रियैपरमात्मना ॥ ८ ॥ ततोमासाविशिष्टोक्ताःकार्तिकोमाघएवच ॥ माधवस्तेषु वैशाखंमासानामुत्तमंव्यधात् ॥ ९ ॥ मातेवसर्वजीवानांसदैवेष्टप्रदायकः ॥ दानयज्ञव्रतस्नानैःसर्वपापविनाशनः ॥ १० ॥ धर्मय ज्ञक्रियासारस्तपःसारःसुरार्चितः ॥ विद्यानांवेदविद्येवमंत्राणांप्रणवोयथा ॥ ११ ॥ भूरुहाणांसुरतरुर्धेनूनांकामधेनुवत् ॥ शेषवत्सर्व नागानांपक्षिणांगरुडोयथा ॥ १२ ॥

सदाही अभीष्ट पदार्थोंका दाताहै, इस महीनामें दान, यज्ञ, व्रत और स्नान करनेसे सम्पूर्ण पाप नष्ट होय जांय हैं ॥ १० ॥ यह महीना धर्म, यज्ञ और आह्निक कर्मोंका साररूपहै, तपोंका सारहै और देवताओं करके अर्चितहै सब विद्याओंमें वेदविद्यारूपहै मन्त्रोंमें प्रणव जो ओंकार उसके समानहै ॥ ११ ॥ वृक्षोंमें कल्पवृक्ष और गौओंमें कामधेनुके समानहै, नागोंमें शेषनाग और पक्षियोंमें गरुड़के समान है ॥ १२ ॥

देवगणोंमें विष्णुके समान और वर्णोंमें ब्राह्मणोंके समानहै, प्रियवस्तुओंमें प्राणके समान और सुहृद्वर्गमें भार्याके समान हितकारीहै ॥ १३ ॥ नदियोंमें गंगाके समान और तेजवान् पदार्थोंमें सूर्यके समानहै, आयुधोंमें सुदर्शनचक्र और धातुओंमें सुवर्णके समानहै ॥ १४ ॥ वैष्णवोंमें शिवजीके समान और रत्नोंमें कौस्तुभमणिके समानहै ऐसेही धर्मके हेतु सम्पूर्ण महीनोंमें वैशाखमास उत्तमहै ॥ १५ ॥ संसारमें इसके समान विष्णुका प्रीतिपात्र कोई नहीं है जो मनुष्य सूर्यो

देवानांतुयथाविष्णुर्वर्णानांब्राह्मणोयथा ॥ प्राणवत्प्रियवस्तूनांभार्येवसुहृदांयथा ॥ १३ ॥ आपगानांयथागंगातेजसांतुरविर्यथा ॥ आयुधानांयथाचक्रंधातूनांकांचनंयथा ॥ १४ ॥ वैष्णवानांयथारुद्रोरत्नानांकौस्तुभोयथा ॥ मासानांधर्महेतूनांवैशाखश्चोत्तमस्तथा ॥ १५ ॥ नानेनसदृशोलोकेविष्णुप्रीतिविधायकः ॥ वैशाखस्नाननिरतोमेषेप्रागर्यमोदयात् ॥ १६ ॥ लक्ष्मीसहायोभगवान्प्रीतिंतस्मिन्करोत्यलम् ॥ जंतूनांप्रीणनंयद्वदन्नेनैवहिजायते ॥ १७ ॥ तद्वद्वैशाखस्नानेनविष्णुःप्रीणात्यसंशयः ॥ वैशाखस्नाननिरताञ्जनान्दृष्ट्वानुमोदते ॥ १८ ॥ तावतापिविमुक्तोवैर्विष्णुलोकेमहीयते ॥ सकृत्स्नात्वामेषसंस्थेसूर्य्येप्रातःकृताह्निकः ॥ १९ ॥

दयसे पहिले वैशाखमासमें नित्य नियमसे स्नान करेहै उस मनुष्यपर लक्ष्मीसहित भगवान् अत्यन्त प्रसन्न होयहैं जैसे अन्नसे प्राणी प्रसन्न होतेहैं ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ वैसेही वैशाखमें स्नान करनेसे विष्णुभगवान् निस्सन्देह प्रसन्न होयहैं और स्नान करनेमें निरत मनुष्यको देखकर अनुमोदन करतेहैं ॥ १८ ॥ और वह प्राणी सम्पूर्ण पापोंसे छूटकर विष्णुलोकको जायहै, जो मनुष्य मेषकी संक्रांतिमें प्रातःकाल स्नान करके नित्यकर्म करताहै वह संपूर्ण पापोंसे छूटकर विष्णु

भगवान्की सायुज्यमुक्तिको प्राप्त होयहै जो मनुष्य वैशाखमें स्नान करनेकेनिमित्त एक पांवभर जायहै ॥ १९ ॥ २० ॥ उसे दशसहस्र अश्वमेध यज्ञका फल निश्चय प्राप्त होयहै अथवा एकाग्रचित्तसे जो कोई संकल्पमात्र करै है ॥ २१ ॥ उसेभी निश्चय सौ यज्ञका फल मिलैहै, जो कोई मेषकी संक्रान्तिमें धनुषकी मर्यादातक जायहै ॥ २२ ॥ वह सर्व बंधनसे छूटकर विष्णुकी सायुज्यताको प्राप्त होयहै ॥ ब्रह्मांडके अन्तर्गत जितने तीर्थहैं, हे राजेन्द्र ! वे



महापापैर्विमुक्तोसौविष्णोःसायुज्यमाप्नुयात् ॥ स्नानार्थंमासिवैशाखेपादमेकंचरेद्यदि ॥ २० ॥ सोश्वमेधायुतानांचफलंप्राप्नोत्यसंशयः ॥ अथवाकूटचित्तस्तुकुर्यात्संकल्पमात्रकम् ॥ २१ ॥ सोपिक्रतुशतंपुण्यंलभेदेवनसंशयः ॥ योगच्छेद्धनुरायामंस्नातुंमेषगते रवौ ॥ २२ ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तोविष्णोःसायुज्यमाप्नुयात् ॥ त्रैलोक्येयानितीर्थानिब्रह्मांडांतर्गतानिच ॥ २३ ॥ तानिसर्वाणिराजेंद्रसंतिबाह्येल्पकेजले ॥ तावल्लिखितपापानिगर्जंतियमशासने ॥ २४ ॥ यावन्नकुरुतेजंतुर्वैशाखेस्नानमंभसि ॥ तीर्थाधिदेवताःसर्वा वैशाखेमासिभूपिप ॥ २५ ॥ बहिर्जलंसमाश्रित्यसदासन्निहितानृप ॥ सूर्योदयंसमारभ्ययावत्षड्घटिकावधि ॥ २६ ॥

सब तीर्थ बाहर थोडेही जलमें आजाते हैं ॥ यमकी आज्ञासे लिखित पाप उस समयतक प्रकट रहते हैं जबतक प्राणी वैशाखमें स्नान नहीं करैहैं ॥ हे राजन् ! तीर्थोंके अधिष्ठाता संपूर्ण देवता वैशाखके महीनमें ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ जलके बाहर सूर्योदयसे छः घडी दिन चढे तक ॥ २६ ॥

विष्णुभगवान्की आज्ञासे मनुष्योंके हितकी कामनासे आयके ठहरे रहैं हैं और जो पुरुष उस समयतकभी स्नान करनेको नहीं आतेहैं उन्हें दारुण शाप देयकर अपने २ स्थानको चलेजायहैं इससे हे राजन् ! सूर्योदयसे छः घडी दिन चढेके भीतर स्नान अवश्यही करना चाहिये ॥ २७ ॥ इति श्रीस्कंद पुराणे वैशा० नारदांबरीषसंवादो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ नारदाजी बोले हे राजन् ! वैशाखकेसमान कोई महीना नहीं है, सत्ययुगके समान कोई युग

तिष्ठंतिचाज्ञयाविष्णोर्नराणांहितकाम्यया ॥ तावन्नागच्छतांपुंसांशापंदत्वासुदारुणम् ॥ स्वस्थानंयांतिराजेंद्रतस्मात्स्नानंसमाचरेत् ॥ २७ ॥ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेवैशाखमाहात्म्येनारदांबरीषसंवादोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥
नमाधवसमोमासोनकृतेनसमंयुगम् ॥ नचवेदसमंशास्त्रंनतीर्थंगंगयासमम् ॥ १ ॥ नजलेनसमंदानंनसुखंभार्ययासमम् ॥ नकृषेस्तुसमंवित्तंनलाभोजीवितात्परः ॥ २ ॥ नतपोनशनात्तुल्यंनदानात्परमंसुखम् ॥ नधर्मस्तुदयातुल्योनज्योतिश्चक्षुषासमम् ॥ ३ ॥
नतृप्तिरशनात्तुल्यानवाणिज्यंकृषेःसमम् ॥ नधर्मेणसमंमित्रंनसत्येनसमंयशः ॥ ४ ॥

नहीं है, वेदकेसमान कोई शास्त्र नहींहै और गंगाकेसमान कोई तीर्थ नहींहै ॥ १ ॥ जलकेसमान कोई दान नहींहै भार्याकेसमान कोई सुख नहीं है खेतीकेसमान कोई धन नहींहै और जीवनकेसमान कोई लाभ नहीहै ॥ २ ॥ उपवाससे अधिक कोई तप नहींहै, दानसे अधिक कोई सुख नहींहै, दयाकेसमान कोई धर्म नहींहै नेत्रकेसमान कोई ज्योति नहींहै ॥ ३ ॥ भोजनकेसमान कोई तृप्ति नहींहै, खेतीकेसमान कोई व्यौपार नहींहै, धर्मकेसमान कोई हितकारी

मित्र नहींहै, सत्यकेसमान कोई यश नहींहै॥ ४॥नीरोगताकेसमान कोई हर्ष नहींहै, केशवके समान कोई रक्षक नहींहै माधवकेसमान संसारमें कोई पवित्र नहींहै ॥५॥ ऐसाही वैशाखमास परमोत्तम है और शेषशायी भगवानूको सदा प्याराहै, जो मनुष्यभगवानूके प्यारे इस महीनाको विना व्रत किये व्यतीत करै हैं ॥ ६ ॥ वह सम्पूर्ण धर्मोंसे बहिष्कृत होकर शीघ्रही पशुयोनि पावै है, जो मनुष्य विनाव्रत किये इस मासको खोयदेते हैं उनका कूआ बनवाना, बावडी बनवाना बगीचा लगवाना आदि जितने धर्महैं वे सब वृथाही हैं उनका कुछ फल नही होताहै जो मनुष्य नियमपूर्वक वैशाखमासमें भोजनादि करें

नारोग्यसमसुत्थानंनत्राताकेशवात्परः ॥ नमाधवसमंलोकेपवित्रंकवयोविदुः ॥ ५ ॥ माधवःपरमोमासःशेषशायिप्रियःसदा ॥ अव्र तेनक्षपेद्यस्तुमासंमाधववल्लभम् ॥ ६ ॥ तिर्यग्योनिंसयात्याशुसर्वधर्मबहिष्कृतः ॥ अव्रतेनगतोयेषांमाधवोमर्त्यधर्मिणाम् ॥ ७ ॥ इष्टापूर्तेवृथातेषांधर्मोधर्मभृतांवरः ॥ प्रवृत्तानांतुभक्ष्याणांमाधवेनियमेकृते ॥ ८ ॥ अवश्यंविष्णुसायुज्यंप्राप्नोत्येवनसंशयः ॥ संतीह बहुवित्तानिव्रतानिविविधानिच ॥ ९ ॥ देहायासकराण्येवपुनर्जन्मप्रदानिच ॥ वैशाखस्नानमात्रेणनपुनर्जायतेभुवि ॥ १० ॥ सर्वदानेषुयत्पुण्यंसर्वतीर्थेषुयत्फलम् ॥ तत्फलंसमवाप्नोतिमाधवेजलदानतः ॥ ११ ॥

वे अवश्यही विष्णुभगवानूकी सायुज्यमुक्तिको प्राप्त हों इसमें संदेह नहीं है, संसारमें अनेकों प्रकारके दानादि और अनेकों प्रकारके व्रत हैं परन्तु उन सब के करनेसे शरीरको अत्यन्त परीश्रम होयहै और संसारमें वारम्वार जन्म लेना पडैहै परन्तु वैशाखमासमें केवल स्नान करलेनेसेही प्राणी आवागमनसे छूट जायहै ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ सब प्रकारके दान करनेसे जो पुण्य होयहै और सम्पूर्ण तीर्थोंमें स्नान करनेसे जो फल होयहै वह सब फल वैशाखमें

केवल जलदान करनेसे मिलजायहै ॥ ११ ॥ जो स्वयं जलदान करनेकी सामर्थ्य न हो तौ ऐश्वर्यकी इच्छा करनेवाले पुरुषोंको उचित है कि, औरोंको प्रेरणा करके जलदान करावै,यह कर्मभी संपूर्ण दानोंसे अधिकहै ॥१२॥ तराजूके एक पलडामें सब प्रकारके दान धरै और दूसरे पलडामें जलदान धरके तोलै तौ जलदानकाही पुण्य विशेष निकलैगा ॥ १३ ॥ जो रस्तागीर यात्रियोंके लिये प्याऊ लगायकै जलदान करें हैं वे अपने करोडों कुलका उद्धार

जलदानासमर्थेनपरस्यापिप्रबोधनम् ॥ कर्तव्यंभूतिकामेनसर्वदानाधिकंहितत् ॥ १२ ॥ एकतःसर्वदानानिजलदानंहिचैकतः ॥ तुलामारोपितंपूर्वंजलदानंविशिष्यते ॥ १३ ॥ मार्गेऽध्वगानांयोमर्त्यः प्रपादानंकरोतिहि ॥ सकोटिकुलमुद्धृत्यविष्णुलोके महीयते ॥ १४ ॥ देवानांचपितॄणांचऋषिणांराजसत्तम ॥ अत्यंतप्रीतिदंसत्यंप्रपादानंनसंशयः ॥ १५ ॥ प्रपादानेनसंतुष्टायेनाध्वश्रमकर्शिताः ॥ तोषितास्तेनदेवाश्च ब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥ १६ ॥ सलिलंसलिलाकांक्षीछायांछायामपीच्छताम् ॥ व्यजनंव्यजनाकांक्षीवैशाखेमासिभूमिप ॥ १७ ॥

करके विष्णुलोकको चले जाँयहैं ॥ १४ ॥ हे राजन् ! प्याऊ लगायकर जलदान करनेसे देवता, पित्रीश्वर और ऋषि सब अत्यन्तही प्रसन्न होंय हैं इसमें संदेह नहीं है ॥ १५ ॥ जो प्याऊ लगायके मार्गके थकेहुए यात्रियोंको संतुष्ट करै हैं उससे सम्पूर्ण देवता, ब्रह्मा, विष्णु और शिव सब प्रसन्न होयहैं ॥ १६ ॥ जो जलकी इच्छा होय तौ जलका दान करै और छायाकी

इच्छा होय तौ छत्री दे और हे राजन् ! जो वैशाखमासमें वीजनाकी इच्छा होय तौ पंखादे ॥ १७ ॥ जितने दान कहे हैं उनमें सबमें जलदान, छत्रदान और पंखादान सबमें उत्तम इनहीका दान वैशाखमासमें अवश्य कर्त्तव्यहै जो वैशाखके महीनामें कुटुम्बी ब्राह्मणको जलसे भराहुआ घडा नहीं देयहै वह पृथ्वीमें चातककी योनि पावैहै और जो तृषासे व्याकुल महात्माको शीतल जलपान करावै है उसे हे राजेन्द्र ! सौ राजसूय यज्ञ करनेका फल

जलंछत्रंचव्यजनंदानमेषांविशिष्यते ॥ माधवेमासिसंप्राप्तेब्राह्मणायकुटुंबिने ॥ १८ ॥ अदत्वोदककुंभंचचातकोजायतेभुवि ॥ योदद्याच्छीतलंतोयंतृषार्तायमहात्मने ॥१९॥ तावन्मात्रेणराजेंद्रराजसूयायुतंलभेत् ॥ घर्मश्रमार्तविप्रायवीजयेद्यःचजनेनयः ॥२०॥ तावन्मात्रेणनिष्पापोविहगाधिपतिर्भवेत् ॥ अदत्वाव्यजनंभूपवैशाखेतुद्विजातये ॥ २१ ॥ वातरोगशताकीर्णोनरकानेवविंदति ॥ योवीजयेत्पटेनापिपथिश्रांतंद्विजोत्तमम् ॥ तावताथविमुक्तोसौविष्णुसायुज्यमाप्नुयात् ॥ २२ ॥

प्राप्त होयहै, जो धूप परिश्रम और पसीनासे व्याकुल ब्राह्मणको पंखासे हवा करैहै ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ वह यावन्मात्र पापोंसे रहित होकर गरुडके समान होय जायहै, जो मनुष्य वैशाखके महीनेमें ब्राह्मणके अर्थ पंखा नहीं देयहै वह अनेकन प्रकारके वात रोगोंसे पीडित होकर नरकोंको भोगैहै ॥ जो मार्गसे थकेहुए ब्राह्मणकी वस्त्रसे हवा करैहै वह संपूर्ण पापोंसे छूटकर विष्णुभगवान्‌की सायुज्यताको प्राप्त होयहै ॥ २१ ॥ २२ ॥

जो शुद्ध मनसे ताडके पंखाका दान करेंहैं वे सम्पूर्ण पापोंसे छूटकर विष्णुलोकको चलेजांयहैं ॥ २३ ॥ जो मनुष्य तत्काल श्रमके दूर करनेवाले पंखेका दान नहीं करें हैं वे अनेक प्रकारकी नरकसंबन्धी यातनाओंको भोगकर संसारमें पातकी होतेहैं ॥ २४ ॥ हे राजेन्द्र! आध्यात्मिक दुःखकी शान्तिके निमित्त वैशाखमासमें छत्रीका दान प्रयत्नपूर्वक करना उचितहै ॥ २५ ॥ जो मनुष्य विष्णुभगवानके प्यारे इस वैशाखमासमें छत्रीका दान नहीं

यस्तालव्यजनंवापिदत्वाशुद्धेनचेतसा ॥ विधूयसर्वपापानिब्रह्मलोकंसगच्छति ॥ २३ ॥ सद्यःश्रमहरंपुण्यंनदद्याद्व्यजनंनरः ॥ नारकींयातनांभुक्त्वाकश्मलोजायतेभुवि ॥ २४ ॥ आध्यात्मिकादिदुःखानांशांतयेमनुजेश्वर ॥ छत्रंदद्यात्प्रयत्नेनवैशखेमासिवास सकृत् ॥ २५ ॥ अच्छत्रदोनरोयस्तुवैशाखेमाधवप्रिये ॥ छायाहीनोमहाक्रूरःपिशाचोभुविजायते ॥ २६ ॥ योदद्यात्पादुकेदिव्ये माधवेमाधवप्रिये ॥ यमदूतौनिराकृत्यविष्णुलोकंसगच्छति ॥ २७ ॥ पादत्राणंतुयोदद्याद्वैशाखेमाधवागमे ॥ नतस्यनारकोलो कोनक्लेशाऐहिकाश्चये ॥ २८ ॥

करेंहैं उनको कहीं छाया नहीं मिलेहै और वे महाक्रूर पिशाच बनके पृथ्वीमें डोलेंहैं ॥ २६ ॥ जोवैशाखमें खडांउओंका दान करें हैं वे यमके दूतोंका तिरस्कार करके विष्णुलोकको चले जातेहैं ॥ २७ ॥ जो वैशाखमासमें जूताका दान करेंहैं उसको नरककी यातता नहीं सहनी पडें हैं न उस प्राणीको इस संसारके दुःख सतातेहैं ॥ २८ ॥

जो कोई ब्राह्मण खडाऊंनकी याचना करै तौ खडाऊंका दान करनेवाला मनुष्य इस पृथ्वीपर करोड जन्मतक राजा होयहै ॥ २९ ॥ जो मार्गमें श्रमके दूर करनेके लिये स्थान बनावैहै उसका फल वर्णन करनेकी ब्रह्मामेंभी सामर्थ्य नहीं है ॥ ३० ॥ मध्याह्नकालमें जो कोई अतिथि ब्राह्मण मिलजाय तौ उसके भोजन करानेका फल ब्रह्माजीभी वर्णन नहीं करसकैहै ॥ ३१ ॥ हे राजन् ! अन्नदान तत्काल मनुष्योंकी तृप्ति करने



पादुकेयाचमानाययोदद्याद्ब्राह्मणायच ॥ सभूपालोभवेद्भूमौकोटिजन्मन्यसंशयम् ॥ २९ ॥ अनाथमंडपंमार्गेश्रमहारिकरोतियः ॥ तस्यपुण्यफलंवक्तुंब्रह्मणापिनशक्यते॥३०॥मध्याह्नेब्राह्मणंप्राप्तमतिथिंभोजयेद्यदि ॥ नतस्यफलविश्रांतिर्ब्रह्मणापिनिरूपिता॥३१॥ सद्यःस्वाप्यायनंनॄणामन्नदानंनराधिप ॥ तस्मान्नान्नेनसदृशंदानंलोकेषुविद्यते ॥३२॥ मार्गश्रांतायविप्रायप्रश्रयंप्रददातियः ॥ तस्य पुण्यफलंवक्तुंब्रह्मणापिनशक्यते ॥ ३३ ॥ दारापत्यगृहादीनिवासोलंकारभूषणम् ॥ असह्यंनाश्नतःपुंसःसह्यंभुक्तवतोध्रुवम् ॥ ३४ ॥ तस्मादन्नसमंदानंनभूतंनभविष्यति ॥ वैशाखेयेनचादत्तंमार्गश्रांतेचभूसुरे ॥ ३५ ॥

वाला, इससे इस संसारमें अन्नदानके समान कोई दान नहीं है ॥ ३२ ॥ जो मनुष्य मार्गसे थकेहुए ब्राह्मणको आश्रय देताहै उसके पुण्य फलके कहनेकी ब्रह्मामें भी सामर्थ्य नहीं है ॥ ३३ ॥ भूखे मनुष्यको स्त्री, पुत्र, घर, वस्त्र, अलंकार, आभूषण कुछ भी अच्छे नहीं लगे हैं, और पेट भरनेपर ये सब अच्छे लगेहैं ॥ ३४ ॥ इसलिये अन्नके दानकेसमान न कुछ हुआ न आगे होगा जो वैशाखमासमें थकेहुए ब्राह्मणको अन्नका दान नहीं

देताहै ॥ ३५ ॥ वह पिशाच बनकर पृथ्वीमें अपनेही मांसको खाता फिरताहै इसलिये यथाशक्ति ब्राह्मणको अन्न देना उचितहै ॥ ३६ ॥ हे राजन् ! अन्नका दाता माता पिताकाभी विस्मरण करादेताहै अर्थात् मातापिताको भूलकर दानीहीको अपना सर्वस्व समझने लगतेहैं इससे त्रिलोकीमें सब लोग अन्नकीही प्रशंसा करतेहैं ॥ ३७ ॥ माता और पिता तौ केवल जन्मके हेतुहैं परन्तु पंडितलोग संसारमें अन्नके दानीहीको पिता कहतेहैं

सपिशाचोभवेद्भूमौस्वमांसान्येवखादति ॥ यथाविभूत्यादातव्यंतस्मादन्नंद्विजातये॥३६॥अन्नदोमातृपित्रादीन्विस्मारयतिभूमिप ॥ तस्मादन्नंप्रशंसंतिलोकास्त्रैलोक्यवर्तिनः ॥ ३७ ॥ मातरःपितरश्चापिकेवलंजन्महेतवः ॥ अन्नदंपितरंलोकेवदंतिचमनीषिणः॥३८॥ अन्नदेसर्वतीर्थानिअन्नदेसर्वदेवताः ॥ अन्नदेसर्वधर्माश्चतिष्ठंत्यरिधराजय ॥ ३९ ॥ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेवैशाखमाहात्म्येनारदांबरीषसंवादेदाननिरूपणंनमद्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ योमर्त्योद्विजवर्यायपर्यंकंतुददातिहि ॥ यत्रस्वस्थः सुखं शेतेशीतानिलनिषेवितः ॥ १ ॥ धर्मसाधनभूतोहिदेहोनिरुजमासते ॥ तंदत्वासकलंतापंनिरस्यगतकल्मषः ॥ २ ॥

॥३८॥ हे राजन् ! अन्नके दानीमें सम्पूर्ण तीर्थ और अन्नके दानीहीमें सब देवता और अन्नके दानीहीमें सब धर्म आकर निवास करते हैं ॥३९॥ इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदांबरीषसंवादे दाननिरूपणंनाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ नारदजी कहतेहैं जो मनुष्य श्रेष्ठ ब्राह्मणको पलंगका दान करता है और वह ब्राह्मण उसपर सुखपूर्वक शयन करै और उस ब्राह्मणकी ठंडी ठंडी हवासे सेवा करी जाय ॥ १ ॥ तौ सम्पूर्ण धर्मोंका साधनभूत

उसका देह निरोग रहताहै, इसके दानसे सब प्रकारके ताप शांत होयहैं और सब प्रकारके ताप दूर होयहैं ॥ २ ॥ वह मनुष्य उस अखंड पदवीको प्राप्त होयहै जो योगियोंकोभी दुर्लभ है, जो मनुष्य वैशाखके महीनामें धूपसे संतापित थकेहुए ब्राह्मणोंको सुंदर श्रमनाशक पलंगका दान करताहै वह मनुष्य हे राजन् ! इस संसारमें जन्म, मरण और वृद्धावस्थाके क्लेशोंको नहीं भोगताहै ॥ ३ ॥ ४ ॥ उस पलंगको लेकर जो ब्राह्मण उसपर शयन करताहै तौ जीवनपर्य्यंत ज्ञान अथवा अज्ञानसे करेहुए उसके पाप नष्ट होय जातेहैं ॥ ५ ॥ हे राजेन्द्र ! उसके पाप ऐसे नष्ट होजातेहैं जैसे अग्निके स्पर्शसे

अखंडपदवींयातियोगिनामपिदुर्लभाम् ॥ वैशाखेघर्मतप्तानांश्रान्तानांतु द्विजन्मनाम् ॥ ३ ॥ दत्त्वाश्रमापहंदिव्यंपर्यंकंमनुजेश्वर ॥ नजातुसीदतेलोकेजन्ममृत्युजरादिभिः ॥ ४ ॥ गृहीत्वाब्राह्मणोयत्रशेतेचाजीवमास्थितः ॥ आसीनेसकलंपापंज्ञानतोज्ञानतः कृतम् ॥ ५ ॥ विलयंयातिराजेंद्रकर्पूरइवचाग्निना ॥ शयनेब्रह्मनिर्वाणंसनरोयातिनिश्चितम् ॥ ६ ॥ योदद्यात्कशिपुंमासेवैशाखेस्त्रा नवल्लभे ॥ सर्वभोगसमायुक्तस्तस्मिन्नेवहिजन्मनि ॥ ७ ॥ सान्वयोवर्ततेनूनंरोगादिभिरनाहतः ॥ आयुष्यंपरमारोग्यंयशोधैर्यं चविंदति ॥ ८ ॥ नाधार्मिकःकुलेतस्यजायतेशतपौरुषम् ॥ भुक्त्वातुसकलान्भोगांस्ततःपंचत्वमेष्यति ॥ ९ ॥

कपूर नष्ट होजाते और वह मनुष्य निश्चयही ब्रह्मपदको चलाजायहै ॥ ६ ॥ जो मनुष्य वैशाखमासमें शय्यादान करैहै, वह इसी जन्ममें सम्पूर्ण भोग्य पदार्थोंको भोगताहै ॥ ७ ॥ उसके कुलमें बहुतसे मनुष्य होतेहैं, कोई रोग उसको नहीं होयहै, उसे बडी आयु, निरोगता यश और धैर्य मिलेहै ॥ ८ ॥ उस धर्मात्माके कुलमें सौ पीढीतक कोई अधर्मी नहीं होयहै इस मासमें दानादि

करनेका अमित फल होयहै ऐसे ऐसे वैशाखके धर्मोंका करनेवाला धार्मिक पुरुष सम्पूर्ण भोगोंको भोगकर अपना देह त्यागताहै ॥ ९ ॥
जो वेदपाठी ब्राह्मणको तकिया देताहै उसके सम्पूर्ण पाप नष्ट होजातेहैं और अन्तसमयमें ब्रह्मपदको प्राप्त होताहै ॥ १० ॥ इसके
दिये विना मनुष्य सुखपूर्वक निद्रा नहीं प्राप्त कर सकेहैं और इसके दान करनेसे सबका आश्रयभूत होकर पृथ्वीराज्य भोगैहै ॥ ११॥ हे राजन् !
वह मनुष्य सातजन्म पर्य्यन्त जबजब जन्म लेयहैं तबतब सदा सुखी, भोगी, धर्मपरायण और विजियी होयहै ॥ १२ ॥ पीछे अपने सातो कुल समेत

निर्धूताखिलपापस्तुब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥ श्रोत्रियायद्विजेंद्राययोदद्यादुपबर्हणम् ॥ १० ॥ सुखंनिद्रांविनायेननरृणांजायतेक्वचित् ॥
सर्वेषामाश्रयोभूत्वाभुविसाम्राज्यमश्नुते ॥ ११ ॥ पुनःसुखीपुनर्भोगीपुनर्धर्मपरायणः ॥ आसप्तजन्मराजेंद्रजायतेसर्वदाजयी॥१२॥
पश्चात्सप्तकुलैर्युक्तोब्रह्मभूयायकल्पते ॥ तार्णंकटंतुयोदद्यात्कटमन्यद्थापिवा ॥ १३ ॥ तत्रशेतेस्वयंविष्णुःपत्रस्थःपरमेश्वरः ॥
यथाजलगताचोर्णानजलैर्भिद्यतेक्वचित् ॥ १४ ॥ तथासंसारगोजंतुःसंसारेनैवबध्यते ॥ आसनेशयनेशक्तःकटदःसर्वतःसुखी ॥१५॥
प्रश्रयेशयनार्थाययोदद्यात्कटकंबलम् ॥ तावन्मात्रेणमुक्तःस्यान्नात्रकार्याविचारणा ॥ १६ ॥

ब्रह्मभावको प्राप्त होजाताहै जो मनुष्य चटाई अथवा और किसीप्रकारका आसन देयहै, जिसपर पत्रशायी स्वयं विष्णुभगवान् विराजेहैं, जैसे जलमें पडी
हुई ऊन जलसे नहीं भिदैहै वैसेही संसारी जीव संसारमें बंधनको प्राप्त नहीं होयहै, एवं चटाईका देनेवाला पुरुष आसन और शय्यापर आरूढ होकर सब
तरहसे सुखी रहताहै ॥ १३॥१४॥१५॥ जो शयन करनेके लिये चटाई और कंबल देताहै वह पुरुष मुक्त होजाताहै इसमें कोई संदेह नहीं है ॥१६॥

निद्रासे दुःख दूर होय जायहै और निद्रासे परिश्रम दूर होय जायहै वही निद्रा चटाईपर सुखपूर्वक आवैहै ॥ १७ ॥ हे राजन् ! जो वैशाखमें कंबलका दान करेहै वह अकालमृत्यु और कालमृत्युसे छूटकर सौवर्षतक जीवित रहताहै ॥ १८ ॥ जो प्राणी धूपसे व्याकुल ब्राह्मणको पतला वस्त्र देताहै उसकी पूर्ण आयु होतीहै और परलोकमें उसको परम गति मिलतीहै ॥ १९ ॥ कपूर अन्तस्तापको दूर करेहै इससे कपूरका दान

निद्रयाहीयतेदुःखंनिद्रयाहीयतेश्रमः ॥ सानिद्राकटसंस्थस्यसुखंसंजायतेध्रुवम् ॥ १७ ॥ योदद्यात्कंबलंराजन्वैशाखेमाधवागमे ॥ अपमृत्योः कालमृत्योर्मुक्तोजीवतिवैशतम् ॥ १८ ॥ दद्याद्वस्त्रंसूक्ष्मतरंद्विजेंद्रेधर्मकर्शिते ॥ पूर्णमायुःसमाप्नोतिपरत्रचपरांगतिम् ॥ ॥ १९ ॥ अंतस्तापहरंदिव्यंकर्पूरंतुद्विजातये ॥ दत्वामोक्षमवाप्नोतिदुःखशांतिंचविंदति ॥ २० ॥ कुसुमानिचयोदद्यात्कुंकुमंच द्विजातये ॥ सार्वभौमोभवेद्राजासर्वलोकवशंकरः ॥ २१ ॥ पुत्रपौत्रादिभोगांश्चभुक्त्वामोक्षमवाप्नुयात् ॥ त्वगस्थिगतसंतापंसद्यो हरतिचंदनम् ॥ २२ ॥ तापत्रयविनिर्मुक्तस्तद्दत्वामोक्षमाप्नुयात् ॥ औशीरंचांपकंकौशंयोदद्याज्जलवासितम् ॥ २३ ॥

ब्राह्मणको देवै तौ मोक्ष मिलतीहै और दुःखका नाश होताहै ॥ २० ॥ जो ब्राह्मणके लिये फूल और कुंकुमका दान करै तौ सौर्वभौमराजा होय और सब प्राणी उसकी आज्ञामें रहें ॥ २१ ॥ और पुत्र तथा पौत्रोंसे युक्त होकर सब भोगोंको भोग मोक्ष पाताहै त्वचा और हड्डीमें जो संताप होताहै उसे चन्दन तत्काल दूर कर देताहै ॥ २२ ॥ जो कोई चन्दनका दान करैहै वह तीनों तापोंसे दूर होकर मोक्षको प्राप्त होताहै जो कोई जलमें भीगीहुई खस, चंपा

वा कुशाका दान करैहै॥२३॥ हे राजन्!वह प्राणी सबप्रकारके भोगोंको भोगताहै और सब देवता उसकी सहाय करै है उसके संपूर्ण पाप और दुःख दूर होय जायहैं और अन्तमें मोक्ष पावैहै ॥ २४ ॥ जो वैशाखके महीनामें गोरोचन और कस्तूरीका दान करैहै वह तीनों तापसे छूटकर परम मोक्षपद पावैहै ॥ २५ ॥ जो मेषकी संक्रान्तिमें तांबूल और कपूरका दान करैहै वह पृथ्वीमें सार्वभौमसंबंधी सुख भोगकर निर्वाणपदकी प्राप्ति करैहै ॥ २६ ॥ जो मनुष्य

सर्वभोगेषुराजेंद्रसतुदेवसहायवान् ॥ पापहानिंदुःखहानिंप्राप्यनिर्वृतिमाप्नुयात् ॥ २४ ॥ गोरोचंमृगनाभिं च दद्याद्वैशाखधर्मवित् ॥ तापत्रयविनिर्मुक्तःपरंनिर्वाणमृच्छति ॥ २५ ॥तांबूलंचसकर्पूरंयोदद्यान्मेषगेरवौ ॥ सार्वभौमसुखंभुक्त्वापरंनिर्वाणमृच्छति ॥२६॥ शतपत्रींचयूथींचमेषमासेददन्नरः ॥ ससार्वभौमोभवतिपश्चान्मोक्षंचविंदति ॥२७॥ केतकींमल्लिकांवापियोदद्यान्माधवागमे ॥ सतु मोक्षमवाप्नोतिमधुशासनशासनात् ॥ २८ ॥ पूगीफलंतुयोदद्यात्सुगंधंतुद्विजातये ॥ नारिकेलफलंराजँस्तस्यपुण्यफलंशृणु ॥ २९ ॥ सप्तजन्मभवेद्विप्रोधनाढ्योवेदपारगः ॥ पश्चात्सप्तकुलैर्युक्तोविष्णुलोकंसगच्छति ॥ ३० ॥

सेवती और जुहीका दान करैहै वह सार्वभौमराजा होताहै. और अन्तमें मोक्षपदको पाताहै ॥ २७ ॥ जो वैशाखके महीनामें केतकी और मल्लिकाका दान करैहै वह माधवभगवान्की आज्ञासे मोक्षपदको प्राप्त होयहै ॥ २८ ॥ जो मनुष्य ब्राह्मणको पूगीफल और अन्य सुगंधित द्रव्योंका दान करताहै और हे राजन् ! जो नारियलका दान करैहै, उसके पुण्यके फलको चित्त लगायकर सुनो ॥ २९ ॥ वह मनुष्य सात जन्मतक ब्राह्मणके घर जन्म लेयहै और

धनवान् तथा वेदपाठी होयहै पीछे वह सातों कुलसमेत विष्णुभगवान्के लोकको चलाजायहै ॥ ३० ॥ हे राजन् ! जो प्राणी विश्रामका मंडप बनाकर ब्राह्मणको देयहै उसके पुण्यके फलको कहनेकी मेरी सामर्थ्य नहीं है ॥ ३१ ॥ जो मनुष्य छायामंडप बनवायकर भीतर वालू बिछा देताहै और उसमें प्याऊ लगा देताहै वह स्वर्गलोकका स्वामी होताहै ॥ ३२ ॥ जो मनुष्य मार्गमें बागबगीचा, तडाग, कूआ, झोंपडी बनवाताहै, वह बडा धर्मात्मा है उसको

विश्राममंडपंयस्तुकृत्वादद्याद्विजन्मने ॥ तस्यपुण्यफलंवक्तुंनाहंशक्नोमिभूपते ॥ ३१ ॥ सुच्छायामंडपंयस्तुसिकताकीर्णमंजसा ॥ सप्रपंकारयेद्यस्तुसतुलोकाधिपोभवेत् ॥ ३२ ॥ मार्गोद्यानंतडागंवाकूपंमंडपमेवच ॥ यःकरोतिसधर्मात्मातस्यपुत्रैस्तुकिंफलम् ॥ ॥ ३३ ॥ कूपस्तडागउद्यानंमंडपश्चप्रपातथा ॥ सद्धर्मकरणंपुत्रःसंतानंसप्तधोच्यते ॥ ३४ ॥ एतेष्वन्यतमाभावेनोर्ध्वंगच्छंतिमानवाः ॥ सच्छास्त्रश्रवणंतीर्थयात्रासज्जनसङ्गतिः ॥ ३५ ॥ जलदानंचान्नदानमश्वत्थारोपणंतथा ॥ पुत्रश्चेतिचसंतानंसप्तवेदविदोविदुः ॥ ३६ ॥नासंततिर्लभेल्लोकान्कृत्वाधर्मशतान्यपि ॥ तस्मात्संतानमन्विच्छेत्संतानेष्वेकतोव्रजेत् ॥ ३७ ॥

पुत्रोंसे और क्या फल है ॥ ३३ ॥ जो मनुष्य कूआ, तलाव, बगीचा, मंडप और प्याऊ लगवाताहै, तथा सद्धर्मका करना यही उसका पुत्र है, संतान सात प्रकारकी कहीहैं ॥ ३४ ॥ इन सातोंमेंसे जो एककोभी न करै वह मनुष्य स्वर्गको नहीं जाताहै,उत्तम शास्त्रोंका सुनना,तीर्थयात्रा,सज्जन संगति ॥ ३५ ॥ जलदान, अन्नदान, पीपलका पेड लगाना और पुत्रका होना ये सात प्रकारकी संतान वेदवेत्ताओंने कहीहैं ॥ ३६ ॥ अन्य सेंकडों धर्म करनेपरभी मनुष्योंको

संतान नहीं मिलतीहै, इससे संतानकी इच्छा करनेवालोंको इनमेंसे एक कर्म तौ अवश्यही करना चाहिये॥ ३७॥ पशु पक्षी मृग और वृक्षोंकोभी स्वर्गसुख नहीं मिलताहै फिर मनुष्योंका तौ क्या कहनाहै॥ ३८॥ जो मनुष्य सुपारी, नागवल्ली, कपूर और अगर सहित तांबूलका दान करैहै ॥ ३९॥ वह निश्चयही संपूर्ण शारीरिक पापोंसे युक्त होजाताहै तथा तांबूलका दान करनेवाला यश, धैर्य और लक्ष्मी प्राप्त करैहै ॥ ४०॥ जो रोगी देताहै वह रोगसे छूट जाताहै और

पशूनांपक्षिणांचैवमृगाणांचैवभूरुहाम् ॥ नोर्ध्वंलोकंसुखंयातिमनुष्याणांतुकाकथा ॥ ३८ ॥ पूगीफलसमायुक्तंनागवल्लीदलैर्युतम् ॥ कर्पूरागरुसंयुक्तंददंस्तांबूलमुत्तमम् ॥ ३९ ॥ शारीरैः सकलैः पापैर्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥ तांबूलदोयशोधैर्यंश्रियंचाप्नोति निश्चितम् ॥ ॥ ४० ॥ रोगीदत्वाविरोगः स्यादरोगीमोक्षमाप्नुयात् ॥ वैशाखेमासियोदद्यात्तक्रंतापविनाशनम् ॥ ४१ ॥ विद्यावान्धनवान्भूमौ जायतेनात्रसंशयः ॥ नतक्रसदृशंदानंघर्मकालेषुविद्यते ॥ ४२ ॥ तस्मात्तक्रंप्रदातव्यमध्वश्रांतद्विजातये ॥ जम्बीररसुरसोपेतंलसल्लवणमिश्रितम् ॥ ४३ ॥ यस्तक्रमरुचिघ्नंतुदत्वामोक्षमवाप्नुयात् ॥ योदद्याद्दधिमंडन्तुवैशाखेघर्मशांतये ॥ ४४ ॥

जो निरोगी देताहै वह मोक्ष पाताहै, जो वैसाखके महीनामें तापनाशक छाछका दान करैहै ॥४१॥ वह पृथ्वीमें विद्यावान् और धनवान् होताहै इसमें संदेह नहींहै ॥ गर्मीकी ऋतुमें तक्रके समान कोई दान नहींहै॥४२॥ इससे मार्गके कारण थकेहुये ब्राह्मणको छाछका दान करैहै, जो मनुष्य जंभीरीका रस और नमक डालकर अरुचिनाशक तक्रका दान करताहै वह मोक्ष पाताहै, जो गर्मीसे व्याकुल ब्राह्मणको दधिका मंड पान करावैहै ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

हे राजन् ! उसके पुण्यका फल कहनेकी मेरी सामर्थ्य नहीं है, जो वैसाखके महीनामें दिव्य चावलका दान करैहै ॥ ४५ ॥ उसकी बडी पूर्ण आयु होतीहै और वह संपूर्ण यज्ञोंके फलको पाताहै, जो तेजोरूप गौके घीका दान ब्राह्मणको देयहै ॥ ४६ ॥ वह अश्वमेधका फल प्राप्त करके विष्णुभगवान्के मन्दिरमें आनन्दको प्राप्त होताहै जो मेषका संक्रान्तिमें ककडी और गुडका दान करैहै ॥ ४७ ॥ वह संपूर्ण पापोंसे

तस्यपुण्यफलंवक्तुंनाहंशक्नोमिभूमिप ॥ योदद्यात्तंडुलान्दिव्यान्मधुसूदनवल्लभे ॥ ४५ ॥ सलभेत्पूर्णमायुष्यंसर्वयज्ञफलंलभेत् ॥ योघृतं तेजसोरूपंगव्यंदद्याद्द्विजातये ॥ ४६ ॥ सोश्वमेधफलंप्राप्यमोदतेविष्णुमंदिरे ॥ उर्वारुगुडसंमिश्रंवैशाखेमेषगेरवौ ॥ ४७ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः श्वेतद्वीपेवसेद्ध्रुवम् ॥यश्चेक्षुदंडंसायाह्नेदिवातापोपशांतये ॥ ४८ ॥ ब्राह्मणायचयोदद्यात्तस्यपुण्यमनंतकम् ॥ वैशाखेपानकंदत्वासायाह्नेश्रमशांतये ॥४९॥ सर्वपापविनिर्मुक्तोविष्णोः सायुज्यमाप्नुयात् ॥ सफलंपानकंमेषमासेसायंद्विजातये ॥५०॥ दद्यात्तेनपितॄणांतुसुधापानंनसंशयः ॥ वैशाखेपानकं चूतसुपक्कफलसंयुतम् ॥ ५१ ॥

छूटकर श्वेतद्वीपको चलाजायहै, जो मनुष्य दिनके तापकी शान्तिके निमित्त ईखका दान करै ॥ ४८ ॥ उसका अनन्त पुण्य होताहै, जो सायंकालमें श्रमकी शांतिके लिये पनेका दान करैहैं वह संपूर्ण पापोंसे छूटकर विष्णुकी सायुज्यताको प्राप्त होताहै, जो सायंकालके समय ब्राह्मणको फल और पनेका दान करै उस दानसे पित्रीश्वरोंको निश्चय सुधापान मिलताहै ॥ ४९ ॥ ५० ॥ जो वैशाखके महीनामें पके आमके फल और पनेका

दान करैहै उसके संपूर्ण पाप निश्चय दूर होजातेहैं ॥ ५१ ॥ जो चैत्रकी अमावास्याके दिन पेयवस्तुसे भरेहुए घडेका दान करै उसने सौ गयाके श्राद्ध कर लिये इसमें कोई संदेह नहींहै ॥ जो मनुष्य चैत्रकी अमावास्याको कस्तूरी, कपूर, मल्लिका, खस आदि द्रव्योंसे युक्त जलकुंभका दान पित्रीश्वरोंके निमित्त करताहै उसको छियानवें श्राद्ध करनेका पुण्य होताहै ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदांबरीषसंवादे दाननिरूपणं

तस्यसर्वाणिपापानिविनाशंयांतिनिश्चितम् ॥ योदद्याच्चैत्रदर्शेतुकुंभंपूर्णंतुपानकैः ॥ ५२ ॥ गयाश्राद्धशतंतेनकृतमेवनसंशयः ॥ कस्तूरीकर्पुरोपेतंमल्लिकोशीरसंयुतम् ॥५३॥ कलशंपानकपूर्णंचैत्रदर्शेतुमानवः ॥ दद्यात्पितॄन्समुद्दिश्यसषण्णवतिदोभवेत् ॥ ५४॥ इतिश्रीस्कंदपु०वैशाखमा०नारदांबरीषसंवादेपानदिदाननिरूपणंनामतृतीयोऽध्यायः ॥३॥ ॥ नारदउवाच ॥ ॥ तैलाभ्यंगंदिवास्वापंतथा वैकांस्यभोजनम् ॥ खट्वानिद्रांगृहेस्नानंनिषिद्धस्यचभक्षणम् ॥ १ ॥ वैशाखेवर्जयेदष्टौद्विभुक्तंनक्तभोजनम् ॥ पद्मपत्रेतुयो भुंक्तेवैशाखे व्रतसंस्थितः ॥ २ ॥ सतुपापविनिर्मुक्तोविष्णुलोकंसगच्छति ॥ वैशाखेमासिमध्याह्नेश्रांतानांतुद्विजन्मनाम् ॥ ३ ॥

नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥नारदजी बोले वैशाखके महीनामें तैलमर्दन, दिनमें शयन करना, कांसीके पात्रमें भोजन, खाटपर सोना, घरमें स्नान करना, निषिद्ध भोजन करना ॥ १ ॥ दोवार भोजन करना और रात्रिमें भोजन करना इन आठ बातोंको त्याग देना चाहिये ॥ जो मनुष्य नियमपूर्वक वैशाख के महीनेमें कमलके पत्तोंपर भोजन करताहै ॥ २ ॥ वह सम्पूर्ण पापोंसे छूटकर विष्णुलोकको चला जायहै, जो मनुष्य वैशाखकी दुपहरीमें थकेहुये ब्राह्म

णोंकी ॥ ३ ॥ चरणसेवा करैहै उसने सब व्रतोंसे उत्तम व्रत करलियाहै, मार्ग चलनेसे पीडित अपने घरपर आये भये ब्राह्मणको दुपहरके समय ॥ ४ ॥ जो सुंदर आसनपर बैठायकर चरणको दाबताहै और उसके चरणोदकको अपने मस्तकपर छिडकैहै उसके संपूर्ण बंधन दूर होय जांयहै ॥५॥ और निश्चयही उस मनुष्यको गंगादि सब तीर्थोंमें स्नान करनेका फल मिलैहै, जो मनुष्य वैशाखमें स्नान नहीं करै है और कमलके पत्रपर भोजन नहीं करैहै॥६॥वह गधैयाकी योनि पावैहै

पादावनेजनंकुर्यात्तद्व्रतंसुव्रतोत्तमम् ॥ अध्वश्रांतंद्विजंयस्तुमध्याह्नेस्वगृहागतम् ॥ ४ ॥ उपवेश्यासनेरम्येकृत्वापादावनेजनम् ॥ धृत्वाशिरसिताश्चापोविध्वस्ताखिलबन्धनः ॥ ५ ॥ गङ्गादिसर्वतीर्थेषुस्नातोभवतिनिश्चितम् ॥ अस्नायीवाप्यपत्राशीवैशाखंतुनयेद्यदि ॥ ६ ॥ रासभींयोनिमासाद्यपश्चादश्वतरीभवेत् ॥ दृढांगोरोगहीनश्चतथास्वस्थोपिमानवः ॥ ७ ॥ वैशाखेतुगृहेस्नात्वाचांडालींयोनिमाप्नुयात् ॥ वैशाखेमासिराजेंद्रमेषसंस्थेदिवाकरे ॥ ८ ॥ नकरोतिबहिःस्नानंश्वानयोनिशतंव्रजेत् ॥ अस्नात्वाचाप्यदत्वाचवैशाखोयेननीयते ॥ ९ ॥ सपिशाचोभवेन्नूनमवैशाखादधोव्रजेत् ॥ योनदद्याज्जलंचान्नंवैशाखेलोभमानसः ॥ १० ॥

पीछे खच्चरीकी योनिमें जायहै,जो मनुष्य हृष्टपुष्ट रोगहीन और स्वस्थ होकरभी॥७॥ वैशाखमें स्नान नहीं करैहै वह चांडालकी योनि पावै है, हे राजन् ! वैशाखके महीनेमें मेषकी संक्रान्तिके दिन बाहर जायकर किसी तीर्थपर स्नान नहीं करैहै वह सौ जन्मतक कुत्ताकी योनि पावैहै, जो मनुष्य इस वैशाख मासको विनास्नान किये अथवा विनादान किये व्यतीत करदेताहै ॥८॥९॥ वह पिशाचकी योनि पाकर नरकको चलाजायहै जो लोभी मनुष्य वैशाखमें

अन्नदान वा जलदान नहीं करैहै ॥१०॥ उसके पाप और दुःख कभी भी दूर नहीं होयहैं यह बात निश्चयहीहै, जो मनुष्य वैशाखके महीनामें विष्णु भगवान्‌में मन लगाकर नदीमें स्नान करैहै ॥ ११ ॥ उसके तीनों जन्मके संचित पाप नष्ट होजातेहैं जो सूर्योदयके समय प्रातःकाल समुद्रसे मिलनेवाली नदियोंमें स्नानकरै ॥ १२ ॥ तौ उसके सात जन्मके किये भये पाप तत्काल नष्ट होय जांयहैं, जो मनुष्य उषःकालमें सप्तगंगामें स्नान

पापहानिंदुःखहानिंनैवाप्नोतिनसंशयः ॥ नदीस्नानंतुयःकुर्याद्वैशाखेविष्णुतत्परः ॥११॥ जन्मत्रयार्जितात्पापान्मुच्यतेनात्रसंशयः॥ समुद्रगानदीस्नानंकुर्यात्प्रातर्भगोदये ॥ १२ ॥ सप्तजन्मार्जितैःपापैस्तत्क्षणादेवमुच्यते ॥ कुर्यादुषसियःस्नानंसप्तगङ्गासुमानवः ॥ ॥ १३ ॥ कोटिजन्मार्जितात्पापान्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥ जाह्नवीवृद्धगङ्गाचकालिंदीचसरस्वती ॥ १४ ॥ कावेरीनर्मदावेणीसप्त गंगाः प्रकीर्तिताः ॥ देवखातेषुयःकुर्यात्प्रातर्वैशाखमज्जनम् ॥ १५ ॥ जन्मारभ्यकृतात्पापान्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥ वैशाखेमासिसिं प्रातेयोवापीष्ववगाहनम् ॥ १६ ॥ प्रातः कुर्यान्महाराजमहापातकनाशनम् ॥ अपिगोष्पदमात्रेषु बहिःस्थेषु जलेषुच ॥ १७ ॥

करैहै ॥ १३ ॥ उसके कोटि जन्मार्जित पाप तत्काल नष्ट होयजांयहैं, जाह्नवी, वृद्धगंगा, कालिन्दी, सरस्वती ॥१४॥ कावेरी, नर्मदा, और वेणी ये सप्तगंगा कहावैहै, जो वैशाखके महीनामें देवखात अर्थात् प्राकृत जलाशयोंमें स्नान करैहै ॥ १५ ॥ तौ वे जन्मसे लेकर उस समयतकके पापोंसे छूट जाय है, वैशाखके महीनामें जो मनुष्य बावडीमें स्नान करैहै ॥ १६ ॥ उनके हे राजन् ! बडे २ पाप दूर होयजांयहैं, जो घरसे अन्यत्र गौके चरण

रखनेकी जगहके समानभी जल भरा होय तौ ॥ १७ ॥ वहां गंगासे आदि लेकर सब नदी निवास करैंहैं यह बात निश्चयहै जो इस बातको जानैंहैं उनको संपूर्ण तीर्थोंसे अधिक फल होयहै ॥ १८ ॥ हे राजन् ! रसोंमें दूध अधिकहै और दूधसे दही अधिकहै और दहीसे घृत उत्तमहै ऐसेही महीनानमें कार्तिकमास उत्तमहै ॥ १९ ॥ कार्तिकसे माघ अधिकहै माघसे वैशाख अधिकहै, इस महीनेमें जो धर्म कियाजायहै वह वडके बीजकी तरह



तिष्ठंतिसरितः सर्वागंगाद्याइतिनिश्चयः॥इतिजानन्समाप्नोतिसर्वतीर्थाधिकं फलम् ॥ १८ ॥ क्षीरंरसाधिकंक्षीरादधिकंदधिभूमिप ॥ दध्नोधिकं घृतंयद्वदूर्जोमासोधिकस्तथा ॥ १९ ॥ कार्त्तिकादधिकोमाघोमाघाद्वैशाखउत्तमः ॥ तस्मिन्मासेकृतोधर्मोवर्धतेवटबीजवत् ॥२०॥ आढ्योवातिदरिद्रोवापरतंत्रोथवानरः ॥ यद्वस्तुलभतेतेनतद्दातव्यंद्विजातये ॥ २१ ॥ कंदंमूलंफलंशाकंलवणंगुडमेवच ॥ कोलंपत्रंजलंतक्रमानंत्यायोपकल्पते ॥ नादत्तंलभतेक्कापिब्रह्माद्यैस्त्रिदशैरपि ॥ २२ ॥ दानेनहीवस्तुभवेदकिंचनोनिष्किंचनत्वाच्च करोतिपापम् ॥ पापादवश्यंनरकंप्रयातिदातव्यमस्मात्सुखमिच्छतासदा ॥ २३ ॥

बढैहै ॥ २० ॥ जो कोई धनसंपन्न होय, अथवा अत्यन्त दरीद्री होय अथवा पराधीन होय उसे जो वस्तु मिलजाय वही ब्राह्मणके लिये देनी उचितहै ॥ २१ ॥ कंद, मूल, फल, शाक, नमक, गुड, बेर पत्र, जल और छाछ जो वस्तु दान करीजायगी वह अपरिमित होय जायगी विनादिये ब्रह्मादिक देवताओंकोभी नहीं मिलगी ॥ २२ ॥ जो मनुष्य दान नहीं करैंहैं वे दरीद्री होयहैं और दरीद्री होनेसे पाप करने लगैहै और पाप करनेसे

नरकमें जाकर पडेहै इससे जो मनुष्य सुखकी इच्छा करेंहैं उनको अवश्य दान करना चाहिये ॥ २३ ॥ जैसे कोई बडाभारी मकान बहुत सुन्दर और संपूर्ण सामिग्रीनसे युक्त होय परन्तु जो उसपर छत्त न होय तौ शोभायमान नहीं लगेहै ऐसेही जो मनुष्य और महीनोंमें सब प्रकारके धर्म करेंहैं और वैशाखमें कुछ नहीं करेंहैं उनका सब करना वृथाहीहै ॥ २४ ॥ जैसे संपूर्ण लक्षणोंसे युक्त होनेपरभी पतिके वियमान होनेसे स्त्री लक्षणवती होतीहै इसीतरह सांगोपाङ्ग सम्पूर्ण क्रिया वैशाखमें न करनेसे वृथाही होतीहैं ॥ २५ ॥

यथागृहंसर्वगुणोपपन्नंपरिच्छदैर्हीनमशोभनंतथा ॥ मासेषुधर्मः सकलेष्वनुष्ठितोवैशाखहीनस्तुवृथैवयाति ॥ २४ ॥ यथैवकन्यासकलैश्चलक्षणैर्युक्तापिजीवत्पतिलक्षणाहि ॥ क्रियापिसांगासकलापिराजन्वैशाखहीनातुवृथैवतांविदुः ॥२५॥ दयाविहीनास्तुयथागुणावृथावैशाखधर्मेणविनातथाक्रिया ॥ शाकंतुयद्वल्लवणेनहीनंनरोचतेसर्वगुणोपपन्नम् ॥ २६ ॥ वैशाखहीनंतुतथैवपुण्यंनसाधुसेव्यंनफलाप्तिहेतुः ॥यद्वद्विभूषासुकृतानशोभतेवस्त्रेणहीनाललनासुरूपा॥२७॥क्रियाकलापः सुकृतोपिपुंभिर्नभासतेतन्मधुमासहीनम्॥२८॥

जैसे दयाहीन सम्पूर्ण गुण वृथा हैं ऐसेही वैशाखमें धर्म किये विना संपूर्ण किया वृथाहैं ऐसेही उत्तम शाकभी विना नमकके स्वादिष्ट नहीं लगैहै ॥२६॥ ऐसेही जो पुण्य वैशाखमें नहीं किये जांयहैं वे अच्छी रीतिसे सेवनीय नहीं है न उनका कुछ फल मिलैहै जैसे किसी रूपवती स्त्रीका अच्छा शृंगार होनेपरभी विनावस्त्र सुहावनी नहीं लगतीहै ॥ २७ ॥ ऐसेही जो मनुष्य अनेक प्रकारकी धर्म संबंधी क्रिया करेंहैं परन्तु वैशाखमें न करनेसे वे सब

शोभाको प्राप्त नहीं होतीहैं ॥ २८ ॥ इसलिये जैसे बनै वैसे प्रयत्नपूर्वक वैशाखमें धर्म करना उचितहै यह बात निश्चयहै ॥ २९ ॥ मेषकी संक्रांतिमें मधुसूदन भगवान्का ध्यान करके प्रातःकाल स्नान करै और फिर विष्णुका पूजन करै, ऐसा न करनेपर नरक मिलैहै ॥ ३० ॥ वैशाख मास सद्यः फलदायक है और इसके मधुसूदन भगवान् देवता हैं, तीर्थयात्रा, तप, यज्ञ, दान और होम आदिका फल भी इसमें अधिक होताहै ॥ ३१ ॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेनयेनकेनापिजंतुना ॥ धर्मोवैशाखमासेतुकर्तव्यइतिनिश्चयः ॥ २९ ॥ मधुसूदनमुद्दिश्यमेषसंस्थेदिवाकरे ॥ प्रातः स्नात्वार्चयेद्विष्णुमन्यथानरकंव्रजेत् ॥ ३० ॥ वैशाखः सकलोमासोमधुसूदनदैवतः ॥ तीर्थयात्रातपोयज्ञदानहोमफलाधिकः ॥३१॥ प्रार्थनामंत्रः ॥ ॥ मधुसूदनदेवेशवैशाखेमेषगेरवौ ॥ प्रातःस्नानंकरिष्यामिनिर्विघ्नंकुरुमाधव ॥ ३२ ॥ अर्घ्यमंत्रः ॥ ॥ वैशाखेमेषगेभानौप्रातः स्नानपरायणः ॥ अर्घ्यंतेहंप्रदास्यामिगृहाणमधुसूदन ॥ ३३ ॥ गंगाद्याः सरितः सर्वास्तीर्थानिचह्रदाश्चये ॥ प्रगृह्णंतुमयादत्तमर्घ्यंसम्यक्प्रसीदथ ॥ ३४ ॥

नीचेके मंत्रसे मधुसूदन भगवान्की प्रार्थना करै। हे मधुसूदन ! देवदेव ! हे माधव ! मैं वैशाखमें मेषकी संक्रांतिभर प्रातःकाल स्नान करनेकी इच्छा करूं हूं सो आप निर्विघ्न पूर्ण कर दीजिये ॥ ३२ ॥ नीचे लिखे मंत्रसे अर्घ्य दे ॥ अर्घ्यमंत्र ॥ हे मधुसूदन ! वैशाखमें मेषकी संक्रांतिमें मैं स्नानार्थ, आपको अर्घ्य देताहूं इसे सम्यक् ग्रहण कीजिये ॥ ३३ ॥ गंगादिक सब नदी, सब तीर्थ, सब जलाशय, मेरे दियेहुये अर्घ्यको

ग्रहण करो और मुझपर प्रसन्न हो ॥ ३४ ॥ आप पापियों को शासन करनेवाले उत्तम समदर्शी सबके नियन्ताहैं इसे मेरे दियेहुये अर्घ्यको ग्रहण करके यथोचित फल दीजिये ॥ ३५ ॥ इस तरह अर्घ्य देकर स्नान करै और फिर वस्त्र पहरकर आह्निक कर्मोंसे निवृत्त हो ॥ ३६ ॥ वैशाखमें होनेवाले फूलोंसे मधुसूदन भगवान्‌का पूजन करके वैशाखमाससंबंधी विष्णुभगवान्‌की दिव्य कथाका श्रवण करै ॥ ३७ ॥ वह कोटि जन्मके

ऋषभः पापिनां शास्तात्वंयमः समदर्शनः ॥ गृहाणार्घ्यंमयादत्तंयथोक्तफलदोभव ॥ ३५ ॥ इत्यर्घ्यांश्वसमर्घ्याथपश्चात्स्नानं समाचरेत् ॥ वाससीपरिधायाथकृत्वाकर्माणिसर्वशः ॥३६॥ मधुसूदनमभ्यर्च्यप्रसूनैर्माधवोद्भवैः ॥ श्रुत्वाविष्णुकथांदिव्यामेतन्मासप्रशंसिनीम् ॥ ३७ ॥ कोटिजन्मार्जितात्पापान्मुक्तोमोक्षमवाप्नुयात् ॥ नजातुखिद्यतेभूमौनस्वर्गेनरसातले ॥ ३८ ॥ नगर्भेजायतेक्वापिनभूयःस्तनपोभवेत् ॥ वैशाखेकांस्यभोजीयस्तथाचाश्रुतसत्कथः ॥ ३९ ॥ नस्नातोनापिदाताचनरकानेवगच्छति ॥ ब्रह्महत्यासहस्रस्यपापंशाम्येत्कथंचन ॥ ४० ॥

संचित पापोंसे छूटकर मोक्ष पाताहै, उसको पृथ्वी, स्वर्ग और पाताल कहींभी खेद नहीं होयहै ॥३८॥ वह कभी गर्भमें नहीं आवैहै और न कभी अपनी माताका दूध पीवैहै, जो मनुष्य वैशाखके महीनामें कांसीके पात्रमें भोजन करैहै और जिसने उत्तम २ कथा श्रवण नहीं करीहैं॥३९॥न स्नानही कियाहै

न दानही कियाहै वह नरकहीमें जाकर पडताहै, सहस्र ब्रह्महत्याका पाप किसीतरह दूरभी होय जाताहै ॥ ४० ॥ परन्तु जो वैशाखमें स्नान नहीं करैहै उसका पाप कभीभी दूर नहीं होताहै, जो मनुष्य स्वाधीन शरीरसे स्वतंत्रवर्ती जलमें स्नान करैहै ॥ ४१ ॥ और स्वाधीन जिह्वासे 'हरि' इन दो अक्षरका उच्चारण करैहै, यदि वह नीच वैशाखमें प्रातः काल स्नान नहीं करैहै ॥ ४२ ॥ तौ उसे जीताहुआही मरा समझो इसमें कोई संदेह नहींहै, जिसने किसी प्रकारसेभी वैशाखके महीनेमें मधुसूदन भगवान्का॥४३॥पूजन नहीं कियाहै वह मूढबुद्धि सूकरकी योनिको पावैहै, जो तुलसीदलसे वैशाखमें मधुसुदनभग

वैशाखेयेननस्नातंतत्पापंनैवगच्छति ॥ स्वाधीनेनचकायेनह्यप्सु स्वातंत्र्यवर्तिषु ॥ ४१ ॥ स्वाधीनजिह्वयोच्चार्यंहरिरित्यक्षरद्वयम् ॥
नकुर्याद्यदिवैशाखेप्रातःस्नानंनराधमः ॥ ४२ ॥ जीवन्नेवचपंचत्वमागतोनात्रसंशयः ॥ येनकेनाप्युपायेनमाधवेमधुसूदनम् ॥ ४३ ॥
नार्चयेद्यदिमूढात्मासौकरींयोनिमाप्नुयात् ॥ योर्चयेत्तुलसीपत्रैर्वैशाखेमधुसूदनम् ॥४४॥नृपोभूत्वासार्वभौमःकोटिजन्मसुभोगवान् ॥
पश्चात्कोटिकुलैर्युक्तोविष्णोःसायुज्यमाप्नुयात् ॥ ४५ ॥ ॥ इतिश्रीस्कं०वैशा०ना०वैशाखधर्मप्रशंसनंनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥
॥ नारदउवाच ॥ ॥ वैशाखःसर्वधर्मेभ्यस्तपोधर्मेभ्यएवच ॥ कथंससर्वमासेभ्योदानेभ्योप्यधिकोभवेत् ॥ १ ॥

वान्का पूजन करैहै ॥ ४४ ॥ वह सार्वभौम राजा होकर कोटि जन्मतक अनेक भोगोंको भोगताहै, पीछे अपने करोड कुलोंको लेकर विष्णुकी सायुज्यताको प्राप्त होयहै ॥ ४५ ॥ इति श्रीस्कं० वैशा० नार० वैशाखधर्मप्रशंसनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ नारदजी कहने लगे हे राजन् ! जैसे वैशाख मास संपूर्ण धर्मोंसे, सब प्रकारके तपोंसे, सब महीनोंसे संपूर्ण दानोंसे अधिक हुआहै ॥ १ ॥

सो सब हे महाप्राज्ञ ! हम तेरे सामने कहेंहैं तू एकाग्रचित्त करके सुन, जब सब युगोंका अन्त होयहै तब सब देवताओंके राजा शेषशायी विष्णुभगवान्
॥ २ ॥ संपूर्ण लोक और जीवोंको अपने उदरमें समेटकर प्रलयके समुद्रमें शयन करें हैं और योगमायाके प्रतापसे अनेक एकताको प्राप्त होय है ॥ ३ ॥
एवं एक निमेषके व्यतीत होनेपर वेदोंने प्रार्थना करके भगवान्को जगाया तब भगवान्ने अपने उदरमें स्थित जीवोंकी रक्षा करी ॥ ४ ॥ और उन जी

तद्वक्ष्यामिमहाप्राज्ञश्शृणुचैकमनाभव ॥ कल्पांतेदेवराड्विष्णुःशेषशायीमहाप्रभुः ॥ २ ॥ कुक्षिस्थलोकसंघोयंसशेतेप्रलयार्णवे ॥
अनेकोह्येकतांप्राप्यभूतिभिर्योगमायया ३ ॥ निमेषस्यावसानेतुश्रुतिभिर्बोधितस्ततः ॥ कुक्षिस्थजीवसंघानांरक्षांचक्रेदयानिधिः
॥ ४ ॥ तत्तत्कर्मफलप्राप्त्यैसृज्यान्स्रष्टुंमनोदधे ॥ तस्यनाभेरभूत्पद्मंसौवर्णंभुवनाश्रयम् ॥ ५ ॥ ब्रह्माणंजनयामासवैराजंपुरुषाह्व
यम् ॥ तस्मिन्ससर्जभगवान्भुवनानिचतुर्दश ॥ ६ ॥ भिन्नकर्माशयप्राणिसंघांश्वविविधान्बहून् ॥ त्रिगुणान्प्रकृतिंलोकेमर्यादाश्वा
धिपांस्तथा ॥ ७ ॥

वोंको अपने२ कर्मोंका फल देनेके लिये सृष्टिके रचनेका मनमें विचार किया, तब विष्णुभगवान्की नाभिसे त्रिलोकीका आधारस्वरूप सुवर्णमय कमल
उत्पन्न हुआ ॥ ५ ॥ उस कमलमेंसे विराट् पुरुषरूप ब्रह्मा उत्पन्न हुआ, उस विराट्पुरुषमें भगवान्ने चौदह भुवन उत्पन्न किये ॥ ६ ॥ जिनके भिन्न
२ प्रकारके कर्म और आशयहैं ऐसे अनेकों प्राणियोंके समूह रचे, फिर सत, रज, तम तीनों गुण, प्रकृति, मर्य्यादा और भुवनोंके स्वामी रचे ॥ ७ ॥

तत्पश्चात् वर्णाश्रमके विभाग करके धर्मकी कल्पना करते भये. चारोंवेद, तंत्र, स्मृति, पुराण, इतिहास रचकर धर्मकी रक्षाके निमित्त इनके प्रवर्तक ऋषि प्रकट किये ॥ ८ ॥ ९ ॥ इनऋषियोंने अलग अलग वर्णोंके अलग अलग धर्म प्रवृत्त किये, उनपर संपूर्ण प्रजा श्रद्धा करने लगी ॥ १० ॥ सम्पूर्ण प्रजा अपने अपने आश्रमोचित धर्मोंमें प्रवृत्त है वा नहीं यह देखनेके लिये, साक्षात् अविनाशी सर्वान्तर्यामी भगवान् डर दिवानेके लिये और परीक्षाके

वर्णाश्रमविभागांश्चधर्मक्लृप्तिंचसोकरोत् ॥ वेदैश्चतुर्भिस्तंत्रैश्चसहितान्स्मृतिभिस्तथा ॥ ८ ॥ पुराणैरितिहासैश्चस्वाज्ञारूपैर्महेश्वरः ॥ ऋषीन्प्रवर्तकांश्चक्रेधर्मगुप्त्यैमहाप्रभुः ॥ ९ ॥ तैःप्रवर्तितधर्मास्तुवर्णाश्रमविभागजाः ॥ प्रजाःश्रद्दधिरेसर्वाःस्वोचितान्विष्णुतोष दान् ॥ १० ॥ तांस्तुप्रवर्तमानांस्तुस्वाश्रमान्द्रष्टुमीश्वरः ॥ हृदिस्थोप्यव्ययःसाक्षाद्बिभीषार्थंपरीक्षया ॥ ११ ॥ अनूनान्कुशलान्य त्रधर्मान्कुर्वंतिवैप्रजाः ॥ सकालःकोभवेद्विद्वानितितंचिंतयन्प्रभुः ॥ १२ ॥ वर्षाकालोमयासृष्टःसीदंत्यस्ताइमाःप्रजाः ॥ तत्रानून न्नकुर्वंतिधर्मान्पंकाद्युपद्रुताः ॥ १३ ॥ तान्दृष्ट्वाकोपएवस्यात्तेषुतुष्टिर्नमेभवेत् ॥ मयेक्षितानसीदन्तुतस्मात्तानवलोकये ॥ १४ ॥ शरद्यदितथापूर्तिःकर्षणान्नैवजायते ॥ केचित्पक्वफलासक्ताः केचिद्वृष्टिभिरर्दिताः ॥ १५ ॥

निमित्त आये ॥ ११ ॥ कि प्रजा सम्पूर्ण धर्मोंको किस समयमें करै ऐसे भगवान् चिन्ता करने लगे ॥ १२ ॥ यह वर्षाकाल मैंने निर्माण कियाहै इसमें सब प्रजा दुःखीहै और कीचड आदिमें फँस रहीहै जिससे संपूर्ण धर्मोंको नहीं करैहै ॥ १३ ॥ यह देख क्रोध उत्पन्न होयहै मन प्रसन्न नहीं है मेरे देखते दुःख नहीं पावें अतएव उन्हें देखूं ॥ १४ ॥ शरदकालमें सब खेत क्यारमें लग रहेहैं इससे धर्मको पूर्ण रीतिसे नहीं कर सकें हैं कोई तो पक्वफलकी

अपेक्षा कर रहेहैं कोई वर्षासे पीडित हैं ॥ १५ ॥ कोई शीतसे दुःखी हैं अतएव धर्म नहीं करें हैं इन्हें देख मुझे रोष उत्पन्न होयहै इनकी विपरीत बुद्धि देखकर मोहिं संतोष नही है ॥ १६ ॥ हे मन्तऋतुमें सरदीके मारे प्रातःकाल उठेहैं जब वे सूर्योदयसे पहिले नहीं उठेहैं इन्हें देखके क्रोध उत्पन्न होयहै ॥ १७ ॥ शिशिर ऋतुमेंभी प्रातःकालके समय शीतसे पीडित रहैहै तथा पक्क फलोंके ग्रहणमें निरन्तर आसक्त रहैहै ॥ १८ ॥ फिर जो मनुष्य जाडेके

केचिच्छीतार्दितारार्जंस्तान्दृष्ट्वारोषएवमे ॥ वैगुण्यंपश्यमानस्यनमेतोषोभिजायते ॥ १६ ॥ उत्थापनंतुनेष्यंतिप्रातर्हेमंतआगते ॥ कोपोमेनुत्थितान्दृष्ट्वा प्रातः सूर्योदयेसति ॥ १७ ॥ शिशिरेपितथैवार्ताः प्रातःकाले इमाः प्रजाः ॥ तथापक्कफलादानसक्ताह्यनिशमं जसा ॥ १८ ॥ पुनः शीतार्दिताः प्रातः स्नानार्थमितिचिंतिताः ॥ तेषांतुकर्मलोपः स्यान्नैवपूर्तिः कथंचन ॥ १९ ॥ प्रेक्षायाः सम योनायमितिचिंताकुलोविभुः ॥ वसंतसमयंमेनेसर्वापत्तिनिवारकम् ॥ २० ॥ स्नानेदानेतथायागे क्रियायांभोगएवच ॥ नानाधर्म विधानेचह्यनुकूलोह्ययमृतुः ॥ २१ ॥ अप्रयासेनलभ्यानिद्रव्याण्यसुभृतांध्रुवम् ॥ येनकेनचद्रव्येणतुष्टिस्तनुभृतांभवेत् ॥ २२ ॥

डरके मारे प्रातःकाल स्नान करनेके लिये केवल विचारही किया करें हैं उनके शुभ कर्म लुप्त होय जांय हैं जिनकी पूर्ति कभी नहीं होय है ॥ १९ ॥ यह समय प्रेक्षणका नहीं है ऐसा विचार करके भगवान् इस वसंत ऋतुको संपूर्ण पातकोंको निवारण करनेवाली-मानतेहुए ॥ २० ॥ स्नान, दान, यज्ञ, क्रिया भोग और सब प्रकारके धर्मोंका साधन करनेके लिये यह ऋतु बडी अनुकल है ॥ २१ ॥ इस ऋतुमें धनवान् सब वस्तुओंको विना प्रयासही प्राप्त करेंहैं

जिस किसी रीतिसे द्रव्यद्वारा देहधारियोंकी तुष्टि होय जांय है ॥ २२ ॥ जो विष्णुभगवान्के आधारभूत प्राणी हैं उनके धर्मका साधन वही द्रव्य है, वसं तऋतुमें संपूर्ण द्रव्य प्राणियोंको सुखदायक होतेहैं ॥ २३ ॥ दानयोग्य, धर्मयोग्य, और सब प्रकारके धर्मोंको भोगने योग्य निर्धन, लूले, लंगडे, व्याकुल और महात्माओंको ॥ २४ ॥ सम्पूर्ण द्रव्य और जलादिक सुलभहैं इसमें संशय नहीं है,मेरे प्रियजन इन द्रव्योंसे अपनी आत्माका हित साधन करतेहैं॥



विष्णोराधारभूतानांतद्रव्यंधर्मसाधनम् ॥ वसंतेसकलंद्रव्यंप्राणिनांतुसुखावहम् ॥ २३ ॥ दानयोग्यंधर्मयोग्यंभोगयोग्यंतुसर्वशः ॥ निर्धनानांतुपंग्वादिविकलानां महात्मनाम् ॥ २४ ॥ द्रव्याणिचसुलभ्यानिजलादीनिनसंशयः ॥ द्रव्यैरेतैः स्वात्महितंधर्मंकुर्वंतिम त्प्रियाः ॥ २५ ॥ पत्रैःपुष्पैः फलैरन्यैः शाकैश्चापिप्रियोक्तिभिः ॥ स्रक्तांबूलैश्चंदनाद्यैःपादप्रक्षालनादिभिः ॥ २६ ॥ प्रश्रयाद्यैरहं तेषांवरदोहमितीरयन् ॥ संचिंत्यभगवान्विष्णुःप्रतस्थेरमयासह ॥ २७ ॥ वनानिसर्वतःपश्यन्विकसत्कुसुमानिच ॥ हृष्टपुष्टजनाकी र्णंमत्तालिद्विजसेवितम् ॥२८॥ आश्रमाणांमहार्हाणांवनग्रामनिवासिनाम् ॥ प्रांगणादीनिरम्याणिह्युद्यानानिस्थालनिच ॥ २९ ॥

॥ २५ ॥ पत्र, पुष्प, फल, शाकादि, प्यारे वचन, माला, तांबूल, चन्दन, पादप्रक्षालन ॥ २६ ॥ और विनयपूर्वक साधन करतेहैं और मैं उनको वर देताहूं यह कहतेहुए विचार करके विष्णुभगवान् लक्ष्मीसहित ॥ २७ ॥ चारों ओर वनोंके देखते चले जिनमें अनेक प्रकारके फूल खिल रहे हैं, जिनमें हृष्ट पुष्ट प्राणी रहेहैं और मतवाले भ्रमर और पक्षी विचर रहेहैं ॥ २८ ॥ ग्रामनिवासियोंके बहुमूल्य आश्रमोंके आंगण उद्यान और स्थल

लक्ष्मीजीको दिखानेलगे ॥ २९ ॥ देवता, मुनीश्वर, सिद्ध, चारण, गंधर्व, किन्नर, नाग, राक्षस स्तुति करेंहैं ॥ ३० ॥ ऐसे वर्णाश्रमवासियोंके वरोंमें जायकर मीनकी संक्रांतिसे कर्ककी संक्रांति पर्य्यंत लक्ष्मी और सब देवताओंसहित ॥ ३१ ॥ निवास करके पुरुषोंके कर्त्तव्याकर्त्तव्य कर्मोंका निरीक्षण करेंहैं ॥ जो धर्माचरणवाले पुरुष हैं उन्हें अभीष्ट मनोरथ देतेहैं ॥ ३२ ॥ और जो मदोन्मत्त होय रहेहैं उनकी आयु और धनादिकको हरें हैं,

रमायैदर्शयन्विष्णुःसहदेवैर्मुनीश्वरैः ॥ सिद्धचारणगंधर्वकिन्नरोरगराक्षसैः ॥ ३० ॥ स्तूयमानोभ्यगाद्गेहान्वर्णाश्रमनिवासिनाम् ॥ मीनादिकर्कटांतंवैसतिष्ठन्नरमयासुरैः ॥ ३१ ॥ सार्द्धंप्रतीक्ष्यपुरुषान्कृताकृतसपर्यया ॥ तत्रधर्मवतांपुंसांददातीष्टान्मनोरथान् ॥ ॥ ३२ ॥ मत्तान्नसहतेपुंसोहरत्यायुर्धनादिकम् ॥ यदिकुर्वंतिवैशाखेसपर्यांपरमात्मनः ॥ ३३ ॥ तत्रापिचलमूर्तीनांसाधूनांयत्रवैविभुः ॥ मासेष्वन्येषुयज्ज्ञातंकर्मलोपंसहिष्यति ॥ ३४ ॥ यथादेशागतंभूपंदृष्ट्वाजानपदाःप्रजाः ॥ यदितंचोपतिष्ठंतिप्रश्रयाद्यैर्महार्हणैः ॥ ३५ ॥ तदाकारादिकंन्यूनंपूर्णंजानातिपर्थिवः ॥ पुनरप्यधिकंचेष्टंतुष्टोदास्यतिनिश्चितम् ॥ ३६ ॥

जो वैशाखमें भगवान्की पूजा करेंहैं तथा चल मूर्ति साधुमहात्माओंकी सेवा करेंहैं और अन्य महीनोंमें नहीं करें हैं उनके अपराधको भगवान् क्षमा कर दें हैं ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ जैसे अपने देशमें आयेहुए राजाको देखकर प्रजाके मनुष्य बहुमूल्य भेंट पूजा लेकर राजाकी पूजा करेंहैं, तब राजा पूजाके अकारादि द्वारा यह जान लेयहै कि अमुककी सेवा पूरी है अमुककी न्यूनहै, जो पूजा अधिक होय तौ प्रसन्न होय कर निश्चयही उसे मनवांछित फल

देयहै ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ और जिनकी पूजा सेवा ठीक नहीं है उन्हें दंड देय हैं ऐसेही विष्णुभगवान् वैशाखमासमें ॥ ३७ ॥ जो अच्छी रीतिसे पूजा करैंहैं उसे मनवांछित फल देंय और जो ठीक २ नहीं करैंहैं उनके धनादिको हर लेयहै ॥३८॥ धर्मके रक्षक देवदेव शार्ङ्गपाणी विष्णुभगवान् इस महीनामें प्राणीनकी परीक्षा करें हैं इससे यह महीना सबमें उत्तमहै ॥ ३९ ॥ इतिश्री स्कं० वैशा० नारदां० वैशाखश्रेष्ठत्व



तदात्वकृतपूजानांदण्डंतेषांकरोतिच ॥ यथाविष्णुःस्वकीयानांवैशाखेमाधवागमे ॥ ३७ ॥ सपर्यांकुर्वतांपुंसांददातीष्टान्मनोरथान्॥ अकुर्वतांतथापुंसांधनादीनिहरत्यलम् ॥ ३८ ॥ धर्मगोप्तुर्महाविष्णोर्देवदेवस्यशार्ङ्गिणः ॥ परीक्षाकालएवायंतस्मान्मासोत्तमोह्य यम् ॥ ३९ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेवैशाखमाहात्म्येनारदांबरीषसंवादेवैशाखश्रेष्ठत्वनिरूणंनाम पंचमो ध्यायः॥५॥ ॥ नारदउवाच ॥ वैशाखेध्वगतप्तानांतृषात्तार्नांमहीपते ॥ जलदानमकुर्वाणस्तिर्यग्योनिमवाप्नुयात् ॥ १ ॥ अत्रैवोदाहरंतीममितिहासंपुरातनम् ॥ विप्रस्यगृहगोधायाःसंवादंपरमाद्भुतम् ॥ २ ॥ पुराचेक्ष्वाकुवंशेभूद्धेमांगइतिभूमिपः॥ ब्रह्मण्यश्चवदान्यश्चजितामित्रोजितेंद्रियः ॥३॥

निरूपणं नाम पंचमोऽध्यायः॥५॥नारदजी बोले हे राजन्!वैशाखके महीनामें मार्ग चलनेसे व्याकुल और तृषासे पीडीत मनुष्योंको जो जलका दान नहीं करैहै वह पक्षीको योनि पावैहै ॥१॥ इस बातके दृष्टान्तमें हम ब्राह्मण और वरकी छिपकलीका प्राचीन इतिहास कहैहैं यह परम अद्भुत संवादहै ॥२॥ पुराकालमें इक्ष्वाकुलके वंशमें हेमांग नाम एक राजा हुआथा, इसकी ब्राह्मणोंमें बडी भक्तिथी यह अनिन्दक, जितशत्रु और जितेन्द्रिय था ॥ ३ ॥

पृथ्वीमें जितने वालूके कण हैं, जितने जलके बिंदु हैं, जितने आकाशमें तारामण हैं उतनीही गौ इस राजाने दान करीं ॥ ४ ॥ इस राजाने बहुतसे यज्ञ किये उन यज्ञोंकी दाभसे पृथ्वीमें कुशाही कुशा दिखाई देनेलगीं तथा गौ, भूमि, तिल और सुवर्णके दानसे बहुतसे ब्राह्मणोंको प्रसन्न किया ॥ ५ ॥ कोई ऐसा दान नहीं था जो उसने नहीं किया, परन्तु हे राजन् ! सुखकी प्राप्तिकी इच्छा करनेवाले उस राजाने एक जलदान नहीं किया ॥ ६ ॥ ब्रह्मपुत्र महात्मा वशिष्ठजीने उसे ज्ञानभी कराए कि जलदान करो परन्तु उसने दुर्बुद्धि और हेतुवादसे

यावंत्योभूमिकणिकायावंतोजलबिंदवः ॥ यावंत्युडूनिगगनेतावतीरददात्सगाः ॥ ४॥ येनेष्टंयज्ञदर्भैश्चभूमिर्बर्हिष्मतीशुभा ॥ गोभूतिलहिरण्याद्यैस्तोषिताबहवोद्विजाः ॥ ५ ॥ तेनादत्तानिदानानिनविद्यंतइतिश्रुतम् ॥ तेनादत्तजलंचैकंसुखलभ्याधियानृप ॥ ६ ॥ बोधितोब्रह्मपुत्रेणवसिष्ठेनमहात्मना ॥ अमौल्यंसर्वतोलभ्यंतद्दाताकिंफलंलभेत् ॥ ७ ॥ दुर्बुध्याहेतुवादैश्चनजलंदत्तवान्द्विजे ॥ अलभ्यदानेपुण्यंस्यादितिवाक्यंसुयुक्तिमत् ॥ ८ ॥ सआनर्चद्विजान्व्यंगान्दरिद्रान्वृत्तिकर्शितान् ॥ नार्चयच्छ्रोत्रियान्विप्रांस्तत्त्वज्ञान्ब्रह्मवादिनः ॥ ९ ॥

कहा कि जल तो विना मूल्यही मिलताहै इससे जलदान करनेवालेको क्या फल मिलैहै ऐसी २ अनेक बातें करीं और ब्राह्मणके निमित्त जलका दान नहीं किया और कहनेलगा कि जो वस्तु अलभ्य हैं उन्हींके दान करनेसे पुण्य मिलताहै और यही योग्यभी है ॥ ७ ॥ ८ ॥ तथा वह राजा लूले, लंगड़े, दरिद्री और जीविकाहीन ब्राह्मणोंकी सेवा करताथा तथा वेदपाठी, तत्त्वज्ञानी और ब्रह्मवादियोंकी पूजा नहीं करताथा ॥ ९ ॥

कारण यह है कि वह राजा यह कहाकरताथा कि विख्यात ब्राह्मणोंका पूजा सेवा तो सबही करेंहैं, परन्तु अनाथ, विनापढे लिखे, लूले, लंगडे, ब्राह्मण ॥ १० ॥ और दरिद्रियोंकी गति बडी खराब है अतएव ऐसेही लोग मेरी दयाके पात्रहैं, ऐसे वह दुर्बुद्धि कुपात्रके निमित्त दान देता रहा ॥ ११ ॥ इसही बडे भारी दोषके कारण तीन जन्म पर्य्यंत उसने चातककी योनि पाई, एक जन्ममें गिद्ध बना और फिर सात जन्मतक कुत्ताकी योनिमें प्राप्त



प्रख्यातान्पूजयिष्यंतिसर्वेलोकामहार्हणाः ॥ अनाथानामविद्यानांव्यंगानांचद्विजन्मनाम् ॥ १० ॥ दरिद्राणां गतिः कावातस्मात्तेमेदयास्पदाः ॥ इतिदुर्धीरपात्रेषुदत्तवान्किमपिस्वयम् ॥ ११ ॥ तेनदोषेणमहताचातकत्वंत्रिजन्मसु ॥ एकजन्मनिगृध्रत्वंश्वाभवत्सप्तजन्मसु ॥ १२ ॥ पश्चान्नृपगृहेजातोभूपोयंगृहगोधिका ॥ श्रुतकीर्त्याख्यभूपस्यमिथिलाधिपतेर्नृप ॥ १३ ॥ गृहद्वारप्रतोल्यांचवर्ततेकीटकाशना ॥ सप्ताशीतिषुवर्षेषुस्थितंतेनदुरात्मना ॥ १४ ॥ विदेहाधिपतेर्गेहेकदाचिदृषिसत्तमः ॥ श्रुतदेव इतिख्यातःश्रांतोमध्याह्नआगतः ॥ १५ ॥ तंदृष्ट्वासहसोत्थायजातहर्षोनराधिपः ॥ मधुपर्कादिभिःपूज्यतस्यपादावनेजनीः ॥ १६ ॥

हुआ ॥ १२ ॥ फिर हे राजन् ! यह राजाके घरमें छिपकलीकी योनिमें जायकर पडा, उस राजाका नाम श्रुतकीर्ति था और मिथिलापुरीका राजाथा ॥ १३ ॥ वह घरके दरवाजेकी चौखटके ऊपर कीडाओंका भक्षण करतीहुई सत्तासी वर्षतक वहां रही ॥ १४ ॥ एक दिन दैवयोगसे मुनियोंमें श्रेष्ठ श्रुतदेवनामक ऋषि मध्याह्नकालमें मार्गसे व्यथित मिथिलापतिके घर चले आये ॥ १५ ॥ वह आये हुये ऋषिको देख अत्यन्त प्रसन्न होय

सहसा उठकर बडे आदर सत्कारसे मधुपर्कादिसे पूजनकर चरण धोनेमें प्रवृत्त हुआ ॥ १६ ॥ और उस चरणोदकको अपने मस्तकपर छिडकने लगा तब दैवयोगसे एक बूँद जल उस गृहगोधापर गिर पडा ॥ १७ ॥ जलकी बूँद पडतेही उसे ज्ञान होगया और नानायोनियोंमें दुःखोंसे दुःखित हो घर आये ब्रह्मणसे हायहायकर कहने लगा कि हे ब्रह्मन् ! मेरी रक्षा करो २ ॥ १८ ॥ ऐसे एक कीडाका शब्द सुनकर ब्राह्मणको बडा आश्चर्य हुआ

आपोमूर्ध्नावहत्क्षिप्रंतदोत्सिक्तैश्चबिंदुभिः ॥ दैवोपदिष्टकालेनप्रोक्षितागृहगोधिका ॥ १७ ॥ सद्योजातस्मृतिरभूत्स्मृतकर्मा दिदुःखिता ॥ त्राहित्राहीतिचुक्रोशब्राह्मणं गृहमागतम् ॥ १८ ॥ तिर्यग्जंतुरवंश्रुत्वाब्राह्मणोविस्मितोवदत् ॥ कुतः क्रोशसिगो धेत्वंदशेयंकेनकर्मणा ॥ १९ ॥ त्वंदेवः पुरुषःकश्चिनृपोवाथद्विजोथवा ॥ कस्त्वंब्रूहिमहाभागत्वामद्याहंसमुद्धरे ॥ २० ॥ इत्युक्तः सनृपःप्राहश्रुतदेवंमहामतिम् ॥ अहंमिक्ष्वाकुकुलजोवेदशास्त्रविशारदः ॥ २१ ॥ यावंत्योभूमिकणिकायावंतस्तोयबिंदवः ॥ यावं त्युडूनिगगनेतावतीरददंस्मगाः ॥ २२ ॥

और कहनेलगा हे गोधा ! तूं कहा है क्यों विलाप करैहै, तेरी यह दशा कौन कर्मसे भई है ॥ १९ ॥ तूं देवता कि, पुरुष है कि, कोई राजाहै, अथवा ब्रह्मण है, हे महाभाग ! तूं कौन है कह तौ सही मैं आजही तेरा उद्धार करूंगा ॥ २० ॥ ऋषिकी यह बात सुन वह राजा महाबुद्धिमान् श्रुतदेवजीसे कहने लगा कि हे ब्रह्मन् ! मेरा जन्म इक्ष्वाकुकुलमें हुआथा और मैं वेदादि शास्त्रोंका बडा ज्ञाता था ॥ २१ ॥ पृथ्वीमें जितने रजके कणहैं, जितने

जलके बिंदु हैं, जितने आकाशमें तारागण हैं, उतनीही गौ मैंने दान करीं ॥२२॥ मैने संपूर्ण यज्ञ किये, वापी कूप और तालाव बनवाये, अनेकों दान दिये, और धर्मपूर्वक राज्यभी किया ॥ २३ ॥ तौभी मेरी ऐसी दुर्गति हुई और मुझे स्वर्ग न मिला, तीन जन्मतक मुझे चातककी योनि मिली और एक जन्ममें गिद्ध हुआ ॥ २४ ॥ और सात जन्म पर्य्यन्त कुत्तेकी योनि पाई और अब यह राजा आपके चरणोदकको छिडक रहाथा तब एक बूँद उछलकर

सर्वेयज्ञामयाचेष्टाःपूर्तान्याचरितानिमे॥दानान्यपिचदत्तानिधर्माद्राज्यंस्वनुष्ठितम्॥२३॥तथापिदुर्गतिर्जातामम चोर्ध्वगतिंविना॥ त्रिवारंचातकत्वंमेगृध्रत्वंचैकजन्मनि ॥ २४ ॥ सप्तजन्मसुश्वानत्वंप्राप्तंपूर्वंमयाद्विज ॥ सिंचतानेनभूपेनत्वत्तःपादावनेजनीः ॥ २५ ॥ बिंदवोदूरमुत्क्षिप्तास्तैःक्षितोहंकथंचन ॥ तेनजन्मस्मृतिरभूत्सर्वपाप्माहतश्चमे ॥ २६ ॥ गोधाजन्मानिभाव्यानिह्यष्टाविंशतिमेद्विज॥ दृश्यंतेदैवसृष्टानिबिभ्येतोजन्माभिर्भृशम् ॥ २७ ॥ नकारणंप्रपश्यामितन्मेविस्तरतोवद ॥ इत्युक्तःसद्विजःप्राहज्ञात्वाविज्ञानचक्षुषा ॥ २८ ॥ शृणुभूपप्रवक्ष्यामितवदुर्योनिकारणम् ॥ नजलंतुत्वयादत्तंवैशाखेमाधवप्रिये ॥ २९ ॥

मेरे ऊपर जायपडी उसछीटाके पडनेसे मुझे पूर्वजन्मका स्मरण होआयाहै और मेरे सब पाप दूर होय गयेहैं ॥ २५ ॥ २६ ॥ हे द्विजवर ! अठ्ठाईस जन्मतक मुझे छिपकलीकी योनि भुगतनी पडैगी, तरहतरहकी दैवी सृष्टि दिखाई पडै अब मैं इन जन्मोंसे डरूंहूं ॥ २७ ॥ हे द्विज ! कौन कारणसे मेरी यह दशा हुई है सो विस्तारपूर्वक कहिये ऐसे कहनेपर वह द्विज ज्ञानचक्षुद्वारा सब वृत्तान्त जानकर कहने लगे ॥ २८ ॥ हे राजन् ! मैं तेरी इन बुरी

योनिका कारण कहूं हूं. तू चित्त लगायकर सुन, तैंने माधवभगवान्के प्यारे वैशाखमासमें जलका दान नहीं किया ॥ २९ ॥ तैंने जलको सुलभ समझकर यह निश्चय करलिया कि यह अमूल्य है, मार्गमें चलनेवाले और धूपसे पीडित ब्राह्मणोंको अज्ञानसे जलका दान नहीं किया ॥ ३० ॥ तथा पात्रोंको छोडकर कुपात्रोंको दान दिया, जलतीहुई अग्निको छोडकर कोईभी राखमें हवन करेहैं ? ॥ ३१ ॥ बहुधा वर्णित

तज्जलंसुलभंमत्वाह्यमूल्यमितिनिश्चितम्॥नाध्वगानांद्विजातीनांधर्मकालेप्यजानता॥३०॥तथापात्रंसमुत्सृज्यह्यपात्रेप्रतिदत्तवान् ॥ ज्वलंतमग्निमुत्सृज्यनहिभस्मनिहूयते ॥ ३१ ॥ बहुधावर्णितस्यापिसौगंध्यादियुतस्यच ॥ कंटकान्वितवृक्षस्यनकुर्वंतिसमर्चनम् ॥ ॥ ३२ ॥ विशिष्टानांपादपानामश्वत्थःसेव्यतांगतः ॥ तुलसींतुसमुत्सृज्यबृहतीपूज्यतेनकिम् ॥ ३३ ॥ अनाथत्वंपूज्यतायांनप्रयोजकतामियात् ॥ पंग्वाद्यायेप्यनाथाहिदयापात्रंहिकेवलम् ॥ ३४ ॥ तपोनिष्ठाज्ञाननिष्ठाःश्रुतिशास्त्रविशारदाः ॥ विष्णुरूपाःसदा पूज्यानेतरेतुकदाचन ॥ ३५ ॥ तत्रापिज्ञानिनोत्यर्थंविप्राविष्णोःसदैवहि ॥ ज्ञानिनामपिभूपालविष्णुरेवसदाप्रियः ॥ ३६ ॥

सुगंधादिकसे युक्त कांटेदार वृक्षका कोईभी पूजन नहीं करैहै ॥ ३२ ॥ सम्पूर्ण वृक्षोंमें पीपलहीकी पूजा होयहै, तुलसीके वृक्षको छोडकर कटेरीका पूजन क्यों नहीं करै॥ ३३ ॥पूज्यताके विषयमें अनाथत्वको प्रयोजकता नहीं है, केवल लूले लंगडेही दयाके पात्र हैं पूज्य नहीं हैं ॥ ३४ ॥ तपस्वी, ज्ञानी, वेदादिशास्त्रोंके जाननेवाले ये विष्णु भगवान्के स्वरूप हैं अतएव सदा पूज्य हैं ॥ ३५॥ इनमेंभी ज्ञानी ब्राम्हण विष्णुभगवान्के सदैवही अत्यन्त

प्यारे हैं ॥३६॥ इसी कारणसे ज्ञानीही सदा पूज्यहैं, पूज्योंमेंभी अधिक पूज्यतम हैं सो साधु महात्माओंकी अवज्ञा है वह इस लोक और परलोक दोनोंमें दुःखदाई है ॥ ३७ ॥ महत्पुरुषोंकी सेवाही पुरुषार्थचतुष्टयका कारण है ऐसेही करोंडों अंधजाती कर्त्तव्याकर्त्तव्यको नहीं देखे हैं ॥३८॥ ऐसेही मंद हैं आशय जिनके उनकी संगतिसे कुछ फल नहीं मिलैहै, ऐसेही जलमय तीर्थ और मृत्तिका अथवा पाषाणनिर्मित देवतानसेभी कुछ लाभ तत्काल नहीं



तस्माज्ज्ञानीसदापूज्यःपूज्यात्पूज्यतरःस्मृतः ॥ अवज्ञासाधुवृत्तानामिहामुत्रचदुःखदा ॥ ३७ ॥ सेवावैमहतांपुंसांपुमर्थानांहिकारणम् ॥ कोटयोप्यंधजातीनांनपश्यंतियथायथम् ॥ ३८ ॥ एवंमंदाशयानां तुसंगतिर्नार्थदाभवेत् ॥ नह्यम्मयानितीर्थानिनदेवामृच्छिलामयाः ॥ ३९ ॥ तेपुनंत्युरुकालेनदर्शनादेवसाधवः ॥ नसाधुसेवनात्कपिसीदंतेऽतःसुशिक्षिताः ॥ ४० ॥ जन्ममृत्युजराद्यैर्वासुधयाप्यायितायथा॥नजलंतुत्वयादत्तंसाधवोवानसेविताः ॥ ४१ ॥ तेनतेदुर्गतिश्चेयंप्राप्ताचेक्ष्वाकुनंदन ॥ वैशाखेमत्कृतंपुण्यंतुभ्यंदास्यामिशांतये ॥ ४२ ॥

होयहै ॥ ३९ ॥ ये तौ बहुतकालमें पवित्र करैहैं और साधुमहात्मा दर्शनहीसे पवित्र करदेयहैं, साधुसेवासे कोइभी सुशिक्षित पुरुष दुःखी नहीं होयहै ॥ ४० ॥ जैसे अमृत पान करनेसे जन्म, मरण, वृद्धावस्था आदि दुःख नहीं देहैं तैंने जल दान नहीं किया, न साधुओंकी सेवा करी ॥ ४१ ॥ हे इक्ष्वाकुनन्दन ! इसीसे तेरी यह दुर्गति हुईहै. वैशाखमें जो मैंने पुण्य कियेहैं वह तेरी शान्तिके लिये तुझे दूंगा ॥ ४२ ॥

इसके प्रतापसे भूत भविष्यत् और वर्तमान कर्मोंके संस्कार दूर होजायंगे ऐसे कह जलका स्पर्शकर सर्वोत्तम पुण्यका फल देदिया ॥ ४३ ॥ ऐसे जब उस ब्राह्मणने वैशाखमें एक दिन स्नान कियेका फल उसे देदिया तब उसके सम्पूर्ण पाप दूर होगये और गोधाकी योनिको त्यागकर ॥ ४४ ॥ दिव्य विमानपर चढ दिव्य माला, वस्त्र और आभूषण पहर मिथिलापुरीके राजाके महलके भीतर सब प्राणियोंके देखते

भूतंभव्यंभवेद्येनकर्मजातंविजेष्यसि ॥ इत्युक्त्वापउपस्पृश्यददौपुण्यमनुत्तमम् ॥ ४३ ॥ यदादत्तंब्राह्मणेनस्नानंचैकदिनेकृतम् ॥ तेनध्वस्ताखिलाघस्तुत्यक्त्वातांगृहगोधिकाम् ॥ ४४ ॥ दिव्यंविमानमारुह्यदिव्यस्रग्वस्त्रभूषणः ॥ पश्यतामेवभूतानांमैथिलस्य गृहांतरे ॥ ४५ ॥ बद्धांजलिपुटोभूत्वापरिक्रम्यप्रणम्यच ॥ अनुज्ञातोययौराजास्तूयमानोमरैर्दिवम् ॥ ४६ ॥ तत्रभुक्त्वामहाभोगा न्वर्षायुतमतंद्रितः ॥ सएवचेक्ष्वाकुकुलेकाकुत्स्थोभून्महाप्रभुः ॥४७॥सप्तद्वीपवतीपालोब्रह्मण्यः साधुसंमतः ॥ देवेंद्रस्यसखाविष्णो रंशएवमहाप्रभुः ॥ ४८ ॥ बोधितस्तुवसिष्ठेनवैशाखोक्तान्मनोरमान् ॥ अनुष्ठायाखिलान्धर्मास्तेनध्वस्ताखिलाशुभः ॥ ४९ ॥

देखते ॥ ४५ ॥ हाथ जोड परिक्रमादे नमस्काकर आज्ञा ले स्वर्गको चलागया और देवता लोग स्तुति करनेलगे ॥ ४६ ॥ वहां दशसहस्र वर्षपर्य्यन्त अनेक भोगोंको भोगकर वही राजा इक्ष्वाकुके वंशमें महाप्रभावशाली काकुत्स्थ होता हुआ ॥ ४७ ॥ और सप्तद्वीपवती पृथ्वीका पालन करताहुआ बडा ब्रह्मण्य, साधुसेवी, इन्द्रका सखा विष्णुका अंश होता हुआ ॥ ४८ ॥ तब वशिष्ठजीने

वैशाखमासमें कर्त्तव्यधर्म सब सुनाये जिनके करनेसे उसके सब अमंगल दूर होगये ॥ ४९ ॥ और दिव्य ज्ञानकी प्राप्ति कर विष्णुकी सायुज्यताको प्राप्त हुआ इसलिये यह वैशाख सम्पूर्ण शुभफलोंका दाता है, इसमें जो मनुष्य यथोक्त धर्म करैं ॥ ५० ॥ उनकी आयु और यश बढैहैं संपूर्ण पाप दूर होय जाय हैं पुरुषार्थचतुष्टयकी प्राप्ति होयहै और विष्णुभगवान् प्रसन्न होयहैं ॥ ५१ ॥ अतएव ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र ये चारों वर्ण,

दिव्यं ज्ञानंसमासाद्यविष्णोः सायुज्यमाप्तवान् ॥ वैशाखः शुभदस्तस्मात्पुंभिः सर्वैरनुष्ठितः ॥ ५० ॥ आयुर्यशःपुष्टिदोर्यमहापापौघनाशनः ॥ पुमर्थानांनिदानंचविष्णुःप्रीणात्यनेनतु ॥ ५१ ॥ चातुर्वर्ण्यनरैः सर्वैश्चतुराश्रमवर्तिभिः ॥ अनुष्ठेयोमहाधर्मोवैशाखे माधवागमे ॥ ५२ ॥ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदांबरीषसंवादे गृहगोधिकाख्याननाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥
॥ नारदउवाच ॥ राजातदद्भुतंदृष्ट्वामैथिलोधर्मवित्तमः ॥ कृतांजलिःसुखासीनंविस्मितोवाक्यमब्रवीत् ॥ १ ॥मैथिलउवाच ॥ ॥ दृष्टमेतन्महाश्चर्यंसाधूनांचरितंतथा ॥ येनधर्मेणमुक्तोभूद्राजाचेक्ष्वाकुनंदनः ॥ २ ॥

ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यासी इन चारों आश्रमवाले मनुष्योंको वैशाखमासके कहेहुये कर्म करने चाहिये ॥ ५२ ॥ इति श्री स्कं० वैशा० नारदां० गृहगोधिकाख्यानं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥६॥ श्रीनारदजी बोले कि–धर्मात्मा मिथिलापुरीका राजा इस अद्भुतचारित्रको देखकर आश्चर्यसे हाथ जोड सुखपूर्वक बैठेहुए ब्राह्मणसे यह कहनेलगा ॥ १ ॥ मैथिल बोला हे महात्मन् ! मैंने यह बडी अद्भुत बात देखी तथा महात्माओंका

बडा आश्चर्यमय चारित्रभी देखा जिसे धर्मके प्रतापसे इक्ष्वाकुवंशीय राजा मोक्ष पागया ॥२॥ इस धर्मको विस्तारपूर्वक सुननेकी मेरी बडी अभिलाषा है, हे विद्वन् ! आपकरके मेरे साह्मने विस्तार पूर्वक कहिये इसके सुननेकी मेरी बडी अभिलाषाहै ॥ ३ ॥ राजाके इस प्रश्नको सुनकर महात्मा श्रुतदेव धन्य है धन्य है यह कहकर राजाकी प्रशंसा करनेलगे ॥ ४ ॥ श्रुतदेव बोले कि—हे राजर्षिसत्तम ! तेरी बुद्धि बडी ठीक है जिसके कारण वासुदेवभग

तंधर्मंविस्तरेणैवश्रोतुंकौतूहलंहिमे ॥ मह्यंश्रद्धावतेविद्वन्कृपयाविस्तराद्वद ॥ ३ ॥ इतिराज्ञासुसंपृष्टः श्रुतदेवोमहामनाः ॥ साधु साध्वितिसंभाष्यव्याजहारनृपोत्तमम् ॥ ४ ॥ श्रुतदेवउवाच ॥ सम्यग्व्यवसिताबुद्धिस्तवराजर्षिसत्तम ॥ वासुदेवप्रियान्धर्मान्छ्रो तुंयस्मान्मतिस्तव ॥ ५ ॥ बहुजन्मार्जितंपुण्यंविनाकस्यापिदेहिनः ॥ वासुदेवकथालापेमतिर्नैवोपजायते ॥ ६ ॥ यूनेराजाधि राजायजातेयंमतिरीदृशी ॥ शुद्धंभागवतंमन्येतेनत्वांसाधुसत्तमम् ॥ ७ ॥ तस्मात्तुभ्यंब्रुवेसौम्यधर्मान्भागवतान्छुभान् ॥ यान्ज्ञा त्वामुच्यतेजंतुर्जन्मसंसारबंधनात् ॥ ८ ॥

वान्के प्यारे धर्मोंको पूछनेकेलिये तेरी लालसा हुई है ॥ ५ ॥ बिना बहुतजन्मके संचितकर्मोंके किसी प्राणीकी बुद्धि वासुदेव भगवान्की कथावार्तामें प्रवृत्त नहीं होतीहै ॥ ६ ॥ युवावस्थामें इतना बडा राज्य पायकर जो तेरी ऐसी मति होगई है इससे मैं तुझे साधुओंमें श्रेष्ठ शुद्ध भागवत मानूंहूं ॥ ७ ॥ अतएव हे सौम्य ! शुभ भागवतधर्मोंका वर्णन मैं तेरे सामने करूं हूं इनको जान लेनेसे प्राणी संसारके जन्मादि बन्धनोंसे छूट जाताहै ॥ ८ ॥

जैसे शौच, स्नान, संध्या, तर्पण, अग्निहोत्र और श्राद्धादिक कर्म हैं वैसेही वैशाखसंबंधी सब कर्म हैं ॥ ९ ॥ वैशाखमें जो वैशाखके धर्मोंको नहीं करताहै वह, स्वर्गको नहीं जताहै सब धर्मोंमें वैशाखके धर्मोंके समान कोई धर्म नहीं है ॥ १० ॥ बहुतसे ऐसे धर्म हैं जैसे बिना राजाकी प्रजा उपद्रवोंसे नष्ट होजती हैं ऐसेही वे धर्मभी नष्ट होय जांयहैं इसमें कुछ विचार नहीं हैं ॥ ११ ॥ वैशाखमें जो धर्म कहे गये हैं वे सब सुलभ हैं,

यथाशौचंयथास्नानंयथासंध्याचतर्पणम् ॥ अग्निहोत्रंयथाश्राद्धंतथावैशाखसत्क्रियाः ॥९॥ वैशाखेमाधवेधर्मानकृत्वानोर्ध्वगोभवेत्॥ नवैशाखसमोधर्मोधर्मजातेषुविद्यते ॥ १० ॥ संत्येवबहवोधर्माःप्रजाश्चाराजकाइव ॥ उपद्रवैश्चलुप्यंतिनात्रकार्याविचारणा ॥ ११ ॥ सुलभाः सकलाधर्माः कर्तुंवैशाखचोदिताः ॥ उदकुंभःप्रपादानंपथिच्छायादिनिर्मितिः ॥ १२ ॥ उपानत्पादुकादानंछत्रव्यजनयोस्तथा ॥ तिलयुक्तमधोदानंगोरसानांश्रमापहम् ॥ १३ ॥ वापीकूपतडागादिकरणंपथिकाश्रयम् ॥ नारिकेलेक्षुकर्पूरकस्तूरीदानमेवच ॥ १४ ॥ गंधानुलेपनंशय्याखट्वादानंतथैवच ॥ तथाचूतफलंरम्यमुर्वारुकरसायनम् ॥ १५ ॥

जलका घडा देना, प्याऊ लगाना, मार्गमें छाया कराना ॥ १२ ॥ जूता, खडाऊं, छत्री और पंखाका दान करना, तिल और शहत मिलाकर दान करना, परिश्रमको दूर करनेवाले गोरसका दान करना, बावडी ॥ १३ ॥ कूआ, तलाव, धर्मशाला बनवाना, नारीयल, ईख, कपूर, कस्तूरीका दान करना ॥ १४ ॥ चन्दनादि सुगंधित द्रव्योंका लगाना, शय्या, खाट देना तथा आमके फल और रसीली ककडी आदिका दान

करना ॥ १५ ॥ दौनाके फूलोंका दान करना, सायंकालके समय गुडका शर्बत पान कराना, सब प्रकारके अन्न देना, नित्यप्रति दही और अन्नका दान करना ॥ १६ ॥ तांबूलका सदा दान करना चैत्रकी अमावास्याको करीलका दान करना सूर्योदयसे पहिले प्रतिदिन स्नान करना ॥ १७ ॥ मधुसूदन भगवानूकी पूजा करना, कथा सुनना, शरीरका तैलादि मर्दन न करना, पत्तेपर भोजन करना॥ १८॥ बीचबीचमें मार्गसे थके

दानंदमनपुष्पाणांतथासायंगुडोदकम् ॥ चित्राण्यन्नानिपूर्णायांदध्यन्नंप्रत्यहं तथा ॥ १६ ॥ तांबूलस्यसदादानंचैत्रदर्शेकरीरकम् ॥
रवावनुदितेपूर्वंप्रातःस्नानंदिनेदिने ॥ १७ ॥ मधुसूदनपूजाचकथायाः श्रवणंतथा ॥ अभ्यंगवर्जनंचैवतथावैपत्रभोजनम् ॥ १८ ॥
मध्येमध्येश्रमार्तानांवीजनंव्यजनेनच ॥ सुगंधैः कोमलैः पुष्पैः प्रत्यहंपूजनंहरेः ॥ १९ ॥ फलंदध्यन्ननैवेद्यंधूपदीपौदिनेदिने ॥
गोग्रासंवृषपत्नीनांद्विजपादावनेजनम् ॥ २० ॥ गुडनागरदानंचधात्रीपिष्टप्रदापनम् ॥ पथिकानांप्रश्रयंचदानं तंडुलशाकयोः ॥
एतेधर्माः प्रशस्ताहिवैशाखेमाधवप्रिये ॥ २१ ॥ तथाचविष्णोः कुसुमार्पणंहरेः पूजाचकालोचितपल्लवाद्यैः ॥ दध्यन्ननैवेद्यनिवेदनं
चसमस्तपापौघविनाशहेतुः ॥ २२ ॥

हुओंको पंखेसे हवा करना, भगवानूका सुगंधित कोमल पुष्पोंसे प्रतिदिन पूजन करना ॥ १९ ॥ प्रतिदिन फल, दही, अन्न, नैवेद्य, धूप, दीप करना, भोग लगाना, गौओंको कोमल २ घास देना, ब्राह्मणोंके चरण धोना ॥ २० ॥ गुड, सोंठ और आंवलोंका दान करना यात्रियोंकी सेवा करना, तंडुल और शाकका दान करना ये सब धर्म वैशाखमासमें उत्तम कहे हैं ॥ २१ ॥ विष्णु भगवानूके निमित्त फूल अर्पण करना

समयके अनुसार पत्रादिसे पूजा करना दही अन्न और नैवेद्यका निदवेन करना ये सब पापोंके समूहको नाश करनेवाले हैं ॥ २२ ॥ जो स्त्री ब्राह्मणके
बताये हुए माधवभगवान्‌का पूजन घर वा मन्दिरमें फूलोंसे न करै इसे पुत्र और सुखकी प्राप्ति नहीं होगी और उसकी आयु तथा पतिभी
नष्ट होजायगा ॥ २३ ॥ इस महीनामें धर्मके सेतु विष्णुभगवन् लक्ष्मी, मुनिगण और देवताओंको संग लेकर प्रजाकी परीक्षाके लिये घरघर जातेहैं, जो
मूढ इस समय इनका पूजन पुष्पादिसे न करै ॥२४॥ वह मूढात्मा रौरवनरकेमें पडताहै पीछे पांच बार राक्षसकी योनि पावैहै इस महीनामें भूखसे पीडि

नारीपुष्पैर्माधवंनार्चयेद्याद्विजाख्यातंमंदिरेवागृहेवा ॥ पुत्रंसौख्यंक्वापिनाप्नोतिहंतिचायुर्भर्तुःस्वात्मनोवामहात्मन् ॥ २३ ॥ रमासहा
येमाधवेमासिविष्णोःपरीक्षायैधर्मसेतोःप्रजानाम् ॥ गृहंयातेमुनिभिर्दैवतैश्चकालेपुष्पैर्नार्चयेद्यस्तुमूढः ॥२४॥ समूढात्मारौरवंप्राप्य
पश्चाद्यायाद्योनिंराक्षसींपंचवारम् ॥ जलंचान्नंसर्वदादेयमस्मिन्क्षुधार्तानांप्राणिनांप्राणहेतुः ॥ २५ ॥ तिर्यग्जंतुर्जायतेवार्यदानादन्ना
दानाज्जायतेवैपिशाचः ॥ अन्नादानेचानुभूतांकथांतेमयावक्ष्येचाद्भुतांभूमिपाल ॥ २६ ॥ रेवातीरेमत्पिताभूत्पिशाचः स्वमांसाशी
क्षुत्तृषाश्रांतगात्रः ॥ छायाहीनेशाल्मलीवृक्षमूलेह्यन्नाभावान्नष्टचैतन्यएषः ॥ २७॥

त प्राणियोंकी प्राणरक्षाके निमित्त जल और अन्नका अवश्य दान करै ॥ २५ ॥ जलका दान न करनेसे पशुपक्षीकी योनि मिलती है और अन्नका
दान न करनेसे पिशाच बनताहै अन्नका दान न करनेकी एक अद्भुत कथा हे राजा ! मैं तेरे सामने कहूंहूं यह मेरी अनुभव करीहुई है ॥ २६ ॥
रेवानदीके किनारेपर मेरा पिता पिशाच होगयाथा वह अपना मांस खाताथा, भूक और प्यासके मारे उसका शरीर शिथिल होगयाथा, छायाहीन

सैमरेंके वृक्षके पास अन्न न मिलनेके कारण उसकी चैतन्यता नष्ट होगईथी ॥ २७ ॥ पूर्वसंचित दुष्ट कर्मोंसे उसकी क्षुधा और तृषा बढगई तथा उसकी कंठनालीका छिद्र बहुतही सूक्ष्म होगयाथा और कंठके बीचमें मांस खडा होगायाथा जिससे ऐसी पीडा होतीथी जिसमें प्राण जानेका भय था ॥ २८ ॥ कुआ बावडी और तालावके शीतल जलको देखकर वह उसे हलाहल विष समझताथा, मैं मार्गमें गंगायात्राके निमित्त जारहाथा

क्षुधातृषाकर्मणायस्यबह्वीसूक्ष्मंछिद्रंकंठनालस्यचासीत ॥ मांसंचांतः कंठमध्येनिषण्णंकुर्यात्पीडांप्राणपर्यंतमेव ॥ २८ ॥ चलंदृष्ट्वा कालकूटप्रकल्पंकूपंशीतंवापिकासारसंस्थम् ॥ तस्यास्तीरेचागतंदैवयोगाद्गंगायात्राकारणान्मार्गमध्ये ॥ २९ ॥ दृष्ट्वाद्भुतंशाल्मली वृक्षमूलेतृड्वातृड्भक्षयंतंस्वमांसम् ॥ क्रोशंतंतंबहुधाशोच्यमानंक्षुधातृषाव्यथितंकर्मभिःस्वैः ॥ ३० ॥ समांहन्तुंप्राद्रवत्पापकर्मामां तेजसानिहतोदुद्रुवेच ॥ तंचाब्रवंकृपयाक्लिन्नचित्तोमाभैष्टत्वंह्यभयंमेहिदत्तम् ॥ ३१ ॥ कस्त्वंतातब्रूहिसद्योत्रहेतुंकृच्छ्रादस्मान्मोचये माविषीद ॥ इत्युक्तोमांप्राहपुत्रंत्वजानन्पुरानर्तेभूवराख्येपुरेच ॥ ३२ ॥

तब मैं दैवयोगसे रेवानदीके किनारेपर आगया वहां कैसा अद्भुत दृश्य देखा ॥ २९ ॥ कि शाल्मलीके वृक्षकी जडमें बैठाहुआ एक पिशाच अपना मांस खारहाहै और बुरीतरहसे प्यासा प्यासा चिल्लाताथा, क्षुधा और तृषासे व्यथित अपने कर्मोंके कारण शोचमें पडाहुआथा ॥ ३० ॥ वह पापी मुझे मारनेके लिये दौडा परन्तु मेरे तेजके मारे निहत होगया, मेरे हृदयमें दया उत्पन्न होआई तब मैंने उससे कहा डरैं मत ॥ ३१ ॥ तू कौन है, जल्दी

कह, मैं इस कष्टसे तुझे अभी छुडा दूंगा, रंज मत करै, जब मैंने ऐसे कही तब मुझे अपना पुत्र न जानकर कहनेलगा कि पहिले आनर्तदेशमें एक भूव राख्य नगर था ॥ ३२॥ मेरा नाम मैत्र था और मैं संकृति गोत्रमें उत्पन्न हुआथा, तप विद्या दान और यज्ञादिमें मेरी बडी निष्ठाथी, मैंने सम्पूर्ण विद्या पढीं और फिर पढाई, मैंने सम्पूर्ण तीर्थोंमें स्नान किये ॥ ३३ ॥ हे अंग ! मैंने भिक्षामात्र लोभके कारण वैशाखमें अन्नका दान नहीं कियाथा इससे मेरे विचारमें यही आता है कि इसी हेतुसे मुझे पिशाचकी योनि मिली है और कोई कारण नहीं है ॥ ३४ ॥ अब मेरे घरपर श्रुतदेवनाम मेरा पुत्र है जो

नाम्नामैत्रः संकृतेर्गोत्रजोहंतपोविद्यादानयज्ञादिनिष्ठः ॥ मयाधीताध्यापिताः सर्वविद्याः कृतोमयासर्वतीर्थावगाहः ॥ ३३ ॥ दत्तंनान्नंमासिवैशाखसंज्ञेलोभाद्भिक्षामात्रमप्यंगकाले ॥ शोचेचाहंप्राप्यपैशाचयोनिं नान्योहेतुः सत्यमेवोक्तमंग ॥ ३४ ॥ पुत्रोधुना वर्ततेमद्गृहेचभूरिख्यातिः श्रुतदेवाभिधानः ॥ वाच्यातस्मैमद्दशाचात्मजायवैशाखान्नादानतोभूत्पिशाचः ॥ ३५ ॥ दृष्टस्तीरेतेपि तानर्मदायानोर्ध्वंगतोवर्ततेवृक्षमूले ॥ खादन्मांसंस्वीयमेवातुखिद्यत्पितुर्मुक्त्यैमासिवैशाखसंज्ञे ॥ ३६ ॥ प्रातःस्नात्वापूजयित्वाच विष्णुंनिर्व्याजान्मांतर्पयित्वाजलैश्च ॥ देयंचान्नंद्विजवर्येगुणाढ्यंमुक्तोयोवैयातिविष्णोः पदंच ॥ ३७ ॥

बडा ख्यातिवान् है, उस मेरे पुत्रसे मेरी दशा कहदेना कि तेरा पिता अन्नदान न करनेसे पिशाच हुआहै ॥ ३५ ॥ नर्मदानदीके तीरपर वृक्षकी जडमें बैठाहै स्वर्गको नहीं गयाहै, बडा दुःखी है और अपने मांसका भक्षण करताहै, इससे पिताकी पिशाचयोनि छुडानेके लिये वैशाखमें ॥ ३६ ॥ प्रातःकाल स्नानकर विष्णुकी पूजा कर और भक्तिपूर्वक जलसे मेरा तर्पण करै फिर किसी श्रेष्ठ ब्राह्मणको अन्नका दान करै जिससे मैं विष्णुपदको प्राप्त होऊं॥ ३७॥

यह सब कथा मैंने तुम्हारे सामने कहीहै जो तुम मुझपर इतनी दया करोगे तौ तुह्मारा कल्याण होगा, ऐसी अपने पिताकी बात सुनकर ॥ ३८ ॥ मैं दुःखके मारे उसके पावोंपर बहुत देरतक लकडीकी तरह पडा रहा और वारंवार अपनी निंदाकर नेत्रोंमें आंसू भर कहनेलगा कि हे पिता ! मैंही तेरा पुत्रहूं दैवयोगसे यहां अगयाहूं ॥ ३९ ॥ ब्राह्मणोंमें कर्मसे भ्रष्ट कोई निन्दनीय नहीं हुआ जिससे पित्रीश्वरोंकी मोक्ष न हुईहो तूं अब यह कह कि

इत्थंचोक्तंत्वत्पुरस्ताद्वदेतिदयाचैषामत्कृतेनात्रशंका ॥ भद्रंभूयात्सर्वतोमंगलंतेश्रुत्वाचाहंभाषितंमेपितुश्च ॥ ३८ ॥ दुःखात्कायंदं डवत्पातयित्वाभृशार्तोहंपादयोभूरिकालम् ॥ निंदन्निंदन्भूयहंबाष्पनेत्रःपुत्रोहंतेतातदैवागतोहम् ॥ ३९ ॥ कर्मभ्रष्टोभूसुराणांविनिं द्योनाभूद्यस्मात्क्लेशमोक्षः पितॄणाम् ॥ आख्याहित्वंकर्मणाकेनमुक्तोभवितावैतत्करोमिद्विजेंद्र ॥ ४० ॥ ततः प्राहप्रीतसर्वांतरात्मा यात्रांकृत्वाशीघ्रमागत्यगेहम् ॥ प्रातेमासेमेषसंस्थेचभानौनिवेद्यान्नंविष्णवेत्वंगुणाढ्यम् ॥ ४१ ॥ दानंदेहिद्विजवर्येमहात्मँस्तस्मा न्मोक्षोभवितासान्वयस्य ॥ पित्रादिष्टः कृतयात्रः स्वगेहंप्राप्याकरंमाधवेचान्नदानम् ॥ ४२ ॥ तस्मान्मुक्तोमत्पितामांसमेत्ययानारू ढोह्यभिनंद्याशिषाच ॥ गतोलोकंश्रीपतेर्दुर्विभाव्यंयस्मिन्गतानन्निवर्ततिभूयः ॥ ४३ ॥

कौनसे कर्मसे तेरी मुक्ति होगी वही मैं करनेको तयार हूं ॥ ४० ॥ तब वह प्रसन्नहो कहनेलगा कि यात्रा करके शीघ्र घरमें आय मेषकी संक्रातिमें विष्णुभगवान्के निमित्त अन्न अर्पण करके ॥ ४१ ॥ किसी श्रेष्ठ ब्राह्मणको अन्नदान देना इससे सकुटुंब मेरी मुक्ति होजायगी, पिताकी आज्ञाके अनुसार तीर्थयात्रा करके घरमें आय वैशाखके महीनामें अन्नदान किया ॥ ४२ ॥ इससे मेरा पिता मुक्त होकर विमानपर चढ मुझे आशीर्वाद दे

विष्णुलोकको चलागया जहांके गये हुए फिर कोई नहीं आते हैं ॥ ४३ ॥ इससे अन्नदान सब शास्त्रोंमें धर्म्य कहाहै और हे राजन् ! अन्नदान सब धर्मोंका सारभूत है सो मैंने सामने कहा अब तेरी इच्छा और किस बातके सुननेकी है तू पूछ मैं तुझसे सत्य कहूंगा ॥ ४४ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदांबरीषसंवादे पिशाचमोक्षप्राप्तिर्नामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ तदनन्तर मैथिलने कहा हे ब्रह्मन् ! जलका दान न करनेसे इक्ष्वाकुका वंशधर तीन जन्मपर्य्यंत चातक होना और मेरे फिर घरमें गृहगोधिका होना ॥ १ ॥ बहुत योग्यही हुआ

तस्माद्दानंसर्वशास्त्रेषुचोक्तंतुभ्यंप्रोक्तंधर्मसारंसधर्म्यम् ॥ किमन्यत्तेश्रोतुमिच्छावदस्वश्रुत्वासर्वंतेवदामीतिसत्यम् ॥ ४४ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणेवैशाखमाहात्म्ये नारदांबरीषसंवादेपिशाचमोक्षप्राप्तिर्नामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ मैथिल उवाच ॥ ॥ ब्रह्मन्निक्ष्वाकुतनयोजलादानाच्चचातकः ॥ त्रिवारमभवत्पश्चान्मद्गृहेगोधिकातथा ॥ १ ॥ कर्मानुगुणमेतद्धियुक्तंतस्याकृतात्मनः ॥ सतामसेवनात्तस्यगृध्रत्वंसारमेयता ॥ २ ॥ सप्तवारमितिप्रोक्तंतन्मेभातिचनोचितम् ॥ संतोनदूषितास्तेनन तथाकृपणाअपि ॥ ३ ॥ तस्मादसेविनस्तस्यफलाभावोभवेद्ध्रुवम् ॥ नानार्थकरणाभावादिदंहिपरपीडनम् ॥ ४ ॥

क्योंकि वह सब उस अधर्मीके कर्मोंके अनुरूप हुआहै और साधु माहात्माओंकी सेवा न करनेसे उसने गिद्धकी योनि पाई ॥ २ ॥ परंतु आपने जो यह कहा कि इसे सात जन्मतक कुत्तेकी योनि मिली यह बात मुझे बहुत अनुचित प्रतीत होती है, इसने संतमहात्मोंको कष्ट नहीं दिया तथा कृपणोंकोभी दूषित नहीं किया ॥ ३ ॥ परन्तु इसने सेवा नहीं करी इससे निश्चय यह बात है कि उसे फल न मिलना चाहिये अनेक प्रकारके अर्थ

करनाही औरोंको कष्ट देनाहै ॥ ४ ॥ विना कारणही इसे कुयोनि क्यों मिली हे विप्रवर ! मैं आपका प्यारा शिष्य हूं मेरे इस संशयको आप दूर कर दीजिये ॥ ५ ॥ राजाके इस प्रश्नको सुनकर महायशस्वी श्रुतदेव धन्यधन्य कहकर कहनेको उद्यतहुये ॥६॥ हे राजन् ! हे पापरहित ! जो तुमने प्रश्न कियाहै मैं उसका समाधान करताहूं यही बात कैलासके शिखरपर शिवजीने पार्वतीसे कहीथी ॥ ७ ॥ संपूर्ण लोकोंको रचकर उनकी आमुष्कि और

अनिमित्तमिदंकस्मात्कुयोनित्वमवाप्तवान् ॥ तदेतत्संशयंछिंधिशिष्यस्यात्मप्रियस्यच ॥ ५ ॥ इतिराज्ञासुसंपृष्टः श्रुतदेवोमहायशाः ॥ साधुसाध्वितिसंभाष्यवचोव्याहर्तुमादधे ॥ ६ ॥ श्रुतदेवउवाच ॥ शृणुराजन्प्रवक्ष्यामियत्पृष्टंतुत्वयानघ ॥ शिवायैचशिवेनोक्तंकैलासशिखरेमले ॥ ७ ॥ सृष्ट्वेमान्सकलाँल्लोकान्पश्चात्तेषामवस्थितिम् ॥ आमुष्मिकीमैहिकींचद्विविधांपर्यकल्पयत् ॥ ८ ॥ हेतुत्रयंचप्रत्येकंहेतुस्थित्यैमहाप्रभुः ॥ जलसेवाचान्नसेवासेवाचैवौषधस्यच ॥ ९ ॥ यत्रएतेमहाभागह्यैहिकस्थितिहेतवः ॥ एवमामुष्मिकेराजंस्त्रयएवेरिताःश्रुतौ ॥ १० ॥ साधुसेवाविष्णुसेवासेवाधर्मपथस्यच ॥ पुरासंपादिताह्येतेपरलोकस्यहेतवः ॥ ११ ॥ गृहसंपादितंयद्वत्पाथेयंपद्धतौयथा ॥ ऐहिकाहेतवोराजन्सद्यःसंपादितार्थदाः ॥ १२ ॥

ऐहिक दो प्रकारकी स्थिति बनाई ॥८॥ हेतुकी स्थितिके निमित्त प्रत्येकके तीन तीन भेद मानेहैं, यथा जलसेवा अन्नसेवा और औषधसेवा ॥९॥ हे महाभाग ! ये तीनों ऐहिक अर्थात् इस लोककी स्थितिके हेतुहैं ऐसेही श्रुतियोंमें पारलौकिक स्थितिके तीन हेतु हैं ॥१०॥ साधुसेवा, विष्णुसेवा औरधर्मसेवा ये तीनों परलोककी स्थितिके हेतु हैं ॥११॥ जैसे घरमें इकट्ठाहुआ मार्गका व्यय मार्गमें काम देताहै वैसेही ऐहिक हेतुओंका करना तत्काल धनसंपत्तियों

को देताहै ॥ १२ ॥ किंच साधुमहात्माओंके दुःसह मनोरथभी सिद्ध होय जातेहैं परंतु वही किसी विशेष कारणसे अनर्थका कारण होजातेहैं ॥ १३॥ अप्रिय बातोंका कहनाभी दुःखका हेतु होजाताहै, यहां हम एक बहुत पुराना इतिहास वर्णन करै हैं ॥ १४॥ यह इतिहास पापनाशकहै और ऐसा अद्भुतहै कि श्रवण करनेसे रोमांच होआतेहैं, यज्ञदीक्षामें उपगत दक्षप्रजापति एक समय महादेवजीके बुलानेके लिये कैलासको गये उन्हे देखकर उसीकी भलाईकी इच्छासे महादेवजीनें

किंचेष्टमपिसाधूनांमनसोयदिदुःसहम् ॥ कुताश्चित्कारणाद्राजन्तच्चानर्थायकल्पते ॥ १३ ॥ अप्रियंकिमुवक्तव्यंदुःखहेतुरितिस्फुटम् ॥ अत्रैवोदाहरंतीमामितिहासंपुरातनम ॥ १४ ॥ पापघ्नंमहदाश्चर्यंशृण्वतांरोमहर्षणम् ॥ यज्ञदीक्षामुपगतःपुरादक्षःप्रजापतिः ॥ ॥ १५ ॥ आह्वानार्थंभूतपतेरगमद्रजताचलम् ॥ तंदृष्ट्वानोत्थितःशंभुस्तस्यैवहितकाम्यया ॥ १६ ॥ सर्वामरगुरुश्चाहंछंदोगम्यःसनातनः ॥ भृत्याह्येतेबलिहराश्चंद्रेंद्राद्याःसुरेश्वराः ॥ १७ ॥ स्वामीभृत्यायनोत्तिष्ठेत्स्वभार्यायैपतिस्तथा ॥ गुरुःशिष्यायनोत्तिष्ठेदितिशास्त्रविदांमतम् ॥ १८ ॥ नसंबंधोगुरुत्वेचकारणंत्वितिवैश्रुतिः ॥ बलंज्ञानंतपःशांतिर्यत्रचैवाधिकंभवेत् ॥ १९ ॥ सगुरुश्चेतरेषांचनीचाईयुश्चप्रेष्यताम् ॥ उत्तिष्ठंतिचस्वाम्याद्याभृत्यादीन्यदिचाग्रहात् ॥ २० ॥

उठकर आदर नहीं किया॥ १५॥ १६॥ मैं संपूर्ण देवाताओंका गुरु, वेदसे जाननेके योग्य सनातन हूं ये चन्द्रमा और इन्द्रादि सब देवाता यज्ञके भाग लेनेवाले भृत्य ॥ १७॥ स्वामी भृत्यके लिये अभ्युत्थान नहीं देताहै ऐसे स्त्री पतिहीके लिये और न गुरु शिष्यके लिये उठताहै यही शास्त्रवेत्ताओंका मतहै॥ १८॥ गुरुत्वमें संबंध कारण नहींहै यही श्रुतिका वाक्य है, जिसमें बल, दान, तप और शान्ति अधिक होतीहै वही अन्य प्राणियोंका गुरु है और नीचही भृत्य होतेहैं

जो स्वाम्यादि आग्रहसे भृत्यादिके लिये उठतेहैं ॥१९॥२०॥ उनका आयु, धन और यश तत्काल नष्ट होजातेहैं, इस लिये मुझको उठना उचित नहीं है यह मेरा प्यारा श्वशुर है॥२१॥ऐसा विचार करके दक्षप्रजापतिकी भलाईकेनिमित्त महादेवजी आसनसे न उठे जब प्रजापतिने देखा कि महादेवने उठकर मेरा आदर नहीं किया तब उसे बडा क्रोध आया ॥२२॥और अनेक प्रकारसे महादेवजीके आगेही निन्दा करने लगा कि अश्चर्य आश्चर्य इस अकृतात्मा

आयुर्वित्तंयशस्तेषांसद्योनश्यतिसंततिः ॥ तस्मादहंतुनोत्तिष्ठेप्रियोयंश्वशुरोमम ॥ २१ ॥ इतितस्य हितान्वेषीनोच्चचालासनाद्विभुः ॥ नोत्थितंतुमृडंदृष्ट्वाकुपितोभूत्प्रजापतिः ॥ २२ ॥ अनिंदद्बहुधातस्मैपुरतोगिरिजापतेः ॥ अहोदर्पमहोदर्पंदरिद्रस्याकृतात्मनः ॥ २३ ॥ यस्यवित्तंबहुवयोवृषश्चर्मावशेषितः ॥ अतएवकपालास्थिधरःपाखंडगोचरः ॥ २४ ॥ वृथाहंकारिणोदेवंकुतोदास्यतिमंगलम् ॥ लोकेकृत्येनकर्माणिशुचीनीतिविदोविदुः ॥ २५ ॥ धत्तेदरिद्रः शीतार्तः पवित्रंचगजाजिनम् ॥ वेश्मश्मशानंयस्यस्याद्भुजंगः किलभूषणम् ॥ २६ ॥ नधीरतापिचज्ञानंवृकात्तस्मात्पलायितः ॥ भूतप्रेतपिशाचादिदुर्जनैः संगतोनिशम् ॥ २७ ॥

दरिद्रीको बडा दर्प है॥२३॥बूढा बैल जिनपर केवल चर्महीं रहगयाहै यही इसका धन है कपालकी हड्डी धारण करैहै और अत्यंत पाखंडीहै ॥२४॥ ऐसे वृथा अहंकारीका भगवान् कैसे मंगल करेंगे यह कोई शुभकर्म नहीं करैहै और महा अपवित्रहै इस बातको सबही विद्वान् मनुष्य अच्छी तरह जनें हैं॥२५॥ दरिद्रके मारे शीतसे व्याकुल पवित्र हाथीके चर्मको ओढै है, श्मशानमें घर है और सर्पोंके आभूषण धारण कर रक्खे हैं ॥ २६ ॥ न इसके धीरजहै न

ज्ञानहै उस भस्मासुरसे दूर भागगयाहै रातदिन भूत प्रेत पिशाच संगमें ऐसे २ दुर्जन रहेहैं॥ २७ ॥इसके कुलका कुछ ठिकाना नहीं है और न साधुमहात्मा इसकी प्रशंसा करें हैं दुरात्मा नारदने पहिले वृथाही बडाई करी ॥ २८ ॥ इसीके प्रबोधसे मैंने अपनी कन्या सतीका विवाह इसके संग करदिया, यह भी पृथक् धर्मवाली होय गई है इसीके घरमें सुखपूर्वक वास करै ॥ २९ ॥ मैं इसकी कभी श्लाघा नहीं कर सकूं हूं, मेरी पुत्रीसेही मुझे कुछ प्रयोजन नहीं है जैसे कुह्मारका घडा चांडालके हाथमें जानेसे किसी कामका नहीं रहताहै ॥ ३० ॥ ऐसे विमूढात्मा दक्षने पार्वती और शंकरको निमंत्रण न दिया

नकुलंश्रूयतेक्वापिनासौवैसाधुसंमतः ॥ वृथाविश्रंभितः पूर्वंनारदेनदुरात्मना ॥ २८ ॥ येनाहंबोधितः प्रादांकन्यांचैतांसतींमम ॥ पृथग्धर्मगताचैषासुखंवसतुमद्गृहे ॥ २९ ॥ नास्माभिः श्लाघनीयोसौमत्सुतापिकथंचन ॥ यथाकुलालकलशश्चांडालस्यवशंगतः ॥ ॥ ३० ॥ इतिदक्षोविमूढात्माद्युमांनाहूयतंमृडम् ॥ बहुधातंविनिर्भर्त्स्यतूष्णीमेवगृहंययौ ॥ ३१ ॥ यज्ञवाटंततोगत्वाऋत्विग्भिर्मुनिभिः सह ॥ ईजेयज्ञविधानेननिंदन्नेवमहाप्रभुम् ॥ ३२ ॥ ब्रह्मविष्णूविहायैव सर्वेदेवाःसमागताः ॥ सिद्धचारणगंधर्वायक्षराक्षसकिंनराः ॥ ३३ ॥ तदादेवीसतीपुण्यास्त्रीचांचल्यात्प्रलोभिता ॥ उत्सुकाचोत्सवंद्रष्टुंबंधूंस्तत्रसमागतान् ॥ ३४ ॥

और अनेक प्रकारके कुवाक्योंको कहकर घरको चलागया ॥ ३१ ॥ तदनन्तर यज्ञस्थानमें जाकर ऋत्विक् और मुनियोंको संग ले विधिपूर्वक यज्ञ करने लगा और श्रीशंकरकी निन्दा करतारहा ॥ ३२ ॥ ब्रह्मा और विष्णुको छोडकर सिद्ध, चारण, गंधर्व, यक्ष, राक्षस और किन्नर आदि सब देवता यज्ञमें आये ॥ ३३ ॥ तब सतीको बडी उत्कंठा हुई कि, किसी प्रकारसे यज्ञका उत्सव देखूं और अपने कुटुंबियोंसे मिलूं ॥ ३४ ॥

स्त्रियोंके स्वभाव बडे चंचल होते हैं महादेवजीने कहा कि, तुम मत जाओ परन्तु उनने एकभी न मानी जानेकी मनमें ठान ली ॥ ३५ ॥ महादेवजी बोले हे वरवर्णिनि ! सभामें बैठकर वह मेरी सदा निन्दा करैहै सो आपसे न सही जायगी आप निश्चय शरीर त्याग देउगी ॥ ३६ ॥ घरकी इच्छासे मैंनेभी असह्य सहीहैं हे देवि ! जैसे मैंने किया है वह तुमसे न होसकैगा ॥३७॥ अतएव तुम अपने पिताके घर मत जाओ मुझे ऐसा मालूम होताहै कि

निवार्यमाणारुद्रेणतरलास्त्रीस्वभावतः ॥ प्रत्युक्तापिपुनश्चैवगंतव्यमितिनिश्चिता ॥ ३५ ॥ सनिंदतिसभामध्येसदामांवरवर्णिनि ॥ तच्चासह्यंचत्वंश्रुत्वाकायंसत्यंत्यजिष्यसि ॥ ३६ ॥ असह्यमपिसोढव्यंमयापिगृहमिच्छता ॥ मयायथाकृतंदेवितथात्वंनैववर्तसे ॥ ॥ ३७ ॥ तस्मान्मागच्छशालांवैनशुभंतुभवेद्ध्रुवम् ॥ इत्येवंबोधितादेवीचापल्यंपुनरागमत् ॥ ३८ ॥ निश्चक्रामसतीगेहादेकैव पादचारिणी ॥ तांदृष्ट्वावृषभस्तूष्णींपृष्ठेदेवीमुवाहसः ॥ ३९ ॥ कोटिशोभूतसंघाश्चह्यनुजग्मुःसतींतदा ॥ यज्ञवाटंतुसागत्वापत्नीशालांययौपुरा ॥ ४० ॥ तूष्णीमासन्सतींदृष्ट्वाखेदात्तस्माद्विनिर्गता ॥ पतिवाक्यंतुसंस्मृत्यजगामोत्तरवेदिकाम् ॥ ४१ ॥

वहां जानेसे आपका कल्याण नहीं है, इसप्रकार समझानेपरभी सतीको फिर चपलता हुई ॥ ३८ ॥ और अकेली ही घरसे निकलकर पैदल चलदी, ऐसे चुपचाप जातीहुई सतीको नंदियाने अपनी पीठपर बैठालिया ॥ ३९ ॥ और करोडों भूतादि महादेवजीके गण पीछे होलिये और यज्ञशालामें जायकर प्रथम महलके भीतर गई ॥ ४० ॥ परन्तु जब उससे कोई न बोला तब खेदित होयकर वहांसे बाहर चली आई और महादेवजीके वाक्यको

स्मरण कर वहां गई जहां यज्ञ होरहाथा॥ ४१ ॥दक्ष प्रजापति और सब सभाके लोग सतीको देखकर चुप रह गये कुछ न बोले, किसीने कुछभी न कहा तब सती वहां खडी रही और रुद्रकी आहुतितक पिताकी चेष्टाको देखती रही ॥ ४२ ॥ जब दक्षने रुद्रको छोडकर आहुती दी तब तो सतीकी आंखोंमें आंसू भरु आये और अकुलाकर कहने लगी जो मनुष्य बडोंकी अवज्ञा करें हैं उनका कल्याण नहीं होयहै ॥ ४३ ॥ जो सब संसारके रचनेवाले पालन करनेवाले, सबके प्रभु और अविनाशी हैं ऐसे रुद्रकी तुमने आहुति नहीं दी ॥ ४४ ॥ ये जितने बडे २

पितासभ्याश्चतांदृष्ट्वास्थितास्तूष्णींहताशिषः ॥ सारुद्राहुतिपर्यंतंपश्यंतीपितृचेष्टितम् ॥ ४२ ॥ त्यक्त्वारुद्रंचजुह्वंतमुवाचाश्रुकुलेक्षणा ॥ ॥ देव्युवाच ॥ ॥ महदुल्लंघनंपुंसांनप्रायःश्रेयसेभवेत् ॥ ४३ ॥ लोककर्तालोकभर्तासर्वेषांप्रभुरव्ययः ॥ एवंभूतस्यरुद्रस्यकथंनोदीयतेहविः ॥ ४४ ॥ जातांनकिंतेदुर्बुद्धिंहरंत्यन्येसमागताः ॥ नचेदृशामहात्मानःकिमेषांविमुखोविधिः ॥ ४५ ॥ इत्येवंभाषमाणांतांपूषादेवोजहासह ॥ श्मश्रूणांचालनंचक्रेभृगुर्हतशुभस्तथा ॥ ४६ ॥ भुजपादोरुकक्षाणांस्फालनंचक्रिरेपरे ॥ बहुधानिंदनंचक्रेतत्पिताहतभाग्यतः ॥ ४७ ॥

ऋषि मुनि और महात्मा इकठ्ठे हुएहैं इननेभी तेरी दुष्ट बुद्धि दूर नहीं करी, मालूम पडे है विधाता इनकेभी विमुखहै ॥ ४५ ॥ जब सती ऐसे कह रही थी तब पूषादेवता मुख फाडकर हँसने लगा और शुभकर्म जिसके नष्ट होगये और शुक्राचार्य डाढी और मूछोंको फडकाने लगे ॥ ४६ ॥ और बहुतसे भुजा, पांव, ऊरु और कक्षाओंको फडकाने लगे और सतीका पिता अभाग्यसे निन्दा करने लगा ॥ ४७ ॥

उसके वचनोंको सुनकर सतीका मन क्रोधसे आकुलित होगया,उस निन्दाके सुननेका प्रायश्चित्त करनेके लिये वह अपने देहको त्यागतीहुई ॥ ४८ ॥ सबके देखते बीचमें होमकी अग्निमें गिरपडी सतीके गिरतेही, बडा हाहाकार होनेलगा और महादेवजीके गण ॥ ४९ ॥ भागके शिवजीके पास पहुंचे और सब वृत्तान्त कह सुनाया यह सुनतेही शिवजीने सहसा उठकर कालांतकके समान क्रोधसे ॥ ५० ॥ जटा उखाडकर पृथ्वीपर देमारी तब बडा

तच्छ्रुत्वारुद्रभार्यासाकोपाकुलितमानसा॥ प्रायश्चित्तंश्रुतेःकर्तुंदेहंतत्याजसासती ॥ ४८ ॥ होमाग्नौवेदिकामध्येसर्वेषामेवपश्यताम् ॥ हाहाकारोमहानासीद्दुद्रुवुः प्रमथाद्भुतम् ॥ ४९ ॥ आचख्युर्देवदेवायवृत्तांतमखिलंतदा॥ तच्छ्रुत्वासहसोत्थायरुद्रः कालांतकोपमः॥ ॥ ५० ॥ जटामुत्पाट्यहस्तेनभूतलेतामताडयत् ॥ ततोभवन्महाकायोवीरभद्रोमहाबलः ॥ ५१ ॥ सहस्रबाहुरभवत्कालांतकसमप्रभः ॥ बद्धांजलिपुटोभूत्वाव्याजहारहरंतदा ॥ ५२ ॥ मत्सृष्टिस्तुयदर्थंतेतदर्थंमांनियोजय ॥ इत्युक्तः प्राहतंक्रुद्धोधूर्जटिस्तंपुरःस्थितम् ॥ ५३ ॥ हनत्वंनिंदकंदक्षंयदर्थेमत्प्रियाहता ॥ भूतसंघास्तुगच्छंतुसहैतेनमहाबलाः ॥ ५४ ॥

बलवान् बडी देहवाला वीरभद्र उत्पन्न हुआ ॥५१॥ उसके सहस्र भुजा थीं और उसका रूप यमराजके समान था वह वीरभद्र महादेवजीके सन्मुख हाथ जोडकर खडा होगया और कहने लगा ॥ ५२ ॥ हे प्रभो ! जिस कामके लिये तुमने मुझे उत्पन्न कियाहै वह काम बताइये, यह सुनके रुद्र भगवान् क्रोध करके अपने सन्मुख खडेहुए वीरभद्रसे बोले ॥५३॥ तू अभी जाकर मेरे निंदक दक्षका नाश करदे जिसके कारणसे मेरी प्रिया सतीका देह जातारहा और

बडे२बलवान् भूतगणोंको आज्ञा दी कि तुमभी इसके संग चले जाओ ॥ ५४ ॥ ऐसे महादेवजीकी आज्ञा पाय सबके सब यज्ञशालामें पहुंचे और देवता, असुर, मनुष्यआदि सब बडे २ वीरोंको मार गिराया ॥ ५५ ॥ पूषा दांत निकालकर हंसा था इससे उसके दांत और जटा उखाड डालीं तथा दुरात्मा भृगुकी डाढीमूंछ उखाड डालीं॥५६ ॥जिस जिसने जो जो अंग फडकायाथा उसका वही अंग वीरभद्रने उखाडकर फेंक दिया तदनन्तर

इत्यादिष्टाभगवताययुर्यज्ञसभांतदा ॥ जघ्नुः सर्वान्महावीरान्देवासुरनरादिकान् ॥ ५५ ॥ पूष्णश्चहसतोदंताञ्जटाभूश्चबभंजह ॥ श्मश्रूण्युत्पाटयांचक्रेभृगोस्तस्यदुरात्मनः ॥ ५६ ॥ यद्यदास्फालितपूर्वंतत्तच्चिच्छेदवीर्यवान् ॥ ततोदक्षशिरोहर्तुंबहूद्योगंचकारह ॥ ५७ ॥मुनिमंत्रप्रगुप्तंतुनैवकृंततितद्बलात् ॥ हरोज्ञात्वातुचिच्छेदस्वयमेत्यदुरात्मनः ॥ ५८ ॥ एवंमखगतान्हत्वासानुगः स्वालयंययौ ॥ हतावशिष्टाः केचित्तुब्रह्माणंशरणं ययुः ॥ ५९ ॥ तैरन्वितोययौब्रह्माकैलासंतुशिवालयम् ॥ ततोरुद्रंसांत्वयित्वावचोभिर्विविधैरपि ॥ ६० ॥

दक्षका शिर काटनेके लिये बडा उद्योग किया ॥ ५७ ॥ उसके शिरकी रक्षा भृगु अपने मंत्रके बलसे कर रहाथा इससे शिर नहीं कटता था तब रुद्रने स्वयं आकर उस दुरात्माका शिर काटकर अलग करदिया ॥ ५८ ॥ ऐसे जितने यज्ञमें आये थे सबका संहारकर अपने गणोंको संग ले कैलासको चले गये और जो मारनेसे बचे वे ब्रह्माजीकी शरणमें गये ॥ ५९ ॥ उन सबको संग लेकर ब्रह्माजी शिवजीके कैलासमें

पहुंचे और वहां जायके अनेक प्रकारके शांतिकारक वचन कहकर क्रोधको कम करते हुए ॥ ६० ॥ और महादेवजीको संग लेयकर यज्ञशालामें पहुंचे और जितने यज्ञमें मारेगयेथे उन सबको फिर जीवदान दिया ॥ ६१ ॥ सदाशिवने दक्षके धडपर बकराका शिर रखदिया जिससे आजतक शिवोपासक उनकी प्रसन्नताके लिये बबब करतेहैं, ऐसेही भृगुजीको बकरेकी डाढी दी ॥ ६२ ॥ पूषाको दांत

तेनैवसहितःप्रागाद्यज्ञवाटंमहाप्रभुः ॥ तेनैवोज्जीवयामाससर्वान्यज्ञसभागतान् ॥ ६१ ॥ ख्यात्यैप्रादादजमुखंदक्षस्यतुतदाशिवः ॥ अजश्मश्रूण्यदाच्छंभुर्भृगवेतुमहात्मने ॥ ६२ ॥ पूष्णश्चदंतान्नप्रादात्पिष्टादंचचकारह ॥ तदंगानांव्यतिकरंकेषांचिदपिवैशिवैः ॥६३॥ शिवमापुश्चतेसर्वेब्रह्मणाचाशिवेनच ॥ पुनःप्रवर्तितोयज्ञोयथापूर्वंमहात्मनः ॥ ६४ ॥ यज्ञांतेसर्वदेवाश्चजग्मुस्तेस्वंस्वमालयम् ॥ नैष्ठिकंब्रह्मचर्यंतुकृत्वारुद्रोमहत्तपाः ॥ ६५ ॥ तेपेगंगातटेरुद्रः पुन्नागतरुमूलगः ॥ दक्षात्मजासतीदेवीत्यक्तदेहापतिव्रता ॥ ६६ ॥

नहीं दिये और कहा कि यह अन्नको पीसकर खालिया करेगा ऐसे किसीका, किसीका किसीको अंग लगाकर सबके देह जोडदिये ॥ ६३ ॥ और ब्रह्माजी तथा शिवजीके द्वारा उन सबका कल्याण होगया और फिर पहिलेकी तरह यज्ञ करनेमें प्रवृत्तहुए ॥ ६४ ॥ यज्ञको पूरा कराके सब देवते अपने अपने स्थानोंको चलेगये और तपस्वियोंमें श्रेष्ठ शिवजी नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके ॥ ६५ ॥ गंगातटपर पुन्नागके वृक्षके नीचे

तप करनेलगे, अब दक्षकी पुत्री पतीव्रता सतीने जो अपना देह त्याग दियाथा ॥ ६६ ॥ उसने हिमाचलके घर उसकी स्त्री मेनकामें जन्म लिया और
उसीके घरमें उसका पालनपोषण होने लगा इतनेहीमें तारकासुरनामक एक बडा राक्षस उत्पन्नहुआ ॥६७॥ उसने घोर तप करके परमेष्ठी ब्रह्माको प्रसन्न
करलिया तब ब्रह्माजीने उसे यह वर देदिया कि तू देवता, राक्षस, मनुष्य वा नाग किसीसे न मारा जायगा ॥६८॥ किसी प्रकारके अयुध, किसी अस्त्र

जज्ञेहिमाद्रेर्मेनक्यांववृधेतस्यवेश्मनि ॥ एतस्मिन्नेवकालेतुतारकाख्योमहासुरः ॥६७॥ सुतीव्रतपसाराध्यब्रह्माणंपरमेष्ठिनम् ॥अवध्य
त्वंवरंवव्रेदेवासुरनरोरगैः ॥ ६८ ॥ आयुधैरस्त्रसंघैश्चसर्वैरेवमहाबलैः ॥ रुद्रपुत्रंविनादैत्योह्यवध्यःसकलैरपि ॥ ६९ ॥ इतितस्मैवरंप्रा
दाद्ब्रह्मालोकपितामहः ॥ अस्त्रीकत्वादपुत्रत्वाद्रुद्रस्येतितथास्त्विति ॥ ७० ॥ वरंगृहीत्वास्वगृहंप्राप्यलोकान्बबाधह ॥ दासादेवामा
र्जनादौदास्योदेव्यश्चतद्गृहे ॥ ७१ ॥ ततस्तत्पीडितादेवाब्रह्माणंशरणंययुः ॥ तैः पीडांवर्णितांश्रुत्वावेधाःप्राहसुरानिदम् ॥ ७२ ॥

शस्त्रोंसे तू न मरैगा किंतु जब रुद्र भगवान्का महाबलवान् पुत्र होगा वह तुझे मारैगा ॥६९॥ऐसे लोकपितामह ब्रह्माने उसे वर दिया तब उसने सोचा कि
महादेवजीके न स्त्री है, न पुत्र है, वह मुझे कैसे मारैगा यह सोच वह राक्षस बोला तथास्तु ॥ ७० ॥ ऐसे वर पायकर अपने घर जाय लोकोंको सताने
लगा उसने सब देवताओंको दास करलिया और देवताओंकी स्त्री उसे घरमें दासी बनकर बुहारी दैने लगीं॥ ७१ ॥ जब उसने देवताओंको बहुत सताया तब

वे ब्रह्माजीकी शरण गये व्यथाको सुनकर ब्रह्माजी देवताओंसे यह कहनेलगे ॥ ७२ ॥ देवताओ वर देते समय मैंने यह कहाथा कि विन
शिवजीके पुत्रके तेरा वध कोई न कर सकैगा सो विना शिवजीके पुत्रके उसका वध असंभव है, सो एक उपाय करो ॥ ७३ ॥ रुद्रभगवान्‌की
पत्नी सतीने पहिले अपने पिताके यज्ञमें अपना देह त्याग दियाथा उसने हिमाचलके घर जन्मलियाहै और पार्वती उसका नाम है ॥ ७४ ॥ और
रुद्रभगवान् हिमाचलकी शिखरपर घोर तपमें लवलीन होरहे हैं सो लोकेश्वर भगवान् रुद्रसे पार्वतीका पाणिग्रहण करा देना चाहिये ॥ ७५ ॥ तब

वरप्रदानकालेहंरुद्रपुत्रंविनासुराः ॥ नान्यैर्वध्यइतिप्रादांवरंतस्मैदुरात्मने ॥ ७३ ॥ पुरासतीरुद्रपत्नीसत्रेत्यक्तकलेवरा ॥ जाताहिम
वतःपुत्रीपार्वतीतिचयांविदुः ॥ ७४ ॥ रुद्रोहिमवतःपृष्ठेतपश्चरतिदुश्चरम् ॥ योजयध्वंचपार्वत्यारुद्रंलोकेश्वरंप्रभुम् ॥ ७५ ॥ पुनर्देवेन्द्र
सदनेसंगतैरमरेश्वरैः ॥ धिषणेनापिसंमंत्र्यदेवेंद्रःपाकशासनः ॥ ७६ ॥ सस्मारचसकार्यार्थंनारदंस्मरमेवच ॥ तत्रागतौततस्तौतुबल
भिद्वाक्यमब्रवीत् ॥ ७७ ॥ हिमवंतंभवान्गत्वावचसातन्निबोधय ॥ पुत्रीतवप्राक्दक्षस्यहरपत्नीसुतासती ॥ ७८ ॥ तपश्चरतितेशृंगे
वियुक्तोदक्षकन्यया ॥ मृडस्तस्यसपर्यायैविनियोजयतत्प्रियाम् ॥ ७९ ॥

सब देवता इन्द्रके संग अमरावती पुरीमें गये और वहां देवताओंके गुरु बृहस्पतिजीसे सलाह मिलाई तब इन्द्रने ॥ ७६ ॥ अपने कार्यकी सिद्धिके
निमित्त नारद और कामदेवको बुलाया जब वे दोनों आये तब इन्द्र यह कहने लगा ॥ ७७ ॥ हे नारद ! तुम हिमाचलके घर जाय यह समझा
आओ कि पूर्वजन्ममें दक्षकी पुत्री और शंकरकी पत्नीही तेरी पुत्री हुई है ॥ ७८ ॥ और दक्षकी कन्याके वियोगसे महादेवजी तेरी शिखरपर तप

कररहे हैं सो उनकी सेवाके लिये उनकी प्यारी पत्नीको नियुक्त कर ॥ ७९ ॥ तेरी पुत्री उन्हीकी पत्नी होगी और वह उसके पति होंगे इन्द्रकी आज्ञाको सुन नारदजी उसकी बात अंगीकारकर ॥ ८० ॥ जैसे इन्द्रने कहाथा वैसेही करतेहुए पीछे कामदेवको बुलाकर इन्द्रने यह कहा ॥ ८१ ॥ सब देवताओं तथा महादेवजीके हितके लिये वसंतऋतुको अपने संग लेयकर तू रुद्रभगवान्‌के तपोवनमें जा ॥ ८२ ॥ वहां जाकर तू चारों ओर

तस्यैवपत्नीभवितासएवभवितापतिः॥इत्यादिष्टोमघोनाचनारदोपेत्यतंगिरिम् ॥ ८० ॥ तथैवकारयामासदेवेंद्रेणोदितंयथा ॥ पश्चात्कामंसमाहूयमघवानिदमाहच ॥ ८१ ॥ देवानांचहितार्थायतथामृडहितायच॥ वसंतेनसमायुक्तोगत्वारुद्रतपोवनम् ॥ ८२ ॥ गुणान्विजृंभयित्वातुवासंतान्हृच्छयावहान् ॥ यदासन्निहितादेवीपार्वतीतुमृडस्यच ॥ ८३ ॥ तदाप्रयुज्यत्वंबाणान्मोहयस्वमहाप्रभुम् ॥ तयोस्तुसंगमेजातेकार्यंनोद्धाभविष्यति ॥ ८४ ॥ इत्यादिष्टःस्मरस्तूर्णंप्रतस्थेबाढमित्यथ ॥ सवसंतःसरतिकःसानुगस्तद्वनंययौ ॥८५॥ अकालेतुवसंततुंजृंभयित्वास्वशक्तितः ॥ तद्वनेसर्वतोरम्येमंदानिलनिषेविते ॥ ८६ ॥

मनको मोहित करनेवाले वसंतऋतु गुणोंका विस्तार कर और जब पार्वतीदेवी महादेवजीके पास पहुंच जाय तब ॥ ८३ ॥ धनुषपर बाण चढायकर ऐसे मार कि–महादेवजी मोहित होजांय उनका संगम होनेपर कार्य अवश्य होजायगा ॥ ८४ ॥ यह आज्ञा पानेपर कामदेव 'जो आज्ञा' कहकर वसंतऋतु, अपनी स्त्री रति और सब अनुचरोंको संग लेकर उस ओर शीघ्रही चलागया ॥ ८५ ॥ अपनी शक्तिसे असमयमें वसंतऋतु उत्पन्न करदीनी

चारोंओरसे वनकी शोभा अपूर्व होयगई शीतल मंद सुगंधित पवन चलनेलगी ॥ ८६ ॥ कदाचित् देवदेव महादेवभी पार्वतीकी सेवासे प्रसन्न होयकर गोदीमें बैठाय कुछ कहना प्रारम्भ करतेहुए ॥ ८७॥ तब कामदेवने निश्चय कर लिया कि, प्राणप्रियाके संगमका यही समय है सोही उत्तम धनुषको उठा यकर महादेवजीकी पीठके ओर चलागया ॥८८॥ तथा वृक्षकी आड बैठ एक बाण तौ छोड दिया और दूसरा बाणभी चढाकर चलानेका प्रयत्न कर

कदाचिद्देवदेवोपिपार्वत्याश्चसपर्यया ॥ प्रीतः स्वांकंसमारोप्यकिंचिद्व्याहर्तुमारभत् ॥ ८७ ॥ प्राणप्रियासंगमस्यकालोयमितिनि श्चितः ॥ पेशलंधनुरादायसतस्थौहरपृष्ठतः ॥ ८८ ॥ कृत्वाजवनिकांवृक्षंबाणमेकंमुमोचह ॥ द्वितीयमपिसंधायचक्रेमोक्तुंमहोद्य मम् ॥ ८९ ॥ अथक्षुब्धमनाभूत्वामृडश्चिंतामवापह ॥ नमेमनश्चलंक्वापिकेनवाकश्मलीकृतम् ॥ ९० ॥ इतिचिंताकुलोवामेपार्श्वे कामंददर्शह ॥ क्रुद्धोन्मील्यललाटाक्षंस्वांकादेवीमपास्यच ॥ ९१ ॥ तस्याक्षणःसमभूदग्निस्तीक्ष्णोलोकविभीषणः ॥ तेनदग्धो भवत्सद्योमन्मथः सशरासनः ॥ ९२ ॥

ताही था ॥ ८९ ॥ कि महादेवजीका मन विकारयुक्त होगया और चिंता करनेलगे कि, मेरा मन तौ कभी चलायमान होता नहींथा ऐसा विकारयुक्त किसने करदिया ॥ ९० ॥ ऐसे चिंतामें व्याकुल होकर इधर उधर देखनेलगे सोई बाईं ओर कामदेव दिखाईपडा और क्रोधसे अपने ललाटस्थ तीसरे नेत्रको खोलकर गोदीसे पार्वतीको दूर करके ॥ ९१ ॥ उस नेत्रसे ऐसी तीक्ष्ण अग्नि प्रकट की कि, जिससे सब संसार भयभीत होगया और

उस अग्निसे धनुष बाण समेत कामदेव भस्म होगया ॥ ९२ ॥ और अपने कार्यकी सिद्धि समझकर सब देवता भागगये तथा वसंत और रतिभी अपने दंडकी शंका करके भागगये ॥ ९३ ॥ पार्वतीभी डरके मारे आंख बंद करके दूर हटगई और स्त्रीकी निकटता छोडनेके लिये महादेवभी अन्तर्धान होगये ॥ ९४ ॥ महादेवजीके हितकी इच्छा करनेवाले देवताओंकोही कुछ फलकी सिद्धि न हुई और अनर्थ हुआ फिर जो

कार्यसिद्धिंचपश्यंतोदुद्रुवुश्चामरादिवम् ॥ शंकमानौस्वदंडंचवसंतोरतिरेवच ॥ ९३ ॥ निमील्यलोचनेभीतादेवीदूरंप्रदुद्रुवे ॥ सन्निधानंस्त्रियोहतुंमृडोप्यंतरधीयत ॥ ९४ ॥ रुद्रस्येष्टंप्रकुर्वाणोदेवश्चमनसोहितम् ॥ लेभेनार्थमनिर्वृत्तंविप्रियंकुर्वतस्तुकिम् ॥ ९५ ॥ तस्मादिक्ष्वाकुतनयःसाधूनामप्रियःसदा ॥ तस्मादात्महितांसेवांनाकरोन्मंदधीःसताम् ॥ ९६ ॥ अनुभूतंमहद्दुःखंतस्माद्दुर्योनिरेवच ॥ तस्मात्कुर्यात्तुसाधूनांसेवांसर्वार्थसाधिनीम् ॥ ९७ ॥ रुद्रस्याप्रियकारित्वात्स्मरोभाविनिजन्मनि ॥ दुःखंतुबहुलंलेभेजन्मकालेमहाप्रभुः ॥ ९८ ॥

साधुओंके संगमें दुष्टता करें हैं उनका तब कहनाही क्या है ॥ ९५ ॥ इसीसे वह इक्ष्वाकुका पुत्र साधुओंका सदा अप्रिय था और वह कुबुद्धि साधुओंकी अच्छीतरह सेवा नहीं किया करताथा ॥ ९६ ॥ इसी कारणसे उसने बडे बडे दुःख भोगे और अनेक खोटी योनिमें जन्म लिया इसलिये संपूर्ण अर्थोंकी सिद्धिके लिये साधुओंकी सेवा अवश्यही करना चाहिये ॥ ९७ ॥ देखो रुद्रका अप्रिय करनेसे कामदेवने

भविष्यत् जन्ममें बडे २ दुःख उठाये ॥ ९८ ॥ जो रातदिन इस पुण्य चारित्ररूप पुरातन इतिहासको सुनते हैं वे जन्म, मृत्यु, बुढापा आदिसे छूट जाते हैं इसमें संदेह नहीं है ॥ ९९ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदांबरीषसंवादे कामदहनोनाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ मैथिल पूछने लगा कि हे विभो ! जब कामदेव जलगया तब उसकी उत्पत्ति किससे हुई और कर्मवशात् उसे कौन कौनसे दुःख भोगने पडे ॥ १ ॥ हे ब्रह्मन् ! मुझे इसबातके सुननेकी बडीही अभिलाषा है यह कहकर मेरा संदेह मिटाइये यह सुनकर श्रुतदेवजी कहने लगे कि

इतिहासमिमंपुण्यंयेशृण्वंतिदिवानिशम् ॥ जन्ममृत्युजरादिभ्योमुच्यंतेनात्रसंशयः ॥ ९९ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेवैशाखमाहात्म्येनारदांबरीषसंवादेकामदहनोनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ मैथिलउवाच ॥ तस्यदग्धस्यकामस्यकस्माज्जन्माभवद्विभो ॥ किंदुःखमभवत्तस्मिन्कर्मणःसहलंघनात् ॥ एतदाचक्ष्वमेब्रह्मञ्छ्रोतुंकोतूहलंहिमे ॥१॥ श्रुतदेवउवाच ॥ ॥ कुमारजन्मवक्ष्यामिश्रवणात्पापनाशनम् ॥ २ ॥ यशस्यंपुत्रदंधर्म्यंसर्वरोगविनाशनम् ॥ शंभुनातुहतेकामेतत्पत्नीरतिसंज्ञका ॥ ३ ॥ मुमोहपुरतोदृष्ट्वापतिंभस्मावशेषितम् ॥ जातसंज्ञामुहूर्तेनविललापाहचित्रधा ॥ ४ ॥

मैं स्वामिकार्तिकके जन्मकी कथा कहताहूं, इसके सुननेसे सब पाप नष्ट होजाते हैं ॥ २ ॥ यह कथा यशको बढानेवाली, पुत्र देनेवाली, धर्म करनेवाली और संपूर्ण रोगोंको नाश करनेवाली है हे राजन् ! जब महादेवजीने कामदेवको भस्म करदिया तब कामदेवकी स्त्री रति अपने सामने पतिको भस्मरूप पडा हुआ देखकर शोकसे मूर्च्छित होगई जब दो घडी पीछे चेतमें आई तब अनेक प्रकारके विलाप करने लगी ॥ ३ ॥ ४ ॥

यद्विलापाद्वनंवापिसमदुःखमभूत्तदा ॥ तच्चिताग्नौस्वकायंतुत्यक्तुकामाचमाधवम् ॥ ५ ॥ पत्युःसखायंसस्मारकर्तुंतात्कालिकीं क्रियाम् ॥ सआगतश्चितिंकर्तुंवीरपत्न्यामहाप्रभुः ॥ ६ ॥ सतुत्रस्तःसखींदृष्ट्वाक्षणंमूर्च्छापरोऽभवत् ॥ रतिंतुसांत्वयामाससांत्वैर्बहुविधैरपि ॥ ७ ॥ पुत्रतुल्योस्मितेभद्रेस्थितेमयिचनार्हसि ॥ कायंत्यक्तुंधर्महेतुमित्याद्यैर्बहुधापिसा ॥ ८ ॥ नैवस्थातुंमनश्चक्रेतेनसंस्तंभितारतिः ॥ दृष्ट्वादार्ढ्यंवसंतोपिचितिंचक्रेसरित्तटे ॥ ९ ॥ सावगाह्यद्युनद्यांचकृत्वाकार्याणिसर्वशः ॥ सन्नियम्यैंद्रियग्रामंनिवेश्यात्मनिवैमनः ॥ १० ॥ चितिमारोढुमारेभेततोजाताऽशरीरवाक् ॥ माप्रवेशयकल्याणिवह्निंपतिपरायणे ॥ ११ ॥

तब उसके विलापको सुनकर वह तपोवन दुःखमय होगया और रतिने विचार किया कि मैंभी अग्निमें प्रवेशकर शरीरका परित्याग करदूं यह विचारकर उसने अपने पतिके सखा वसंतको उस समयकी क्रिया करनेके लिये बुलाया, ऐसे जब वह वीरपत्नी चिता बना रही थी तब वहभी आय पहुँचा ॥ ५ ॥ ६ ॥ वहभी रतिको देख डरके मारे क्षणभरको मूर्च्छित होगया, फिर अनेक प्रकारके वाक्य कहकर रतिको समझाने लगा ॥ ७ ॥ और बोला हे भद्रे ! मैं तो तेरे पुत्रके समान हूं मेरे होते तुझे यह कर्म करना अनुचितहै शरीरका त्यागना अथवा आत्मघात करना धर्मका हेतु नहीं है ऐसे जब बहुत प्रकारसे समझानेपरभी ॥ ८ ॥ रतिने अपना देह रखना न विचारा तब उसकी दृढताको देखकर वसंतने नदीके तटपर चिता बनाई ॥ ९ ॥ वहभी गंगामें स्नानकर संपूर्ण क्रियाकर्मसे निश्चिन्त हो सब इन्द्रियोंको रोक और मनको आत्मामें प्रवेश कर ॥ १० ॥ चितापर चढनेको उद्यत हुई तबही आकाशवाणी

भई कि हे कल्याणि ! हे पतिमें अत्यंत प्रेम रखनेवाली ! तू चितामें प्रवेश मत करै ॥ ११ ॥ तेरा पति महादेवजीसे और यदुवंशी कृष्णभगवान्‌से पैदा होगा ऐसे क्रमसे दो जन्म होंयगे तब दूसरे जन्ममें ॥ १२ ॥ श्रीकृष्णसे रुक्मिणीके गर्भमें तेरा पति होयगा उसका नाम प्रद्युम्न होगा तू ब्रह्माके शापसे शंबरके घर निवास करैगी ॥ १३ ॥ वहीं प्रद्युम्ननामक तेरे पतिसे तेरा समागम होयगा ऐसे कहकर आकाशवाणी अदृष्ट होयगई ॥ १४ ॥ जब रतिने यह बात सुनी तब मरनेके लिये उद्यत भई रतिने चितामें प्रवेश न किया. पीछे जिनके स्वार्थसिद्धिके लिये महादेवजी द्वारा कामदेव

भविष्यति चतेपत्युर्हराद्विष्णोश्चयादवात् ॥ जन्मद्वयंक्रमेणैवतत्रचोत्तरजन्मनि ॥ १२ ॥ भैष्म्यांकृष्णान्महाविष्णोःप्रद्युम्नाख्योभविष्यति ॥ वसिष्यसित्वंचशापाद्ब्रह्मणःशंबरालये ॥ १३ ॥ प्रद्युम्नाख्येनतेपत्यासंगतिश्चभविष्यति ॥ इत्युक्त्वाविरराामाथवाणीचाकाशगोचरा ॥ १४ ॥ श्रुत्वातांतुनिवृत्ताभून्मरणेकृतनिश्चया ॥ ततोदेवाःसमाजग्मुःस्वार्थेकामेहतेहरात् ॥ १५ ॥ रत्याहृष्टंप्रकुर्वाणागुर्विंद्राग्निपुरोगमाः ॥ तांतेनिवर्तयामासुर्वरेणमहतासतीम् ॥ १६ ॥ अनंगोपिभवेत्सांगोमृतएवाक्षिगोभवेत् ॥ इतितांतु विनिर्वर्त्य धर्मंचोपदिदेशिरे ॥१७॥ पूर्वकल्पेत्वयंराजासुंदराख्योमहाप्रभुः ॥ त्वमेवपत्नीतत्रापिरजःसंकरकारिणी ॥ १८ ॥

भस्म होगयाथा वे सब देवता बृहस्पति, इन्द्र और अग्निको आगे करके रतिसे अदृष्ट होय कहनेलगे और बडाभारी वरदान देयकर उसकी शान्ति करी ॥ १५ ॥ १६ ॥ और कहनेलगे हे कामप्रिये ! अबसे तेरा पति अनंग कहावेगा और अंगवालेकी तरह मराहुआभी दिखाई देयगा ऐसे अनेक प्रकारसे समझाय बुझाय धर्मका उपदेश करनेलगे ॥ १७ ॥ कि यह तेरा पति पूर्वकल्पमें सुन्दरनाम राजा होताहुआ उस जन्ममेंभी तूही इसकी

पत्नी रजसंकरकारिणी होती हुई ॥१८॥ इसीसे यह तेरी दशाहुई अब तू एक काम कर कि वैशाखमें मन्दाकिनी नदीमें प्रातःकाल स्नानकर ॥ १९ ॥ और मधुसूदन भवान्‌का पूजन कर उनकी दिव्यकथाको सुन और हे भामिनी ! तू अशून्यशयन नाम व्रतका प्रारंभ कर ॥ २० ॥ हे भद्रे ! वैशाखमें इस धर्मके करनेसे और इस व्रतका अनुष्ठान करनेसे निश्चयही तेरा पति तुझे मिलजायगा इसमें संशय मत समझै ॥ २१ ॥ ऐसे रतिको वर देकर

तेनेयंचदशाभूत्तेकुर्विदानींचनिष्कृतिम् ॥ मंदाकिन्यांतुवैशाखेप्रातःस्नानंतदाकुरु ॥ १९ ॥ मधुसूदनमभ्यर्च्यकथांदिव्यांतथाशृणु ॥ अशून्यशयनंनामव्रतमारभभामिनि ॥ २० ॥ धर्मेणानेनतेभद्रेव्रतेनापिचमाधवे ॥ नूनंतेभवितापत्युरुपलब्धिर्नसंशयः ॥ २१ ॥ इतितस्यैवरंदत्वादेवाजग्मुर्यथागताः ॥ ततःकृच्छ्रान्निवृत्तासादेवीकामवतीतथा ॥ २२ ॥ गंगावगाहनंचक्रेमेषसंस्थेदिवाकरे ॥ अशून्यशयनंनामव्रतंचापिमहामनाः ॥ २३ ॥ तेनपुण्यप्रभावेनसद्यः कामोक्षिगोचरः ॥ अभूत्तस्यैमहाराजलोकेचावार्यवीर्यवान् ॥ ॥ २४ ॥ पूर्वकल्पेप्ययमपिराजाधर्मपरायणः ॥ वैशाखोक्तान्महाधर्मान्नाकरोत्तेनवैस्मरः ॥ २५ ॥

सब देवता अपने अपने स्थानको चलेगये और कामदेवकी स्त्रीभी उस क्लेशसे निवृत्त होय ॥ २२ ॥ मेषकी संक्रान्तिमें गंगास्नान कर बडे उत्कृष्ट मनसे अशून्यशयन व्रतको धारण करतीहुई ॥२३॥ इस व्रतके पुण्यके प्रभावसे तत्काल कामदेव उसके दृष्टिगत होगया यह ऐसा पराक्रमी है कि कोई भी इसके पराक्रमको नहीं रोक सकताहै ॥ २४ ॥ पूर्वकल्पमेंभी यह बडा धर्मपरायण राजा था इसने वैशाखमासमें कर्त्तव्य धर्म नहीं किये इसी

हेतुसे ॥ २५ ॥ कामदेव यद्यपि परमात्माका पुत्र था तौभी अंगहीन होताहुआ यह सब वैशाखमें मेषकी संक्रान्तिको वृथा खोनेका फल है ॥ २६॥ सो देवताओंकोभी भोगना पडैहै मनुष्योंका तौ कहनाही क्या है, जब महादेवजी अन्तर्धान होयगये तब पार्वतीकी आशा निराशा होगई ॥ २७ ॥ ऐसे पार्वती चुप चाप खडी रहगई और नहीं जानती भई कि क्या करूं, पार्वतीकी ऐसी दशा देख दोनों हाथोंसे गले लगाय हिमाचल अपनी पुत्रीको घर लेगया ॥ २८ ॥ और पार्वती भगवान् महादेवजीके रूप और उदारतादि गुणोंको देखकर ऐसी मुग्ध होगईथी कि उसने यह बात मनमें निश्चय

देहहानिंप्रपेदेसौपुत्रोपिपरमात्मनः ॥ वृथानीतेतुवैशाखेमेषसंस्थेदिवाकरे ॥ २६ ॥ अवस्थेयंचदेवानांमनुष्याणांतुकाकथा ॥ त्र्यं बकेंतर्हितेपश्चान्निराशागिरिकन्यका ॥ २७ ॥ तूष्णींस्थितांतदाभ्रांतांतांदृष्ट्वाहिमवान्गिरिः ॥ चकितःस्वगृहंनिन्येदोर्भ्यांतांपरि रभ्यच ॥२८॥ रूपौदार्यगुणान्दृष्ट्वाहरस्यैवमाहात्मनः ॥ सएवमेपतिर्भूयादितितन्निष्ठमानसा ॥ २९ ॥ गंगोपकूलमापेदेतपस्त प्तुंधृतव्रता ॥ निवारितापिसादेवीपित्रामात्रास्वकैर्जनैः ॥ ३० ॥ अर्चयंतीमहालिंगंनिराहाराजटाधरा ॥ दिव्यवर्षसहस्रांतेप्रत्यक्षोभू न्महेश्वरः ॥ ३१ ॥ भूत्वावर्ण्यपिसायाह्ने पर्णशालामुखेविभुः ॥ स्वनिष्ठमनसोदाढ्यंवाक्यैर्नानाविधैरपि ॥ ३२ ॥

ठानलीथी कि शंकरही मेरे पति होंगे ॥ २९ ॥ ऐसी दृढ व्रत धारणकर शंकरमें मन लगाय गंगाके तीरपर जाय तप करनेलगी माता पिता तथा कुटुम्बके लोगोंने बहुत समझाई पर एक न मानी ॥ ३० ॥ अन्न खाना छोड दिया बडी बडी जटा बढगई ऐसे सहस्र वर्ष पर्य्यन्त महालिंगका पूजन करती भई तब महादेवजी ॥ ३१ ॥ सायंकालके समय ब्रह्मचारीका वेष धारणकर उसके सामने पर्णनिर्मित कुटीके पास आये और अनेक

प्रकारके वाक्योंसे परीक्षा करने लगे कि इसका मन मुझमें दृढ है वा नहीं ॥ ३२ ॥ यह सब जानकर बोले हे भद्रे ! जो तेरी इच्छा होय सोई वर मांग तब वह वरानना बोली मैं यह वरमांगूं हूं कि हे रुद्र ! तुम मेरे पति होउ ॥ ३३ ॥ तथास्तु ऐसेही होय यह वर देयकर सप्तऋषियोंको बुलाये वे सब हाथ जोडके आगे आय खडे हुए ॥ ३४ ॥ तब ऋषियोंको आज्ञा देकर कहा ।कि तुम कन्याके पूछनेके निमित्त हिमालयको जाओ ऐसे भगवानूकी आज्ञा पाय कन्याके लिये हिमाचलके घर ॥ ३५॥ आकाशमार्ग होय कर चले जिनके चलनेसे दशों दिशा प्रकाशित होतीभईं, इन ब्रह्मवेत्ता सातों

ज्ञात्वावरादरंभद्रेवरयेतिमहाप्रभुः ॥ सावव्रेथपतिंरुद्रंत्वंभवेतिवरानना ॥ ३३ ॥ सतथैववरंदत्वाऋषीन्सस्मारसप्तच ॥ आजग्मुस्तेपिमुनयः स्थिताःप्रांजलयःपुरः ॥ ३४ ॥ ऋषीणांज्ञापयामासकन्यांप्रष्टुंहिमालयम् ॥ तथादिष्टाभगवताकन्यार्थंहिमवद्गृहम् ॥ प्रापुर्विहायसासर्वेद्योतयंतोदिशोदश॥ ३५ ॥ प्रत्युज्जगामसगिरिःसप्तैतान्ब्रह्मवित्तमान् ॥ ३६ ॥ संपूज्यविधिवत्सर्वान्सुखासीनानपृच्छत ॥ धन्योस्मिकृतकृत्योस्मियद्भवंतोगृहागताः ॥ ३७ ॥ भवदागमनं मन्येममजन्मफलंत्विति ॥ नकृत्यंविद्यतेस्माभिः पूर्णार्थानांमहात्मनाम् ॥ ३८ ॥ तथापिब्रूतकार्यंवोयत्कर्तव्यंमयाधुना ॥ इत्युक्तास्तेतथाप्रोचुर्हिमवंतंमहागिरिम् ॥ ३९ ॥

ऋषीनको आते देख हिमाचल उठके आदरपूर्वक ले आये ॥ ३६ ॥ फिर विधिवत् सबकी पूजा करी जब वे सुखसे आसनपर बैठगये तब पूछता हुआ, हे महाराज ! मैं धन्यहूं, आज आप मेरे घर पधारे सो मैं कृतकृत्यहूं आपके आगमनको मैं अपने पूर्वजन्मके सुकृतोंका फल मानूंहूं, पूर्ण हैं मनोरथ जिनके ऐसे महात्माओंके कृत्य हमसरीखे नहीं जानेहैं ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ तथापि आप अपने आनेका कारण कहिये जो आपकी आज्ञा

होय सोई मैं करूं यह सुनकर वे सप्तर्षि हिमाचलसे बोले ॥ ३९ ॥ हे गिरिपते ! तैंने अपनेही समान दृढ वाक्य कहे हैं, महोदय ! हम अपने आनेका कारण तेरे प्रति कहे हैं ॥ ४० ॥ हे राजन् ! यह जो तेरी पार्वती नामकी कन्याहै सो पहिले दक्षकी पुत्री होतीभई इसीने अपने पिताके यज्ञमें देह त्याग दियाथा इसीने अब तेरे यहां जन्म धारण कियाहै ॥ ४१ ॥ इसका पाणिग्रहण करनेमें तीनों लोकमें महादेवको छोडकर और कोई समर्थ नहीं है इसलिये हे कल्याणकी इच्छा करनेवाले ! तू अपनी कन्याको महादेवके अर्थ दे ॥ ४२ ॥ तैंने सहस्रों

त्वयातेसदृशंवाक्यमुक्तंगिरिपतेदृढम् ॥ अस्मदागमनेहेतुंवक्ष्यामस्तेमहोदये ॥ ४० ॥ कन्यातेपार्वतीनामपूर्वंदक्षात्मजासती ॥ जातावकुमारीयायज्ञेत्यक्तकलेवरा ॥४१॥ अस्याः पणिग्रहेदक्षःशंभुर्नान्योजगत्त्रये ॥ देयासाशंभवेदेवीभवतानंत्यमिच्छता ॥ ४२ ॥ पूर्वजन्मसहस्रेषुभवतासुकृतंकृतम् ॥ इदानींतवदिष्ट्यातुपरिपाकमुपागतम् ॥ ४३ ॥ तेषांतद्वचनंश्रुत्वासंहृष्टात्मामहागिरिः ॥ व्याजहारपुनर्वाक्यंपुत्रीवल्कलधारिणी ॥ ४४ ॥ गंगातीरेनिराहारातपस्तपतिदुश्चरम् ॥ कांक्षमाणापतिंशंभुंतस्याइष्टमिदं वति ॥४५॥

पूर्व जन्ममें अनेक सुकृत कर्म किये हैं अब तेरे सुभाग्यसे वे परिपाकको प्राप्त हुए हैं ॥ ४३ ॥ उन ऋषियोंके उन वचनोंको सुनकर हिमाचलको अत्यन्त हर्ष होताहुआ और कहने लगा कि मेरी पुत्री तौ वृक्षोंकी छालके वस्त्र धारण करके ॥ ४४ ॥ गंगाके किनारेपर अनशनव्रत धारणकर अत्यन्त कठिन तप कररहीहै और महादेवजीको पति बनाना चाहतीहै उसहीका मनवांछित यह कार्य है ॥ ४५ ॥

हे मुनिवरो ! मैं अपनी कन्या महादेवजीहीको दे चुका आप अब शीघ्र वहां पधारो जहां महादेवजी हैं और उनसे जायकर यह कहो कि हे प्रभो ! हिमाचलने अपनी कन्या आपके निमित्त दीनीहै इसे अंगीकार करो ऐसे उनसे कहकर आपही इस कन्याके विवाहकी विधि कीजिये ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ जब हिमाचलने ऐसे कहा तब सप्तऋषि महादेवजीके पास गये और उनको सब समझाय बुझाय विवाहकी पक्कीकर चलेगये तब तो लक्ष्मीसे आदि लेकर सब सुरांगना और विष्णुसे आदि लेकर सब देवता ॥ ४८ ॥ छः मातृका और सब मुनि उस महोत्सवको देखनेके लिये बराती बनकर चले

दत्ताकन्यामयातस्मैत्र्यंबकायमहात्मने ॥ शीघ्रंगत्वाभवंतस्तुयत्रशंभुर्महाप्रभुः ॥ ४६ ॥ प्रीत्याहिमवतादत्तांगृहाणेतिनिवेद्यच ॥ भवंतएवकुर्वंतुचैतद्वैवाहिकींक्रियाम् ॥ ४७ ॥ इत्युक्तास्तेहिमवतातमामंत्र्यशिवंययुः ॥ लक्ष्म्याद्यायोषितःसर्वाविष्ण्वाद्यादेवताअपि ॥ ४८ ॥ षण्मातरोथमुनयोद्रष्टुंजग्मुर्महोत्सवम् ॥ शिवःसर्वामरगणैर्मुनिभिर्मातृभिस्तथा ॥ ४९ अन्वितोवृषभारूढःप्रमथानांगणैर्वृतः ॥ भेरीशंखमृदंगाद्यैःकाहलीपटहादिकैः ॥ ५० ॥ ब्रह्मघोषैर्बंदिघोषैश्चप्राविशद्धिमवत्पुरीम् ॥ सुमुहूर्तेशुभेलग्नेशुभग्रहनिरीक्षिते ॥ ५१ ॥ विवाहमकरोच्छैलःप्रहृष्टेनांतरात्मना ॥ महोत्सवस्तदाचासीत्त्रिलोक्यांप्राणिनांनृप ॥ ५२ ॥

और महादेवजी सब देवता, मुनि, मातृका ॥ ४९ ॥ आदिको संगले बैलपर चढकर चले जिनके चारों ओर भूतोंके गण संग होय लियेहैं, भेरी, शंख, मृदंग, पणव, मुहचंग आदि अनेकों प्रकारके बाजे बजने लगे ॥ ५० ॥ बंदीजन अनेक प्रकारके शब्द कहते जांयहैं वेदकी ऋचाके पाठ ऋषीजन करेहैं ऐसे हिमाचलकी पुरीमें प्रवेश करतेभये फिर सुन्दर मुहूर्तमें शुभ लग्नमें, शुभ ग्रहोंकी दृष्टिमें ॥ ५१ ॥ हिमाचलने अत्यन्तही प्रसन्न मनसे

विवाह करदिया हे राजन् ! त्रिलोकीके प्राणीमात्र इस उत्सवके आनन्दमें डूब रहेथे॥ ५२ ॥इस महोत्सवके पूर्ण होनेपर संपूर्ण लोकोंके कल्याण करनेहारे शंकर लौकिक धर्मोंका पालन करते पार्वतीके संग स्वच्छन्दतासे रमण करने लगे ॥ ५३ ॥ संपूर्ण ऋद्धि सिद्धियोंसे युक्त हिमालयकी शिखरपर जो इन्द्रके भवनकी उपमाके समान है नन्दिनीके तीरपै वनके बीच रात्रिमें जहां मतवाले भौंरा गुंजार करेहैं, पक्षी कुहुक रहेहैं, और शब्द कररहेहैं ऐसे स्थानमें महादेवजी दिव्य सहस्र वर्षपर्य्यन्त रमण करते भये ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ हे राजन् ! इन्द्रने स्त्रियोंको वर दिया था कि उस कालमें

महोत्सवेनिवृत्तेतुशंकरोलोकशंकरः ॥ रेमेस्वच्छंदयादेव्यालोकधर्माननुव्रतः ॥ ५३ ॥ ऋद्धिमद्धिमवद्गेहेदेवेंद्रभवनोपमे ॥ शर्वर्यांनंदिनीतीरेवनराजिषुशंकरः ॥ ५४ ॥ मत्तालिद्विजसन्नादमयूररवमंडिते ॥ दिव्यवर्षसहस्राणिरेमेस्वच्छंदयाविभुः ॥ ५५ ॥ स्त्रीणामिंद्रवराभावात्तस्मिन्कालेनृपोत्तम ॥ पुंसंसर्गात्पुनर्गर्भोनारीणांस्रवतिध्रुवम् ॥ ५६ ॥ प्रत्यहंरमणाद्देव्यांनाभूद्गर्भोहराद्व्रत ॥ देवानामभवच्चिंतापुत्रलाभाद्धराद्विभो ॥ ५७ ॥ सर्वेसंगत्यसंमंत्र्यमिथएवंबभाषिरे ॥ कामीवाभूद्व्रतौनित्यंसक्तोदेव्याहरःस्वराट् ॥ ५८ ॥ नास्माकंसिध्यतेकार्यंनित्यंगर्भस्यसंस्रवात् ॥ पुनारतिर्यथामाभूत्तथास्माभिर्विधीयताम् ॥ ५९ ॥

पुरुषसंसर्ग करनेसे स्त्रियोंका गर्भ निश्चय गिरजाय ॥ ५६ ॥ जब महादेवजी पार्वतीके संग नित्यप्रति रमण करने लगे और गर्भकी स्थिति न हुई तब तौ सब देवताओंको बडी घोर चिन्ता उत्पन्न हुई ॥ ५७ ॥ और सब मिलकर आपसमें इस बातका विचार करने लगे कि, क्या कारणहै महादेवजी नित्य प्रति पार्वतीके संग रमणमें प्रवृत्त होते हैं ॥ ५८ ॥ ऐसे नित्यही गर्भस्राव होजानेसे हमारे कार्यकी सिद्धि कठिनहै सो अब कोई ऐसा उपाय करना

चाहिये कि महादेवजी फिर रति करनेमें प्रवृत्त न होंय ॥ ५९ ॥ ऐसे आपसमें कहकर थोडी देरतक विचारते रहे कि क्या कर्त्तव्यहै फिर यह बात ठहरी कि इस कार्यको अग्निही करसकै है सो अग्निका अत्यन्त सन्मान कर कहने लगे ॥ ६० ॥ हे अग्ने ! तूही देवताओंका मुखहै, तूही बंधुहै और अब तेरेही हाथमें सब बातहै तू अबही वहां जा जहां महादेवजी रमण करे हैं ॥ ६१ ॥ जब वे रमण करचुक तब तू प्रगट होकर सन्मुख चला जाइयो जिससे वे फिर रमण करनेमें प्रवृत्त न हों तुझे देखकर पार्वतीभी लज्जाके मारे वहांसे हट जायगी ॥ ६२ ॥ तब तू शिष्य होकर कामारि श्रीशिवजीसे

मिथएवंतुसंभाष्यविचिन्वन्क्षणमत्रते ॥ अग्निंकृत्येविनिश्चित्यह्यचुर्मानपुरःसरम् ॥ ६० ॥ त्वंमुखोग्नेहिदेवानांत्वंबंधुर्गतिरेवच ॥
इदानीमपिगच्छत्वंरमतेयत्रवैहरः ॥६१॥ रत्यंतेदर्शयात्मानंयथानस्यात्पुनारतिः ॥ त्वांदृष्ट्वाव्रीडितादेवीततश्चापसरेद्ध्रुवम् ॥ ६२ ॥
शिष्योभूत्वातुरत्यंतेपृच्छतत्वंस्मरांतकम् ॥ तत्वसंप्रश्नव्याजेनकालंबहुनयप्रभो ॥ ६३ ॥ बहुकालेगतेदेवीकुमारंप्रसविष्यति ॥ देवैरे
वंप्रार्थितोग्निरोमित्युक्त्वाहरंययौ ॥ ६४ ॥ वीर्योत्सर्गात्पूर्वमेवगतोवह्नीरतांतरे ॥ तंदृष्ट्वाव्रीडितादेवीविवस्त्राविमनाययौ ॥ ६५ ॥

तत्वप्रश्न करियो, ऐसे तत्वप्रश्नके बहानेसे महादेवजीका बहुतसा समय लगाय दीजो ॥ ६३ ॥ ऐसे बहुत काल व्यतीत होजानेपर पार्वतीसे स्वामि कार्तिकका जन्म होगा जब देवताओंने ऐसे प्रार्थना करी तब अग्निने कहा अच्छा मैं जाताहूं यौं कह महादेवजीके पासगया ॥ ६४ ॥ परन्तु वीर्यके स्खलित होनेसे पहिलेही रमणसमय अग्नि चलागया उसे देखकर नंगी होनेके कारण पार्वतीको बडी लज्जा उत्पन्न हुई और मन खिन्न होगया ॥ ६५ ॥

और रमणको छोड अलग हटगई तब महादेवजीको बडा क्रोध हुआ और अग्निसे बोले हे दुर्मते ! इस अस्खलित वीर्यको तू ग्रहण कर॥ ६६ ॥ हे दुष्ट! मेरा वीर्य दुःसहहै तैंने रतिमें विघ्न कियाहै इससे अपने वीर्यको तेरे मुखमें त्यागूंगा ॥ ६७ ॥ ऐसे कह अग्निमुखमें वीर्य छोडदेते भए, उस प्रचंड वीर्यके उदरमें प्रवेश होनेसे वह जलने लगा और चिंता करता हुवा स्वर्गलोकको गया अत्यन्त कठिनतासे प्राण बचगये तब देवताओंसे सब वृत्तान्त कहा॥ ६८॥ ६९॥

रतिंविहायत्वरयाततोरुद्रोतिकोपितः ॥ वह्निंप्राहगृहाणेदमविसृष्टंतुदुर्मते ॥ ६६ ॥ मद्वीर्यंदुःसहंपापरतिविघ्नस्त्वयाभवत् ॥ उत्सृजामिचमद्वीर्यंत्वन्मुखेहव्यवाहन ॥ ६७ ॥ इत्युक्त्वोत्सृष्टवान्वीर्यंहव्यवाहमुखेहरः ॥ तद्धृत्वादह्यमानःसन्स्वोदरेवीर्यमुल्बणम् ॥ ६८ ॥ चिंतयानोययौधामदेवानांयज्ञपूरुषः ॥ कथंचित्प्राणतोमुक्तोदेवेभ्यस्तन्यदयत् ॥ ६९ ॥ देवावह्नीरितंश्रुत्वाहर्षशोकौसमीययुः ॥ स्थितंवीर्यमितिह्लादंकथंतुप्रसवोभवेत् ॥ ७० ॥ इतिदुःखंतदाचासीद्वह्नेःकुक्षौतुशांभवम् ॥ ववृधेतेजसाक्षिप्तंदशमासागतास्तदा ॥ ॥ ७१ ॥ नापश्यत्प्रसवोपायंबहुदुःखपरायणः ॥ देवन्वैशारणंप्रापगर्भमोचनहेतवे ॥ ७२ ॥ तेदेवावह्निनासाकंप्रापुर्गंगांयशस्विनीम् ॥ गंगांस्तोत्रेणतेस्तुत्याप्रार्थयामासुरंजसा ॥ ७३ ॥

अग्निकी बात सुनकर देवताओंको हर्ष शोक दोनों हुए वीर्यके स्थित होजानेसे तौ आल्हाद हुवा परन्तु प्रसव कैसे होगा ॥ ७० ॥ इस बातसे अत्यन्त दुःख हुआ और अग्निके उदरमें महादेवजीका तेजोमय वीर्य बढने लगा यहांतक कि दसमहीने व्यतीत होगये ॥ ७१ ॥ जब प्रसवका कोई उपाय नहीं हुआ तब अत्यन्त दुःखसे दुःखी होकर गर्भके प्रसवके हेतु देवताओंकी शरण गया॥ ७२ ॥ तब सब देवता अग्निको संग लेकर महायशस्विनी गंगाके पास गये

और सब मिलकर स्तुति करने लगे ॥ ७३ ॥ हे मातः ! तूही संपूर्ण देवताओंकी माता है तूही जगदीश्वरी है हे भद्रे ! तू देवताओंके निमित्त शंकरके इस तेजको धारण कर ॥ ७४ ॥ यह जो अग्निके गर्भ बढ रहाहै सो स्त्री न होनेसे गर्भका प्रसव नहीं होताहै अतएव तू इस अग्निपर और हम सबपर दया करके हमारी रक्षा कर ॥ ७५ ॥ ऐसे प्रार्थना करनेपर गंगाने कहा तथास्तु तब देवताओंने अग्निको गर्भमोचन मंत्रका उपदेश किया ॥ ७६ ॥



त्वंमातासर्वदेवानांत्वमेवजागतांपतिः ॥ देवतार्थंतुत्वंभद्रेधत्स्वतेजस्तुशांभवम् ॥ ७४ ॥ तद्वह्नेर्वर्धतेगर्भोनस्त्रीत्वात्प्रसवोस्यच ॥ तस्मादेनंचनःसर्वान्समुद्धरदयांकुरु ॥७५॥ इत्येवंप्राथितादेवीतथास्त्वितिवचोब्रवीत् ॥ देवास्तुवह्नयेप्राहुर्मंत्रंगर्भविमोचनम् ॥७६॥ तन्मंत्राद्गर्भमाकृष्यव्यसृजद्धव्यवाहनः ॥ गंगायांशांभवंतेजोभास्वल्लोकसुदुःसहम् ॥ ७७ ॥ सावोढाकतिचिन्मासान्नशशाकततः परम् ॥ निर्जलातत्प्रभावेनस्फुटद्रक्तकलेवरा ॥ ७८ ॥ बहुदुःखाकुलादेवीपातिव्रत्यप्रभावतः ॥ उज्जहारस्वोदरस्थंगर्भंलोकैकपावनी ॥ ७९ ॥ शरकांडेतुचिक्षेपदह्यमानंसमंततः ॥ शरकांडैस्तुसंभिन्नःषोढाभिन्नोबभूवह ॥ ८० ॥

उस मंत्रसे गर्भका आकर्षण कर उस शंकरके तेजको अग्निने गंगामें छोडदिया यह तेज बडा दीप्तिमान् और लोकोंमें असहनीय था ॥ ७७ ॥ कुछ मासपर्य्यन्त गंगाने उसे सहन किया उसके सहनेमें असमर्थ होगई उसके प्रभावसे जल सूखगया और रक्त कलेवर दिखाई देनेलगा ॥ ७८ ॥ पातिव्रत्यके प्रभावसे देवी अत्यन्त दुःखसे व्याकुल होगई तब लोकपावनी गंगा अपने उदरस्थ गर्भको त्याग देती भई ॥ ७९ ॥ और सर्पतेनमें

गेरती भई उन सर्पतोंसे विदीर्ण होयकर उस गर्भके छः भाग होय गये ॥ ८० ॥ तब ब्रह्माकी भेजीहुई छः कृत्तिका आई उन्होंने शरकांडसे विभिन्न शांभव तेजके छः भागोंको ग्रहणकर ॥ ८१ ॥ छः मुखका पुरुष बनाया परन्तु उसके देह एकहीथा ऐसे ब्रह्माकी आज्ञासे उन कृत्तिकाओंने उसको बहुत दृढ करदिया ॥ ८२ ॥ यह पुरुषाकार छः मुखकी देह बहुतकालपर्य्यन्त शरकांडोंके बीचमें वैसेही पडी रही कोई उसका रक्षक नहीं

षट्कृत्तिकाःसमाजग्मुर्ब्रह्मणाचोदितास्तथा ॥ शरकाण्डेविनिर्भिन्नंषोढासंधाय शांभवम् ॥ ८१ ॥ षण्मुखंपुरुषंकृत्वात्वेकदेहमितिस्फुटम् ॥ कृत्तिकाविधिनाज्ञप्तास्तंतथाचाक्रिरेदृढम् ॥ ८२ ॥ तद्देहंपुरुषाकारंषण्मुखंशरकांडगम् ॥ अरक्ष्यमाणमेवासीच्छरकांडेषुवैचिरम् ॥ ८३ ॥ एकदावृषभारूढौपार्वतीपरमेश्वरौ ॥ श्रीशैलंगंतुमनसौतत्स्थलंपरिजग्मतुः ॥ ८४ ॥ तदासीत्पार्वतीदेवीसद्यःस्नुतपयोधरा ॥ विस्मितावचनंरुद्रंस्नुतौकस्मात्पयोधरौ ॥ ८५ ॥ कारणंब्रूहिविश्वात्मन्नित्युक्तस्तुहरोब्रवीत् ॥ शृणुदेविप्रवक्ष्यामिपुत्रोधोवर्ततेतव ॥ ८६ ॥ त्वयिवीर्यमनुत्सृष्टंप्रागेवागाद्धविर्वहः ॥ तंदृष्ट्वाव्रीडितात्वंवैप्रविष्टाचस्थलांतरम् ॥ ८७ ॥

था ॥ ८३ ॥ एक दिन बैलपर चढेभये महादेव पार्वती श्रीशैलको जाय रहेथे सो मार्गमें उस स्थानपर होयकर गये ॥ ८४ ॥ उस समय पार्वतीके स्तनोंमें दूधकी धार ढरकनेलगी और विस्मित होय महादेवजीसे बोली महाराज ! अकस्मात् मेरे स्तनोंसे दूधकी धार बहनेका क्या कारण है ॥ ८५ ॥ हे विश्वात्मन् ! इसका कारण कहिये तब महादेव बोले हे देवी ! जो कुछ मैं कहूं तू सुन तेरा पुत्र यहां नीचे पडा है ॥ ८६ ॥ एक समय तू और मैं

रमण कररहेथे वीर्य स्खलित नहीं होने पायाथा इतनेहीमें अग्नि आगया तू उसे देख लज्जाके मारे अन्यत्र हट गई॥८७॥तब मैंने क्रोधसे वह वीर्य अग्निके मुखमें छोड दिया जब वह न सहसका तब उसने देवताओंकी कृपासे गंगामें छोड दिया ॥ ८८ ॥ जब गंगाभी जलने लगी तब उसने शरकंडोंमें छोड दिया वहां शरकंडोंमें उसके छः भाग होगया और मातृकाओंने आकर उसे दृढ करदिया ॥ ८९ ॥ उसकी पुरुषकीसी आकृति होगईहै उसीको

मयाकोपाद्वह्निमुखेविसृष्टंवीर्यमुल्बणम् ॥ देवानांचप्रसादेनगंगायांव्यसृजद्विभुः ॥ ८८ ॥ गंगाचदह्यमानासाचिक्षेपचशरांतरे ॥ तत्रषोढाप्रभिन्नंतुमातृभिश्वदृढीकृतम् ॥८९॥ पुरुषाकृतिमापेदेतंदृष्ट्वातेस्तनौस्नुतौ ॥ पालनीयंमहावीर्यंविष्णुनासमविक्रमम् ॥९०॥ अयमेवौरसःपुत्रस्तवभातिविनिश्चितम् ॥ तस्माद्गृहाणशीघ्रंत्वंतेनाख्यातिरतीवते ॥९१॥ इत्याज्ञप्ताशंभुनासातमादायार्भकंद्रुतम् ॥ अंकमारोप्यतं देवीपाययामाससास्तनौ ॥ ९२ ॥ देवेनमोहितादेवीपुत्रस्नेहपराभवत् ॥ पुनःकैलासमगमत्प्रभुणासहशांकरी ॥९३॥

देखकर तेरे स्तनोंमेंसे दूध टपकने लगाहै, इसका पराक्रम विष्णुके समान होगा तू इसका पालन पोषण कर ॥ ९० ॥ यही तेरा औरस पुत्रहै इसे उठायकर शीघ्र लेचल इसके द्वारा तेरी बडी प्रशंसा होयगी ॥ ९१ ॥ महादेवजीकी बात सुन पार्वतीने उस बालकको शीघ्र उठा लिया और अपनी गोदीमें स्थापितकर दूधपान करती हुई ॥९२॥ महादेवजीसे मोहित कीहुई देवी पुत्रके स्नेहमें तत्पर होय गई और महादेवजीके संग कैलासको जातीभई ॥९३॥

ऐसे पुत्रपर लाड प्यार करतीहुई देवी अत्यन्त संतुष्ट होती भई हे राजन् ! यह कुमारके जन्मकी कथा मैंने तेरे सामने कहीहै ॥ ९४ ॥ जो इसे नित्यप्रति सुनेहैं उनके पुत्रपौत्रादिकी वृद्धि होतीहै इसमें संदेह नहीं है ॥ ९५ ॥ महादेवजीकी अप्रसन्नतासे उसके जननेमें अत्यन्त कष्ट हुएहैं जो प्रीतिपूर्वक वैशाखके धर्मोंका श्रवण करैहै उसकी समान कोई नहींहै ॥ ९६ ॥ इस कारणसे वैशाखमें कियेहुए धर्मही संपूर्ण पापोंके नाश करनेवाले हैं इसमें धर्म करनेसे स्त्रियोंका विधवापनेका योग मिटजाताहै इसमें बडा पुण्य होताहै और संपूर्ण प्रकारकी संपत्तियां मिलतीहैं ॥ ९७ ॥ इसके प्रभावसे

पुत्रंलालयतीदेवीसंतोषंपरमंययौ ॥ एवंकुमारजननंवर्णितंतेमयाद्भुतम् ॥ ९४ ॥ यइदंशृणुयान्नित्यंकुमारजननंशुभम् ॥ पुत्रपौत्राभिवृद्धिंतुलभतेनात्रसंशयः ॥ ९५ ॥ महद्दुःखंतुजननेहरस्याप्रियतोभवत् ॥ प्रीत्यानुश्रुतवैशाखधर्मोप्यप्रतिमोभवेत् ॥ ९६ ॥ तस्माद्वैशाखधर्मोहिसर्वाघौघविनाशनः॥ अवैधव्यप्रदःपुण्यःसर्वसंपद्विधायकः ॥९७॥ अनंगोपिहिसांगत्वंयत्प्रभावात्समाप्तवान् ॥ अस्नात्वाचाप्यदत्वाचवैशाखोयस्यवैगतः ॥ ९८ ॥ अपिधर्मकृतोवापिभवेद्दुःखपरंपरा ॥ सर्वधर्मोहितः स्याच्चयद्येकोयमनुष्ठितः ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणेवैशाखमाहात्म्येनारदांबरीषसंवादेहरपुत्रोत्पत्तिकथनंनामनवमोऽध्यायः ॥ ९॥

अनंग कामदेवभी सांग होगया जो इस मासको विना स्नान किये वा विना दान किये व्यतीत करदेयहैं ॥ ९८ ॥ तौ बहुतसे धर्म करनेपरभी दुःखोंकी अधिकता होतीहै, जो इस एकही मासमें धर्म करलेय तौ संपूर्ण धर्मोंके लिये हितकारी है ॥ ९९ ॥ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदांबरीषसंवादेहरपुत्रोत्पत्तिकथनंनाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

मैथिल बोला कि हे ब्रह्मन् ! आपने कामदेवकी स्त्री रतीका चारित्र वर्णन किया और जसे देवताओंका बताया हुआ जो अशून्यशयनका व्रत धारण किया वह मैंने सब सुना अवश्य व्रतके धारण करनेकी विधि वर्णन कीजिये ॥ १॥ इसमें क्या दान करना चाहिये, उसकी विधि क्या है, पूजनकी क्या विधि है और उसका फल क्याहै, हे भूदेव!यह सब मेरे सामने कहिये, इन बातोंके जाननेकी मेरी बडी अभिलाषाहै॥२॥यह सुनके श्रुतदेव कहने लगे हे राजन्!यह व्रत

॥मैथिलउवाच ॥ ॥ यत्कामपत्न्याचारितमशून्यशयनव्रतम् ॥ देवोपदिष्टंतस्यास्यविधानंब्रूहिभूसुर ॥ १ ॥ किंदानंकोविधिस्तस्यपूजनंकिंफलंतथा ॥ एतदाचक्ष्वभूदेवश्रोतुंकौतूहलंहिमे ॥ २ ॥ ॥ श्रुतदेवउवाच ॥ शृणु भूयःप्रवक्ष्यामिव्रतंपापप्रणाशनम् ॥ अशून्यशयनंनामरमायैहरिणोदितम् ॥ ३ ॥ येनचीर्णेनदेवेशोजीमूताभःप्रसीदति॥लक्ष्मीभर्ताजगन्नाथःसमस्ताघौघनाशनः॥ ४ ॥ अकृत्वायस्त्विदंराजन्व्रतंपातकनाशनम् ॥ गार्हस्थ्यमनुवर्तेततस्येदंनिष्फलंभवेत् ॥ ५ ॥ श्रावणेशुक्लपक्षेतुद्वितीयायांमहीपते ॥ अशून्यशयनाख्यंतद्ग्राह्यंव्रतमनुत्तमम् ॥ ६ ॥

बडे पापोंका नाशकरताहै, इसका नाम अशून्यशयन व्रत है इसका विधान हरिभगवान्ने लक्ष्मीसे कहाथा सो सब मैं तेरे सामने कहूं हूं॥ ३॥इस व्रतके करनेसे देवोंके देव, शामवर्ण, लक्ष्मीपती, जगन्नाथ, संपूर्ण पापोंके नाशकर्त्ता प्रसन्न होय जातेहैं ॥ ४ ॥ हे राजन् ! इस पापनाशक व्रतके किये विना जो गार्हस्थ्यधर्ममें प्रवृत्त होय जायहैं उनका सब करना निष्फल होताहै ॥ ५ ॥ हे महीपते ! श्रावण शुक्ला द्वितीयाके दिन इस अशून्यशयन नाम

सर्वोत्तम व्रतको धारण करै ॥ ६ ॥ चातुर्मास्यमें हविष्यान्नका भोजनकरै फिर चातुर्मास्य व्यतीत होनेपर सम्यक् पारण करै ॥ ७ ॥ तथा लक्ष्मीनाराय णका पूजन करैं पारणेके दिन भक्ष्य भोज्यादि चारप्रकारके भोजन करै ॥ ८ ॥ फिर किसी ब्राह्मणको उपायन देवै सोने अथवा चांदीकी मनोहर मूर्ति बनवावै॥ ९ ॥पीतांबर धारण करावै सुंदर वनमालासे आभूषित करै तथा सफेद पुष्प औरसुगंधित द्रव्योंसे पुरुषोत्तम भगवान्का पूजन करै ॥ १० ॥

चातुर्मास्येतुसंप्राप्तेहविष्याशीभवेन्नरः ॥ चतुर्भिःपारणंमासैःसम्यङ्निष्पाद्यतेप्रभो ॥७॥ लक्ष्मीयुक्तोजगन्नाथः पूजनीयोजनार्दनः ॥ पारणेदिवसेप्राप्तेभक्ष्यंचैवचतुर्विधम् ॥ ८ ॥ उपायनंचदातव्यंब्राह्मणायकुटुंबिने ॥ सौवर्णींराजतींवापिमूर्तिंकुर्यान्मनोरमाम् ॥ ९ ॥ पीतांबरधरांदिव्यांवनमालाविभूषिताम् ॥ शुक्लपुष्पैः सुगंधैश्चपूजयेत्पुरुषोत्तमम्॥ १० ॥शय्यादानैर्वस्त्रदानैर्विप्राणांभोजनैस्तथा ॥ दंपत्योर्भोजनैश्चैवदक्षिणाभिः प्रपूजयेत् ॥ ११ ॥ एवंतुचतुरोमासान्पूजयित्वाजनार्दनम् ॥ मार्गशीर्षादिमासेषुपूजयेत्पूर्ववद्धरिम् ॥ ॥ १२ ॥ रक्तवर्णंहरिंध्यायेद्रुक्मिणीसहितंतथा ॥ चैत्रादिचतुरोमासानेवंसंपूजयेत्ततः ॥ १३ ॥ भूम्यासनस्थितंदेवमर्चयेद्भक्तिपूर्व कम् ॥सनंदनाद्यैर्मुनिभिःस्तूयमानमकल्मषम् ॥ १४ ॥

फिर ब्राह्मणोंको शय्यादान वस्त्रदान देवै, ब्राह्मणभोजन करावै, ब्राह्मण और ब्राह्मणी दोनोंको संग भोजन करावै, दक्षिणा देयकर पूजन करै ॥ ११ ॥ ऐसे नित्यप्रति चार मासतक जनार्दन भगवान्का पूजन करता रहै फिर मार्गशीर्षादि मासोंमें पूर्ववत् हरिभगवान्का पूजन करै ॥ १२ ॥ रक्तवर्ण हरिभगवान्का रुक्मिणीसहित ध्यान करै ऐसे चैत्रसे चारमास पर्य्यन्त हरिभगवान्का पूजन करता रहै ॥ १३ ॥ भूमिमें आसन बिछाय भक्तिपूवक

हरिभगवान्का पूजन करै जिनकी सनकादिक ऋषि स्तुति करेहैं और कल्मषरहित ॥ १४ ॥ ऐसे इस व्रतको आषाढकी द्वितीयाके दिन समाप्त करै उस दिन अष्टादशाक्षर मंत्रसे हवन करै ॥ १५ ॥ मार्गशीर्षादि मासोंमें पारणोंके दिन विष्णुपदी गायत्रीसे हवन करै ॥ १६ ॥ और चैत्रादि मासोंमें सहस्रशीर्षा इस मंत्रसे हवन करै, पंचामृत, खीर, घृतपक्व मालपूआ भोगके लिये करावै ॥ १७ ॥ इस प्रतिमाके सन्मुख निवेदन करै पहिले लक्ष्मीना

आषाढस्यचमासस्याद्वितीयायांसमापयेत् ॥ अष्टाक्षरेणमंत्रेणजुहुयादनलेशुभे ॥ १५ ॥ मार्गशीर्षादिमासानांपारणेभूमिपालकः ॥ जुहुयाद्विष्णुगायत्र्याचैत्रादीनांनिबोधय ॥ १६ ॥ पौरुषेणचमंत्रेणजुहुयादनलेशुभे ॥ पंचामृतंपायसंचअपूपंघृतपाचितम् ॥१७॥ एवंक्रमेणद्रव्याणिप्रतिमासुनिबोधय ॥ स्नानंतुप्रथमंदद्याल्लक्ष्मीनारायणस्यच ॥ १८ ॥ सौवर्णींमध्यमेदद्यात्कृष्णस्यपरमात्मनः ॥ राजतींत्वंतिमेदद्याद्वराहस्यमहात्मनः ॥ १९ ॥ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चान्नामभिः केशवादिभिः ॥ वस्त्रयुग्मैरलंकारैर्यथावित्तानुसारतः ॥ २० ॥ अर्चयित्वाततोदद्यादपूपान्घृतपाचितान् ॥ उपायनार्थेविप्रेभ्योद्वादशेह्निनिवेदयेत् ॥ २१ ॥

रायणको स्नान करावै ॥ १८ ॥ बीचमें कृष्णमहाराजकी सुवर्णकी प्रतिमा देवै अंतमें वाराहजीकी चांदीकी प्रतिमा देवै ॥ १९ ॥ फिर केशवादि नामसे ब्राह्मणोंको भोजन करावै, श्रद्धाके अनुसार दो वस्त्र और अलंकारादिसे ॥ २० ॥ पूजन कर घृतपक्व मालपूवा उपायनार्थ ब्राह्मणके निमित्त बारहवें दिन देवै ॥ २१ ॥

फिर पूर्वकल्पित प्रतिमाको संपूर्ण अलंकारोंसे आभूषित कर आचार्यको दे और शय्याक संकल्प करै ॥२२॥ उसपर लक्ष्मीनारायणका विधिवत् पूजन करै कांसीके पात्र दे ॥ २३ ॥ अपूर्व वस्त्र अलंकार और दक्षिणाके संग किसी उत्तम, वैष्णव और कुटुंबी ब्राह्मणको दे ॥ २४ ॥ ब्राह्मणकी विधिवत् पूजा करै और ब्राह्मणभोजन करावै ॥ दानमंत्र ॥ हे जनार्दन ! जैसे आपकी शय्या लक्ष्मीसे अशून्य है वैसेही हे केशव ! इस

आचार्यायततोदद्यात्प्रतिमांपूर्वकल्पिताम् ॥ शय्यांसंकल्पितां पूर्णांसर्वालंकारभूषिताम् ॥ २२ ॥ तस्यामभ्यर्च्यविधिवल्लक्ष्मीनारा
यणंपरम् ॥ कांस्यपात्रेणसहितामपूर्वैर्बहुभिस्तथा ॥ २३ ॥ वस्त्रालंकारसहितांदक्षिणाभिस्तथैवच ॥ ब्राह्मणायविशिष्टायवैष्णवा
यकुटुंबिने ॥ २४ ॥ दातव्याविधिवत्पूज्यब्राह्मणांश्चापिभोजयेत् ॥ ॥ दानमंत्रः ॥ लक्ष्म्याअशून्यशयनंयथातवजनार्दन ॥ २५ ॥
शय्याममाप्यशून्यास्याद्दानेनानेनकेशव ॥ एवंसंप्रार्थ्यदेवेशंस्वयंभोजनमाचरेत् ॥ २६ ॥ पुरुषोवासतीवापिविधवावासमाचरेत् ॥
अशून्यशयनार्थंचकर्तव्यंव्रतमुत्तमम् ॥ २७ ॥ एवंतवमयाख्यातंविस्तरान्नृपसत्तम ॥ सुप्रसन्नेजगन्नाथेभवेयुर्विविधाःप्रजाः ॥ २८ ॥
तस्मिंस्तुष्टेतुदेवेशेदेवानामपिदुर्लभाः ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनव्रतमेतत्समाचरेत् ॥ २९ ॥

शय्यादानसे मेरीभी शय्या अशून्य होय ऐसे भगवान्‌की प्रार्थना कर आप भोजन करै ॥ २५ ॥ २६ ॥ पुरुष, सौभाग्यवती स्त्री अथवा विधवा अशून्य शयनके निमित्त इस व्रतको धारण करै ॥ २७ ॥ हे राजन् ! यह अशून्यशयन व्रत विस्तारपूर्वक मैंने तेरे सामने वर्णन किया, इसके करनेसे जगन्नाथभगवान् प्रसन्न होते हैं ऐसे भगवान्‌के प्रसन्नतासे देवताओंकोभी दुर्लभ कार्योंकी प्राप्ति होती है और अनेक प्रजाओंकी वृद्धि होती है इसकारणसे

जैसे बने वैसे यह व्रत करना चाहिये ॥ २८ ॥ २९ ॥ जो मनुष्य विष्णुधाममें जानेकी इच्छा करें हैं उनको अवश्यही इस व्रतको करना चहिये, यह तो सब वर्णन होयगया अब तेरी और क्या सुननेकी इच्छा है सो कह ॥ ३० ॥ यह सुनके राजाने फिर श्रुतदेवजीको पूछा हे महाराज ! वैशाखमें छत्रदानका क्या माहात्म्य है सो सब मेरे सामने विस्तारपूर्वक कहिये ॥ ३१ ॥ वैशाखमें कर्तव्य शुभकर्मोंको सुनते सुनते मेरी तृप्ति



अवश्यंगंतुकामेनतद्विष्णोः परमंपदम् ॥ एवमुक्तंमयासर्वंकिमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥ ३० ॥ इत्युक्तस्तेनराजर्षिःपुनरप्याहतंमुनिम् ॥ वैशाखेछत्रदानस्यमाहात्म्यंविस्तराद्वद ॥ ३१ ॥ शृण्वतोपिनतृप्तिर्मेवैशाखोक्ताञ्छुभावहान् ॥ इतितद्वचनंश्रुत्वायशस्यंपुण्यवर्द्धनम् ॥ प्रत्युवाचमहाभागंश्रुतदेवोमहायशाः ॥ ३२ ॥ श्रुतदेवउवाच ॥ ॥ वैशाखेघर्मतप्तानांमानवानांमहात्मनाम् ॥ ३३ ॥ येकुर्वंत्यातपत्राणंतेषांपुण्यमनंतकम् ॥ अत्रैवोदाहरंतीममितिहासंपुरातनम् ॥ ३४ ॥ वैशाखधर्ममुद्दिश्यपुराकृतयुगेकृतम् ॥ वंगदेशे पुराकश्चिद्धेमकांतइतिश्रुतः ॥ ३५ ॥

नहीं होती है ऐसे यशवर्धक और पुण्यवर्धक राजाके वचन सुन श्रुतदेवजी उस महाभाग राजासे कहनेलगे कि जो धूपसे सताये महात्माओंको वैशाखमें ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ जो छत्रीका दान करते हैं उनको अनन्त फल मिलता है यहां मैं प्राचीन इतिहास कहूं हूं ॥ ३४ ॥ यह इतिहास वैशाखमें

किये छत्रदानकी सूचना करे है, सत्ययुगमें एक हेमकांत नाम वंगदेशमें राजा होता हुआ ॥ ३५ ॥ यह कुशकेतुका पुत्र बडा धीमान् शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ था, एक दिन शिकार खेलता खेलता गहन वनमें चलागया ॥ ३६ ॥ वहां अनेक प्रकारके मृग और शूकरोंको मारता हुआ, जब बहुत थकगया तब दुपहरके समय मुनियोंके आश्रममें पहुँचा ॥ ३७ ॥ उस समय शतर्चि नाम ऋषि व्रतमें मग्न समाधि लगाये ध्यान

कुशकेतोःसुतोधीमान्राजाशस्त्रभृतांवरः ॥ एकदामृगयासक्तोगहनंवनमाविशत् ॥ ३६ ॥ तत्रनानाविधान्हत्वामृगान्क्रोडादिकान्बहून् ॥ श्रांतोमध्याह्नवेलायांमुनीनामाश्रमंययौ ॥ ३७ ॥ तदाशतर्चिनोनामऋषयःशंसितव्रताः ॥ समाधिस्थानजानंतिबाह्यकृत्यंतुकिंचन ॥ ३८ ॥ तान्दृष्ट्वानिश्चलान्विप्रान्क्रुद्धोहंतुंमनोदधे ॥ भूपंनिवारयामासशिष्याणामयुतंतदा ॥ ३९ ॥ दुर्बुद्धेश्शृणुनोवाक्यंगुरवस्तुसमाधिगाः ॥ नो जानंतिबहिःकृत्यंतस्मात्क्रोधंनचार्हसि ॥ ४० ॥ ततःशिष्यानुवाचेदंवचनंक्रोधविह्वलः ॥ यूयंकुरुध्वमातिथ्यमध्वश्रांतस्यमेद्विजाः ॥ ४१ ॥

कररहेथे उनको यह नहीं मालूम हुआ कि आश्रममें कौन आया है ॥ ३८ ॥ उस ऋषियोंने उठकर कुछ सन्मान नहीं किया योंके त्यों निश्चल बैठे रहे यह देख क्रोधकर उन्हें मारनेको उद्यत हुआ तब उस ऋषियोंके दश सहस्र शिष्य उसे निवारण करते हुए ॥ ३९ ॥ बोले कि हे दुर्बुद्धे ! सुन हमारे गुरु समाधिस्थ हैं उनको यहभी मालूम नहीं है कि बाहर क्या हो रहाहै तू क्रोध करनेको योग्य नही है ॥ ४० ॥ जब शिष्योंने

यह कहा तब क्रोधमें विह्वल होकर कहने लगा हे ब्राह्मणो ! मैं थक गयाहूं तुमही मेरा आतिथ्य सत्कार करो ॥ ४१ ॥ जब राजाने यह कहा तब शिष्य बोले हम भिक्षुक विना गुरुकी आज्ञाके क्या करें ॥ ४२ ॥ हम तौ गुरुके आधीन हैं, आपका आतिथ्य कैसे करसकते हैं जब शिष्योंने ऐसे प्रत्युत्तर दिये तब उनहीके मारनेके लिये राजाने धनुष उठालिया ॥ ४३ ॥ मैंने तुम्हारी दस्यु और पशुओंसे अनेकवार रक्षा की है, मुझहीसे तो तुमने प्रतिग्रह लिया है और मुझहीको शिक्षा देते हो ॥ ४४ ॥ ये कृतघ्नी अपनेको बहुत बडा मानते हुए मुझे भूलगयेहैं, ये बडे आततायीहैं इनके

एवमुक्ताश्चभूपेनशिष्याऊचुस्तदानृपम् ॥ नाज्ञप्तागुरुभिर्भूपवयंभिक्षाशिनःकथम् ॥ ४२ ॥ गुरुतंत्राःकथंकर्तुमातिथ्यंनवयंक्षमाः ॥ प्रत्याख्यातोनृपःशिष्यैस्तान्हंतुंधनुराददे ॥ ४३ ॥ मृगदस्युभयाद्भिभ्योबहुधारक्षितामया ॥ तेमामेवोपशिक्षंतिमयादत्तप्रतिग्रहाः ॥ ॥ ४४ ॥ एतेमांनविजानंतिकृतघ्नाभूरिमानिनः ॥ घ्नतोपिमेनदोषःस्यादेतान्वैह्याततायिनः ॥ ४५ ॥ एवंविक्रुद्धमानःसञ्छरान्मुं चञ्शरासनात् ॥ तान्विद्रुतानतुद्रुत्यजघ्नेशिष्यशतत्रयम् ॥ ४६ ॥ दुद्रुवुर्भयतःसर्वेविहायाश्रममंजसा ॥ विद्राविते षुशिष्येषुबला दाश्रमसंस्थितान् ॥ ४७ ॥ संभाराञ्जगृहुःशीघ्रंसैनिकाःपापबुद्धयः ॥ यथेष्टंभोजनंचक्रुर्नृपेणैवानुमोदिताः ॥ ४८ ॥

मारनेमें कुछ दोष नहीं है ॥ ४५ ॥ ऐसे अत्यन्त क्रोधकर धनुषसे बाण छोडता हुआ, जब वे भागने लगे तब उन्हें रोककर उनमेंसे तीनसौ शिष्य मारगेरे ॥ ४६ ॥ तब तौ डरकेमारे बाकीके सब शिष्य आश्रमको छोड छोडकर भागगये, जब सब शिष्य भागगये तब आश्रममें धरीहुई वस्तुओंको ॥ ४७ ॥ पापमें हैं बुद्धि जिसको ऐसे सेनाके लोग उन सब वस्तुओंको ले लेते गये और सबने खूब यथेष्ट भोजन किये इसमें राजाभी

अनुमोदन करताथा ॥ ४८ ॥ तब सायंकालके समय सब सेनाको संग लिये राजा पुरीके भीतर आये, तदन्तर कुशकेतु अपने बेटाके दुष्ट व्यवहारको सुनकर ॥ ४९ ॥ अपने बेटाकी बहुत निन्दा करके पुरसे बाहर निकाल देता हुआ ॥ हे राजन् ! क्षमाहीन पुरुष राज्यासनके योग्य नहीं होताहै इससे उसे देश निकाला दे दिया ॥ ५० ॥ जब पिताने उसे त्याग दिया तब राजा हेमकान्त विह्वल होयकर एक गहन वनमें चलागया वहां उसे

ततः सेनावृतोराजापुरीमागाद्दिनात्यये॥ कुशकेतुस्ततःश्रुत्वातनयस्यविचेष्टितम् ॥ ४९॥ पुरान्निर्यातयामासगर्हयन्गर्हयन्सुतम् ॥ राज्यानर्हंक्षमाहीनंस्वदेशादपिभूमिप ॥५०॥ पित्रात्यक्तस्ततोराजाहेमकांतोतिविह्वलः॥ वनंविवेशगहनंहत्याभिश्चसुपीडितः ॥५१॥ बहुकालमवासीच्चगह्वरेनिर्जनेवने ॥ आहारंकल्पयामासव्याधधर्ममुपाश्रितः॥५२॥नक्कापिस्थितिमापेदेहत्ययाभिद्रुतोभृशम्॥अष्टा विंशतिवर्षाणिगतान्यस्यदुरात्मनः॥ ५३ ॥ तीर्थयात्राप्रसंगेनत्रितोनाममहामुनिः॥ तस्मिन्नरण्येवैशाखेरवौमध्यंदिनेगते॥ ५४॥

उन ब्राह्मणोंकी हत्या सताने लगी ॥ ५१ ॥ उस गह्वर निर्जन वनमें बहुतकाल पर्य्यन्त वास करता हुआ और जीवजन्तुओंको मारमार कर पेट भरने लगा ॥ ५२ ॥ उन हत्याओंके पापसे उसकी कहींभी स्थिति न हुई यहांका वहां मारा मारा फिरने लगा ऐसे उस दुरात्माके अट्ठाईस वर्ष व्यतीत होय गये ॥ ५३ ॥ एक दिन तीर्थयात्रा करते करते त्रितनामक महामुनि वैशाखके महीनामें दुपहरके समय उस वनमें चले गये ॥ ५४ ॥

वह मुनीश्वर धूपसे व्याकुल होय रहेथे, तृषाके मारे पीडित होय रहेथे, कहीं वृक्षविहीन स्थानमें वह ऋषि मूर्छित होयकर गिरपडे ॥ ५५ ॥ दैवयोगसे वह हेमकांत त्रितमुनिको देखताहुआ और राजाओंमें अधम उसके हृदयमें तृषार्त, मूर्छित और थकेहुए उस ऋषिको देखकर दया उत्पन्न होयआई ॥ ५६ ॥ और ढाकके पत्तोंकी छत्री बनाय धूप निवारण करनेके लिये मुनीश्वरके शिरपर लगाई और अलाबुका जल

गच्छन्नातपविक्लांतस्तृषयाचातिपीडितः ॥ क्वाचद्वृक्षविहीनेतुप्रदेशेमूर्च्छितोभवत् ॥ ५५ ॥ दैवाद्दृष्ट्वाहेमकांतस्त्रितंनाममहामुनिम् ॥ तृषार्तंमूर्च्छितंश्रांतंकृपांचक्रेनृपाधमः ॥ ५६ ॥ ब्रह्मपत्रैस्तदाछत्रंकृत्वाचातपवारणम् ॥ मुनेर्जग्राहशिरसिह्यलाबुस्थंजलंददौ ॥५७॥ लब्धसंज्ञोभवत्तेनह्युपचारेणवैमुनिः ॥ पत्रछत्रंक्षत्रदत्तंगृहीत्वागतविक्लमः ॥५८॥ ग्रामंकंचिच्छनैः प्राप्यकिंचिदाप्यायितेंद्रियः ॥ तेन पुण्यप्रभावेनब्रह्महत्याशतत्रयम् ॥ ५९ ॥ विनष्टमभवत्तस्यक्षणादेवमहात्मनः ॥ ततोविस्मयमापन्नोहेमकांतोमहारथः ॥ ६० ॥ बहुधापीडयमानस्यब्रह्महत्याःकथंगताः ॥ केनापिनिष्कृताह्येताःक्वगताःकेनहेतुना ॥ ६१ ॥

दिया ॥ ५७ ॥ इस उपचारसे मुनीश्वरकी मूर्च्छा जाती रही, और चेतकर सावधान होय क्षत्रीके दियेहुए उस पत्तोंके छत्रको लेकर ॥ ५८ ॥ इन्द्रियोंमें बल आजानेसे धीरे २ किसी गांवमें पहुँचा इस पुण्यके प्रभावसे उसकी तीनसौ ब्रह्महत्या ॥ ५९ ॥ क्षणभरमें दूर होयगई तब हेमकांतको बडा विस्मय हुआ ॥ ६० ॥ बहुधा प्राणियोंको पीडा देताथा उसकी ब्रह्महत्या कैसे दूर होयगईं, किसने दूर करदीनी, कहां गईं

और क्या हेतुहै ॥ ६१ ॥ ऐसे ब्रह्महत्याओंसे मुक्त होनेकी चिंता करनेलगा जब राजा ऐसे अज्ञानमें स्थित था तब उस महात्मा वनमें रहनेवाले हेमकान्तको लेनेके लिये यमके दूत आये और उसका प्राण नष्ट करनेके लिये ग्रहणी रोगको उत्पन्न करते हुये ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ जब प्राणोंके वियोगमें आर्त हुआ तब उसे तीन पुरुष दिखाई देनेलगे बडे २ भयंकर यमदूत जिनके शिरपर बाल ऊँचे खडेथे राजाको डराने लगे

इत्येवंचिंतयामासब्रह्महत्याविमोचनम् ॥ एवंचाज्ञस्थितेराज्ञियमदूताअथागमन् ॥ ६२ ॥ नेतुमेनंमहात्मानंहेमकांतंवनेस्थितम् ॥ ग्रहणींजनयामासुःप्राणान्हर्तुंमहात्मनः ॥ ६३ ॥ तथाप्राणवियोगार्तःपुरुषांस्त्रीन्ददर्शह ॥ यमदूतान्महाघोरानूर्ध्वकेशान्भयंकरान् ॥ ६४ ॥ चिंतयानःस्वकर्माणितूष्णीमासीत्तदानृपः ॥ छत्रदानप्रभावेनजाताविष्णुस्मृतिर्नृप ॥ ६५ ॥ तेनस्मृतोमहाविष्णुर्विष्वक्सेनंस्वमंत्रिणम् ॥ उवाचतूर्णंत्वंगच्छयमदूतान्निवारय ॥ ६६ ॥ वैशाखधर्मनिरतंहेमकांतंतुपालय ॥ निष्पापमेनंमद्भक्तंपित्रेदेहिपुरंगतः ॥ ६७ ॥ मदीरितेनवाक्येनकुशकेतुंचबोधय ॥ सर्वधर्मोज्झितोवापिब्रह्मचर्यादिवर्जितः ॥ ६८ ॥

॥ ६४ ॥ तब अपने कर्मोंको विचारता हुआ राजा मौन साधगया फिर उस छत्रदानके प्रभावसे वह विष्णुभगवान्‌का स्मरण करने लगा ॥ ६५ ॥ तब तौ विष्णुभगवान्‌ने अपने महामंत्री विष्वक्सेनको आज्ञा दी कि तुम जल्दी जाकर यमदूतोंको रोको ॥ ६६ ॥ और वैशाख मासके धर्ममें निरत हेमकांतकी रक्षा करो यह निष्पाप है, मेरा भक्त है, तथा मेरे कहे हुए वाक्योंसे इसके पिताके पुरमें जायकर इसके पिता कुशकेतुसे कहो

यह तेरा पुत्र [सब धर्मोंसे हीन तथा ब्रह्मचर्यादिसे रहित है ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ परन्तु वैशाखके धर्ममें निरत होनेसे मेरा प्यारा है इसमें संशय नहींहै, तेरे पुत्रने बडे २ पाप कियेहैं परन्तु इसने धूपसे व्याकुल मुनिकी रक्षा करी ॥ ६९ ॥ वैशाखमें छत्रीदान करनेसे यह निस्सन्देह निष्पाप होय गयाहै, उसही पुण्यके प्रभावसे यह शान्त, जितेन्द्रिय और चिरंजीव होय गयाहै ॥ ७० ॥ अब शूरता उदारता आदि गुणोंद्वारा तेरेसमान होय गयाहै अतएव तू अपने इस पुत्रको जो बडा बलवान् है राज्यका भार सोंपदे ॥ ७१ ॥ और कुशकेतु राजासे कहियो कि यह सब विष्णुभगवा



वैशाखधर्मनिरतोमत्प्रियः स्यान्नसंशयः ॥ कृतागाश्चापित्वत्पुत्रोमुनित्राणपरायणः ॥ ६९ ॥ वैशाखेछत्रदानेननिष्पापोनात्र संशयः ॥ तेनपुण्यप्रभावेनशांतोदांतश्चिरायुषः ॥ ७० ॥ शौर्यौदार्यगुणोपेतस्त्वत्समोयंगुणैरपि ॥ तस्मादेनंराज्यभारेसंस्थापय महाबलम् ॥ ७१ ॥ विष्णुनैवंसमाज्ञतमित्यादिश्यनृपोत्तमम् ॥ पितुर्वशेहेमकांतंस्थाप्यायाहिचमांपुनः ॥ ७२ ॥ इत्यादिष्टोभग वताविष्वक्सेनोमहाबलः ॥ हेमकांतंसमासाद्ययमदूतान्निवार्यच ॥ ७३ ॥ पाणिनाशंतमेनैवपस्पर्शांगेषुभूमिपम् ॥ भगवद्भक्त संस्पर्शाद्धतव्याधिःक्षणादभूत् ॥ ७४ ॥ विष्वक्सेनस्ततस्तेनसहतस्यपुरींययौ ॥ तंदृष्ट्वाविस्मितोभूत्वाकुशकेतुर्महाप्रभुः ॥ ७५ ॥

न्की आज्ञा है ऐसे राजाको समझाय बुझाय हेमकांतको उसके पिताकेपास भेजके मेरेपास आय जाइयो ॥ ७२ ॥ ऐसे भगवान्की आज्ञा पाय महाबली विष्वक्सेन यमदूतोंका निवारण कर हेमकांतके पास जाय ॥ ७३ ॥ उसके देहको अपने हाथसे स्पर्श किया, भगवान्के पार्षदके स्पर्श करतेही क्षणभरमें उसकी सब व्याधि दूर होयगई ॥ ७४ ॥ फिर विष्वक्सेन हेमकांतको अपने संग ले नगरमें जाताहुआ जिसे देख कुशकेतुको बडा आश्चर्य हुआ॥ ७५॥

और भक्तिपूर्वक शिर नवाय पृथ्वीमें गिर दंडवत् कर भगवान्के पार्षदको घरके भीतर लेय जाताहुवा ॥ ७६ ॥ तथा अनेक प्रकारके स्तोत्रोंसे स्तुति कर अनेक उपचारोंसे पूजन करताहुआ तब विष्वक्सेन प्रसन्न होय कहता हुआ ॥ ७७ ॥ हेमकांतको आगेकर जो जो बात विष्णुभगवान्ने कही वह उससे सब कही यह सुनतेही कुशकेतुने अपने पुत्रको राज्यासनपर बैठादिया ॥ ७८ ॥ और आप विष्वक्सेनकी आज्ञाके अनुसार अपनी

ननामशिरसाभक्त्यादंडवत्पतितोभुवि ॥ गृहंप्रवेशयामासपार्षदंपरमात्मनः ॥ ७६ ॥ स्तुत्वाचविविधैःस्तोत्रैःपूजयामासवैभवैः ॥ तस्मैप्रीतमनाःप्राहविष्क्सेनोमहाबलः ॥ ७७ ॥ हेमकांतंसमुद्दिश्ययदुक्तंविष्णुनापुरा ॥ तच्छ्रुत्वाकुशकेतुश्चपुत्रंराज्येनिवेश्यच ॥ ७८ ॥ विष्वक्सेनाभ्यनुज्ञातःसभार्योवनमाविशत् ॥ विष्वक्सेनोहेमकांतमनुमंत्र्याभिपूज्यच ॥ ७९ ॥ श्वेतद्वीपंययौधीमान्विष्णुपार्श्वेमहामनाः ॥ हेमकांतस्ततोराजावैशाखोक्तान्छुभावहान् ॥ ८० ॥ विष्णुप्रीतिकरान्धर्मान्प्रतिवर्षंचकारह ॥ ब्रह्मण्योधर्ममार्गस्थः शांतोदांतोजितेंद्रियः ॥ ८१ ॥ दयालुःसर्वभूतेषुसर्वयज्ञेषुदीक्षितः ॥ प्रवृद्धःसर्वसंपद्भिः पुत्रपौत्रादिभिर्वृतः ॥ ८२ ॥

स्त्रीसहित तप करनेके लिये वनमें चलागया और विष्वक्सेन हेमकांतको अनुमंत्रण कर तथा धन्यवाद देकर ॥ ७९ ॥ विष्णुभगवान्के पास श्वेतद्वीपको चलागया तब राजा हेमकांत वैशाखमासमें कहेहुए शुभ धर्मोंको करता हुआ ॥८०॥ प्रतिवर्ष ऐसे ऐसे धर्म करता रहा जिनसे विष्णुभगवान् प्रसन्न हुये, ब्राह्मणोंमें भक्ति करने लगा धर्मके मार्गमें स्थित, शांत, दांत, जितेन्द्रिय ॥ ८१ ॥ संपूर्ण जीवोंपर दयालु, संपूर्ण यज्ञोंमें दीक्षित, सर्व संपत्तियोंसे युक्त,

पुत्रपौत्रादिसे संपन्न होता हुआ ॥ ८२ ॥ फिर संपूर्ण भोगोंको भोगकर विष्णुलोकको चलागया वैशाखमासके धर्मोंसे अधिक कोई धर्म नहीं है ये धर्म सुखपूर्वक होय है और इनके करनेमें पुण्यभी बहुत होयहै ये धर्म पापरूपी इंधनको जलानेके लिये अग्निके समान हैं सुलभ हैं तथा धर्म, अर्थ, काम मोक्ष पुरुषार्थचतुष्टयके दाताहैं॥८३॥ इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाख माहात्म्ये नारदांबरीषसंवादे छत्रदानप्रशंसने हेमकांतस्य ब्रह्महत्यादिपापशमनं नाम दशमोऽ

भुक्त्वाभोगान्समस्तांश्चविष्णुलोकमवाप्तवान् ॥ नेक्षेतुवैशाखसमांश्चधर्मान्सुखप्रयत्नान्बहुपुण्यहेतून् ॥ पापेंधनाग्न्यग्निनिभान्सुलभ्यान्धर्मादिमोक्षांतपुमर्थहेतून् ॥ ८३ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदांबरीषसंवादे छत्रदानप्रशंसने हेमकांतस्य ब्रह्महत्यादिपापशमनं नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ मैथिलउवाच ॥ ॥ वैशाखधर्माःसुलभाःपुण्यराशिविधायकाः ॥ विष्णुप्रीतिकराःसद्यःपुमर्थानांतुहेतवः ॥ १ ॥ नप्रख्याताःकथंलोकेशाश्वताःश्रुतिचोदिताः ॥ प्रख्याताराजसाधर्मास्तामसाअपिभूरिशः ॥ ॥ २॥ दुर्घटाबहुयत्नाश्चबहुद्रव्यव्ययावहाः ॥ केचिन्माघंप्रशंसंतिचातुर्मास्यान्परेजगुः ॥ ३ ॥

ध्यायः ॥ १० ॥ तदनन्तर राजा मैथिल पूछने लगा कि हे महाराज ! जो वैशाखके धर्म आपने वर्णन किये हैं वे बडे सुलभ हैं और अनेक पुण्योंके करनेहारे हैं जिनसे विष्णुभगवान् प्रसन्न होंयहैं और तत्काल अर्थ धर्म काम मोक्षके देनेवाले हैं ॥ १ ॥ ऐसे वेदविहित धर्म संसारमें विदित नहीं हैं राजसधर्म और तामसधर्म तो अनेकों प्रकारके प्रख्यात हैं ॥ २ ॥ जो बडे कठिन साध्य हैं, जिनमें बहुतसा यत्न करना पडे है और द्रव्यभी बहु लगाना

पेड हैं कोई तो माघमासकी प्रशंसा करें हैं, कोई चातुर्मास्यको उत्तम कहें हैं ॥ ३ ॥ कोई २ व्यतीपातादि धर्मकी बडी बडाई करें हैं सो हे प्रभो ! यह क्या बात है मेरे सामने विस्तारपूर्वक कहिये ॥ ४ ॥ श्रुतदेव बोले–हे राजन् ! वैशाखके कर्त्तव्य धर्म प्रख्यात क्यों नहीं सो मैं तेरे सामने कहूं हूं और अन्यधर्मोंकी संसारमें ख्याति क्यों है ॥ ५ ॥ संसारमें रजोगुणी और तमोगुणी मनुष्य बहुत हैं जो इस संसारके भोगोंकी रात्रिदिन इच्छा करें

व्यतीपातादिधर्मांश्चवर्णयंतीह भूरिशः॥ एतद्विवेकंविस्तार्यश्रोतुकामायमेवद ॥ ४ ॥ श्रुतदेवउवाच ॥ ॥ शृणुभूपप्रवक्ष्यामिनप्रख्याताइमेकथम् ॥ इतरेषांचधर्माणांकथंख्यातिश्चभूतले ॥ ५ ॥ राजसास्तामसाभूमौबहवः कामुकाजनाः ॥ इच्छंत्यैहिकभोगांस्तेपुत्रपौत्रादिसंपदः ॥ ६ ॥ क्वचित्कथंचनक्वापिजनेष्वेकोतिकृच्छ्रतः ॥ स्वर्गाययततेलोकेतस्माद्यज्ञादिसत्क्रियाः ॥ ७ ॥ कुरुतेप्रिययत्नेनमोक्षंनोपासतेनरः ॥ क्षुद्राशाभूरिकर्माणोजनाःकाम्यानुपासते ॥ ८॥ प्रख्याताराजसाधर्मास्तामसाअपितेनवै ॥ नख्याताःसात्विकाधर्माहरिप्रीतिकराइमे ॥ ९ ॥

हैं और पुत्र, पौत्र तथा धनसंपात्तिकी सदा चाहना करें हैं ॥ ६ ॥ कोई, कहीं किसी तरहसे भी एकादि मनुष्यही स्वर्गके लिये बडी कठिनतासे प्रयत्न करै है अतएव यज्ञादिक क्रियाओंको करताहै ॥ ७ ॥ परन्तु मोक्षका उपाय कोई भी नहीं करता बडे बडे कर्मद्वारा तुच्छ आशाके हेतु अपने अभीष्ट कार्योंकी सिद्धि चाहें हैं ॥ ८ ॥ इसी कारणसे राजस और तामस धर्म संसारमें प्रख्यातहैं और जो भगवान्को प्रसन्न करनेहारे

सात्त्विक धर्म हैं, वे प्रख्यात नहीं हैं ॥ ९ ॥ ये धर्म बडे निष्कामिक हैं इनसे ऐहिक और पारलौकिक सुखकी प्राप्ति होयहै, भगवान्‌की मायासे मेरे भये जीव मूढबुद्धिवाले इन्हें नहीं जानैहैं ॥ १० ॥ जैसे आधिपत्यके प्राप्त होनेपर सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होयहैं और मोहनार्थ स्थलमें प्राप्तहुआ आधिपत्य नष्ट नहीं होयहै ॥ ११ ॥ इसका कारण कहेहैं यह पृथ्वीमें गोपनीयहै, यह वैशाखके कहेहुये धर्मोंमें सतोगुणी

निष्कामिकाइमेधर्माऐहिकामुष्मिकप्रदाः ॥ नजानंतिजनामूढामोहितादेवमायया ॥ १० ॥ यथाधिपत्येसंप्राप्तेसर्वःसिद्धोमनोरथः॥ मोहनार्थंस्थलंप्राप्तमाधिपत्यंनहीयते ॥ ११ ॥ कारणंचप्रवक्ष्यामिगोपनेभूतलेंजसा ॥ यद्वैशाखोक्तधर्माणांसात्विकानांनृणामिह ॥ १२ ॥ सार्वभौमः पुराकाश्यामिक्ष्वाकुकुलभूषणः ॥ कीर्तिमानितिविख्यातोनृगपुत्रोमहायशाः ॥ १३ ॥ जितेंद्रियोजितक्रोधो ब्रह्मण्योराजसत्तमः ॥ एकदामृगयासक्तोवशिष्ठाश्रममाययौ ॥ १४ ॥ गच्छन्मार्गेददर्शासौवैशाखेधर्मनिष्ठुरे ॥ भूयोभूयःकार्यमाणा ञ्छिष्यैस्तस्यमहात्मनः ॥ १५ ॥ क्वचित्प्रपांप्रकुर्वंतिछायामंडपमेवच ॥ तटप्रपातंनिस्तीर्यवापींकुर्वंतिनिर्मलाम् ॥ १६ ॥

मनुष्योंका धर्म है ॥ १२ ॥ इक्ष्वाकुके कुलका भूषण काशीपुरीमें नृगका पुत्र सार्वभौम बडा यशस्वी कीर्तिमान् नामवाला हुआ ॥ १३ ॥ यह जित न्द्रिय, क्रोधका जीतनेवाला, ब्रह्मण्य और राजाओंमें उत्तम था एक दिन आखेट करताहुआ वशिष्ठजीके आश्रममें जा पहुंचा १४ ॥ मार्गमें उस राजाने महात्मा वशिष्ठजीके शिष्योंको देखा जो वैशाखके धर्मोंके करनेमें वारंवार प्रवृत्त होय रहेथे ॥ १५ ॥ कहीं तौ प्याऊ लगाय रहेहैं कही छायामंडप

बनवावेहैं, कहीं निर्मल वापी करवारहेहैं ॥ १६ ॥ कहीं सुखपूर्वक बैठे हुओंकी पंखोंसे पवन कर रहेहैं, कहीं ईखका दान कररहेहैं कहीं सुगंधित द्रव्य और सुन्दर फलोंको दे रहेहैं ॥ १७ ॥ मध्याह्नके समय छत्रीका दान करेंहैं सायंकालके समय पीनेके द्रव्य देयहैं कही तांबूल देय हैं कहीं नेत्रोंमें कपूर लगावेहैं ॥ १८ ॥ कोई धनी छायाके वनमें झाड बुहार स्थानको स्वच्छकर ठंडी बालू बिछावेहैं ॥ १९ ॥ कोई वृक्षकी शाखामें

सूपविष्टान्क्वचिद्वृक्षेव्यजनैर्वीजयंतिच ॥ क्वचिद्ददुर्हीक्षुदंडान्क्वचिद्गंधान्क्वचित्फलम् ॥ १७ ॥ मध्याह्नेछत्रदानंचसायाह्नेपानकस्यच ॥ क्वचिद्यच्छंतितांबूलंनेत्रेकर्पूरलेपनम् ॥ १८ ॥ सुच्छायेचवनेकेचित्सुसंमृष्टांगणेषुच ॥ केचिदास्तरयंत्यद्धावालुकानिहितानिच ॥ १९ ॥ कुर्वंत्यांदोलिकांराजन्वृक्षशखावलंबिनीम् ॥ केयूयमितिपप्रच्छवासिष्ठाइतितेब्रुवन् ॥ २० ॥ किमेतदितिपप्रच्छधर्मावैशाखचोदिताः ॥ पुमर्थहेतवइमेक्रियंतेस्माभिरंजसा ॥ २१ ॥ वसिष्ठस्याज्ञयाचेतितेब्रुवन्नृपसत्तमम् ॥ एतदाचरणेपुंसांकिंफलंकस्तुतुष्यति ॥ २२ ॥ एतद्विस्तार्यमेब्रूतयूयं सम्यग्यथाश्रुतम् ॥ इतिराज्ञातुसंपृष्टाःप्रत्यूचुस्तेमहीपतिम् ॥ २३ ॥

झूला गेर रहेहैं ऐसे देख राजाने पूछी तुम कौन हौ वे बोले हम वशिष्ठजीके शिष्य हैं ॥ २० ॥ यह क्या कररहेहो वे बोले हम वैशाखमें कर्तव्य धर्मोंको करेंहैं इनके करनेसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष मिलेहैं ॥ २१ ॥ यह सब हम वशिष्ठजीकी आज्ञासे करहेहैं ऐसे जब राजासे कहा फिर तब राजाने फिर पूछाहै कि इन धर्मोंके करनेसे क्या फल मिलताहै और इनसे कौनसी देवता प्रसन्न होयहै ॥ २२ ॥जैसे जैसे आपने

सुनीहै सो सब मेरे साह्मने कहौ यह सुन वे राजासे कहने लगे ॥ २३ ॥ हे राजन् ! हम तौ हमारे गुरुकी आज्ञासे मार्गमें इन सत्कर्मोंके करनेमें प्रवृत्त होय रहेहैं हमै इतना अवकाश नहीं है कि तुमसे सब बात कहैं तुम हमारे गुरुके पास जायकर पूछो ॥ २४ ॥ वह महायशस्वी इन सम्पूर्ण धर्मोंके तत्त्वको जानतेहैं, वशिष्ठके शिष्योंकी यह बात सुन राजा वहांसे शीघ्रही चल दिया ॥ २५ ॥ वशिष्ठजीका आश्रम पुण्यरूप विद्या और

गुरोराज्ञाक्रमेणैवकुर्वतांपथिसत्क्रियाः ॥ नास्माकमवकाशोत्रगुरुंपृच्छयथोचितम् ॥२४॥ सवेत्तितत्त्वतोनूनंधर्मानेतान्महायशाः ॥ इतिशिष्यैर्वसिष्ठस्यप्रत्युक्तस्तुद्रुतंययौ ॥ २५ ॥ वसिष्ठस्याश्रमंपुण्यंविद्यायोगोपबृंहितम् ॥ समायांतंनृपंवीक्ष्यवसिष्ठः प्रीतमानसः ॥ २६ ॥ आतिथ्यंविधिवच्चक्रेसानुगस्यमहात्मनः ॥ सूपविष्टःकृतातिथ्यःप्रीतःपप्रच्छतंगुरुम् ॥ २७ ॥ राजोवाच ॥ मार्गे दृष्टंमहाश्चर्यंत्वच्छिष्यैश्चकृतंशुभम् ॥ मयापृष्टंचतैर्नोक्तंक्रियमाणंशुभावहम् ॥ २८ ॥ नास्माकमवकाशोत्रह्येतद्धर्मप्रशंसने ॥ कर्तव्याचक्रियास्माभिर्गुरुणायाचचोदिता ॥ २९ ॥

योगका स्थान था राजाको अपने आश्रममें आया देख वशिष्ठजी बडे प्रसन्न हुए ॥ २६ ॥ और सहचरोंसमेत उस महात्माका अतिथिसत्कार किया जब वह अच्छी तरह बैठ गया तब अत्यन्त प्रफुल्लित चित्तसे अपने गुरुसे पूछनेलगा॥ २७॥ हे गुरो ! मैंने मार्गमें बडा आश्चर्य देखा कि, आपके शिष्य बडे शुभ कर्मोंके करनेमें प्रवृत्त होय रहेहैं परन्तु मैंने पूछा कि यह तुम क्या कर रहेहो तब मुझको न बतलाया और कहने लगे ॥ २८ ॥ हमको इस

धर्मकी प्रशंसा करनेका अवकाश नहीं है हमको तौ जैसे हमारे गुरुने बतायाहै उस धर्मके करनेमें प्रवृत्त होय रहेहैं ॥ २९ ॥ गुरुके पास जाओ सो मैं आपके पास आयाहूं, मेरा मन आखेटमें था शरीर थकगयाथा मैं आतिथ्यकी इच्छासे आताथा ॥ ३० ॥ सो मार्गमें मैंने आपके शिष्योंको यह पुण्यकर्म करतेहुए देखा तब हे मुनीश्वर ! इन धर्मोंके पूछनेकी मुझे बडी उत्कंठा हुई ॥ ३१ ॥ हे प्रभो ! आप सब जानेहैं और इन धर्मोंको करैंभीहै

गुरुंगच्छेतितैरुक्तआगतोहंतवांतिकम् ॥ मृगयासक्तचित्तेनश्रांतेनातिथ्यमिच्छता ॥ ३० ॥ दृष्टंमार्गेत्विदंपुण्यंतवशिष्यैश्चकारितम् ॥ जिज्ञासासीत्ततःश्रोतुंधर्मानेतान्मुनीश्वर ॥ ३१ ॥ त्वमादिरादिमान्धर्मान्समाचरसिवैयतः ॥ तान्धर्मांञ्छ्रोतुकामायशिष्यायप्रणतायच ॥ ३२ ॥ श्रद्दधानायमेब्रूहिविस्तरान्मुनिपुंगव ॥ इतीक्ष्वाकुकुलीनेनराज्ञापृष्टोमहायशाः ॥ ३३ ॥ मनसातोषमापेदेसम्यक्पृष्टोधुनामुनिः ॥ अहोव्यवसिताबुद्धीराजँस्तेद्यसुशिक्षिता ॥ ३४ ॥ यस्माद्विष्णुकथायांचतद्धर्माचरणेपिच ॥ मतिरात्यंतिकीजातासुकृतंफलितंतव ॥ ३५ ॥

उन्हीं धर्मोंके सुननेकी मेरी अभिलाषा है मैं आपका शिष्य हूं आपको नमस्कार करताहूं ॥ ३२ ॥ हे मुनिवर! मेरी बडी श्रद्धाहै आप मेरे साह्मने विस्तारपूर्वक कहिये जब इक्ष्वाकुवंशके भूषण राजाने यह पूछा ॥ ३३ ॥ तब वशिष्ठजी मनमें बडे प्रसन्नहुए और कहने लगे हे राजा ! तेरी बुद्धि बडी सुन्दर है और सुशिक्षितभी है ॥ ३४ ॥ जो तेरी बुद्धि विष्णुभगवान्की कथामें और धर्मोंके आचरण करनेमें ऐसी सद्भावसे प्रवृत्त हुईहै ये तेरे सुकृत

फलीभूत होयगयेहैं ॥ ३५ ॥ ऐसे कह हर्ष जिनको उत्पन्न होआया ऐसे वशिष्ठजी राजासे कहनेलगे हे राजन् ! जो प्रश्न तुमने कियाहै अब हम उसका वर्णन करतेहैं ॥ ३६ ॥ इसके श्रवण करनेहीसे संपूर्ण पाप दूर होय जायहैं, जो सब धर्मोंको छोडकर विषयासक्त होजाताहै वहभी ॥ ३७ ॥ यदि वैशाखमें प्रातःकाल स्नान करै तो वह मधुसूदन भगवान्‌का प्यारा होय जायहै, जिसने सांगोपांग सब धर्म किये हैं परन्तु वैशाखमें अनादर कियाहै ॥ ३८ ॥ तो वह प्राणी कैसेही स्नान, दान, अर्चन और पुण्य करै हरिभगवान् उससे दूरही रहें हैं, जिसने वैशाखको बिना स्नान किये वा

इतिसंभाष्यराजानंजातहर्षस्तमब्रवीत् ॥ शृणुभूपप्रवक्ष्यामियत्पृष्टोहंत्वयाधुना ॥ ३६ ॥ यस्यश्रवणमात्रेणमुच्यतेसर्वकिल्बिषैः ॥ सर्वधर्मान्परित्यज्यवर्ततेविषयात्मकः ॥ ३७ ॥ वैशाखस्नाननिरतःसप्रियोमधुविद्विषः ॥ सांगान्धर्माननुष्ठायवैशाखोयेननादृतः ॥ ॥ ३८ ॥ स्नानदानार्चनैःपुण्यैस्तस्यदूरतरोहरिः ॥ अस्नात्वाचाप्यदत्वाचवैशाखोयेननीयते ॥ ३९ ॥ कर्मणासतुचांडालो नात्रकार्याविचारणा ॥ वैशाखोक्तैर्महाधर्मैर्येनचाराधितोहरिः ॥ ४० ॥ तैश्चतोषंसमायातिप्रददातिसमीहितम् ॥ लक्ष्मीभर्त्ताजगन्नाथो ह्यशेषाघौघनाशनः ॥ ४१ ॥ धर्मैः सूक्ष्मैश्चप्रीणातिनप्रयासैर्धनैरपि ॥ भक्त्यासंपूजितोविष्णुःप्रददातिसमीहितम् ॥ ४२ ॥

बिना दान किये खो दिया ॥ ३९ ॥ वह इस कर्मसे चांडाल होताहै इसमें कुछ विचार नहीं है, वैशाखमें कहेहुए सर्वोत्कृष्ट धर्मद्वारा जिनने हरि भगवान्‌का आराधन कियाहै ॥ ४० ॥ उसीसे भगवान् प्रसन्न होते हैं और उसकी अभिलाषा पूर्ण करते हैं लक्ष्मीपति जगन्नाथ संपूर्ण पापोंके नाश करनेहारे ॥ ४१ ॥ थोडेही धर्मसे प्रसन्न होय जायहैं बहुत परिश्रम और धनसे प्रसन्न नहीं होते हैं भक्तिपूर्वक विष्णुभगवान्‌का पूजन सब अभिलाषाओंके पूर्ण

करताहै ॥ ४२ ॥ हे राजन् ! इसी हेतुसे मधुसूदन भगवान्में सदा भक्ति करनी चाहिये जगन्नाथ भगवान्की जलसे पूजा करनेपरभी क्लेशहारी हारि ॥ ४३ ॥ ऐसे प्रसन्न होंयहैं जैसे प्यासा मनुष्य जलके मिलनेसे प्रसन्न होयहै बडे २ कर्म करनेसे स्वल्प फल मिलें हैं और छोटे कर्मोंसे बडे फल मिल जातेहैं॥ ४४ ॥ कर्मोंके भूरिहेतुत्वमें महाकर्म और स्वल्पकर्म हेतु नहीं है किन्तु कर्मके स्वरूपहैं कर्मोंकी बडी गहन गतिहै ॥ ४५॥ वैशाखमें जो धर्म कहे गये हैं उनमें परिश्रमभी

तस्माद्राजन्सदाभक्तिःकर्तव्यामधुविद्विषः ॥ जलेनापिजगन्नाथःपूजितःक्लेशहाहरिः ॥४३॥ परितोषंव्रजत्याशुतृषार्तःसलिलैर्यथा॥ महदप्यल्पदंकर्मतथाह्यल्पादिभूरिदम् ॥ ४४ ॥ कर्मणोभूरिहेतुत्वेनहेतुर्महदल्पके ॥ किंतुकर्मस्वरूपंचगहनाकर्मणोगतिः ॥ ४५ ॥ वैशाखोक्ताइमेधर्माःस्वल्पायासकृताअपि ॥ बहुव्ययविहीनाश्चविष्णोःप्रीतिकराःशुभाः ॥ ४६ ॥ तस्मात्त्वमपिभूपालवैशाखोक्तान् समाचर ॥ त्वद्राष्ट्रीयैर्जनैःसर्वैःकारयेमान्शुभावहान् ॥ ४७ ॥ नकरोतिचयोधर्मान्वैशाखोक्तान्नराधमः ॥ बहुधाशिक्ष्यमाणोपिसदं डयस्त्वभूपते ॥ ४८ ॥ इत्यावश्यकतांसम्यक्शास्त्रैव्युत्पाद्यतस्यच ॥ पश्चाद्वैशाखनिर्दिष्टान्धर्मान्प्रोवाचसर्वशः ॥ ४९ ॥ श्रुत्वा तान्सकलान्धर्मान्गुरुंसंपूज्यभक्तितः ॥ सराजागृहमागत्यसर्वान्धर्मांश्चकारह ॥ ५० ॥

थोडा होयहै और द्रव्यभी बहुत व्यय नहीं होताहै परन्तु विष्णुभगवान्के प्रसन्न करनेका सुगम उपायहै॥ ४६ ॥ अतएव हे राजन् ! तुमभी वैशाखके धर्मोंको करो और अपनी सब प्रजासेभी कराओ ॥ ४७ ॥ जो नराधम वारंवार कहनेपरभी वैशाखोक्त धर्मोंको न करे उसे दंड दो ॥ ४८ ॥ ऐसे सब शास्त्रोक्त बातोंको कह पीछे वैशखोक्त संपूर्ण धर्म कह दिये ॥ ४९ ॥ उन सब धर्मोंको सुनकर गुरुकी भक्तिपूर्वक पूजा कर राजा अपने घर चला आया और

संपूर्ण धर्म करने लगा ॥ ५० ॥ देवदेव निरंजन केशवभगवान्में बडी प्रीति करता हुआ और पद्मनाभ देवदेव भगवान्के अतिरिक्त किसीको न देखता हुआ ॥ ५१ ॥ फिर राजाने हाथीपर ढोल धरवाय अपने राज्यभरमें मूनादी करायदीनी कि आठ वर्षसे अस्सीवर्षकी अवस्थाके वृद्धतक ॥ ५२ ॥ जो कोई मेषकी संक्रान्तिमें सूर्योदयसे पहिले स्नान न करैगा उसे मैं दंड देऊंगा, मारूंगा और देशसे बाहर निकालदूंगा ॥ ५३ ॥ पिता

भक्तिमान्केशवेराजन्देवदेवेनिरंजने ॥ नान्यंपश्यतिदेवेशात्पद्मनाभान्महीपतिः ॥ ५१ ॥ भेरीमुद्राह्यमातंगेस्वराष्ट्रेऽघोषयद्नृपः ॥ अष्टवर्षाधिकोमर्त्योह्यशीतिर्नहिपूर्यते ॥ ५२ ॥ प्रातर्नस्नातिमेषस्थेसूर्येसर्वोपियोजनः ॥ समेदंडचवध्यश्चनिर्यास्योविषयाद्ध्रुवम् ॥ ॥ ५३ ॥ पितावायदिवापुत्रोभार्यावाथसुहृज्जनः ॥ वैशाखधर्महीनश्चनिग्राह्योदस्युवन्मया ॥ ५४॥ दातव्यंविप्रमुख्येभ्यःस्नात्वाप्रातर्जलेशुभे ॥ प्रपादानादिधर्मांश्चकुरुध्वंशक्तितोऽनघाः ॥५५॥ विप्रंचधर्मवक्तारंग्रामेग्रामेन्यवेशयत् ॥ पंचानामपिग्रामाणामकरोदधिकारिणम् ॥ ५६ ॥ दंडार्थंत्यक्तधर्माणांदशवाजिनिषेवितम् ॥ एवंप्रवृत्तःसर्वत्रसार्वभौमस्यशासनात् ॥ ५७ ॥

पुत्र भार्या वा इष्ट मित्र कोई होय जो वैशाखोक्त धर्मोका संपादन न करैगा उसको दस्युके समान समझूंगा ॥ ५४ ॥ प्रातःकाल सुन्दर जलमें स्नानकर मुख्य मुख्य ब्राह्मणोंको दान दो और शक्तिपूर्वक प्याऊ लगाओ तथा अन्यधर्मोंको करो ॥ ५५ ॥ गांवगांवमें एक एक धर्मका उपदेश करने वाला ब्राह्मण नियुक्त करदिया और पांच पांच गांवोंके ऊपर एक अधिकारी किया ॥ ५६ ॥ ऐसे धर्महीनोंको दंड देनेके निमित्त दस दस सवार

नियत किये ऐसे इस सार्वभौम राजाके शासनसे ॥ ५७ ॥ यह धर्मवृक्ष सब देशोंमें विस्तारपूर्वक फैल गया जो मनुष्य प्रमादसेभी इस राजाके नगरमें मरजातेथे वे सीधे विष्णुलोकको चले जातेथे अवश्यही उनको वैकुंठकी प्राप्ति होतीथी ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ जो कोई मेषकी संक्रातिमें प्रातःकाल किसी मिषसेभी स्नान कर लेताहै वह संपूर्ण पापोंसे छूटकर विष्णुलोकको चला जाताहै ॥ ६० ॥ वैशाखमें एकवारभी स्नान करनेसे प्राणी यमलोकको

प्रबुद्धोधर्मवृक्षोयं सर्वदेशेषुविस्तरात् ॥ येकेचिन्निधनंयांतिभूपालविषयेनराः ॥ ५८ ॥ प्रसादाच्चनृपश्रेष्ठतेयांतिहरिमंदिरम् ॥ अवश्यंवैष्णवोलोकःप्राप्यतेमानवैर्द्रुतम् ॥ ५९ ॥ व्याजेनापिसकृत्स्नातःप्रातर्मेषगतेरवौ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तोयातिविष्णोःपरंपदम् ॥ ॥ ६० ॥ नप्राप्नोतियमंधर्मंसकृद्वैशाखस्नानतः ॥ वैलेख्यमगमद्राजारविसूनुस्तदा नृप ॥ ६१ ॥ लेख्यकर्मणिविश्रांतश्चित्रगुप्तोभवत्तदा ॥ मार्जितानिचलेख्यानिपुरापापोद्भवानिच ॥ ६२ ॥ गच्छद्भिर्वैष्णवंलोकंस्वकर्मस्थैर्जनैःक्षणात् ॥ शून्यास्तुनरकाःसर्वे पापप्राणिविवर्जिताः ॥ ६३ ॥ भग्नयानोभवन्मार्गोवैशाखस्यप्रभावतः ॥ सर्वेपिविमलाकाराजनायांतिहरेः पदम् ॥ ६४ ॥ दिवौकसांतुयेलोकाःशून्याःसर्वेतथाभवन् ॥ शून्येत्रिविष्टपेजातेशून्येषुनरकेषुच ॥ ६५ ॥

नहीं जाताहै, उस सूर्यवंशी राजाने यमके लेखोंको मिटा दिया, चित्रगुप्तको लिखनेके लिये कुछ काम न रहा विष्णुलोकको जानेवाले स्वकर्मस्थ मनुष्योंके जो पुराणे पापोंके लेखथे ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ वे भी सब दूर कर दिये तथा संपूर्ण पापी प्राणियोंसे नरक शून्य होय गये ॥ ६३ ॥ तथा वैशाखके प्रभावसे नरकका मार्ग भग्नयान होयगया संपूर्ण मनुष्य निर्मलरूप धारण करके विष्णुलोकको जातेहुए ॥ ६४ ॥ देवताओंकेभी संपूर्ण लोक

खाली होयगये जब स्वर्ग और नरक सब शून्य होयगये ॥ ६५ ॥ तब नारदजी धर्मराजके पास जायकर कहने लगे हे राजन् ! नरकमें जैसे पहिले हाहाकारके शब्द सुनाई देतेथे सो सुनाई नहीं देतेहैं ॥ ६६ ॥ और खोटे कर्म करनेवालोंकी कुछ लिखा पढीभी नहीं होयहै चित्रगुप्तभी हाथपै हाथ धरे मुनिभाव धारण करै स्थितहै ॥ ६७ ॥ हे राजेन्द्र ! पापकर्मके करनेवाले माया और दंभसे विवर्धित मनुष्य तेरे लोकको नहीं आयहैं



नारदोधर्मराजानंगत्वाचेदमुवाचह ॥ नाक्रंदःश्रूयतेराजन्प्राक्श्रुतोनरकेयथा ॥ ६६ ॥ तथानक्रियतेलेख्यंकिंचिद्दुष्कृतकर्मणाम् ॥ चित्रगुप्तोमुनिरिवस्थितोयंमौनमास्थितः ॥ ६७ ॥ कारणंब्रूहिराजेंद्रनयांतितवमंदिरम् ॥ मनुष्याःपापकर्माणोमायादंभविवर्धिताः ॥ ॥ ६८ ॥ एवमुक्तेतुवचनेनारदेनमहात्मना ॥ प्राहवैवस्वतोराजाकिंचिद्दैन्यसमन्वितः ॥ ६९ ॥ योयंनारदभूपालःपृथिव्यांसांप्रतं स्थितः ॥ सोतिभक्तोहृषीकेशेपुराणपुरुषोत्तमे ॥ ७० ॥ प्रबोधयतिवैशाखधर्मंभेरीस्वनेनच ॥ अष्टवर्षाधिकोमर्त्योह्यशीतिर्न हिपूर्यते ॥ ७१ ॥ योवैह्यकृतवैशाखःसमेदंडचोनसंशयः ॥ तद्भयाद्द्विजनाःसर्वेनोल्लंघंतिकदाचन ॥ ७२ ॥

इसका कारण तौ कह ॥ ६८ ॥ जब महात्मा नारदने ऐसे कहा तब धर्मराज बडी दीनतासे कहने लगा ॥ ६९ ॥ हे नारद ! आजकल जो पृथ्वीमें राजाहै वह हृषीकेश पुराणपुरुषोत्तमका बडा भक्तहै ॥ ७० ॥ उसने अपने देशभरमें मुनादी पिटवाय दीनीहै, कि आठमें वर्षके बालकसे अस्सी वर्षके डोकरातक जो कोई वैशाखके धर्म न करै वह दंडका भागी होगा उसके डरके मारे प्रजाके लोग वैशाखके धर्मोंका कभी

उल्लंघन नहीं करेहैं ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ हे नारद ! इसी कर्मसे सब मनुष्य विष्णुधामको जायहैं वैशाखके धर्मोंको करनेसे संपूर्ण मनुष्य वैकुंठको चले जायहैं ॥ ७३ ॥ उस राजाने मेरे लोकमें आनेका मार्ग लुप्त कर दियाहै नरकलोक और देवलोक सब शून्य होयगयेहैं ॥ ७४ ॥ लेखकोंको लिखनेके लिये अब कुछ नहींहै और जो पहिले लेख लिखे गयेहैं वे भी सब मनुष्योंने मेट दियेहैं हे मुनिवर ! यह सब वैशाखके धर्मोंका ऐसा माहात्म्यहै ॥ ७५ ॥

गच्छंतिवैष्णवंधामकर्मणातेननारद ॥ वैशाखसेवनाल्लोकायास्यंतिहारिमंदिरम् ॥ ७३ ॥ तेनराज्ञामुनिश्रेष्ठमार्गोलुप्तोममाधुना ॥ कृताहिनरकाःशून्यालोकाश्चापिदिवौकसाम् ॥ ७४ ॥ विश्रांतोलेखकोलेखेलिखितंमार्जितंजनैः ॥ वैशाखमासधर्मस्यमाहात्म्यं त्वीदृशंमुने ॥ ७५ ॥ ब्रह्महत्यादिपापानिविमुक्तानिजनैर्द्विज ॥ कृत्वावैशाखकृत्यानियांतिविष्णोः परंपदम् ॥ ७६ ॥ सोहंकाष्ठ समोजातोनकश्चिन्ममगोचरः ॥ युद्धंकृत्वातुतंहन्मिसर्वथाद्यमहाबलम् ॥ ७७ ॥ अकृत्वास्वामिकार्यंतुनिर्व्यापारोयदिस्थितः ॥ तस्यवित्तंसमश्नातिसयातिनरकंध्रुवम् ॥ ७८ ॥ यदिदैवादवध्योहितदाब्रह्माणमेत्यच ॥ निवेद्यतस्मैतत्सर्वंपश्चात्स्वस्थस्थितिर्भ वेत् ॥ ७९ ॥ इत्युक्त्वाद्विजमामंत्र्यसानुगःप्रययौभुवम् ॥ सकालोमहिषारूढोदंडमुद्यम्यभीषणम् ॥ ८० ॥

वैशाखमें कर्तव्य कर्मोंके करनेसे ब्रह्महत्यादि पापोंसे छूटकर मनुष्य विष्णुपदको प्राप्त होतेहैं ॥ ७६ ॥ सो मैं काष्ठके समान होय गयाहूं मुझे कुछ दिखाई नहीं देयहै मैं उस महाबलीसे युद्ध कर उसे मारूंगा ॥ ७७ ॥ जो स्वामीके कार्यको विना किये निर्व्यापार रहताहै उसका वैभव नष्ट होय जाताहै और वह निश्चय नरकमें जाताहै॥ ७८ ॥ जो वह मुझसे न मरैगा तौ मैं ब्रह्माके पास जाय उसको सब निवेदनकर स्वस्थ हो जाऊंगा ॥ ७९ ॥ ऐसे नारदजीसे

सलाहकर अपने सेवकोंको संग ले पृथ्वीपर गया कालसहित भैंसापै चढ भीषण दंड उठाय ॥ ८० ॥ मृत्यु रोग जरा आदि उत्कटपार्षदोंको संग ले तथा पचास कोट यमदूतोंको ले ॥ ८१ ॥ शीघ्रही उस राजाकी पुरी जा घेरी बडा घोर शंखनाद करताहुआ जिससे संपूर्ण लोक भयभीत होय गये ॥८२॥ जब राजाने यह सुना कि यमने यह पुरी आय घेरी तब अत्यन्त क्रोधकर अपनी सब सेना सजाय नगरसे बाहर आताहुआ ॥ ८३ ॥ उन दोनोंमें

मृत्युरोगजराद्यैश्चपार्षदैश्चमहोत्कटैः ॥ पंचाशत्कोटिसंख्याकैर्यमदूतैर्वृतस्ततः ॥ ८१ ॥ सतूर्णंतस्यराजर्षेरुरोधसकलांपुरीम् ॥ शंखंदध्मौमहाघोरंसर्वलोकभयंकरम् ॥ ८२ ॥ तच्छ्रुत्वासतुराजर्षिर्ज्ञात्वावैवस्वतंयमम् ॥ ससज्जीकृतसर्वस्वःपत्तनान्निर्ययौरुषा ॥ ॥ ८३ ॥ तयोर्युद्धमभूत्तत्रभीषणंरोमहर्षणम् ॥ मृत्युंकालंतथारोगंयमदूतपतिंतथा ॥ ८४ ॥ जित्वाक्षणेनराजर्षिर्द्रावयामासरोषतः ॥ ततः क्रुद्धोयमोराजास्वयमभ्येत्यतंरुषा ॥ ८५ ॥ युयोधबहुभिर्बाणैःसिंहनादंचकारह ॥ चकर्तराजातस्यापिकार्मुकं विशिखैस्त्रिभिः ॥ ८६ ॥ पुनश्चर्मासिमादाययमोहंतुमथागमत् ॥ तंदृष्ट्वातुनृपःक्रुद्धःपुनश्छित्त्वासिचर्मणी ॥ ८७ ॥ निजघानललाटेचशरंकालोरगप्रभम् ॥ यमस्तेनाहतःक्रुद्धस्ततोदंडमुपाददे ॥ ८८ ॥

ऐसा घोर युद्ध हुआ जिससे रोमांच खडे होगये फिर राजाने मृत्यु काल रोग यमराजके दूतोंके स्वामीको जीतकर क्षणभरमें भगादिया तब तो स्वयं यमराज बडा क्रोधकर राजाके सन्मुख आया ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ अनेकों बाण चलाय सिंहनाद करताहुआ फिर तौ राजाने तीन बाणोंसे यमराजका धनुष काटकर फेंक दिया ॥ ८६ ॥ तब तो यमराज ढाल तरवार उठाय राजाको मारनेके लिये आताहुआ उसे आता देख

अत्यन्त क्रोधसे राजाने उसकी ढाल तरवारभी काट गिराई और काले सर्पकी तरह फुंकार मारताहुआ एक तीक्ष्ण बाण यमराजके ललाटमें मारा तब यमने क्रोध करके अपना दंड उठाया ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ और उस दंडको ब्रह्मास्त्रसे अभिमंत्रित कर राजाके ऊपर छोडताहुआ तब तो सब मनुष्योंके देखते देखते बडा हाहाकर मचगया ॥ ८९ ॥ तब तौ विष्णुभगवान्ने अपने भक्तकी रक्षाके निमित्त सुदर्शन चक्र-छोडा सोई रणमें आय ॥ ९० ॥ यमदंडसे युद्ध करताहुआ फिर ब्रह्मास्त्रका निवारण कर यमके मारनेको उद्यत हुआ ॥ ९१ ॥ तब तौ भक्तिमान् राजा डरकर उस

ब्रह्मास्त्रेणचसंमंत्र्यदंडंतस्मैमुमोचह ॥ हाहाकारोमहानासीज्जनानांपश्यतांतदा ॥ ८९ ॥ चक्रंविष्णुःस्वभक्तस्यरक्षायैप्राहिणोत्तदा ॥ विष्णुमुक्तंतदाचक्रंशीघ्रमागत्यतद्रणे ॥९०॥ यमदंडेनसंयुध्यतद्ब्रह्मास्त्रंनिवार्यच ॥ यमंहंतुमथारेभेसहस्रारंमहाद्भुतम् ॥ ९१ ॥ देवभक्तस्ततोभीतस्तदास्तौच्चक्रमंजसा ॥ सहस्रारनमस्तेस्तुविष्णुपाणिविभूषण ॥ ९२ ॥ त्वंसर्वलोकरक्षायैहरिणाचधृतंपुरा ॥ त्वां याचेद्ययमंत्रातुंविष्णुभक्तंमहाबलम् ॥ ९३ ॥ नृणांदेवद्रुहांकालस्त्वमेवहिनचापरः ॥ तस्मादेनंयमंरक्षकृपांकुरुजगत्पते ॥ ९४ ॥ नृपेणैवंस्तुतंचक्रंयमंहित्वानृपांतिकम् ॥ पुनर्ययौमहाराजदेवानांपश्यतांदिवि ॥ ९५ ॥

महा अद्भुत भगवान्के चक्रकी स्तुति करने लगा कि हे विष्णुभगवान्के हाथके आभूषण, हे सहस्रार! तेरे लिये नमस्कारहै ॥९२॥ तुझे भगवान्ने संपूर्ण लोगोंकी रक्षाके लिये प्रथम धारण कियाथा हे विष्णुभक्त ! हे महाबली! आज मैं तुमसे यमको मांगू हूं॥९३॥ देवताओंके द्रोही मनुष्योंके काल तुमही हो कोई दूसरा नहीं है इस कारणसे हे जगत्पते ! इस यमकी रक्षा करिये ॥ ९४ ॥ ऐसे जब सुदर्शनचक्रकी राजाने स्तुति की तब तौ चक्र यमको

राजाके पास छोडकर सब देवताओंके देखेते देखते वैकुंठको चलागया ॥ ९५ ॥ तब तौ यम बहुत उदास होयकर ब्रह्माजीके पास गया ब्रह्माजीके चारों ओरमूर्तामूर्त जन बैठे हैं कैसे ब्रह्माजीहैं देवताओंके आश्रयहैं जगत्के उत्पत्ति कारणहैं संपूर्ण लोकोंके पितामहहैं संपूर्ण लोकपाल और संपूर्ण दिक्पाल उपासना कर रहे हैं ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ इतिहास और पुराण मूर्ति धारण करे खडे हैं समुद्र नदी और सरोवर मूर्तिमान् विराजमानहैं ॥९८॥ पीपलसे

ततोयमोतिनिर्विण्णोब्रह्मणःसदनंययौ ॥ सददर्शसमासीनंमूर्तामूर्तजनैर्वृतम् ॥ ९६ ॥ देवाश्रयंजगद्बीजंसर्वलोकपितामहम् ॥ उपास्यमानंविविधैर्लोकपालैर्दिगीश्वरैः ॥ ९७ ॥ इतिहासपुराणाद्यैर्वेदैर्विग्रहसंस्थितैः ॥ मूर्तिमद्भिःसमुद्रैश्चनदीभिश्चसरोवरैः ॥ ९८ ॥ देहवद्भिस्तथावृक्षैरश्वत्थाद्यैरशेषितैः ॥ वापीकूपतडागैश्चमूर्तिमद्भिश्चपर्वतैः ॥ ९९ ॥ अहोरात्रैस्तथापक्षैर्मासैःसंवत्सरैस्तथा ॥ कलाकाष्ठानिमेषैश्चऋतुभिश्चायनैर्युगैः ॥ १०० ॥ संकल्पैश्चविकल्पैश्चनिमिषोन्मेषणैस्तथा॥ऋक्षैर्योगैश्चकरणैःपूर्णिमाशशिसंक्षयैः ॥१॥ सुखैर्दुःखैर्भयैश्चैवलाभालाभैर्जयाजयैः ॥ सत्त्वेनरजसाचैवतमसाचसमन्वितम् ॥ २ ॥ शान्तमूढातिघोरैश्चविकारैःप्राकृतैरपि ॥ वायुनादेवदेवेनश्लेष्मपित्तादिभिर्वृतम् ॥ ३ ॥

आदि लेकर संपूर्ण वृक्ष खडे हैं मूर्तिमान् वापी कुआ तालाव और पर्वत मौजूदहैं ॥ ९९ ॥ तथा दिन रात पक्ष मास संवत्सर कला काष्ठा निमेष ऋतु अयन युग ॥ १०० ॥ संकल्प विकल्प निमेष उन्मेष ऋक्ष योग करण पूर्णिमा अमावास्या ॥ १ ॥ सुख दुःख भय लाभ अलाभ जय

किसने किया है किसने तुमको स्थानसे निकाल दियाहै हे देव ! तुह्मारे वस्त्र और लेखपट किसने मार्जित कियेहैं ॥ १८ ॥ तू कुशकेतुके सामके सब वृत्तान्त कह यह सबका प्रभू तथा मेरा और तुम्हाराभी कर्ता है यह यमके हृदयस्थ दुःखको दूर करैगा ॥ १९ ॥ जब पवनने ऐसे कहा तब यमराज कुशकेतुके पुत्रके मुखकी ओर देखकर बढे दीनस्वर और गद्गदवाणीसे सत्यबात कहने लगा ॥ १२० ॥ इति श्रीस्कन्द० वैशाख० नार० कीर्तिमद्विज

ब्रूहिसर्वमशेषेणकुशकेतोस्त्वमग्रतः ॥ यःप्रभुस्तातसर्वेषांसतेकर्ताममापिच ॥ १९ ॥ अपहष्यतिमार्तंडेदुःखंहृदयसंस्थितम् ॥ सएवमुक्तःश्वशनेनसत्यमादित्यसूनुर्वचनंबभाषे ॥ विलोक्यवक्त्रंकुशकेतुसूनोःसगद्गदंचेदमहोतिदीनम् ॥ १२० ॥ ॥इति श्रीस्कंदपुराणेवैशाखमाहात्म्येनारदांबरीषसंवादेकीर्तिमद्विजयवर्णनंनामएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ यमउवाच ॥ ॥ शृणुमेवचनंशंभोलोपितोहंपितामह ॥ मरणादधिकंमन्येमत्पदस्यचखंडनम् ॥ १ ॥ नियोगीननियोग्यंहिकरोतिकमलासन ॥ प्रभोर्वित्तंसमश्नातिसभवेत्काष्ठकीटकः ॥ २ ॥ योश्नातिलोभाद्वित्तानिप्रज्ञावांश्चमहीपतेः ॥ सतिर्यग्योनिनरकंयातिकल्पशतत्रयम् ॥ ३ ॥

यवर्णनंनाम एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ यम बोला हे शंभो ! हे ब्रह्मन् ! मेरी बात सुनो मेरा लोप होगया मैं मरनेसेभी अपने पदके खंडनको अधिक मानताहूं ॥ १ ॥ हे कमलासन ! जो जिस कामपर नियुक्त किया जाय और वह अपने कामको न करै जो अपने स्वामीके वित्तको खाताहै वह काठका कीडा अर्थात् घुन बनताहै ॥ २ ॥ जो प्रज्ञावान् लोभसे राजाके वित्तको बिनाकाम खाताहै वह तिर्यक् योनिमें जायकर तीनसौ कल्पतक नरक भोगताहै ॥ ३ ॥

हे ब्रह्मा ! जो निस्पृह होकर अपने स्वामीके कार्यको संपादन नहीं करताहै वह घोर नरकोंको भोगकर कौआकी योनि पाताहै ॥ ४ ॥ जो अपने कार्यमें तत्पर रहकर स्वामीके कार्यको नष्ट कर देताहै वह तीनसौ कल्पतक चूहेकी योनि पाताहै ॥५॥ जो कार्यपर नियुक्त होकर कार्यके करनेकी सामर्थ्य होने परभी घरहीमें रह आताहै वह बिल्लीकी योनि पाताहै ॥ ६ ॥ सो हे देव ! मैं आपकी आज्ञाके अनुसार प्रजाके धर्मोंका साधन करताहूं पुण्यकरनेवालेको

निस्पृहोनाचरेद्यस्तुनियोगंपद्मसंभव ॥ भुक्त्वातुनरकान्घोरान्सपुमान्वायसोभवेत् ॥ ४ ॥ आत्मकार्यपरोयस्तुस्वामिकार्यंविलुंपति ॥ भवेद्वेश्मनिपापात्माआखुःकल्पशतत्रयम् ॥ ५ ॥ नियोगीयश्चभूत्वावैतिष्ठन्नित्यंस्ववेश्मनि ॥ शक्तस्तुकार्यकरणेमार्जारोजायतेनरः ॥ ६ ॥ सोहंदेवतवादेशात्प्रजाधर्मेणसाधये ॥ पुण्येनपुण्यकर्तारंपापंपापेनकर्मणा ॥ ७ ॥ सम्यग्विचार्यमुनिभिर्धर्मशास्त्रान्वितैःप्रभो ॥ कल्पादौवर्तमानाश्चयातनादापयेप्रभो ॥ ८ ॥ कर्तुंनियोगमेवंहित्वदीयंनैवशक्नुयाम् ॥ राज्ञाकीर्तिमताभग्नोनियोगस्तवचक्षितौ ॥ ९ ॥

पुण्यकर्मसे और पापीको पापकर्मसे ॥ ७ ॥ अच्छी तरह विचारकर धर्मशास्त्रके जाननेवाले मुनियों द्वारा कल्पके आदिमें वर्त्तमान जो यातना सो मैंने दीनी ॥ ८ ॥ हे प्रभो ! ऐसे अब मैं आपके नियोगको करनेमें समर्थ नहीं हूं कीर्तिमान् राजाने पृथ्वीमें आपका नियोग उखाड दियाहै ॥ ९ ॥

अजय सतोगुण रजोगुण तमोगुण शांत मूढ अतिघोर प्राकृत विकार कफ वात पित्तआदि सब चराचर मूर्तिमान् सेवामें खडे हैं ॥ २ ॥ ३ ॥ उनके बीचमें यम ऐसे जाताहुआ जैसे लाजकी मारें कुलवधू होयहै धरतीको ओर देखे हैं मुख मलीन होय रहाहै ॥ ४ ॥ सेवकोंको संग लिये पास जाय बैठा उसे देख बडे विस्मयसे सब आपसमें कहने लगे कि यमके यहां आनेका क्या कारणहै ॥ ५ ॥ कहीं सृष्टिकर्ता पितामह ब्रह्माजीके दर्शनको तौ नहीं आयाहै यमराजको तौ क्षणभरभी कामसे अवकाश नहीं मिले है॥६॥इसके यहां आनेका कारण क्या है देवता तौ कुशलसे हैं बडे ही

तेषांमध्येविशत्सौरिःसव्रीडाचवधूर्यथा ॥ विलोकयन्धरापृष्ठंम्लानवक्त्रंव्यदर्शयत् ॥ ४ ॥ संप्रविष्टंयमंदृष्ट्वासकाशस्थंसहानुगम् ॥ विस्मितास्तेमिथःप्रोचुःकिमर्थंभास्करिस्त्विह ॥ ५ ॥ संप्राप्तोलोककर्तारंद्रष्टुंदेवंपितामहम् ॥ निर्व्यापारःक्षणमपियोयंनास्तिरवेः सुतः ॥ ६ ॥ सोयमभ्यागतःकस्मात्कच्चित्क्षेमंदिवौकसाम् ॥ आश्चर्यातिशयोयश्चसंमार्जितपटस्त्वयम् ॥ ७ ॥ लेखकस्तमनुप्राप्तो दैन्येनमहतान्वितः ॥ नकदाचित्पटोह्यस्यमार्जितोधर्मभीरुणा ॥ ८ ॥ यन्नदृष्टंश्रुतंवापितदिहाद्यप्रपद्यते ॥ एवमुच्चरतांतेषांभूतानां भूतशासनः ॥ ९ ॥ निष्पपाताग्रतोभूमौब्रह्मणोरविनंदनः ॥ कृत्तमूलोयथाशाखीत्राहित्राहीतिवैरुदन् ॥ ११० ॥

आश्चर्यकी बातहै कि इसके पटभी फट रहेहैं॥७॥चित्रगुप्तभी इसके पीछे पीछे ही आयाहै यहभी बडा दीन होय रहाहै कहीं इसके पट यमने तौ नहीं फाड गेरे हैं ॥ ८ ॥ जो बात न पहिले कभी सुनी न देखी सो आज यहां उपस्थितहै जब वह सब ऐसे कह रहेथे तबही प्राणियोंका शासनकर्त्ता सूर्यका पुत्र यम ब्रह्माके आगे पृथ्वीपर गिरता हुआ जैसे जड जिसकी कट जाय ऐसा वृक्ष गिरताहै और त्राहि त्राहि पुकारने लगा ॥ ९ ॥ ११० ॥

हे देवेश ! मेरी प्रतिष्ठा भंग होय गईहै मुझे खूब पीटाहै मेरे पट लूट लिये हैं, हे कमलासन ! आपके होते मेरी यह दुर्गति हुईहै ॥११॥ ऐसे कह मूर्च्छा खाय पृथ्वीमें गिर पडा तब तौ सभामें बडा भारी कोलाहल हुआ ॥१२॥ जो स्थावर जंगम सबका भक्षण करनेवाला है सो यमराज दुःखार्त होयकर क्यों रोताहै ॥१३॥ मनुष्योंको संताप देनेवाला यह दुःखी कैसे होय गयाहै दुष्कर्मोंका करनेवाला मनुष्य शोभाको प्राप्त नहीं होताहै ॥ १४ ॥ तब

परिभूतोस्मिदेवेशसंमार्जितपटःकृतः ॥ त्वयिनाथेनविफलंपश्यामिकमलासन ॥ ११ ॥ एवमुक्त्वाहिनिश्चेष्टोबभूवनृपसत्तम ॥ ततः कोलाहलःशब्दःसभायांसमजायत ॥ १२ ॥ योहिखादयतेमर्त्यान्सर्वान्स्थावरजंगमान् ॥ सवैरुदतिदुःखार्तःकस्माद्वैवस्वतोयमः ॥ १३ ॥ जनसंतापकर्तायःसोचिराद्यात्यशोभनम् ॥ नहिदुष्कृतकर्ताहिनरःप्राप्नोतिशोभनम् ॥ १४ ॥ ततोनिवारयामासवायुस्तेषांवचस्तदा॥लोकानांसमवेतानांमतंज्ञात्वासवेधसः॥१५॥ निवार्यलोकान्मार्तंडिंशनैरुत्थापयन्मरुत्॥भुजाभ्यांशालपीनाभ्यांलोकसूत्रउदारधीः ॥१६॥ विह्वलंतंपरायत्तमासनेसन्न्यवेशयत् ॥ आसनस्थमुवाचेदंव्योमसूनूरवेःसुतम् ॥१७ ॥ केनत्वमभिभूतोसिकेनस्थानान्निवारितः ॥ केनायंमार्जितोदेवपटोलेखपटस्तव ॥ १८ ॥

पवनने ब्रह्माकी सलाहसे उन सबकी वाणी रोंक दीनि॥१५॥ और सबको हटाकर धीरे धीरे यमको अपनी बडी बडी और मोटी भुजाओंसे उठाया यह पवन संसारमें विचरनेवाला बडा उदारबुद्धिहै॥१६॥जो यमराज बहुत विह्वल होय रहाथा उसे आसनपर बैठाय यह कहने लगा ॥ १७ ॥ तेरा पराभव

हे जगत्पते ! इस राजाके भयके मारे समुद्रपर्य्यन्त सब पृथ्वी वैशाखके कर्तव्य धर्मोंका पालन करैहै ॥ १० ॥ प्रजाने सब धर्म, पित्रीश्वरोंकी पूजा अग्निष्ठोमादि यज्ञ, तीर्थयात्रादि सब शुभकर्म छोड दियेहैं ॥ ११ ॥ योग सांख्यका परित्याग कर दियाहै, प्राणायाम करना छोड दियाहै, होम और स्वाध्यायका नामभी ग्रहण नहीं करतेहैं तथा अनेक प्रकारके पापोंको करकरकेभी ॥१२॥ वैशाखमें कियेहुए धर्मोंके प्रभावसे विष्णुलोकको चले जायहैं,

भयादस्यजगन्नाथपृथिवीसागरांबरा ॥ वैशाखधर्मसहितापालनेवर्ततेक्कचित् ॥१०॥ विहायसर्वधर्मांश्चविहायपितृपूजनम् ॥ विहायाग्निसपर्यांतुतीर्थयात्रादिसत्क्रियाः॥११॥योगसांख्यावुभौत्यक्त्वात्यक्त्वाप्राणनिरोधनम्॥त्यक्त्वाहोमंचस्वाध्यायंकृत्वापापानिभूरिशः॥१२॥ प्रयांतिवैष्णवंलोकंकृत्वावैशाखसत्क्रियाः ॥ मनुजाःपितृभिःसार्द्धंतथैवचपितामहैः ॥ १३ ॥ तेषामतीतपितरःपितॄणांपितरस्तथा ॥ तथामातामहायांतितेषांवैजनकादयः ॥ १४ ॥ तेषामपिचनप्तारोजनित्रीणांहिपूर्वजाः ॥ एतद्दुःखंपुनर्देवममस्तकभेदनम् ॥ १५ ॥ प्रियायाःपितरोयांतिमार्जयित्वालिपिंमम ॥ पितॄणांबीजजोयस्तुधात्र्याकुक्षौधृतोविभो ॥ १६ ॥ यदेकेनकृतंकर्मतदेकेनैवभुज्यते ॥ तन्निरस्यकृतंसर्वंजानंस्त्वेकःकुलेतुयः ॥ १७ ॥

उनकेभी पिता, पितामह ॥ १३ ॥ उनकेभी पिता, पित्रीश्वरोंके पिता, तथा मातामह और उनकेभी पितासे आदि लेकर ॥ १४ ॥ तथा उनकेभी नेता और उनकेभी जनकादिकके पूर्वज विष्णुलोकको चले जायहैं, ये सब दुःख मेरे मस्तकको पीडा पहुँचावैहैं ॥ १५ ॥ मेरे लेखपत्रको मिटायकर भार्याके पिता पितामह आदि तथा पित्रीश्वरोंके बीजसे धात्री आदिकी कुक्षिमें होनेवाले सब विष्णुलोकको चले जायहैं ॥ १६ ॥ जो कोई एक मनुष्य

कोई एक कर्म करै है उसके फलको वही भोगे है परन्तु कुलभरमें कोई एकही ऐसा धर्मात्मा होयहै जो सबको दूर करके दोनों पक्षकी छव्वीस छव्वीस पीढियोंको संसारसागरसे पारकर देयहै तथा अपनी भार्याके कुलके और वर्णसंकरतकको पार लगावै है ॥ १७ ॥ १८ ॥ हे प्रभो ! यह सब विष्णुके लोकको चले जायहैं फिर अब इस कामपर मेरेको नियुक्त करनेकी कुछ आवश्यकता नहीं है ॥ १९ ॥ वैशाखके धर्म कर करके मुझे

तारयेत्तावुभौपक्षौषड्विंशोपयर्लांविभो ॥ प्रियायाश्चापिवैतातसर्वेवैकुक्षिसंभवाः ॥ १८ ॥ तेपिसर्वेजगन्नाथयांतिविष्णोःपरंपदम् ॥ नमेप्रयोजनंदेवनियोगेनेदृशेनवै ॥ १९ ॥ वैशाखधर्मनिरतःसमांत्यक्त्वाव्रजेद्धरिम् ॥ त्रिःसप्तकुलमुद्धृत्यत्यक्तपापोतिशोभनः ॥ ॥ २० ॥ सत्यक्त्वाममामार्गंहिप्रयातिहरिमंदिरम् ॥ नयज्ञैस्तादृशैर्देवगतिंप्राप्नोतिमानवः ॥ २१ ॥ सर्वतीर्थैर्नदानाद्यैर्नतपोभिश्च नव्रतैः ॥ अपिवासकलैर्धर्मैर्युक्तोनाप्नोतितांगतिम् ॥ २२ ॥ प्रयागपाताद्रणमध्यपाताद्भृगोश्चपातान्मरणाच्चकाश्याम् ॥ नतांगतिं यांतिजनाश्चसर्वेवैशाखनिष्ठेनचयाप्रपद्यते ॥ २३ ॥

त्याग सब हरिभगवानके पास चले जांयहैं, तथा अपने संग अपनी इक्कीस पीढीनकाभी उद्धार करै हैं पाप जिनके छूट गये वे ऐसे दिव्यदेह धारण करैं हैं ॥ २० ॥ वे सब मेरे मार्गको छोडकर वैकुंठमें प्राप्त होंयहैं वह देवताओंकी गति यज्ञादि करनेसे नहीं मिलेहै ॥ २१ ॥ अनेकों तीर्थोंके करनेसे, दान करनेसे, तप करनेसे, व्रत करनेसे अथवा अनेक प्रकारके धर्माचरण करनेसे वह गति नहीं मिलैहै ॥ २२ ॥ प्रयागमें पतन होनेसे,

रणमें गिरनेसे, भृगुके पतनसे वा काशीमें मरनेसे जो गति नहीं मिलती है वह वैशाखके धर्मोंमें निष्ठावान्को सहजहीमें मिलजाती है ॥ २३ ॥ जो कोई प्रातःकाल स्नान करके भगवान्का पूजनकर कथा श्रवण करै और वैशाखका माहात्म्य सुनै और यथोचित वैष्णवीय धर्मोंका संपादन करै तौ वह विष्णुलोकका अधिपति होयजायहै ॥ २४ ॥ हे ब्रह्मन् ! मेरी समझमें विष्णुलोक प्रमाणरहितहै जो करोडों मनुष्योंसेभी नहीं भरै है ॥ २५ ॥

प्रातःस्नात्वादेवपूजांचकृत्वाश्रुत्वाकथांमासमाहात्म्यसंज्ञाम् ॥ धर्मान्कृत्वाचोचितान्वैष्णवांश्चसवैभवेद्विष्णुलोकैकनाथः ॥ २४ ॥ अप्रमाणमहंमन्येलोकंविष्णोर्जगत्पतेः ॥ योनपूर्येतकोटयौघैःसर्वतःकमलासन ॥ २५ ॥ माधवावसथेनेहसमस्तेनपितामह ॥ विकर्मस्थाविकर्मस्थाःशुचयोऽशुचयस्तथा ॥२६॥ कृत्वावैशाखकृत्यानिलोकायांतिनृपाज्ञया ॥ योस्माकंहिमहच्छत्रुर्भवतांचविशेषतः ॥ २७ ॥ निग्राह्योजगतांनाथभवतासौमहीपतिः ॥ हित्वाहिसकलान्धर्मान्सकृद्वैशाखस्नानतः ॥ २८ ॥ असंस्कृतजनायांतिवैकुंठंहरिमंदिरम् ॥ अस्माभिस्तुकृतोपक्षोविष्णुपादैकसंश्रयः ॥ २९ ॥

मधुसूदन भगवान्के निवास करनेसे विकर्ममें स्थितिहै जिनकी वे विकर्म रहैं हैं और जो पवित्रहैं वे पवित्र रहे आवे हैं ॥ २६ ॥ राजाकी आज्ञासे वैशाखके कर्मोंको कर करके सब मनुष्य वैकुंठको चले जांयहैं यह राजा मेरा बडा शत्रुहै और तुम्हारा तौ बहुतही है ॥ २७ ॥ हे जगत्पते ! इस राजाका निग्रह करना उचितहै संपूर्ण धर्म जिनने त्याग दिये ऐसे कुसंस्कारी मनुष्य केवल वैशाखमें स्नान करनेसे वैकुंठको चले जांयहैं जो हम उसकी उपेक्षा कर

देंगे तौ केवल विष्णुभगवान्‌के चरणोंका आश्रय लेकर ॥ २८ ॥ २९ ॥ वह राजा इस संपूर्ण लोकको वैकुंठमें लेजायगा इसमें संदेह नहीं है, यह आपका दिया हुआ दंड और यह पट आपके चरणोंमें निवेदनहै ॥ ३० ॥ उस राजाने अतुल लोकपालत्वका मार्जन कियाहै केवल माताको क्लेश देने वाली संतानके होनेसे क्या फलहै ॥ ३१ ॥ जैसे ज्येष्ठमासमें सूर्य प्राणियोंको व्याकुल करदेताहै उसी तरह जो शत्रुओंको नहीं गिराताहै वह अपनी माताके वृथाही पैदा हुआहै इसे कुपुत्री जाननी चाहिये ॥ ३२ ॥ जैसे बादलमें बिजली प्रकाशमान होयहै ऐसे उसकी कीर्ति नहीं बढै है जो

समस्तंनेष्यतेलोकंपार्थिवोनात्रसंशयः ॥ एषदंडःपटोह्येषस्तवपद्भ्यांनिवेदितः ॥ ३० ॥ लोकपालत्वमतुलंमार्जितंतेनभूभुजा ॥ किमपत्येनजातेनमातुःक्लेशकरेणवै ॥ ३१ ॥ योनपातयतेशत्रुंज्येष्ठमासीवभास्करः ॥ वृथासुताहियुवतिर्जातावेदकुपुत्रिणी ॥ ३२ ॥ न तस्याःस्फुरतेकीर्तिर्घनस्येवशतह्रदा ॥ यःपितुर्नोद्धरेत्पापाद्विद्ययावाबलेनवा ॥ ३३ ॥ मातुर्जठरजोरोगःसप्रसूतोधरातले ॥ धर्मेचार्थेचकामेचयः प्रतीपोभवेत्सुतः ॥ ३४ ॥ मातृहाह्युच्यतेसद्भिःसपुत्रःपुरुषाधमः ॥ तन्मातानृपपत्नीचलोकविख्यातसत्क्रिया ॥ ३५ ॥ एकैकवीरसूर्लोकेविरंचेनात्रसंशयः ॥ यथावैकीर्तिमान्‌जातोमल्लिपेर्मार्जनायवै ॥ ३६ ॥

विद्या वा बल करके अपने पिताका पापसे उद्धार नहीं करै है ॥ ३३ ॥ जो पुत्र धर्म अर्थ और काममें विमुख होताहै वह इस पृथ्वीमें केवल माताके उदररोगके समानहै ॥ ३४ ॥ उसे महात्मा लोग मातृघाती कहैं हैं वह पुत्र मनुष्योंमें अधम होयहै परन्तु इसकी माता राजपत्नी अपने सत्कर्मोंसे संसारमें विख्यातहै ॥ ३५ ॥ ब्रह्माने संसारमें ऐसी वीरमाता कोई कोई सजी हैं इस कीर्तिमान् राजाने मेरी लिपि दूरकर दीनी है ॥ ३६ ॥

ऐसा किसी क्षत्रीनेभी आजतक नहीं किया हे प्रभो ! पटमार्जनकी बात तौ पुराणोंमें भी नहीं सुनी गई है ॥ ३७ ॥ हे जगत्पतीश ! इस राजाके सिवाय भगवान्में तत्पर राजा कोईभी नहीं हुआ जिसने पटमार्जनकी घोषणा करदी और यमलोकमें आनेका मार्ग रोकदिया ॥ ३८ ॥ इतिश्री स्कान्द० वैशाख० नारदा० यमदुःखनिरूपणंनाम द्वादशोध्यायः ॥ १२ ॥ ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे यम ! तुमने क्या आश्चर्यकी बात देखी

नेदंव्यवसितंदेवकेनचित्क्षत्रियेणहि ॥ पुराणेषुजगन्नाथनश्रुतंपटमार्जनम् ॥ ३७ ॥ सोहंनजानामिजगत्पतीशक्रतेक्षितीशंहरितत्परं तम् ॥ प्रचोदयंतंपटहंसुघोषंविलोपमानंममवेश्ममार्गम् ॥ ३८ ॥ इतिश्रीस्कांदेमहापुराणेवैशाखमाहात्म्येनारदांबरीषसंवादेयमदुःखनिरूपणंनामद्वादशोऽध्यायः ॥१२॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ किमाश्चर्यंत्वयादृष्टंकिमर्थंखिद्यतेभवान् ॥ सद्गुणेषुकृतस्तापःसतापोमरणांतिकः ॥ १ ॥ तस्योच्चारणमात्रेणप्राप्यतेपरमंपदम् ॥ नगच्छंतिहरेर्लोकंकथंभूपस्यशासनात् ॥ २ ॥ एकोपिगोविंदकृतःप्रणामः शताश्वमेधावभृथेनतुल्यः ॥ यज्ञस्यकर्तापुनरेतिजन्महरेःप्रणामीनपुनर्भवाय ॥ ३ ॥ कुरुक्षेत्रेणकिंतस्यसरस्वत्याचकिंतथा ॥ जिह्वाग्रेवर्ततेयस्यहरिरित्यक्षरद्वयम् ॥ ४ ॥

तुम दुःखी क्यों होतेहो सद्गुणोंमें ताप करनेसे वह ताप मरणांतिक होयहै ॥ १ ॥ उसके उच्चारणमात्रहीसे परम पदकी प्राप्ति होतीहै फिर राजाके शासनसे विष्णुलोकको क्यों नहीं जांयहै ॥ २ ॥ जो गोविन्दको एकवारभी प्रणामकर देय तौ सौ अश्वमेध यज्ञके समान फल मिलताहै, यज्ञके करनेवालोंको तौ फिर जन्म लेना पडताहै परन्तु जो हरि भगवान्को प्रणाम करतेहैं उनका फिर जन्मही नहीं होता ॥ ३ ॥ उस प्राणीको कुरुक्षेत्र जानेसे

क्या है वा सरस्वतीमें स्नान करनेसे क्या है जिसकी जिह्वाके अग्रभागपर हरि ये दो अक्षर विराजमानहैं॥ ४॥ जो ब्राह्मण चांडाली अथवा विशेष करके रजस्वलासे संगम करताहै यदि वह नित्य प्रति विष्णुभगवान्का स्मरण करतारहै तौ विष्णुलोकको चला जायहै ॥ ५ ॥अभक्ष्यभक्षण करनेसे जो बहुतसे पाप संचय होय जातेहैं उन पापोंसे छूटकर विष्णुभगवान्का स्मरण करनेसे प्राणी विष्णुकी सायुज्यताको प्राप्त करताहै ॥ ६ ॥ हे यम ! ऐसेही यह वैशाखमासभी विष्णुभगवान्को बहुत प्याराहै इसके धर्मोंके सुननेसे सम्पूर्ण पाप दूर होय जातेहैं॥ ७॥जो पुरुष वैशाखमें कहेहुए धर्मोंको करताहै, और उसके गुणानुवादों

ब्राह्मणःश्वपचींभुंजन्विशेषेणरजस्वलाम् ॥ यदिविष्णुंस्मरेन्नित्यंतदाप्नोतिपरंपम् ॥ ५ ॥ अभक्ष्यभक्षणाज्जातंविहायाघस्यसंचयम् ॥ प्रयातिविष्णुसायुज्यंयतोविष्णुप्रियास्मृतिः ॥ ६ ॥ एवंविष्णुप्रियोमासोवैशाखोनामवैयम ॥ यद्धर्मश्रवणादेवमुच्यतेसर्वकिल्बिषैः ॥ ७ ॥ यातीतिकिमुवक्तव्यंतस्यानुष्ठानतत्परः ॥ यस्मिन्संगीतन्मात्रेहिप्रीयतेपुरुषोत्तमः ॥ ८ ॥ कथंनयातिचगतिंतस्यानुष्ठानतत्परः ॥ अस्माकंजगतांनाथोजनितापुरुषोत्तमः ॥ ९ ॥ तस्येष्टान्माधवेमासिधर्मानेतान्करोत्ययम् ॥ तस्यविष्णुः प्रसन्नात्मासहायेसर्वदास्थितः ॥ १० ॥ नतस्यभूपतेःसौरेप्रभावोममशिक्षणे ॥ नवासुदेवभक्तानामशुभंविद्यतेक्वचित् ॥ ११ ॥

को गानकरतेही उससे भगवान् प्रसन्न होतेहैं ॥८॥ तथा वह निश्चयही वैकुंठको कैसानहीं जाताहै अर्थात् वैशाखोक्त धर्मोंका करनेवाला अवश्यही उसगतिको प्राप्त करताहीहै वह जगतका स्वामी पुरुषोत्तम हमाराभी पिताहै॥९॥जो वैशाखके मासमें माधव भगवान्के प्रिय धर्मोंको करताहै उसपर विष्णुभगवान् प्रसन्न होयकर सदा उसकी सहायता किया करतेहैं ॥ १० ॥ हे सौरे ! उस राजाका प्रभाव मेरे वशमें नहींहै वासुदेव भगवान्के भक्तोंका अशुभ कहींभी

नहीं होयहै ॥ ११ ॥ उसको जन्म मृत्यु जरा व्याधि और भय कुछभी नहीं होतेहैं स्वामीका कार्य करनेमें जबतक नियुक्त पुरुषमें शक्ति रहै तबतक कार्य किये जाय तौ वह नरकगामी नहीं होताहै और जब कार्य करनेकी शक्ति जातीरहै तब स्वामीसे निवेदन कर दे तब उससमय सेवक अनृण होय जाताहै और वह नियोगी सुखभी पाताहै अत एव जो अपने प्रयोजनको निवेदन कर देताहै वह ऋणरहित होय जाताहै और न उसे कुछ पातक

जन्ममृत्युजराव्याधिभयंवाप्युपजायते ॥ नियोगीस्वामिकार्येषुयावच्छक्तिःसमीहते ॥ १२ ॥ तावतासकृतार्थःस्यान्नरकान्नैवगच्छति ॥ कार्येशक्तिविनिष्क्रांतेस्वामिनेचनिवेदयेत् ॥ १३ ॥ अनृणस्तावताभृत्योनियोगीसुखमश्नुते ॥ तस्मान्निवेदितार्थस्यनऋणंनचपातकम् ॥ १४॥ यत्नेकृतेस्वकर्तव्येनापराधोस्तिदेहिनः ॥ तस्मादशक्यकार्येस्मिन्नैवशोचितुमर्हसि ॥१५॥ इत्युक्तोब्रह्मणासौरिः पुनरत्यंतखिन्नधीः ॥ उवाचदीनयावाचागलद्बाष्पाकुलेक्षणः ॥ १६ ॥ प्राप्तंतातमयासर्वंत्वदंघ्रिभजनेनवै ॥ नाहंयास्येपुनःकर्तुं नियोगंपद्मसंभव ॥ १७ ॥

रहताहै ॥ १२॥१३ ॥ १४ ॥ अपने कर्तव्यका पालन करनेपर देहधारियोंका कुछ अपराध नहीं होताहै हे यम ! जब तू इस कार्यके करनेमें असमर्थ है तब तेरा क्या दोषहै तू शोच करनेके योग्य नहीं है ॥ १५ ॥ जब ब्रह्माजीने ऐसे कही तब तौ यम बहुतही दुःखी हुआ और आंखोंसे आँसू गेरता हुआ अत्यन्त दीनवाणीसे कहने लगा ॥ १६ ॥ हे तात ! आपके चरणोंका भजन करनेसे मुझे सब कुछ मिलगया परन्तु हे ब्रह्मन् ! अब मेरी अपने

कामपर जानेकी इच्छा नहीं है ।। १७ ।। जबतक पृथ्वीमंडलमें यह महावीर्यवान् राजा शासन करैगा हे प्रभो ! इस राजाको अपने धर्मसे चलायमान करादूंगा तब मैं कृतकृत्य होऊंगा जैसे गयामें पिंडदानकरनेवाला पुत्र होयहै हे कृपालु ! आप मेरे इस कार्यको सिद्ध कर दीजिये तब मैं फिर शासन करूंगा यमकी यह बात सुनकर ब्रह्माजी बडे शोचमें डूब गये ।। १८ ।। १९ ।। २० ।। और यमको अनेक प्रकारसे समझाय कर कहने लगे हे यम !

प्रशासतिमहावीर्येभूपेस्मिन्भूमिमंडले ॥ चालयित्वास्वधर्माच्चतमेकंभूपतिंविभो ॥ १८॥ कृतकृत्योस्मितनयोगयायांपिंडदोयथा॥ कृपालोतदिदंकार्यंशाधयस्वममाव्यय॥१९॥विज्वरस्तुततोभूयःशासनंतेकरोम्यहम्॥ श्रुत्वाब्रह्मायमेनोक्तंपुनश्चिंतापरायणः ॥२०॥ तमुवाचपुनर्ब्रह्मासांत्वयन्बहुधाप्यमुम् ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ननिग्राह्यस्त्वयाराजाविष्णुधर्मपरायणः ॥ २१ ॥ यदिच्छलयसेकोपाद्गच्छा मोह्यंतिकंहरेः ॥ निवेद्यसकलंतस्मैकर्मपश्चात्तदीरितम् ॥ २२ ॥ सएवकर्तालोकस्यधर्मस्यपरिपालकः ॥ सचदंडधरोस्माकंशास्ता कर्तानियामकः ॥ २३ ॥ नतदुक्तेस्तिप्रत्युक्तिरस्माकंविहितावृष ॥ नराजोक्तेस्तुप्रत्युक्तिर्दृश्यतेक्वापिभूतले ॥ २४ ॥

विष्णुके धर्ममें परायण राजाका तू निग्रह नहीं कर सकेहै ।। २१ ।। जो तू कोपके मारे यही चाहैहै तौ चल हम और तू दोनों विष्णुभगवान्के पास चलें और उनके सामने सब कथा कह सुनाये फिर जैसे वे आज्ञा करेंगे वैसेही करेंगे ।।२२।। वेही विष्णुभगवान् संपूर्ण लोकके कर्ता और धर्मके पालनेवाले हैं वेही हमारे दंडदाता, शास्ता, और नियममें चलानेवाले हैं ।।२३ ।। हे वृष ! भगवान्की आज्ञाके विरुद्ध हम कुछभी नहीं करसकें हैं और न पृथ्वीमंड

लमें राजाकी उक्तिके प्रतिकूल कुछ दिखाई देयहै ॥ २४ ॥ ऐसे यमको समझाय उसे संग ले ब्रह्माजी क्षीरसागरमें गये और उस चिन्मात्र निर्गुणस्वरूप परमेश्वर अद्वितीय पुरुषोत्तम भगवान्की सांख्ययोगद्वारा स्तुति करतेहुए तब ब्रह्माकी स्तुति सुन विष्णुभगवान् प्रगट होतेभये ॥ २५ ॥ २६ ॥ तब यम और ब्रह्मा बहुतही शीघ्र प्रणाम करते हुए और विष्णुभगवान् मेघके समान गंभीरवाणीसे कहने लगे ॥ २७ ॥ तुम यहां क्यों आये हैं क्या दनुजोंने

इत्याश्वास्ययमंतेनसाकंक्षीरांबुधिंययौ ॥ ब्रह्मातुष्टावचिन्मात्रंनिर्गुणंपरमेश्वरम् ॥ २५ ॥ सांख्ययोगैरद्वितीयमेकंतंपुरुषोत्तमम् ॥ आविरासीत्तदाविष्णुर्ब्रह्मणासंस्तुतोहरिः ॥ २६ ॥ प्रणामंचक्रतुस्तस्मैयमोब्रह्माचसत्वरम् ॥ ताबुवाचमहाविष्णुर्मेघगंभीरयागिरा ॥ २७ ॥ कस्माद्युवामिहायातौकिंदुःखंदनुजैरभूत् ॥ म्लानंयममुखंकस्मात्केनवानतकंधरः ॥ २८ ॥ एतद्वदस्वमेब्रह्मन्नित्युक्तश्चारुकंजजः ॥ त्वद्दासवर्येभूपालेभूमिंशासतिवैनराः ॥ २९ ॥ वैशाखधर्मनिरतायांतितेपदमव्ययम् ॥ ततोयमपुरीशून्यातेनचातीवदुःखितः ॥ ३० ॥ तेनयुद्धंचकारासौहंतुंदंडमथाददे ॥ त्वच्चक्रेणपराभूतोययावद्यममांतिकम् ॥ ३१ ॥

तुम्हें दुःख दियाहै ? यमका मुख मलीन कैसे होरहाहै इसके कंधे क्यों झुकरहे हैं ॥ २८ ॥ हे ब्रह्मन् ! आप यह सब वृत्तान्त मेरे प्रति कहिये तब ब्रह्माजी बोले हे प्रभो ! आपके श्रेष्ठ दास राजाके शासनसे सब मनुष्य ॥ २९ ॥ वैशाखके धर्मोंको करकरके आपके विष्णुपदको प्राप्त होते चले जांयहैं इसीसे यमपुरी शून्य होयगई इससे यम अत्यन्त दुःखी होयकर ॥ ३० ॥ यह यम राजासे युद्ध करनेको गया और उसके मारनेके लिये दंड

उठाताहुआ सोई आपके चक्रने इसे परास्त करदिया तब यह दुःखी होय मेरे पास आता हुआ ॥ ३१ ॥ हम आपके महात्मा भक्तोंको दंड देनेकी सामर्थ्य नहीं रखते हैं अतएव हे महाविभो ! हम आपकी शरण आये हैं॥ ३२॥इससे हे प्रभो ! उस राजाको दंड देयकर इस अपने यमकी रक्षा करिये ब्रह्माके ये वाक्य सुनकर विष्णुभगवान् हँसे और ब्रह्माजी तथा यमसे कहने लगे॥ ३३॥मैं लक्ष्मीजी तथा प्राण और देहका परित्याग करसकूं हूं श्रीवत्स कौस्तुभमणि तथा वैजयंती मालाकोभी त्याग सकूं हूं ॥ ३४ ॥श्वेतद्वीप, वैकुंठ, क्षीरसागर, शेष और गरुडको त्याग सकूं हूं परन्तु अपने भक्तको कदापि

नचशक्तावयंदंडंत्वद्भक्तानांमहात्मनाम् ॥ तस्मात्त्वामेवशरणंवयंप्राप्तामहाविभो ॥ ३२॥ तस्माद्भूपंदंडयित्वापालयैनंयमंस्वकम् ॥ इत्युक्तः प्रहसन्प्राहब्रह्माणंयममेवच ॥ ३३ ॥ लक्ष्मींवापिपरित्यक्ष्येप्राणान्देहमथापिवा ॥ श्रीवत्संकौस्तुभंमालांवैजयंतीमथापि वा॥ ३४ ॥ श्वेतद्वीपंचवैकुंठंक्षीरसागरमेवच ॥ शेषंचगरुडंचैवनभक्तंत्यक्तुमुत्सहे ॥ ३५ ॥ विसृज्यसकलान्भोगान्मदर्थेत्यक्तजी वितान् ॥ मदात्मकान्महाभागान्कथंतांस्त्यक्तुमुत्सहे ॥ ३६ ॥ तस्मात्त्वद्दुःखशमनेह्युपायंकल्पयाम्यहम् ॥ तस्यचायुर्मयाद त्तमयुतंभूपतेर्भुवि ॥ ३७ ॥ गतान्यष्टौसहस्राणितत्रेदानींनरांतक ॥ आयुःशेषेतेननीतेमत्सायुज्यंगतेपिच ॥ ३८ ॥

नहीं त्याग सकूं हूं ॥ ३५ ॥ भला ब्रह्माजी ! आपही बताओ कि जिनने मेरे लिये संपूर्ण भोग त्याग दिये, प्राण छोडदिये मेरे ही बीचमें अपने आत्मा लगायदीने उन्हें कैसे छोड सकूं हूं ॥ ३६ ॥ अतएव हे यम ! मैं तेरे दुःखके दूर करनेका उपाय करूं हूं उस राजाको मैंने दससहस्र वर्षकी आयु दीनीहै ॥ ३७ ॥ उनमेंसे आठ सहस्र तौ बीतगये और शेष दो सहस्र वर्षोंकी आयु भोगकर वह मेरी सायुज्यताको प्राप्त होयगा ॥ ३८ ॥

तब एक वेननाम राजा बडा दुराचारी होयगा वह इन वेदोक्त सब धर्मोंका लोपकर देयगा ॥ ३९ ॥ तब वैशाखके धर्म भी नष्ट होय जांयगे फिर अपनेही पापसे वेन दग्ध होय जायगा ॥ ४० ॥ पीछे मैं पृथुका रूप धारणकर फिर धर्मोंको प्रवृत्त करूंगा और वैशाखोक्त प्रख्यात धर्मोंको मनुष्योंसे कराऊंगा ॥ ४१ ॥ जो कोई मेरा भक्तहै जिनने मेरे ऊपर प्राण लगाये हैं और सब वस्तु त्याग दीनी हैं ऐसा तौ सहस्रोंमें एकही होताहै उसको ये वैशाखोक्तधर्म कहेना ॥ ४२ ॥ पृथ्वीमें

भविष्यतिततोराजावेनोनामदुरात्मवान् ॥ सलुंपतिमहाधर्मान्सर्वानेताञ्छ्रुतीरितान् ॥ ३९ ॥ तदावैशाखधर्माश्चविच्छिन्नाःस्युर्नसंशयः ॥ स्वकृतेनैवपापेनवेनोदग्धोभविष्यति ॥ ४० ॥ पश्चादहंपृथुर्भूत्वापुनर्धर्मान्प्रवर्तये ॥ तदाजनेषुप्रख्यातान्वैशाखोक्तान्करोम्यहम् ॥ ४१ ॥ मद्भक्तोमद्गतप्राणोयस्तुविन्यस्तसंग्रहः ॥ एकःसहस्रेभवितातस्यप्रख्यापयेदिमान् ॥ ४२ ॥ कश्चिदेवहिजानातुधर्मानेतान्क्षितौमम ॥ ततस्तेभविताकार्यंमाविषीदनरांतक ॥ ४३ ॥ दापयिष्यामितेभागंमासेस्मिन्माधवेपिच ॥ नरैःसर्वैश्चवैशाखधर्मनिष्ठैर्महात्मभिः ॥ ४४ ॥ भूपेनापिचकालेनखेदंशमयतेनच ॥ वीर्यशुल्कंतुतेभागंशत्रोर्भुंक्तेबलाधिकात् ॥ ४५ ॥ गृह्णन्गृह्णन्स्वकंभागंनभागीदुःखमर्हति ॥ त्वामुद्दिश्यनकुर्वंतिप्रत्यहंयेनराभुवि ॥ ४६ ॥

मेरे इन धर्मोंको कोई कोई ही जानैहैं इससे हे यम ! तेरे कार्यकी सिद्धि होयजायगी तू खेद मत करै ॥ ४३ ॥ वैशाखके धर्ममें निष्ठ महात्माओं द्वारा इस वैशाखमासमें भी तुझे भाग प्राप्त होयगा ॥ ४४ ॥ राजासे भी तेरा भाग मिलैगा तू खेदको दूरकर पराक्रमसे प्राप्त होनेके योग्य तेरे भागको वहा राजा अपने बलकी अधिकतासे शत्रुसे ग्रहण करें हैं ॥ ४५ ॥ अपने अपने भागको ग्रहण करताहुआ भागी दुःखके योग्य नहीं है जो मनुष्य पृथ्वीमें

तेरे उद्देश्यसे प्रतिदिन स्नान अर्घ्य जलकुंभ दही अन्नादिका दान न करेंगे उनके वैशाखमें कियेहुए सब कम निष्फल होयजांयगे ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ अतएव तू उस राजाके ऊपर क्रोधका परित्याग कर वह राजा तेरा भाग देयगा वह मेरा अत्यन्त भक्त है औरभी जो कोई प्राणी तेरा भाग देय कर वैशाखोक्त धर्मोंमें प्रवृत्त होय उनके धर्ममें तू विघ्न मतकरै, जो धर्मके पालनकर्त्ता तुझे छोड़ केवल मेराही यजन करै ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ उनको मेरी

स्नानंचार्घ्यंसोदकुंभंदध्यन्नंचांतिमेदिने ॥ वैशाखेसकलंकर्मतेषांचविफलंभवेत् ॥ ४७ ॥ तस्मात्क्रोधंत्यजनृपेभागदेमत्परायणे ॥ येकेचापिप्रकुर्वंतिलोकेतेभागदानराः ॥ ४८ ॥ वैशाखोक्तेमहाधर्मेतेषांविघ्नंचमाकुरु ॥ मामेवयेयजंत्यद्धात्वांहित्वाधर्मपालकम् ॥ ॥ ४९ ॥ मदाज्ञयामहाभागतदादंडंचत्वंकुरु ॥ नृपाद्भागंदापयितुंसुनंदंप्रेषयामिच ॥ ५० ॥ मच्छासनात्सवेगत्वाभागंतेदापयिष्यति ॥ तिष्ठत्येवंयमेस्वस्यसन्निधौगरुडासनः ॥ ५१ ॥ सुनंदंप्रेषयामासनृपंबोधयितुंविभुः ॥ सोपिगत्वाबोधयित्वापार्श्वंचपुनरागमत् ॥ ५२ ॥ इत्याश्वास्ययमंविष्णुस्तत्रैवांतरधीयत ॥ यमंस्वयंसांत्वयित्वातमनुज्ञाप्यवेगतः ॥ ५३ ॥

आज्ञासे तुम अवश्य दंड देना तथा उस राजासे तुम्हें भाग दिवानेके लिये मैं सुनन्दको अभी भेजू हूं ॥ ५० ॥ मेरी आज्ञासे वहां जायकर वह तुम्हें भाग दिवावैगा तब भगवान्ने यमके सामनेहीं ॥ ५१ ॥ राजाके समझानेके लिये सुनंदको भेज दिया वह जायकर राजाको समझाय फिर भगवान्के पास आगया ॥ ५२ ॥ ऐसे यमका आश्वासन कर विष्णु भगवान् वहीं अन्तर्धान होयगये तथा ब्रह्माभी यमको समझाय उसे आज्ञा दे ॥ ५३ ॥

अत्यन्त विस्मययुक्त होय अपने अनुचरोंको संग लिये चलेगये और यमभी कुछ प्रसन्नचित्त होय अपनी पुरीको चलागया ॥ ५४ ॥ पीछे विष्णु भगवान्‌की आज्ञासे जैसे सुनन्द कह आयाथा वैसेही वैशाखके धर्मोंमें परायण सब मनुष्य भाग देने लगे ॥ ५५ ॥ और राजाने सबसे यह कह दीनी कि जो कोई धर्मराजका भाग नहीं देयगा उनके वैशाखमें किये कर्मोंको यमराज स्वयं लेयलेंगे ॥ ५६ ॥ प्रतिदिन यमके निमित्त स्नान और अर्घ्यादि करने

अतिविस्मयमापन्नोययौधामसहानुगैः ॥ यमोपिस्वपुरींप्रायात्किंचित्संहृष्टमानसः ॥५४॥ पश्चाद्विष्णोर्निदेशेनसुनंदपरिबोधितः ॥ भागदाःसकलालोकायेवैशाखपरायणाः ॥ ५५ ॥ धर्मराजंपुरस्कृत्ययेनकुर्वंतिमानवाः ॥ तेषांहिस्वयमादत्तेपुण्यंवैशाखसंभवम् ॥ ५६ ॥ कुर्याच्चप्रत्यहंस्नानंदद्यादर्घ्यंयमायवै ॥ वैशाखेसकलंपुण्यमन्यथाविफलंभवेत् ॥ ५७ ॥ सोदकुंभंचदध्यन्नंपौर्णमास्यांचमाधवे ॥ धर्मराजंसमुद्दिश्यदातव्यंप्रथमंजनैः ॥ ५८ ॥ पश्चात्पितॄन्समुद्दिश्यगुरुमुद्दिश्यवैनरः ॥ मधुसूदनमुद्दिश्यपश्चाद्देवंजनार्दनम् ॥ ५९ ॥ शीतलोदकदध्यन्नंतांबूलंचसदक्षिणम् ॥ सफलंकांस्यपात्रस्थंब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ ६० ॥ दद्याच्चप्रतिमांदिव्यांमधुसूदनदेवताम् ॥ मासधर्मप्रवक्त्रेचदद्याद्विप्रायसीदते ॥ ६१ ॥

चाहिये नहीं तौ वैशाखके सब कर्म निष्फल होय जांयगे ॥ ५७ ॥ वैशाखकी पूर्णमासीके दिन सबसे पहिले धर्मराजके निमित्त जलका कुंभ और दही तथा अन्नका दान करना चाहिये ॥ ५८ ॥ पीछे पित्रीश्वरोंके निमित्त, गुरुके निमित्त, पीछे जनार्दन मधुसूदन भगवान्‌के निमित्त ॥ ५९ ॥ शीतल जल, दही, अन्न, तांबूल, दक्षिणा और फल कांसीके पात्रमें रखकर ब्राह्मणको निवेदन करै ॥ ६० ॥ और मधुसूदन भगवान्‌की प्रतिमा बनवा

यकर मासधर्मके प्रवर्त्तक गरीब ब्राह्मणको देय।।६१।।और सम्पूर्ण पूजाकी सामग्रीसे उसी धर्मवक्ता ब्राह्मणकी पूजा करै, सुनन्दकी ऐसी आज्ञा पाय राजा ऐसेही करता हुआ॥६२॥फिर वह राजा अपनी बची हुई आयुको पूरी करके यथेच्छ भोगोंका भोग पुत्रपौत्रादि करके संयुक्त वैकुंठको जाता हुआ ॥६३॥ ऐसे जब यह राजा वैकुंठ धामको प्राप्त हुआ तब वेननाम एक बड़ा नीच राजा होता हुआ उसने संपूर्ण धर्म और विशेषकरके वैशाखके धर्मोंका लोप कर

तमेवधर्मवक्तारंपूजयेद्विभवैःस्वकैः ॥ इत्यादिष्टःसुनंदेनतथाराजाचकारह ॥ ६२॥ सनीत्वाचायुषःशेषंभुक्त्वाभोगान्यथेप्सितान् ॥ पुत्रपौत्रादिभिर्युक्तोजगामहरिमंदिरम् ॥ ६३ ॥ वैकुंठस्थेनृपेतस्मिन्वेनोराजाधमोऽभवत् ॥ सर्वेधर्माश्चवैशाखधर्माअपिविशेषतः ॥ ॥ ६४ ॥ दुरात्मनाचतेनैवलुप्ताएवबभूविरे ॥ नप्रख्याताः पुनर्भूमौभूरिशोमोक्षहेतवः ॥ ६५ ॥ यःकश्चिन्नैवजानातिवैशाखोक्तानि माञ्छुभान् ॥ बहुजन्मार्जितेपुण्येपरिपक्वउपागते ॥ ६६ ॥ वैशाखोक्तेषुधर्मेषुमतिरात्यंतिकीभवेत् ॥ मैथिलउवाच ॥ पूर्वमन्वंतरस्थोहिवेनोराजादुरात्मवान् ॥ ६७ ॥ अयंवैवस्वतस्थोहिराजाचेक्ष्वाकुनंदनः ॥ इतिश्रुतंमयापूर्वमिदानींचोच्यतेत्वया ॥ ६८ ॥

दिया तथा मोक्षके हेतु इन धर्मोंको प्राणी फिर भूलगये॥६४॥६५॥कोईभी वैशाखोक्त शुभ धर्मोंको नहीं जानता हुआ बहुत जन्मान्तरके पुण्योंके इकट्ठे हो जानेसे।।६६।।प्राणियोंकी वैशाखोक्त धर्मोंके करनेमें बुद्धि अधिक प्रवृत्त होयहै यह सुन राजा मैथिल पूछता हुआ महाराज!आपने पहिले यह कथा कही कि दुरात्मा राजा वेन पूर्व मन्वतरमें हुआ ॥ ६७ ॥ और यह सूर्यवंशमें इक्ष्वाकुके कुलमें जन्मे रहे यह कथा मैंने आपसे पहिले सुनीही

और अब आपने यह कही ॥ ६८ ॥ पूर्वं राजाके वैकुंठ धाम जानेपर वेन राजा होयगा हे महामते श्रुतदेव ! मेरे इस संशयको दूर करिये ॥६९॥ श्रुतदेवजी बोले हे राजन् ! युग और कल्पोंकी व्यवस्था पुराणोंमें विषम रीतिसे है इस कथाकी अप्रसंगतामें तुम्हें शंका करनी उचित नहीं है ॥ ७० ॥ जैसे जैसे यह जिन जिन कल्पोंमें शुभ कथा हुई ह और मार्कंडेयजीने मेरे प्रति कही हैं सो सब मैंने तुमको सुनाई ॥ ७१ ॥ अतएव वैशाखोक्त धर्म

अथवैकुंठगः पश्चाद्वेनोराजाभविष्यति ॥ इत्येतंसंशयंछिंधिश्रुतदेवमहामते ॥ ६९ ॥ ॥ श्रुतदेवउवाच ॥ ॥ पुराणेषुचवैषम्यं युगकल्पव्यवस्थया ॥ नचाप्रामाण्यशंकातेकथायाव्यत्ययेक्वचित् ॥ ७० ॥ गतेदैनंदिनेकल्पेकथैषाशाश्वतीशुभा ॥ मार्कंडेयेनमेप्रोक्तासाचोक्तातवभूपते ॥ ७१ ॥ तस्मान्नख्यातिमायांतिधर्मावैशाखसंभवाः ॥ कश्चिदेवहिजानातिविरक्तोविष्णुतत्परः ॥ ७२ ॥ इतिश्रीस्कांदे महापुराणेवैशाखमाहात्म्येनारदांबरीषसंवादेयमदुःखसांत्वनंनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ श्रुतदेवउवाच ॥ ॥ यःप्रातःस्नातिवैशाखेमेषसंस्थेदिवाकरे ॥ मधुसूदनमभ्यर्च्यकथांश्रुत्वाहरेरिमाम् ॥ १ ॥ सतुपापविनिर्मुक्तोयातिविष्णोःपरंपदम् ॥ वाच्यमानांकथांहित्वायोन्यांसेवेतमूढधीः ॥ २ ॥

बहुत प्रसिद्ध नहीं हैं कोई कोई विष्णु भगवान्का भक्त इन धर्मोंको जाने हैं ॥ ७२ ॥ इति श्रीस्कान्दमहापुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसंवादे यमदुःखसा न्त्वनंनाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ श्रुतदेवजी कहने लगे मेषकी संक्रांतिमें वैशाखके महीनामें जो प्राणी प्रातःकाल स्नान करै और मधुसूदन भगवान्की पूजा करके भगवान्की यह मनोहर कथा सुनै ॥१॥ सो सब पापोंसे छूटकर विष्णुलोकको प्राप्त होयहै, जो दुर्बुद्धि बचतीहुई कथाको

छोडकर अन्य काम करनेमें प्रवृत्त होयजायहैं॥ २॥ वह रौरवनरकमें जायकर फिर पिशाचकी योनि पावे हैं यहां हम एक प्राचीन इतिहास कहे हैं ॥ ३ ॥ यह इतिहास पापोंका दूर करनेवाला पवित्र करनेवाला धर्मवर्धक और तत्काल सेवनीय है, प्राचीनकालमें गोदावरीके किनारेपर ब्रह्मेश्वर क्षेत्रमें ॥ ४ ॥ ब्रह्मनिष्ठ बडे परमहंस दुर्वासाऋषिके दो शिष्य होतेहुए ये सदा उपनिषद शास्त्रोंमें निष्ठावान् थे और किसीसे कुछ अपेक्षा नहीं रखते थे ॥ ५ ॥

रौरवंनरकंप्राप्यपैशाचींयोनिमाप्नुयात् ॥ अत्रैवोदाहरंतीममितिहासंपुरातनम् ॥ ३ ॥ पापघ्नंपावनंधर्म्यंसद्योवंद्यंपुरातनम् ॥ पुरा गोदावरीतीरेक्षेत्रेब्रह्मेश्वरेशुभे ॥ ४ ॥ दुर्वासशिष्यौपरमहंसौब्रह्मैकनिष्ठितौ ॥ सदैवोपनिषद्विद्यानिष्ठितौनिरपेक्षितौ ॥ ५ ॥ भिक्षा मात्राशिनौपुण्यौतौगुहावासिनावुभौ ॥ सत्यनिष्ठतपोनिष्ठावितिख्यातौजगत्त्रये ॥ ६ ॥ तयोर्मध्येसत्यनिष्ठःसदाविष्णुकथापरः ॥ श्रोतॄणामप्यभावेचव्याख्यातॄणांतथानृप ॥ ७ ॥ तदाकर्मकलानित्याःकरोत्यद्धामुनीश्वरः ॥ श्रोताचेदस्तियः कश्चित्तस्मैव्याख्या त्यहर्निशम् ॥ ८ ॥ यदिव्याख्यातिकश्चिद्वापुण्यांविष्णुकथांशुभाम् ॥ तदासंकुच्यकर्माणिशृणोतिश्रवणेरतः ॥ ९ ॥

भीख मांगकर जो कुछ मिलता था उसीको खाकर पर्वतकी गुहामें पडेरहते थे ये दोनों तीनों लोकमें सत्यनिष्ठ और तपोनिष्ठके नामसे विख्यात होतेहुए ॥ ६ ॥ इन दोनोंमेंसे सत्यनिष्ठ तौ सदा भगवान्की कथामें तत्पर रहता था जो श्रोता और वक्ता न होय तौ वह मुनीश्वर स्वयं कर्म करनेमें तत्पर रहता था और जो कोई श्रोता होता था तौ स्वयं कथा कहने लगता था ॥ ७ ॥ ८ ॥ और जो कोई इस पुण्यरूपा कथाकी

व्याख्या करता तौ संपूर्ण कर्मोंको छोड कथा सुननेमें प्रवृत्त होजाता था ॥ ९ ॥ जो तीर्थ बहुत दूर थे और जो देवताओंके मंदिर अत्यन्त दूरवर्ती थे उन कथासे विक्षेप करनेवाले संपूर्ण तीर्थोंको तथा कर्मोंको छोडकर स्वयं दिव्य कथाओंका श्रवण करताहुआ और श्रोताओंके प्रति स्वयं कथा कहता था हे राजन् ! विना कथा श्रवण किये अन्नको ग्रहण नहीं करताथा ॥ १० ॥ ११ ॥ रोगसे पीडित जो वक्ता अपने घरमें यह कथा कहै, कूप जलसे

अतिदूरस्थतीर्थानिदेवतायतनानिच ॥ हित्वाकथाविरोधीनितथाकर्माणिभूरिशः ॥ १० ॥ शृणोतिचकथांदिव्यांश्रोतृभ्योवक्तिवैस्वयम् ॥ विनाकथांनजानातिसेव्यमन्यन्नरेश्वर ॥ ११ ॥ व्याख्यातिचगृहेस्वस्यवक्तारोगाद्युपद्रुतः ॥ कूपस्नानपरोभूत्वाशृणोत्येवकथांमुनिः ॥ १२ ॥ कथायाश्चविरामेतुस्वकृत्यंसाधयत्यलम् ॥ कथांवैशृण्वतःपुंसोजन्मबंधोनविद्यते ॥ १३ ॥ सत्त्वशुद्धिस्ततोविष्णावरतिश्चैवगच्छति ॥ रतिश्चजायतेविष्णौसौहृदंचैवसाधुषु ॥ १४ ॥ निरंजन्निर्गुणंब्रह्मसद्योहृद्यवरुध्यते ॥ ज्ञानहीनस्यवैपुंसःकर्मवैनिष्फलंभवेत् ॥ १५ ॥

स्नान करके वह मुनि कथा सुनताहुआ ॥ १२ ॥ कथा समाप्त होनेपर अपने नित्य कर्म कर्त्ताहुआ, जो मनुष्य ऐसे कथा श्रवण करै उसको जन्मके बंधन नहीं व्यापे है ॥ १३ ॥ तथा विष्णुभगवान्में सत्त्वशुद्धि उत्पन्न होयहै और अरति दूर होयजायहै, विष्णुभगवान्में स्नेहकी उत्पत्ति होय और साधुमहात्माओंमें सुहृदता उत्पन्न होयहै ॥ १४ ॥ और निरंजन निर्गुण ब्रह्म हृदयमें आयकर विराजें हैं, जो पुरुष ज्ञानहीन है उसके सब कर्म नष्ट

होजांयहैं ॥ १५ ॥ जैसे अंधेके हाथमें दर्पण निष्फल होयहै वैसेही बिना ज्ञानके बहुधा कियेहुए कर्मभी निष्फल होयहैं जो महात्मा बहुधा कर्म करें हैं उन्हें सत्त्वशुद्धि प्राप्त होयहै और सत्त्वशुद्धिसे वेदमें मति उत्पन्न होयहै, वेदसे ज्ञान और ज्ञानसे ध्यानकी उत्पत्ति होयहै ॥ १६ ॥ १७ ॥ जो बहुधा वेदोक्त रीतिसे ज्ञान, ध्यानादिकमें प्रवृत्त होय परन्तु जहां विष्णुभगवान्की कथा न होती होय जहां साधुमहात्मा न होंय वहां जो साक्षात् गंगाजीका

बहुधाचरितंचापियथैवांधकदर्पणम् ॥ कर्माणिक्रियमाणानिबहुधाशोचितात्मभिः ॥१६॥सत्त्वशुद्धैर्भवंत्येव सत्त्वशुद्ध्याश्रुतिंव्रजेत् ॥ श्रुतेस्तुज्ञानमासाद्यज्ञानाद्ध्यानायकल्पते ॥१७॥ बहुधाश्रवणंध्यानंमननंश्रुतिचोदितम् ॥ यत्रविष्णुकथानास्तियत्रसाधुजनानहि ॥ १८ ॥ साक्षाद्गंगातटंवापित्याज्यमेवनसंशयः ॥ यद्देशेतुलसीनास्तिवैष्णवंधामवाशुभम् ॥ १९ ॥ यत्रविष्णुकथानास्तिमृतस्तत्रतमोव्रजेत् ॥ यद्ग्रामेवैष्णवंधामनास्तिकृष्णमृगोपिवा ॥ २० ॥ यत्रविष्णुकथानास्तिसाधवोवातदाश्रयाः ॥ मृतस्तत्रपुमान्क्षिप्रंश्वानयोनिशतंव्रजेत् ॥ २१ ॥ विचार्योपनिषद्विद्यामितिनिश्चित्यवैमुनिः ॥ सदाविष्णुकथासक्तोविष्णुस्मृतिपरायणः ॥ २२ ॥

किनारा होय तौ भी त्यागदेय जिस देशमें तुलसी न होय अथवा विष्णुका मंदिर न होय, जहां विष्णुभगवान्की कथा न होय वहांका मराहुआ प्राणी अंधतामिस्र नरकमें पडता है जिस ग्राममें विष्णुका मंदिर न होय अथवा काला मृग न होय ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ जहां विष्णुकी कथा न होती होय जहां साधुमहात्मा न हों वहां का मराहुआ प्राणी सौ जन्मतक कुत्ताकी योनि पावै है ॥ २१ ॥ उपनिषद् विद्याका विचार कर उस मुनीश्वरने

यह बात निश्चय करलीनी सदा विष्णुकी भक्तिमें तत्पर रहै और विष्णुकी कथा श्रवण करै ॥ २२ ॥ कथाश्रवणसे अधिक और किसी कार्यको न मानै और दूसरा जो तपोनिष्ठ था वह बडा दुराग्रही कर्ममें निष्ठावान् था ॥ २३ ॥ न तौ स्वयंही कथा कहता था न स्वयं सुनता था और बँचती हुई कथाको छोड तीर्थस्नानके लिये चलाजाता था ॥ २४ ॥ हे राजन् ! तीर्थपर होतीहुई कथाको इस डरसे छोडदेता हुआ कि कहीं तपमें विघ्न न

नकिंचिदधिकंजातुमन्यतेश्रवणात्परम् ॥ इतरस्तुतपोनिष्ठःकर्मनिष्ठोदुराग्रही ॥ २३ ॥ नव्याख्यातिस्वयंवापिनशृणोतिचसत्क थाम् ॥ वाच्यमानांकथांहित्वातीर्थस्नानायगच्छति ॥ २४ ॥ तीर्थेपिचप्रवृत्तायांकथायांभूमिपालक ॥ कर्मलोपभयाद्दूरंयातिचां चल्यशंकितः ॥ २५ ॥ व्रजंतिगृहकृत्यार्थंसंगमात्परतोजनाः ॥ नश्रोतारोनवक्तारस्तस्य पार्श्वेतुकर्मिणः ॥ २६ ॥ दुरात्मनस्तुदु र्बुद्धेःकालएवक्षयंगते ॥ जिह्वांश्रुतिंचनक्कापिनप्राप्ताहिकथाविभोः ॥ २७ ॥ अश्रोतृत्वादवक्तृत्वाद्दुर्बुद्धित्वाद्दुराग्रहात् ॥ पश्चात्पंच त्वमासाद्यसद्योधर्मेणवैमुनिः ॥ २८ ॥ पिशाचोभूच्छमीवृक्षेछिन्नकर्णाह्वयोबलः ॥ निराश्रयोनिराहारःशुष्ककंठोष्ठतालुकः ॥ २९ ॥

होयजाय ॥ २५ ॥ श्रोता और वक्ता कोई भी उस कर्मनिष्ठके निकट होयकर घरोंके कृत्यके लिये नहीं निकलता था ॥ २६ ॥ वह दुरात्मा दुर्बुद्धि अपना कालक्षेप ऐसेही किया करता था न जिह्वासे विष्णुकथा कहता था न कानोंसे सुनता था ॥ २७ ॥ विष्णुभगवान्‌की कथाके न सुननेसे न कहनेसे तथा अपनी मूढता और दुराग्रहसे जब उसने अपनी देह छोडी ॥ २८ ॥ तब वह शमीके वृक्षपर छिन्नकर्णनाम महाबलवान् पिशाच होताहुआ, आश्रयहीन क्षुधासे व्याकुल

कंठ ओष्ठ और तालु जिसके सूखगये ॥ २९ ॥ ऐसे अत्यन्त दुःख भोगते भोगते दशसहस्र वर्ष व्यतीत होयगये कहीं भी वह अपने रक्षकको नहीं देखता हुआ भूखसे व्याकुल अत्यन्त दुःखी ॥ ३० ॥ अपने किये हुए कर्मोंपर विचार करता हुआ उन्मत्तकीसीनांई भ्रमने लगा भूखकेमारे इधर उधर भटकता हुआ कहींभी निवृत्तिको प्राप्त न हुआ ॥ ३१ ॥ उस अकृतात्माकी देहपर पवन अग्निके समान लगती थी जल कालाग्निके तुल्य और फल

एवंवैखिद्यमानस्यसमादिव्यायुतागताः ॥ नापश्यत्स्वस्यत्रातारंनिराहारोतिदुःखितः ॥ ३० ॥ स्वकृतंचिंतयानस्यमत्तोन्मत्तइवाभ्रमत् ॥ क्षुधयापर्यटन्वापिनिवृत्तिंनापमूढधीः ॥ ३१ ॥ कृशानुसदृशोवायुरंगंस्पृष्ट्वाकृतात्मनः ॥ कालाग्नितुल्याआपश्चफलपुष्पादिकंविषम्॥ ३२ ॥ नक्कापिसुखमापेदेकर्मठोदीनधीरयम् ॥ एवंव्यवसितेतस्मिन्नरण्येजनवार्जिते ॥ ३३ ॥ कथयारहितेक्षेत्रेस्वाश्रये साधुवर्जिते ॥ दैवादायात्सत्यनिष्ठस्तदापैठीनसींपुरीम् ॥ ३४ ॥ गच्छन्मार्गेददर्शासौछिन्नकर्णंबहुव्यथम् ॥ दृष्ट्वात्मानंद्रावयंतंरुदंतं क्षुधयातुरम् ॥ ३५ ॥ माभैषीतिसमाभाष्यकोसीत्याहमुनीश्वरः ॥ दशेदृशीचकस्मात्तेनतेदुःखमतःपरम् ॥ ३६ ॥

पुष्पादिक विषके सदृश मालूम होतेथे॥ ३२॥ऐसे उस दुर्बुद्धि कर्मठको कहीं भी सुखकी प्राप्ति न हुई इस प्रकारसे वह उस जनशून्यव नमें फिरताथा॥ ३३ ॥ कथा जहां न बँचै ऐसे साधुवर्जित आश्रय स्थानमें वह भटकताथा, कदाचित् दैवयोगसे सत्यनिष्ठ पैठीनसीपुरीमें आता हुआ॥ ३४ ॥ मार्गमें दुःखसे पीडित छिन्न कर्ण नाम पिशाचको देखता हुआ क्षुधासे आतुर अपने आत्माको द्रावित करता बुरी तरहसे रोता था॥ ३५॥ उसे देख मुनीश्वर कहने लगा डरै

मत तू कौन है तेरी यह दशा कैसे होयगई है अब यहांसे आगे तुझे दुःख नहीं होयगा ॥ ३६ ॥ जब सत्यनिष्ठने ऐसे आश्वासन किया तब छिन्नकर्ण अत्यन्त व्याकुल होय कहता हुआ हे प्रभो ! मैं दुर्वासाका शिष्य तपोनिष्ठ नाम यती हूं ॥ ३७ ॥ ब्रह्मेश्वरक्षेत्रनिवासी मैं बडा दुराग्रही कर्मनिष्ठ होता हुआ कर्मके लोप होजानेके भयसे मैंने अपनी मूर्खता और अपने दुर्बुद्धिपनेसे ॥ ३८ ॥ महात्माओंकी होतीहुई विष्णुकथाका आदर नहीं किया और कर्मोंके काटनेहारी कथा मैंने श्रोताओंको भी नहीं सुनाई ॥ ३९ ॥ उसी कर्मके घोर परिणामसे मेरी मृत्यु हुई और मैं छिन्नकर्ण

इत्याश्वस्तोमुनाच्छिन्नकर्णःप्राहातिविह्वलः ॥ तपोनिष्ठोयतिरहंशिष्योदुर्वाससःप्रभो ॥ ३७ ॥ ब्रह्मेश्वरक्षेत्रवासीकर्मनिष्ठोदुराग्रही ॥ कर्मलोपभयान्मौढ्यान्मयादुर्बुद्धिनामुने ॥ ३८ ॥ साधुभिर्वाच्यमानापिनादृताविष्णुसत्कथा ॥ नव्याख्याताचश्रोतृभ्यःकथाकर्मनिकृंतनी ॥ ३९ ॥ तेनकर्मविपाकेनमहताहंमृतिंगतः ॥ छिन्नकर्णोभवंनाम्नापिशाचोदुःखविह्वलः ॥ ४० ॥ नपश्यामिचत्रातारंदुःखादस्मात्कथंचन ॥ तवदृष्टिपथंयातोदिष्ट्याहंगतकल्मषः ॥ ४१ ॥ अद्यमेदेवतास्तुष्टागुरवःसाधवश्चये ॥ हरिश्चमेप्रसन्नोभूद्यतस्तेदर्शनंमम ॥ ४२ ॥पपातपादयोर्भूमौत्राहित्राहीतिवैरुदन् ॥ ततस्तुकृपयाविष्टःसत्यनिष्ठोमहायशाः ॥ ४३ ॥

नाम पिशाच दुःखसे अत्यन्त व्याकुल हुआ ॥ ४० ॥ इस घोर दुःखसे छुडानेवाला मुझे कोई नहीं दीखैहै मार्गमें जातेहुये तुम्हें देखनेसे मेरे भाग्य फिरगये मेरे पाप जातेरहे ॥ ४१ ॥ आज मेरे ऊपर सब देवता, गुरु और साधु, संतुष्ट हैं आज हरिभगवान् मेरे ऊपर प्रसन्न ह जो तुम्हारे दर्शन हुएहैं ॥ ४२ ॥ ऐसे त्राहि त्राहि करता हुआ बुरी तरह रुदन करता उसके चरणोंपर गिरपडा तब तौ महायशस्वी सत्यनिष्ठको बडी

दया आई ॥ ४३ ॥ दोनों हाथसे पकडके उठाय लिया और हाथमें ले अपने सुकृतका पुण्य देताहुआ ॥ ४४ ॥ वैशाखमासके माहात्म्यको क्षणभर सुननेका फल देताहुआ इससे तत्काल उसके पाप दूर होयगये ॥ ४५ ॥ पिशाचका देह छोड दिव्य देह धारणकर दिव्य विमानपर बैठ महामुनिको प्रणामकर ॥ ४६ ॥ आमंत्रणकर परिक्रमा दे विष्णुलोकको जाताहुआ तब सत्यनिष्ठ पैठीनसी पुरीको जाता हुआ

दोर्भ्यामुत्थापयामासशंतमाभ्यांमुनीश्वरः ॥ ततस्त्वपउपस्पृश्यददौपुण्यमनुत्तमम् ॥ ४४ ॥ वैशाखमासमाहात्म्यश्रवणस्यमुहूर्तजम् ॥ तेनपुण्यप्रभावेनसद्योध्वस्ताखिलाशुभः ॥ ४५ ॥ पिशाचदेहान्निर्मुक्तोदिव्यदेहधरोभवत् ॥ दिव्यंविमानमारुह्यतंप्रणम्य महामुनिम् ॥ ४६ ॥ आमंत्र्यचपरिक्रम्यययौविष्णोःपरंपदम् ॥ सत्यनिष्ठस्ततोधीमान्ययौपैठीनसींपुरीम् ॥ ४७ ॥ माहात्म्यश्रवणस्यैवंचिंतयानःपुनःपुनः ॥ श्रुतदेवउवाच ॥ यत्रविष्णुकथापुण्याशुभालोकमलापहा ॥ ४८ ॥ तत्रसर्वाणितीर्थानिक्षेत्राणिविविधानिच ॥ यत्रप्रवहतेपुण्याशुभाविष्णुकथापगा ॥ ४९ ॥ तद्देशवासिनांमुक्तिःकरसंस्थानसंशयः ॥ ५० ॥ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणेवैशाखमाहात्म्येनारदांबरीषसंवादेकथाप्रशंसायांपिशाचमुक्तिप्राप्तिर्नामचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

॥ ४७ ॥ और वारम्वार माहात्म्यश्रवणकी चिन्ता करता हुआ श्रुतदेवजी बोले जहां शुभ फलके देनहारी सब लोकके पाप दूर करनहारी विष्णुभगवान्की कथा होयहै ॥ ४८ ॥ वहांही सम्पूर्ण तीर्थ और अनेक क्षेत्र आय जांयहैं जहां विष्णुकभगवान्की कथारूपी नदी बहैहै उस देशमें वास करनेवालोंके हाथमें मुक्ति रहैहै इसमें कोई संदेह नहीं है ॥ ४९ ॥ ५० ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदांबरीषसंवादे कथाप्रशं

सायां पिशाचमुक्तिप्राप्तिर्नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ श्रीश्रुतदेवजी बोले—हे राजन् ! मधुसूदन भगवान्‌के प्यारे वैशाखमाहात्म्यके फलको और भी सुनो यह पापनाशक है ॥ १ ॥ प्राचीनकालमें पांचाल देशमें पुण्यशील और बुद्धिमान् भूरियशका पुत्र पुरुयश होताहुआ ॥ २ ॥ पिताके मरनेपर आप राजा हुआ यह बहुत शूर वीर और उदार था धनुर्विद्यामें बडा प्रतापी था ॥ ३ ॥ धर्मपूर्वक पृथ्वीका शासन करताहुआ परन्तु

॥ श्रुतदेवउवाच ॥ ॥ भूयःशृणुष्वभूपालमाहात्म्यंपापनाशनम् ॥ वैशाखस्यचमासस्यवल्लभस्यमधुद्विषः ॥ १ ॥ पुरापांचालदेशेतुराजापुरुयशाभवत् ॥ तनयोभूरियशसःपुण्यशीलस्यधीमतः ॥ २ ॥ पितर्युपरतेभूपराज्यस्थोधर्मलालसः ॥ शौर्योदार्यगुणोपेतोधनुर्विद्याविशारदः ॥ ३ ॥ शशासपृथिवींसर्वांस्वधर्मेणमहामतिः ॥ पूर्वजन्मजलादानाद्दोषेणमहतावृतः ॥ ४ ॥ संपद्धानिमवापासौकालेनकियतानघ ॥ हयागजामृतिंयातामहद्रोगेणपीडिताः ॥ ५ ॥ दुर्भिक्षमतुलंचासीन्निर्मानुष्यविधायकम् ॥ राज्यंकोशस्तदाचासीद्गजभुक्तकपित्थवत् ॥ ६ ॥ बलहीनंनृपंज्ञात्वाकोशराष्ट्रविवर्जितम् ॥ तंजेतुमेषसमयइतिनिश्चितमानसाः ॥ ७ ॥ आजग्मुःशतशोभूपरिपवस्तस्यभूपतेः ॥ जिग्युर्युद्धेनतंभूपंपांचालविषयाधिपम् ॥ ८ ॥

पूर्वजन्ममें इसने जलका दान नहीं कियाथा इस पापके मारे कुछ कालमें इसकी सब संपत्ति नष्ट होयगई बडे २ रोगोंसे पीडित होयकर घोडा हाथी मरगये ॥ ४ ॥ ५ ॥ फिर राज्यमें ऐसा दुर्भिक्ष पडा कि सब मनुष्य नष्ट होतेहुए तथा राज्य और कोष हाथीसे भक्षण कियेहुए कैथाके समान होयगये ॥ ६ ॥ कोष और राज्य नष्ट होयगये हैं जिसके ऐसे राजाको बलहीन जान उसे जीतनेका मनमें निश्चयकर ॥ ७ ॥ उसके वैरी सैंकडों

राजा आतेहुए और उस पांचाल देशके राजाको युद्धमें जीतलेते भये ॥ ८ ॥ ऐसे राजा परास्त होयकर पहाडकी कंदरमें प्रवेश करताहुआ संगमें शिखिनी रानी और धात्र्यादि गण थे ॥ ९ ॥ वहांका मार्ग और कोई नहीं जानते थे राजा बडे कष्टसे व्याकुल तिरेपन वर्ष व्यतीत करता हुआ ॥ १० ॥ तब राजाके मनमें चिन्ता उत्पन्न हुई कि मेरी ऐसी दशा कौन कर्मसे हुई है मैं तौ कर्म और जन्मसे शुद्ध हूं माता पिताका सदैव हित साधन करता

पराजितस्ततोराजाविवेशगिरिगह्वरे ॥ शिखिन्याभार्ययासाकंधात्र्यादिगणसंयुतः ॥ ९ ॥ अज्ञातपद्धतिश्चान्यैर्बहुदुःखसमाकुलः ॥ त्रिपंचाशत्समाश्चैवनीतास्तेनविलीयता ॥ १० ॥ चिंतयामासभूपालःकिमेतदितिभूरिशः ॥ कर्मणाजन्मशुद्धोहंमातृपितृहितेरतः ॥ ॥ ११ ॥ गुरुभक्तःसदाक्षिण्योब्रह्मण्योधर्मतत्परः ॥ दयावान्सर्वभूतेषुदेवभक्तोजितेंद्रियः ॥ १२ ॥ नभ्रातामेनपुत्रोमेनचमेसुहृदोहिताः ॥ दयापौरुषविख्याताःकुलीनस्यापिमेकुतः ॥ १३ ॥ केनवाकर्मणाचासीद्दारिद्र्यंभूरिदुःखदम् ॥ केनवापजयोमेद्यकेनवावनवासिता ॥ १४ ॥ इतिचिंताकुलोराजागुरुंसस्मारखिन्नधीः ॥ याजोपयाजकौनामसर्वज्ञौमुनिसत्तमौ ॥ १५ ॥

रहाहूं ॥ ११ ॥ मैं सदा गुरुमें भक्ति ब्राह्मणोंकी सेवा तथा धर्ममें तत्परता करतारहा हूं संपूर्ण प्राणियोंपर दयावान्, देवभक्त और जितेंद्रिय रहाहूं ॥ १२॥ मेरा भाई पुत्र सुहृद और हितकारी कोई नहीं है उत्तम कुलमें मैंने जन्म लिया मेरे दया पौरुषभी कहांगये॥ १३॥ यह घोर दुःखदायक दरिद्र कौन कर्मद्वारा उपस्थित हुआहै कौन कर्मसे मेरी पराजय हुई है और कौन कर्मसे मैं वनवास करूं हूं॥ १४॥ऐसे चिन्ता करताहुआ बुद्धि जिसकी खिन्न ऐसा राजा अपने

गुरुको स्मरण करताहुआ तब याज और उपयाजक नाम दो मुनीश्वर सर्व ज्ञाता ॥ १५ ॥ राजाके याद करनेपर आय पहुँचे राजा इन्हें देख सहसा उठ खडाहुआ ॥ १६ ॥ और भक्तिपूर्वक शिर झुकाताहुआ वनमें वास करनेसे पीडित राजचिह्नसे हीन वनके मार्गको जाने नहीं ॥ १७ ॥ थोडी देरतक चुप खडा रहा फिर उनके चरणोंपर गिरपडा तब वे दोनों मुनि अपने हाथसे राजको उठाते हुए, आंसू पोंछ गेरे और वनके पुष्पादिकसे राजा

आजग्मतुर्मुनींद्रौतौराज्ञाहूतौमहामती ॥ तौदृष्ट्वासहसोत्थायराजापांचालवल्लभः ॥ १६ ॥ ननामशिरसाभक्त्याप्रवासेनातिपीडितः ॥ राजचिह्नविहीनश्चकेनाप्यज्ञातपद्धतिः ॥ १७ ॥ तूष्णींतस्थौमुहूर्तंहिपतित्वाभुविपादयोः ॥ दोर्भ्यामुत्थापितस्ताभ्यांपरिमृष्टाश्रुलोचनः ॥ १८ ॥ विधिवत्पूजयामासवन्यैरेवार्हणैःशुभैः ॥ सूपविष्टौतुतौविप्रौपप्रच्छानतकंधरः ॥ १९ ॥ ब्राह्मणौवदतंदुःखकारणंचक्षितीशितुः ॥ कर्मणाजन्मशुद्धस्यपितृदेवप्रियस्यच ॥ २० ॥ पापभीरोः कृपालोश्चगुरुभक्तस्यमेकुतः ॥ दारिद्र्यंचकोशहानिश्चरिपुभिश्चपराभवः ॥ २१ ॥ कस्मादरण्यवासश्चकुतएकाकितामम ॥ नपुत्रोनचमेभ्रातान हिताःसुहृदश्चमे ॥ २२ ॥

उनकी विधिवत् पूजा करताभया॥ १८॥ऐसे जब वह दोनों ऋषि सुखपूर्वक बैठगये तब शिर नवाय राजाने प्रश्न किया ॥ १९॥ हे मुनिवरो ! मेरे दुःखका कारण कहिये मैं तौ कर्म और जन्मसे शुद्ध हूं पित्रीश्वर और देवता सबका हित करता रहाहूं॥ २०॥ पापसे डरूं हूं प्राणियोंपर दयावान् और गुरुमें भक्ति रखनेवाले मुझको दारिद्रका क्या कारणहै मेरा कोष नष्ट क्यों होगया शत्रुओंने मुझे क्यों जीतलिया ॥ २१ ॥ मैं वनमें वास करूं हूं मैं अकेले किस कारणसे

रहगयाहूं मेरे पुत्र पौत्र भाई बंधु हित सुहृद कोई नहीं रहे ॥ २२ ॥ मैंने निष्पाप होय अपने राज्यका पालन किया फिर अकाल कैसे पडा है मुनि पुंगव ! यह सब कथा विस्तारपूर्वक मेरे सामने कहिये ॥ २३ ॥ राजाके अत्यन्त दुःखसे भरेहुए यह वचन सुन थोडी देर ध्यान कर वह दोनों मुनि कहने लगे ॥ २४ ॥ याज और उपयाज बोले—हे राजा ! सुन हम तेरे दुःखका कारण कहें हैं तू पहिले दस जन्मपर्य्यन्त अत्यन्त घोर पापी व्याध

दुर्भिक्षंवाकुतश्चासीद्देशेमत्पालितेनघे ॥ एतद्विस्तार्यमेब्रूतंकारणंमुनिपुंगवौ ॥ २३ ॥ इत्युक्तौतौमुनिश्रेष्ठौभूपेनात्यंतदुःखिना ॥ प्रत्यूचतुर्महात्मानौकिंचिद्ध्यानपरायणौ ॥२४॥ ॥याजोपयाजावूचतुः॥ शृणुभूपप्रवक्ष्यावस्तवदुःखस्यकारणम्॥पुराभूपमहापापी व्याधस्त्वंदशजन्मसु ॥ २५ ॥ निष्ठुरःसर्वलोकानांसदाहिंसापरायणः ॥ धर्मलेशाकरः क्वापिनदमोनचवैशमः ॥ २६ ॥ नजिह्वाव क्तिनामानिविष्णोर्वापिकथंचन॥ चेतःस्मरतिगोविंदचरणांबुरुहद्वयम्॥२७॥नप्रणामःकृतःक्वापिशिरसापरमात्मने॥ नवजन्मान्विते भूपगतान्येवंदुरात्मनः ॥ २८ ॥ दशमेजन्मनिप्राप्तेव्याधस्त्वंसह्यभूधरे ॥ निष्ठरःसर्वलोकानांनराणांत्वंनरांतकः ॥ २९ ॥

हुआ ॥ २५ ॥ तू बहुत निष्ठुर संपूर्ण जीवमात्रकी हिंसामें तत्पर रहताथा धर्म इन्द्रिय दमन और शांति लेशमात्रभी न थे ॥ २६ ॥ तेरी जिह्वासे कभी विष्णुके नामोंका उच्चारणभी नहीं होताथा न कभी तैंने मनमें गोविन्द चरणारविन्दका ध्याय किया ॥ २७ ॥ न तैंने कभी परमात्माके अर्थ नमस्कार करी हे राजन् ! ऐसेही पाप करते करते तेरे नौ जन्म व्यतीत होयगये ॥ २८ ॥ फिर दसवेंजन्ममें तू सह्याद्रिपर व्याधका जन्म धारण

कर बडा निष्ठुर हुआ सब प्राणीयोंके प्राणनाश करनेको यमराजके समान हुआ ॥ २९ ॥ दयाहीन शस्त्रद्वारा जीविका करनेवाला सदा हिंसामें तत्पर निर्गुण मार्गमें जानेवालोंको कष्टदायक शठ ॥ ३० ॥ गौडदेशकी प्रजाके मनुष्योंका मांस भक्षण करता हुआ अपने हितकी बात न जानता समयको व्यतीत करता हुआ ॥ ३१ ॥ मृग और पक्षियोंके छोटे २ बच्चोंका वध करनेसे दयाहीन और दुर्बुद्धि तेरे इस जन्ममें संतान नहीं हुईहै ॥ ३२ ॥

दयाहीनःशस्त्रजीवीसदाहिंसापरायणः ॥ निर्गुणःसकलत्रस्त्वंमार्गपीडाकरःशठः ॥३०॥ प्रजानांगौडदेश्यानांराक्षसोमानुषाशनः ॥ एवंचाब्दान्यतीतानिनैजंहितमजानतः ॥ ३१ ॥ बालापत्यमृगाणांचपक्षिणांचवधात्तव ॥ दयाहीनस्यदुर्बुद्धेर्जन्मन्यस्मिन्नपुत्रता ॥ ॥ ३२ ॥ विश्वासघातकत्वेनभ्रातरोनैवसोदराः ॥ मार्गपीडाकरत्वेन सुहृज्जनविवर्जितः ॥ ३३ ॥ साधूनांचतिरस्काराच्छत्रुभिस्तेपराजयः ॥ कदाप्यदत्तदोषेणदारिद्र्यंपतितंगृहे ॥ ३४ ॥ सदैवोद्वेगकारित्वात्प्रवासस्तेदुरासदः ॥ सर्वेषामप्रियत्वाच्चदुःखमत्यंतदुःसहम् ॥ ॥ ३५ ॥ निराहारोप्यतःपूर्वंसदाक्रूरेणकर्मणा ॥ तस्माद्राज्यापहारस्तेजन्मन्यस्मिन्महामते ॥ ३६ ॥

तैंनें विश्वासघात किये इससे इस जन्ममें तुझे सहोदर भाई नहीं मिलेहैं तैंने मार्गमें यात्रियोंको बडे कष्ट दिये इस कारणसे तेरे कोई सुहृद नहींहै ॥ ३३ ॥ साधुओंका तिरस्कार करनेसे शत्रुओंने तुझे पराजित कियाहै तैंने कभी दान नहीं दिया इस दोषसे तेरे घरमें दरिद्र आयाहै ॥ ३४ ॥ सदा उद्वेग करानेसे तुझे देश निकाला हुआहै सबका अहित करनेसे तुझे अत्यन्त दुःसह दुःख हुआहै ॥ ३५ ॥ पूर्वजन्ममें सदा क्रूर कर्म करनेसे अब तुझे भोजन नहीं मिल

ताहै इन सब कर्मोंद्वारा इस जन्ममें तेरा राज्य छिनगयाहै ॥ ३६ ॥ अब हम तेरे सत्कुलमें जन्म लेनेका कारण कहेंहैं जब तू दसवे जन्ममें गौडदेशमें था तब ॥३७॥ तू अपने घोर दुष्कर्ममें प्रवृत्त था और कंटकयुक्तवनमें बडी निर्दयतासे सब मार्गके चलनेवालोंको बडा कष्ट दिया करता था ॥३८॥ उस समय धूपसे व्याकुल बडे धनवान् दो वैश्य आये और वेदवेदांगका ज्ञाता कर्षण नाम मुनिभी आताहुआ ॥ ३९ ॥ शिरपर जटा देहपर चीर ( वल्कल ) हाथमें

अथतेसत्कुलीनत्वेहेतूंश्चापिब्रवीम्यहम् ॥ यदाभूर्गौडदेशीयोह्यंतिमेव्याधजन्मनि ॥ ३७ ॥ स्वकर्मनिरतेक्रूरविपिनेकंटकाविले ॥ तिष्ठत्येवंदयाहीनेसर्वभूतांतकेपथि ॥ ३८॥ वैश्यावाजग्मतुर्दिव्यौधनाढ्यौघर्मपीडितौ ॥ मुनिश्चकर्षणोनामवेदवेदांगपारगः ॥३९॥ जटाचीरधरःपुण्यःकमंडलुपरिग्रहः ॥ तान्दृष्ट्वाधनुरादायमार्गंरुध्वाव्यवस्थितः॥ ४० ॥ अनुद्रुत्यशरीवैश्यौकृत्वाच्छिन्नशरीरकौ ॥ तयोरेकंचत्वंहत्वागृहीत्वाखिलतत्पणम् ॥ ४१ ॥ अपरंहंतुमुद्युक्तेसदुद्रावभयाद्द्रुतम् ॥ पणंगुल्मेविनिक्षिप्यभीतःप्राणपरीप्सकः ॥ ॥४२॥ कर्षणोपिमुनिःशीघ्रंव्याधान्मृतिविशंकया ॥ आतपेधावमानःसन्तृषाघर्मप्रपीडितः ॥ ४३ ॥

कमंडलु लियेहुए इन्हे आते देख हाथमें धनुष लेय मार्गको रोक खडा होता हुआ ॥ ४० ॥ बाण मारमारके तैंने उन दोनों वैश्योंके शरीर छिन्नभिन्न करदिये फिर इन दोनोंमेंसे एकको मारकर सब धन तू छीन लेता हुआ ॥ ४१ ॥ जब तू दूसरेके मारनेकेलिये उद्यत हुआ सोई वह तेरे डरकेमारे भाग गया और अपने प्राणोंकी रक्षाके निमित्त सब धनको कहीं लतापत्तोंमें फेंकदेता हुआ ॥४२॥ तब कर्षणमुनिभी व्याधके हाथसे मृत्युकी शंका कर धूपमें

दौडने लगे सोई तृषा और धूपसे व्याकुल होय मूर्च्छा खाय गिरपडे पसीना टपकने लगे केवल संज्ञामात्र शेष रहगई वह वैश्य अपने प्राणकी रक्षाके निमित्त इस ऋषिको वहीं छोड भागगया ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ जब वह दोनों भागगये तब मार्गमें उनमेंसे मूर्च्छित पडा ब्राह्मणको देख धन कहां फेंका है और वह वैश्य कितनी दूर गयाहै ॥ ४५ ॥ ऐसे पूछने लगा ऐसे कह उस थके हुए ब्राह्मणको उठानेका उद्योग करनेलगा उसे चेत करानेकेलिये तैंने

मूर्च्छामापगलत्स्वेदःसंज्ञामात्रावशेषितः ॥ विहायैनंदुद्रुवेचवैश्योजीवनतत्परः ॥ ४४ ॥ त्वंतावनुद्रुतौदृष्ट्वामूर्च्छितंपथिभूसुरम् ॥ पर्णंकुत्रविनिक्षिप्तंकियद्दूरंगतोवणिक् ॥ ४५ ॥ इतिपृष्ट्वाद्विजंश्रांतमुज्जीवयितुमुद्यतः ॥ फूत्कृत्वाकर्णयोस्तस्यचकारस्मृतिकारिणम् ॥ ४६ ॥ पल्वलस्थोदकेनैवकृमिकर्दमसंयुजा ॥ नेत्रेसंमृज्यश्रांतस्यपर्णैःसंवीज्यतन्मुखे ॥ ४७ ॥ ससंज्ञंचमुनिंकृत्वात्वमात्थस्वस्थमानसः ॥ माशंकातेमुनेकार्यामत्तःशस्त्रभृतोवने ॥ ४८ ॥ निष्किंचनःसुखीलोकेकुतस्तेभयमुल्बणम् ॥ भिन्नपात्रेणजीर्णेननमेकिंचिद्भविष्यति ॥ ४९ ॥ एतावद्वदमेविद्वन्वणिक्कुत्रपलायितः ॥ कुत्रगुल्मेधनंक्षिप्तंतेनशीघ्रंपलायता ॥ ५० ॥

कानोंमें फूंक मारी ॥४६॥ तथा कृमि और कीचड मिलेहुए चोहडके जलसे उसके नेत्र धोय पंखासे पवन करनेलगा ॥४७॥ ऐसे मुनिको चेत कराय कारय स्वस्थचित्त होय कहने लगा हे मुने तुम शंका मत करो इस वनमें मैं शस्त्रधारण कर रहा हूं जबतक मुझसे तुह्मे किसी बातका डर नहींहै ॥४८॥ निर्धन मनुष्य संसारमें सदा सुखी रहैहै फिर तुम क्यों डरोहौ तुह्मारे टूटे पात्र और फटे वस्त्रसे मुझे क्या लाभ होगा ॥ ४९ ॥ हे मुने! तुम यह कहौ

कि वह वैश्य कहां भागगया और भागते समय कौनसे पेडपत्तोंके नीचे अपने धनको गेरताहुआ ॥ ५० ॥ जो तू ठीक न बतावैगा तौ मैं तेरे प्राण हरण करूंगा कर्षण बोले वह वैश्य धनको तौ इन वृक्षोंमें फेंकगया है और स्वयं इस मार्गमें होकर भागगयाहै ॥ ५१ ॥ ऐसा अपने प्राणकी रक्षाके निमित्त ऋषिने डरके मारे यह बात कही तब व्याधने कहा हे विप्र ! तुम निडरहोय सुखपूर्वक चले जाओ ॥ ५२ ॥ यहांसे थोढी दूरपर

अन्यथात्वांहनिष्यामियदिमिथ्यावदिष्यसि ॥ ॥ कर्षणउवाच ॥ ॥ धनंगुल्मेविनिक्षिप्तंमार्गादस्मात्पलायितः ॥ ५१ ॥ इति प्राहभयात्सोऽपिपृष्टःप्राणपरीप्सया ॥ गच्छविप्रसुखंमार्गमत्तोभीतिंविहायच ॥५२॥ इतोविदूरेसलिलंतडागेवर्ततेशुभम् ॥ तत्पीत्वा सलिलंपुण्यंगच्छग्रामंगतश्रमः ॥५३॥ अधुनैवागमिष्यंतिराजकीयाःपथाजनाः ॥ मत्पदान्वेषणेसक्ताःश्रुत्वारावंवणिक्पतेः ॥५४॥ तृषार्तमनुगंतुंमेनशक्यंत्वांततोद्विज ॥ वीजयानेनपर्णेनघर्मःकिंचिद्गमिष्यति ॥५५॥ तस्मैदत्वापलाशंचत्वमगाविपिनंपुनः ॥ तेन पुण्यप्रभावेनवैशाखेघर्मघर्घरे ॥ ५६ ॥ स्वकार्यार्थंकृतेनापिमुनेस्त्राणेनपद्धतौ ॥ जन्मासीत्तेमहापुण्येराजवंशेतिविस्तृते ॥ ५७ ॥

एक तालावमें निर्मल जल है उस जलको पी परिश्रम दूर कर अपने गांवको चले जाओ ॥ ५३ ॥ राजाके कर्मचारी वणिक्के रुदनको सुनकर मेरे पांवोंका खोज लगाते अबही आवेंगे ॥५४॥ हे ब्राह्मण ! इस कारणसे मैं तृषार्त्त तेरे पीछे चलनेमें असमर्थ हूं, इस पंखासे हवा करनेपर कुछ गर्मी शान्त होयजायगी ॥ ५५ ॥ तू उस ब्राह्मणको पत्ता देकर गह्वर वनमें चलागया उस पुण्यके प्रभावसे वैशाखकी प्रचंड धूपमें ॥ ५६ ॥ यद्यपि तैंने

अपने कार्यकी सिद्धिके लिये उस मुनिकी रक्षा की उसीके प्रभावसे महापुण्यवान् विशाल राजवंशमें तेरा जन्म हुआ ॥ ५७ ॥ अब जो तेरी इच्छा सुख राज्य धनधान्य लक्ष्मी स्वर्ग अपवर्ग सायुज्यमुक्ति आदिकी है ॥ ५८ ॥ तौ तू वैशाखोक्त धर्मोंको कर तू सम्पूर्ण सुखोंको प्राप्त करैगा इस मासका नाम माधवमास है और तृतीयाका नाम अक्षय है इस दिन तत्कालकी व्याही गौ ब्राह्मणको दे इससे तेरे कोशादिककी पूर्ति

यदीच्छसिसुखंराज्यंधनधान्यादिसंपदः ॥ स्वर्गापवर्गौयदिवासायुज्यंवाहरेः पदम् ॥ ५८ ॥ कुरुवैशाखधर्मांस्त्वंसर्वसौख्यमवाप्स्यसि ॥ मासोयंमाधवोनामतृतीया चाक्षयाह्वया ॥ ५९ ॥ गांचसकृत्प्रसूताख्यांदेहिविप्रायसीदते ॥ तेनतेकोशपूर्तिःस्याच्छम्यांदेहिसुखंभवेत् ॥ ६० ॥ कुरुच्छत्रप्रदानंचसाम्राज्यंतेभविष्यति ॥ स्नानंकुरुयथान्यायंतथैवार्चयमाधवम् ॥ ६१ ॥ देहित्वंप्रतिमांदिव्यांकृत्वातेनजयोभवेत् ॥ आत्मतुल्यगुणान्पुत्रान्यदिकामयसेनृप ॥ ६२ ॥ सर्वभूतहितार्थायप्रपादानंचत्वंकुरु ॥ वैशाखोक्तानिमान्धर्मान्सम्यगाचरभूमिप ॥ ६३ ॥

होयगी शमीका दान कर इससे सुख होयगा ॥ ५९ ॥ ६० ॥ छत्रीका दान कर इससे साम्राज्यकी प्राप्ति होयगी, विधिपूर्वक स्नान करके माधव भगवान्की पूजा कर॥ ६१ ॥ और दिव्य प्रतिमाका दान कर इससे तेरी जीत होयगी और हे राजन्! जो तू अपने समान पुत्रोंकी इच्छा करताहै ॥ ६२ ॥ तौ सम्पूर्ण प्राणियोंके हितसाधनके निमित्त प्रपादान कर और हे राजन्? वैशाखोक्त इन संपूर्ण धर्मोंको कर ॥ ६३ ॥

इससे सब लोक तेरे वश होय जांयगे जो तूं निष्कामनासे इन संपूर्ण धर्मोंको करैगा ॥ ६४ ॥ इस वैशाखके महीनामें मधुसूदन भगवान्‌की प्रसन्नताके अर्थ होय तौ विष्णुभगवान् साक्षात् दर्शन देंयगे ॥ ६५ ॥ जो मनुष्य इन कल्याणकारी धर्मोंको करै है उसको अक्षय लोककी प्राप्ति होयहै यह बात पुराणोंमें लिखी है ॥ ६६ ॥ यह बात जैसे कानसे सुनी है अथवा आंखसे देखीहै सो सब तेरे सामने कही ऐसे कुलपुरोहित दोनों

तेनतेसकलालोकावशंयांतिनसंशयः ॥ निष्कामकेनचित्तेनयदिधर्मान्करिष्यसि ॥ ६४ ॥ वैशाखेपुण्यमासेऽस्मिन्प्रीतयेमधुघातिनः ॥ प्रत्यक्षोभविताविष्णुस्तवनिर्मलचेतसः ॥ ६५ ॥ येनचाचरिताःपुंसाधर्माह्येतेशुभावहाः ॥ तेषांचह्यक्षयालोकाःपुराणेकवयोविदुः ॥ ६६ ॥ एतत्सर्वंतवप्रोक्तंयथादृष्टंयथाश्रुतम् ॥ इतिराजानमामंत्र्यब्राह्मणौचपुरोधसौ ॥ ६७ ॥ ःयाजोपयाजकौनामजग्मतुस्तौयथागतौ ॥ ततोराजामहावीर्यःपुरोधोभ्यांचबोधितः ॥ ६८ ॥ वैशाखधर्मान्सकलांश्चकारश्रद्धयान्वितः॥ मयोपदिष्टंचतथामधुसूदनमार्चयत् ॥ ६९ ॥ ततोलब्धप्रभावःसन्बंधुभिःसकलैर्वृतः ॥ पांचालनगरींप्रापहतशेषबलान्वितः ॥ ७० ॥ ततस्तुशत्रवोभूपाउपश्रुत्यचभूपतेः ॥ प्रवेशंचपुरस्याथपुनराजग्मुरुद्धताः ॥ ७१ ॥

ब्राह्मण याज और उपयाजक राजाको समझायकर अपने अपने घर जातेहुए तब राजा महापराक्रमी अपने पुरोहितोंकी आज्ञाके अनुसार ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ श्रद्धापूर्वक वैशाखोक्त संपूर्ण धर्मोंको करताहुआ और उपदेशके अनुकूलही मधुसूदन भगवान्‌का पूजन करताहुआ ॥ ६९ ॥ इनके प्रभावसे अपने संपूर्ण कुटुंबसहित बचीहुई सेनाको संगले पांचालनगरीमें प्रवेश करताहुआ ॥ ७० ॥ तब राजाके शत्रुओंने सुना कि राजा फिर

आयगयाहै तब मदोन्मत्त होयकर पुरीपर चढाई करनेलगे ॥ ७१ ॥ ऐसे पांचाल देशके राजा और इन शत्रुओंका संग्राम सदैव होतारहा परन्तु एकही महारथी सबको जीतताहुआ ॥ ७२ ॥ जो राजा अपने अपने देश छोडकर भागगये उनके कोश हाथी घोडा स्वयं राजा ले आया ॥ ७३ ॥ दस अर्ब घोडा, तीन कोट हाथी, एक अर्ब रथ, दससहस्र ऊंट ॥ ७४ ॥ तीन लाख गधा उस पुरीमें लाताहुआ, वैशाखोक्त धर्मके प्रभावसे तत्क्षणही सब उस

तदापांचालभूपेननृपाणामभवद्रणम् ॥ जिग्येसर्वान्महाबाहूनेकएवमहारथः ॥ ७२ ॥ पलायितेषुभूपेषुनानादेशागतेष्वपि ॥ राज्ञां कोशंगजानश्वान्स्वयंजग्राहवीर्यवान् ॥ ७३ ॥ अश्वानांनिर्बुदंचैवगजानांचत्रिकोटिकम् ॥ रथानामर्बुदंचैवदीर्घग्रीवायुतंतथा ॥ ॥ ७४ ॥ रासभाणांत्रिलक्षाणिप्रापयामासतांपुरीम् ॥ वैशाखधर्ममाहात्म्यात्क्षणात्सर्वेचभूभृतः ॥ ७५ ॥ करदाभग्नसंकल्पाःपादाक्रांताबभूविरे ॥ सुभिक्षमतुलंचासीत्पांचालविषयेषुच ॥ ७६ ॥ एकच्छत्रमभूद्राज्यंप्रसादान्मधुघातिनः ॥ पुत्राःपंचापितस्यासञ्छौर्यौदार्यगुणान्विताः ॥ ७७ ॥ धृष्टकीर्तिर्धृष्टकेतुर्धृष्टद्युम्नस्तथापरे ॥ विजयश्चित्रकेतुश्चमयूरध्वजसन्निभाः ॥ ७८ ॥ अनुरक्ताः प्रजाश्चासन्धर्मेणप्रतिपालिताः॥वैशाखस्यप्रतापेनप्रत्ययस्तत्क्षणादभूत् ॥ ७९ ॥

राजाको ॥ ७५ ॥ कर देने लगे, संकल्प जिनके जातेरहे चरणोंमें आय पडे और पांचाल देशोंमें बडा सुभिक्ष होताहुआ ॥ ७६ ॥ और मधुसूदन भगवान्की कृपासे एक छत्र राज्य होताहुआ तथा पांच पुत्र बडे गुणवान् शूर वीर और उदार होतेहुए ॥ ७७ ॥ धृष्टकीर्त्ति, धृष्टकेतु, धृष्टद्युम्न, विजय, चित्रकेतु मयूरध्वजके सदृश होतेहुए ॥ ७८ ॥ धर्मसे प्रतिपालित संपूर्ण प्रजा राजामें अनुराग करतीहुई और वैशाखके प्रतापसे तत्क्षण सब विश्वास

करने लगे ॥ ७९ ॥ फिर पांचाल देशका राजा निष्कामचित्त होय मधुसूदन भगवान्‌की पूंजाके निमित्त संपूर्ण धर्म करताहुआ ॥ ८० ॥ मधुसूदन भगवान् इन धर्मोंसे प्रसन्न होय अक्षयतृतीयाके दिन साक्षात् दर्शन देतेहुए ॥ ८१ ॥ तब अच्युत भगवान्‌को देख राजा बडा विस्मितहुआ कैसे हैं नारायण, चतुर्भुजाधारी शंख चक्र गदा पद्म लिये ॥ ८२ ॥ पीतांबर धारण किये वनमाला पहरै लक्ष्मी तथा अनुचरों सहित गरुडपर बैठे हैं

पुनश्चकारतान्धर्मान्पांचालनगरीश्वरः ॥ अकामुकेनचित्तेनप्रीतयेमधुघातिनः ॥८० ॥ धर्मेणानेनसंतुष्टोभगवान्मधुसूदनः॥ अक्षयायांतृतीयायांप्रत्यक्षःसमजायत ॥८१॥ तंदृष्ट्वाविस्मितोभूत्वापरमात्मानमच्युतम् ॥ नारायणंचतुर्बाहुंशंखचक्रगदाधरम् ॥ ८२॥ पीतांबरधरंदेवंवनमालाविभूषितम् ॥ सलक्ष्मीकंसानुगंचगरुडोपरिसंस्थितम् ॥ ८३ ॥ निरीक्ष्यदुःसहंतेजःसद्योमीलितलोचनः ॥ उत्पतन्संपतन्हर्षान्मत्तोन्मत्तइवभ्रमन् ॥ ८४ ॥ पुलकांकितसर्वांगोगलद्बाष्पाकुलेक्षणः ॥ तुष्टावपरयाभक्त्याप्रांजलिःप्रणतोभुवि ॥८५॥ इति श्रीस्कंद पु० वै० नारदांबरीषसंवादेपांचालदेशाधिपतेर्जयप्राप्तिदरिद्रनाशनंनामपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ श्रुतदेवउवाच ॥ तद्दर्शनाह्लादपरिप्लुताशयःसद्यःसमुत्थायननाममूर्ध्ना ॥ चिरंनिरीक्ष्याकुललोचनैस्तं विश्वात्मदेवंजगतामधीशम् ॥ १ ॥

॥ ८३ ॥ इनके असहनीय तेजको देख नेत्र बंद करलिये फिर उनके दर्शन कर हर्षके मारे उन्मत्तकीसी चेष्टा करने लगा ॥ ८४ ॥ सब देहपर रोमांच खडे होयगये नेत्रोंसे आंसू गिरने लगे अत्यन्त भक्तिपूर्वक हाथ जोड शिर झुकाय स्तुति करने लगा ॥ ८५ ॥ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदांबरीषसंवादे पांचालदेशाधिपतेर्जयप्राप्तिर्दरिद्रनाशनं नाम पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ श्रुतदेवजी कहने लगे भगवान्‌के दर्शनके आनन्दमें मग्न है

हृदय जिसका वह राजा तत्काल शिर झुकाय प्रणाम करता हुआ और बहुत कालपर्य्यन्त आकुल नेत्रोंसे विश्वात्मदेव जगदीशके दर्शन करता हुआ॥ १॥
और चरण धोये जलको शिरपर धारण करता हुआ जिन चरणोंसे उत्पन्न हुई गंगा संपूर्ण जगतको पवित्र करैहै तथा बहु मूंल्यवान् वस्त्र आभूषण चन्द
नादिसे पूजन करता हुआ ॥ २ ॥ धूप दीप फूल माला नैवेद्य और आत्मसमर्पणादिसे पुराणपुरुष नारायण अद्वितीय विष्णुभगवान्को प्रसन्न करता हुआ

दधारपादाववनिज्यतज्जलंयत्पादजाऽऽब्रह्मजगत्पुनाति ॥ समर्चयामासमहाविभूतिभिर्महार्हवस्त्राभरणानुलेपनैः ॥ २ ॥ स्रग्धूपदी
पामृतभक्षणादिभिस्त्वग्गात्रवित्तात्मसमर्पणेन ॥ तुष्टावविष्णुंपुरुषंपुराणंनारायणंनिर्गुणमद्वितीयम् ॥ ३ ॥ निरंजनंविश्वसृजामधी
शंपरात्परंपद्मभवादिवन्दितम् ॥ यन्माययातत्त्वविदुत्तमाजनाविमोहिताविश्वसृजामधीश्वरम् ॥ ४ ॥ मुह्यंतिमायाचरितेषुमूढागुणेषु
चित्रंभगवद्विचेष्टितम् ॥ अनीहएतद्बहुधैकआत्मनासृजत्यवत्यत्तिनसज्जतेप्यथ ॥ ५ ॥ समस्तदेवासुरसौख्यदुःखप्राप्त्यैभवान्पूर्ण
मनोरथोपि ॥ तत्रापिकालेस्वजनाभिगुप्त्यैबिभर्षिसत्वंखलनिग्रहाय ॥ ६ ॥

॥ ३ ॥ भगवान्, निरंजन, जगत्के रचनेवालोंके स्वामी, परात्पर, ब्रह्मादिसे पूजितहैं जिनकी मायासे तत्त्ववेत्ता बडे बडे उत्तम मनुष्यभी मुग्ध होय रहेहैं,
विश्वस्रष्टाओंके अधीश्वर ॥ ४ ॥ जिनकी मायामें मूढबुद्धिवाले मोहितहैं और गुणोंमें भगवान्के अनेक प्रकारकी चेष्टाहैं, स्वयं चेष्टारहितहै बहुत प्रकारकाहै
स्वयं जगत्का पालन पोषण और संहार करैं हैं संपूर्ण देवता और असुरोंकी सुख दुःखकीप्राप्तिके निमित्त आप लीन नहीं होयहैं आप पूर्ण मनोरथहैं परन्तु तथापि

काल पायकर आत्मीय जनोंकी रक्षाके निमित्त सतोगुण धारण करेहैं॥५॥६॥दुष्टोंका निग्रह करनेको तमोगुण और राक्षसोंका बंधन करनेको रजोगुण धारण करेहैं हेनिर्गुण विश्वमूर्ते!आपके चरणारविन्दको धन्यहै येचरण शरणागतोंके पापोंको दूर करनेवालेहैं जब कर्मोंके योगसे तीर्थरूप आपकेचरणहृदयमें धारणकरे जायहैं॥७॥बढी भई भक्तिसे उपहतहैं आशय और जीवभाव जिनके सो तेरे चरणोंके स्मरणमात्रहीसे गति प्राप्त करते भये और सांसारिक कालरूपी सर्पकी

तमोगुणंराक्षसबंधनायरजोगुणंनिर्गुणविश्वमूर्ते ॥ दिष्टचात्वदंघ्रिंप्रणताघनाशनंतीर्थास्पदंहृदिधृतंसुविपक्वयोगैः ॥ ७ ॥ उत्सिक्तभ त्त्युपहताशयजीवभावाःप्रापुर्गतिंतवपदस्मृतिमात्रतोये ॥ भवाख्यकालोरगपाशबंधःपुनःपुनर्जन्मजरादिदुःखैः ॥ ८ ॥ भ्रमामियो निष्वहमाखुभक्षवत्प्रवृद्धतर्षस्तवपादविस्मृतेः ॥ नूनंनदत्तंनचतेकथाश्रुतानसाधवोजातुमयापिसेविताः ॥ ९ ॥ तेनारिभिर्ध्वस्त पराध्यर्लक्ष्मीर्वनंप्रविष्टःस्वगुरूह्यहंस्मरन् ॥ स्मृतौचतौमांसमुपेत्यदुःखात्संबोधयांचक्रतुरार्तबंधू ॥ १० ॥ वैशाखधर्मैःश्रुतिचोदि तैःशुभैःस्वर्गापवर्गादिपुमर्थहेतुभिः ॥ तद्बोधतोहंकृतवान्समस्ताञ्छुभावहान्माधवमासधर्मान् ॥ ११ ॥

पाशमें बंधाहुआ जन्मजरादिदुःखोंसे व्याप्त तेरे चरणारविन्दकी विस्मृतिसे मार्जारीकी तरह तृषासे व्याकुल अनेक योनियोंमें भ्रमण करूं हूं मैने न दान किया न तेरी कथा सुनी न साधुसेवा करी ॥ ८ ॥ ९ ॥ उसी अपराधसे शत्रुओंने मुझे पराजित करदिया मेरा वैभव नष्ट होयगया तब वनमें गया वहां मैंने अपने गुरुओंका स्मरण किया, स्मरण करतेही मेरे पास आय मेरी दीनदशापै दयाकर दुःखसे छुडातेहुए ॥ १० ॥ वेदोक्त शुभ स्वर्गापवर्ग पुरु

षार्थचतुष्टयके देनहारे वैशाखके धर्म जैसे मेरे गुरुओंने बताये तैसेही मैं करता हुआ ये माधवमासके धर्म बडे शुभ फल देनेवालेहैं ॥ ११ ॥ उन्हींके प्रभावसे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं, उन्हींके प्रतापसे संपूर्ण वैभव मिलाहै, अग्नि सूर्य चन्द्रमा तारागण पृथ्वी जल आकाश वायु वाणी और मन ॥ १२ ॥ इनकी उपासना नहीं करी ये उपासना करनेपरभी बहुत दिनमें दुःख दूर करेंहैं परन्तु महात्मा तौ क्षणभरमेंही पापोंको नष्ट कर देयहैं ये महात्मा कैसेहैं कि जिनने संपूर्ण इच्छा त्याग दीनीहैं और तेरेही बीचमें चित्त लगायकर रक्खाहै ॥ १३ ॥ हे स्वतंत्र ! हे विचित्र कर्मोंके करनेहारे ! हे परमात्मन् !

तस्मादभून्मेपरमःप्रसादस्तेनाखिलाःसंपदऊर्जिताइमाः ॥ नाग्निर्नसूर्योनचचंद्रतारकानभूर्जलंखंश्वसनोथवाङ्मनः ॥ १२ ॥ उपासितास्तेपिहरंत्यघंचिराद्विपश्चितोघ्नंतिमुहूर्त्तसेवया ॥ यान्मन्यसेत्वंभवतोपिभूरिशस्त्यक्तेषणांस्त्वत्पदन्यस्तचित्तान् ॥ १३ ॥ नमः स्वतंत्रायविचित्रकर्मणेनमःपरस्मैसदनुग्रहाय ॥ त्वन्माययामोहितोहंगुणेषुदारार्थरूपेषुभ्रमाम्यनर्थदृक् ॥ १४ ॥ यत्पादपद्मंसृतिमूलनाशनंसमस्तपापापहरंसुनिर्मलम् ॥ सुखेच्छयानर्थनिदानभूतैः सुतात्मदारैर्ममताभियुक्तः ॥ १५ ॥ नक्कापिनिद्रांलभतेनशर्मप्रवृद्धतर्षःपुनरेवतस्मिन् ॥ लब्ध्वादुरापंनरदेवजन्मत्वंयत्नतःसर्वपुमर्थहेतु ॥ १६ ॥

हे सन्तोंपर अनुग्रह करनेवाले ! तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै मैं आपकी मायामें मोहित होय अनर्थ दुष्ट स्त्री धन आदि गुणोंमें भ्रमरहा हूं ॥ १४ ॥ तेरे चरण कमल संसाररूप दुःखोंको जडसे नाश करनेवालेहैं संपूर्ण पापोंके दूर करनेवाले और निर्मल हैं इन्हें छोड सुखकी इच्छासे अनर्थके मूलकारण जो स्त्री पुत्रादि हैं तिनकी ममतामें पड न मोहि नींद आवैहै न चैन मिलैहै क्योंकि इन्हींमें मेरी तृषा बढरहीहै दुर्लभ राजाका देह पायकर जो अर्थ धर्म काम मोक्षका

एक मात्र हेतुहै ॥ १५ ॥ १६ ॥ ऐसा मैं भगवान्‌के चरणोंका ध्यान नहीं करूं हूं क्योंकि मेरी बुद्धि बडी मूढहै विषयोंमें आसक्तहै सो मैं अनेक प्रकारके कर्म करूं हूं इन विषयोंमें मेरी तृषा बढ रही है और रातदिन सैंकडान प्रकारकी ऐसी चिन्तामें मन डोले हैं कि आज मैं ऐसा होऊं कल ऐसा होऊं हे दुरन्तशक्ते ! हे विश्वमूर्त्ते ! जब आपकी कृपा इस जीवपर होयहै ॥ १७ ॥ १८ ॥ तब महात्माओंका समागम होयहै जिससे यह संसारसमुद्र

पादारविंदंनभजामिदेवसंमूढचेताविषयेषुलालसः ॥ करोमिकर्माणिसुनिष्चितः सन्प्रवृद्धतर्षस्तदपेक्षयाददन् ॥ १७ ॥ पुमश्चभूयामहमद्यभूयामित्येवचिंताशतलोलमानसः ॥ तदैवजीवस्यभवेत्कृपाविभोदुरंतशक्तेस्तवविश्वमूर्तेः ॥ १८ ॥ समागमःस्यान्महतांहिपुंसांभवांबुधिर्येनहिगोष्पदायते ॥ सत्संगमोदेवयदैवभूयात्तर्हीशदेवेत्वयिजायतेमतिः ॥ १९ ॥ समस्तराज्यापगमंहिमन्येह्यनुग्रहंतेमयिजातमंजसा ॥ यत्प्रार्थ्यतेब्रह्मसुरासुराद्यैर्निवृत्ततर्षैरपिहंसयूथैः ॥ २० ॥ इतःस्मराम्यच्युतमेवसादरंभवापहंपादसरोरुहंविभो ॥ अकिंचनप्रार्थ्यममंदभाग्यदंनकामयेन्यत्तवपादपद्मात् ॥ २१ ॥ अतोनराज्यंनसुतादिकोशंदेहेनशश्वत्पततारजोभुवा ॥ भजामिनित्यंतदुपासितव्यंपादारविंदंमुनिभिर्विचिंत्यम् ॥ २२ ॥

गौके चरणकी समान होयजायहै हे देव ! जब संतोंका समागम होयहै तबही आपमें बुद्धि प्रवृत्त होयहै ॥ १९ ॥ आपने जो मेरे ऊपर अनुग्रह कियाहै इससे अपने समस्त राज्यको निष्फल ही मानूं हूं और समस्त सुरासुर तथा निवृत्त भई है तृषा जिनकी ऐसे संन्यासीगण यही प्रार्थना करै हैं ॥ २० ॥ मैं अच्युत भगवान्‌को सादर स्मरण करूं हूं जिनके चरणकमल सांसारिक तापोंको दूर करें हैं दारिद्रियोंसे प्रार्थनाके योग्य अमन्द सौभाग्यके दाताहैं मैं

तेरे चरणकमलसे भिन्न किसी बातकी कामना नहीं करूं हूं न मुझे राज्यकी इच्छाहै न पुत्र पौत्रादिक वा धनकी इच्छाहै इस निरन्तर पतन होनेवाली मिट्टीसे उत्पन्न देह करके उपासनाके योग्य आपके चरणकमलोंका ध्यान करूं हूं मुनिलोगभी आपके इन चरणोंका निरंतर ध्यान करें हैं ॥ २१ ॥ २२ ॥ हे जगन्निवास ! हे देवेश ! आप प्रसन्न हूजिये जिससे आपके चरणकमलमें मेरी स्मृति होय, हे प्रभो ! स्त्री पुत्र कोशादिमें मेरी आसक्ति न होय॥ २३ ॥ मेरा मन आपके चरणारविन्दमें लगै, मेरी वाणी आपकी दिव्य कथा कहनेमें प्रवृत्त होय, मेरे नेत्र आपकी मूर्तिके दर्शनमें लगें, कान कथा श्रवणमें और जिह्वा आपके गुणानुवादमें

प्रसीददेवेशजगन्निवासस्मृतिर्यथास्यात्तवपादपद्मे ॥ सक्तिःसदागच्छतुदारकोशपुत्रात्मचिह्नेषुगुणेषुमेप्रभो ॥ २३ ॥ भूयान्मनः कृष्णपदारविंदयोर्वचांसितेदिव्यकथानुवर्णने ॥ नेत्रेममस्यातांतवविग्रहेक्षणेश्रोत्रेकथायांरसनात्वदर्पिता ॥ २४ ॥ घ्राणंचत्वत्पाद सरोजसौरभेत्वद्भक्तगंधादिविलेपनेसकृत् ॥ स्यातांचहस्तौतवमंदिरेविभोसंमार्जनादौममनित्यदैव ॥ २५ ॥ पादौविभोक्षेत्रपथानु सर्पणेमूर्धाचमेस्यात्तववंदनेनिशम् ॥ कामश्चमेस्यात्तवसत्कथायांबुद्धिश्चमेस्यात्तवचिंतनेनिशम् ॥ २६ ॥ दिनानिमेस्युस्तवसत्कथो दयैरुद्गीयमानैर्मुनिभिर्गृहागतैः ॥ हीनप्रसंगैस्तवमेनभूयात्क्षणंनिमेषार्द्धमथापिविष्णो ॥ २७ ॥

अर्पित होय॥ २४ ॥ आपके चरणकमलका मकरंद सूंघनेमें नासिका प्रवृत्त होय और आपके भक्तोंके सुगन्धयुक्त चन्दनादिके लेपनमें हाथ प्रवृत्त होंय, और आपके मंदिरकी बुहारी देनेमें नित्य लगेरहें॥ २५ ॥ मेरे पांव आपकी कथा जहां होती होय वहां मुझे ले जांय मेरी मूर्द्धा सदा आपकी वन्दनामें लगी रहै आपकी कथामें मेरी कामना और आपके विचारमें मेरी बुद्धि अहर्निश रहे ॥ २६ ॥ घर आये मुनियोंके संग आपकी श्रेष्ठ कथाओंके गानमें मेरे दिन

व्यतीत होय हे प्रभो ! एक क्षण वा अर्द्ध निमेषभी आपके प्रसंगविना व्यतीत न होय ॥ २७ ॥ हे विष्णो ! मैं पारमेष्ठ्य अथवा संपूर्ण पृथ्वीका राज्य अथवा धर्म अर्थादि अपवर्गकी इच्छा नहीं करूं हूं मैं तो केवल आपके चरणकमलकी सेवाकी कामना करूंहूं इस चरणसेवाकी इच्छा लक्ष्मी ब्रह्मा महादेवादि सब देवता करेहैं ॥ २८ ॥ राजाकी ऐसी स्तुति सुन कमलनयन भगवान् अति प्रसन्न होय मेघकीसी गंभीर वाणीसे राजासे बोले ॥ २९ ॥

नपारमेष्ठ्यंनचसार्वभौमंनचापवर्गंस्पृहयामिविष्णो ॥ त्वत्पादसेवांचसदैवकामयेप्रार्थ्यांश्रियाब्रह्मभवादिभिःसुरैः ॥ २८ ॥ इतिराज्ञास्तुतोविष्णुःप्रसन्नःकमलेक्षणः ॥ मेघगंभीरयावाचातमुवाचक्षितीश्वरम् ॥ २९ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ जानेत्वांदासवर्यंमेनिष्कामुकमकल्मषम् ॥ अथापितेप्रदास्यामिवरंदैवतदुर्लभम् ॥ ३० ॥ आयुष्यंचायुतंदिव्यंसंपदश्चनरेश्वर ॥ भक्तिर्मयिदृढाभूयादंतेसायुज्यमेवच ॥३१॥ त्वयाकृतेनस्तोत्रेणमांस्तुवंतिचयेभुवि॥तेषांतुष्टःप्रदास्यामिभुक्तिंमुक्तिंनसंशयः॥ ३२ ॥तृतीयैषाक्षयानामभुविख्याताभविष्यति ॥ यस्यांतवप्रसन्नोहंभुक्तिमुक्तिफलप्रदः ॥ ३३ ॥

भगवान् बोले तुम पापरहित, निष्काम, मेरे भक्तोंमें श्रेष्ठ हो तथापि देवताओंको दुर्लभ वर तुझको मैं देताहूं ॥ ३० ॥ दशसहस्र वर्षकी तेरी अवस्था, दिव्य धनसंपत्ति, मेरी ओर दृढभक्ति और अंतमें मेरी सायुज्यता मिलैगी ॥ ३१ ॥ जो प्राणी तेरी करीहुई स्तुतिद्वारा संसारमें मेरी स्तुति करेंगे मैं उनपर प्रसन्न होयकर निस्संदेह भक्ति और मुक्ति देऊंगा ॥ ३२ ॥ आजका दिन संसारमें अक्षयतृतीयाके नामसे विख्यात होगा जिसमें भुक्ति मुक्तिका

देनेवाला मैं प्रसन्न हुआ हूं ॥ ३३ ॥ जो मूढ मनुष्य जानके अथवा विनाजाने स्नान दानादिक करेंगे वे मेरे अक्षय पदको प्राप्त होंयगे ॥ ३४ ॥ अक्षयतृतीयाके दिन जो मनुष्य पित्रीश्वरोंके निमित्त श्राद्ध करेहैं सो अक्षय होयहै ॥ ३५ ॥ इस संसारमें इस तिथिके समान वा अधिक कोई तिथि नहींहै अक्षयतृतीयाके दिन कियाहुआ स्वल्प कर्मभी अक्षय फल देताहै ॥ ३६ ॥ हे राजन् ! जो कुटुंबी ब्राह्मणको गौका दान देताहै उसे संपूर्ण

येकुर्वंतिनरामूढाःस्नानदानादिकाःक्रियाः ॥ व्याजेनापिस्वभावाद्वायांतिमत्पदमव्ययम् ॥ ३४ ॥ येचाक्षयतृतीयायांपितॄनुद्दिश्यमानवाः ॥ श्राद्धंकुर्वंतितेषांवैतदानंत्यायकल्पते ॥ ३५ ॥ नचानयातिथिर्लोकेसमावानाधिकाभुवि ॥ अस्यांकृतंस्वल्पमपितदक्षय्यफलंभवेत् ॥ ३६ ॥ योगांदद्यान्नृपश्रेष्ठब्राह्मणायकुटुंबिने ॥ सर्वसंपत्प्रवर्षाख्याभुक्तिर्मुक्तिःकरेस्थिता ॥ ३७ ॥ योहिदद्यादनड्वाहंसर्वपापविनाशनम् ॥ कालमृत्युविमुक्तःसन्दीर्घायुष्यमवाप्नुयात् ॥ ३८ ॥ वैशाखमासेयोधर्मान् कुरुतेमत्प्रियावहान् ॥ तेषांमृत्युजराजन्मभयंपापंहराम्यहम् ॥ ३९ ॥ यथावैशाखधर्मैस्तुतुष्टःस्यांसकलैरपि ॥ मासधर्मैर्नतुष्टःस्यांमासोमेमाधवःप्रियः ॥ ४० ॥ सर्वधर्मोज्झितावापिब्रह्मचर्यविवार्जिताः ॥ वैशाखमासनिरतायांतिमत्पदमव्ययम् ॥ ४१ ॥

संपत्ति मिलेंहैं और भक्ति तथा मुक्ति दोनों हस्तगतहैं ॥ ३७ ॥ जो बैलका दान करै उसके संपूर्ण पाप दूर होय जायहैं कालमृत्युसे छूटकर दीर्घायु पावैहै ॥ ३८ ॥ जो वैशाखमें मेरे प्रिय करनेवाले धर्मोंको करैहै उनके मृत्यु, जरा, जन्म, भय, पाप सबको नष्ट करदेता हूं ॥ ३९ ॥ जैसा मैं वैशाखोक्त धर्मोंसे प्रसन्न होता हूं वैसा अन्य मासोंके धर्मसे प्रसन्न नहीं होता हूं सब मासोंमें वैशाखमास मुझे बहुत प्रिय है ॥ ४० ॥ जिनने सब धर्म

त्याग दियेहैं जो ब्रह्मचर्यसे रहितहैं वे भी वैशाखोक्त धर्मोंमें निरंतर रहनेसे अव्यय पदकी प्राप्ति करेंहैं ॥ ४१ ॥ जो तप सांख्य योग और यज्ञादिकसेभी मिलना दुर्लभहै उस धामको वैशाखोक्त धर्मोंका आचरण करनेसे मनुष्य प्राप्त करेंहैं ॥ ४२ ॥ यही वैशाखमास सहस्रो पापोंको दूर करदेयहै जब प्राणी मेरे चरणोंका स्मरण करै तब प्रायश्चित्तकी कुछ आवश्यकता नहींहै ॥ ४३ ॥वनमें गुरुके उपदेशसे तुम वैशाखके धर्मोंमें तत्पर हुए और जगत्के

यद्दुरापंतपोभिश्चसांख्ययोगैर्मखैरपि ॥ तद्धामपरमंयांतिवैशाखनिरतानराः ॥ ४२ ॥ अपिपापसहस्रंवामासोयंहरतेनघ ॥ प्रायश्चित्तविहीनंवामत्पादस्मरणंयथा ॥ ४३ ॥ गुरूपदिष्टःकांतारेवैशाखेनिरतोभवान् ॥ समाराध्यजगन्नाथंतेनाप्तमखिलंनृप ॥ ४४ ॥ धर्मेणानेनसंप्रीतःप्रत्यक्षोहंभवामिते ॥ भुक्त्वाभोगान्यथाकामान्देवैरपिसुदुर्लभान् ॥ ४५ ॥ इतितस्मैवरंदत्वादेवदेवोजनार्दनः ॥ पश्यतामेवसर्वेषांतत्रैवांतरधीयत ॥ ४६ ॥ ततोभूपालवर्योसौबभूवात्यंतविस्मितः ॥ हृष्टपुष्टतनुर्भूपलब्धनष्टधनोयथा ॥ ४७ ॥ ततःशशासपृथिवींतच्चित्तस्तत्परायणः ॥ महद्भिर्बोधितोनित्यंगुरुभिश्चनिरंतरम् ॥ ४८ ॥

नाथ भगवान्की आराधनासे तुमको सब वस्तु प्राप्त होयगई ॥ ४४ ॥ इस धर्मसे प्रसन्न होयके मैने साक्षात् दर्शन दियेहैं तू अब देवताओंकोभी दुर्लभ यथेप्सित भोगोंका भोग कर॥ ४५॥देवदेव जर्नादन ऐसे राजाको वर दे सबके देखते देखते वहीं अंतर्धान होयजाते भये॥ ४६ ॥तब वह राजा अत्यन्त विस्मित होता हुआ और ऐसा हृष्टपुष्ट हुआ जैसे कोई खोयेहुए धनको प्राप्त करके होयहै ॥ ४७ ॥ तदनन्तर भगवान्में चित्त लगाय पृथ्वीका शासन करता हुआ

बडे बडे महात्मा और गुरुसे नित्यप्रति ज्ञान प्राप्त करता हुआ ॥ ४८ ॥ और वासुदेव भगवान्‌के अतिरिक्त किसीको नहीं मानता हुआ जिसके संपर्कसे दारा अमात्य और सुतादि सब प्रिय होते हुए ॥ ४९ ॥ वैशाखोक्त संपूर्ण धर्मोंको वारंवार करता हुआ जिनके प्रभावसे पुत्रपौत्रादिकी वृद्धि हुई ॥५०॥ और देवताओंकोभी दुर्लभ संपूर्ण मनोरथोंको भोगकर अन्तमें चक्रपाणि विष्णुभगवान्‌की सायुज्यताको प्राप्त हुआ ॥५१॥ जो इस परम सुन्दर आख्या

नान्यंप्रियतमंमेनेवासुदेवमृतेनृपः ॥ यत्संपर्कात्प्रियाआसन्दारामात्यसुतादयः ॥ ४९ ॥ सर्वान्धर्मांश्चकारासौवैशाखोक्तान्पुनःपुनः ॥ तेनपुण्यप्रभावेनपुत्रपौत्रादिभिर्वृतः ॥ ५० ॥ भुक्त्वामनोरथान्सर्वान्देवानामपिदुर्लभान् ॥ अंतेजगामसायुज्यंविष्णोर्देवस्यचक्रिणः ॥ ५१ ॥ यइदंपरमाख्यानंशृण्वंतिश्रावयंतिच ॥ तेसर्वपापनिर्मुक्तायांतिविष्णोःपरंपदम् ॥५२॥ इतिश्रीस्कंदपु० वैशाखमाहात्म्येनारदांबरीषसंवादेपांचालाधिपतेःसायुज्यप्राप्तिर्नामषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ ॥श्रुतकीर्तिरुवाच ॥ ॥ वैशाखधर्मानखिलानिहामुत्रफलप्रदान् ॥ भूयोपिशृण्वतश्चासीत्तृतिर्नाद्यापिमानद ॥ १ ॥ यत्राकैतवोधर्मोयत्रविष्णुकथाःशुभाः ॥ तच्छास्त्रंशृण्वतोनैवतृप्तिःकर्णरसायनम् ॥ २ ॥

नको सुने सुनावेंहैं वे सब पापोंसे छूटकर विष्णुभगवान्‌के परम पदको प्राप्त होयहैं ॥ ५२ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसंवादे पांचालाधिपतेः सायुज्यप्राप्तिर्नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ श्रुतकीर्ति बोले हे मुनिवर ! मैंने संपूर्ण वैशाखके धर्म श्रवण किये जो लोक परलोक दोनों जगह फलदायक हैं परन्तु सुनते सुनते भी मेरी तृप्ति नहीं होयहै ॥ १ ॥ जहां निष्कपट धर्म है जहां शुभदायक विष्णुकी कथा होयहै कानोंको सुख

दायक उस कथाके सुनते सुनते तृप्ति नहीं होयहै ॥ २ ॥ मेरे पूर्वजन्मके कियेहुए पुण्य उदय होयगयेहैं जो आप आतिथ्यके व्यपदेशसे मेरे घर पधारेहैं ॥ ३ ॥ आपके मुखसे निकले हुए परम अद्भुत अमृतरूपी वचनोंको पान कर ऐसा तृप्त हुआ हूं कि अब मैं न पारमेष्ठ्य पद चाहूं हूं न मोक्षकी इच्छाहै ॥ ४ ॥ अतएव भुक्ति मुक्तिके दैनेवाले विष्णुभगवान्को प्रसन्न करनेहारे दिव्य धर्मोंका विस्तारपूर्वक वर्णन करिये ॥ ५ ॥

पूर्वजन्मकृतंपुण्यंदिष्टयापारमुपागतम्॥ आतिथ्यव्यपदेशेनयद्भवान्गृहमागतः॥ ३ ॥वचोमृतंमुखांभोजनिःसृतंपरमाद्भुतम्॥पीत्वा तृप्तःपारमेष्ठ्यंमोक्षंवाचनकामये ॥ ४ ॥ तस्मात्तानेवधर्मान्मेभुक्तिमुक्तिप्रदायकान् ॥ विष्णुप्रीतिकरान्दिव्यान्भूयोविस्तरतोवद ॥ ॥ ५ ॥ इत्युक्तस्तुपुराराज्ञाश्रुतदेवोमहायशाः ॥ संहृष्टात्माशुभान्धर्मान्पुनर्व्याहर्तुमारभे ॥ ६ ॥ श्रुतदेवउवाच ॥ शृणुराजन्प्रव क्ष्यामिकथांपापप्रणाशिनीम्॥ वैशाखधर्मविषयांभावितांमुनिभिर्मुहुः ॥ ७ ॥ पंपातीरेद्विजःकश्चिच्छंखोनाममहायशाः ॥ गुरौसिं हगतेचागान्नदींगोदावरींशुभाम् ॥ ८ ॥ तीर्त्वाभीमरथींपुण्यांकांतारेकंटकाचले ॥ निर्जलेनिर्जनेघोरेवैशाखेतापकर्शितः ॥ ९ ॥

राजाके ये वचन सुन महायशस्वी श्रुतदेवजी अति प्रसन्न होय शुभ धर्मोंका फिर वर्णन करने लगे ॥ ६ ॥ श्रुतदेव बोले हे राजन् ! मैं पापके नष्ट करनेवाली कथा फिर कहूं हूं तू चित्त लगाय सुन यह वैशाखके धर्मसंबंधी मुनियों करके भावितहै ॥ ७ ॥ पंपातीरपै एक शंखनाम महा यशस्वी ब्राह्मण सिंहके बृहस्पतिमें गोदावरी नदीपर आताहुआ ॥ ८ ॥ और भीमरथीके पार जायकर कंटकयुक्त और पहाडी वनमें जाता हुआ इस वनमें न जल

था न कोई मनुष्यथा ऐसे वैशाखके तापसे कर्शित ॥ ९ ॥ मध्याह्नके समय यह ब्राह्मण वृक्षके छायामें बैठगया उसीसमय धनुष लियेहुए एक दुराचारी व्याध आताहुवा ॥ १० ॥ यह सब प्राणियोंसे घृणा करता था यह साक्षात् दूसरे यमराजके समान था इसने सूर्यकेसमान प्रकाशमान कुंडलधारी इस ब्रह्मणको ॥ ११ ॥ देखकर बांधलिया और उसके कुंडल, जूता, छत्र, रुद्राक्षकी माला, कमंडलु सब छीन लिये॥ १२॥ और फिर उसे छोडकर बोला

वृक्षेचोपविवेशासौमध्याह्नसमयेद्विजः ॥ तदाकश्चिद्दुराचारोव्याधश्चापधरःशठः ॥ १० ॥ निर्घृणःसर्वभूतेषुकालांतकइवापरः ॥ तंकुंडलधरंविप्रंदीक्षितंभास्करोपमम् ॥ ११ ॥ दृष्ट्वाबध्वासजग्राहकुंडलादिकमुग्रधीः ॥ उपानहौचछत्रंचअक्षमालांकमंडलुम् ॥ ॥ १२ ॥ पश्चाद्विसृज्यतंविप्रंगच्छेत्याहविमूढधीः ॥ १३ ॥ ततःसगच्छन्पथिशर्करविलेसूर्यांशुतप्तेजलवर्जितेखरे ॥ संतप्तपाद स्तृणछादितेस्थलेक्वचिच्चचारोपवसन्नूर्ध्वरेताः ॥ १४ ॥ सवैक्लुतंसंपतन्क्वापितिष्ठन्हाहेतिवादीचजगामतूर्णम् ॥ दृष्ट्वामुनिंखिद्यमानं पृथिव्यांमध्यंगतेपूष्णिदयाबभूव ॥ १५ ॥

कि जा चलाजा ॥ १३ ॥ ऐसे वह ब्राह्मण उस दुष्टसे छूटकर रस्तामें चलनेलगा जहां मार्गमें सूर्यकी किरणसे तप्त रेती बिछ रही जिनपर पांव जलते जांयहैं, पीनेको जल मिले नहीं ऐसे कंटकयुक्त वनमें तृणसे आच्छादित किसी स्थलपर वह ब्रह्मचारी बैठताहुआ कहीं गिर पडे कहीं ठहर जाय ऐसे उस व्याकुलके हायहाय शब्दको सुनकर वह व्याध शीघ्रही उसके पास गया और मुनिको खेदसे व्याकुल देख दुपहरीके समय इसके हृदयमें दया उत्पन्न

होयआई ॥ १४ ॥ १५ ॥ यह व्याध धर्मसे विमुख और पापबुद्धिमें रतथा परन्तु दया करके मनमें:कहने लगा कि मैंने जो अपने चौर्यधर्मसे दूसरे वनमें इससे लियाहै सो सब हमारी जातिका परम धर्म है ॥ १६ ॥ १७ ॥ अतएव इस दुःखी ब्राह्मणके दुःखकू दूर करनेके निमित्त ये जो मेरी पुरानी जूती हैं तिन्हें देय दऊंगो जिनसे धर्मसे उत्तप्त ब्राह्मणके पांवनकी रक्षा होयजायगी मेरे पांवमें तौ नई जूती हैं अब इन पुरानी जूतीनसूं

व्याधस्यधर्मविमुखस्यचपापबुद्धेस्तस्मैददामिसुखदांखलुपादरक्षाम्॥१६॥चौर्येणैवस्वधर्मेणयद्गृहीतंवनांतरे॥तदीयमेवतत्सर्वंव्याधानांधर्मनिर्णयः ॥ १७ ॥तस्मादुपानहौदास्येमुहुर्दुःखापनुत्तये ॥ घर्मेणोत्तप्तविप्रस्य पादरक्षाभविष्यति ॥ १८ ॥ जीर्णेचोपानहौदिव्येवर्तेतेपादयोर्मम ॥ नाभ्यामस्तिचमेकृत्यंतस्मात्तेवैददाम्यहम् ॥ १९ ॥ इतिनिश्चित्यमनसितूर्णंगत्वाददौचते ॥ शर्करातप्तपादायद्विजवर्यायसीदते ॥ २० ॥ उपानहौगृहीत्वातेनिर्वृतिंचपरांययौ ॥ सुखीभवेतितंव्याधमाशीर्भिरभिनंद्यच ॥ २१ ॥ नूनंसुपक्वपुण्योयंवैशाखेदत्तवानमू ॥ व्याधस्यापिचदुर्बुद्धेःप्रायोविष्णुःप्रसीदति ॥ २२ ॥

मोहि कुछभी प्रयोजन नहीं है सो ये पुरानीं अवश्यही देय देनी चाहिये ॥ १८ ॥ १९ ॥ ऐसे मनमें विचार शीघ्र जाय वे उपानत् उस ब्राह्मणको दे देताहुआ जिसके पांव गरम वालूसे जल रहे ऐसे श्रेष्ठ ब्राह्मणको देताहुआ ॥ २० ॥ उन जूताओंको लेय कर अत्यन्त सुखी होय आशीर्वाद देने लगा कि सुखी हो ॥ २१ ॥ जो वैशाखमें तैंने यह दान कियाहै यह तेरे पुण्य उदय होय आये हैं इस दानके प्रभावसे विष्णुभगवान् दुर्बुद्धि

व्याधपरभी प्रसन्न होयजांयहैं ॥ २२ ॥ जो सुख सब प्रकारकी वस्तुओंके प्राप्त करनेसे होयहै वही मेरे लिये भी हुआहै तब यह वाक्य सुनकर अत्यन्त विस्मित होय ॥ २३ ॥ ब्रह्मिष्ठ ब्रह्मवादी ब्राह्मणसे कहने लगा हे महाराज ! यह आपकीही वस्तु आपको दीनी हैं इनमें मेरा क्या पुण्यहै ॥ २४ ॥ तुमने वैशाखकी प्रशंसा करी कि हरिभगवान् प्रसन्न होंयगे सो हे ब्रह्मन् ! वैशाख कौनहै ? और हरि कौनहैं ॥ २५ ॥ यह सब मेरे

सर्वस्याप्याचभूयोपियत्सुखंतदभून्मम ॥ ततोभिश्रुत्यतद्वाक्यंकिमेतदितिविस्मितः ॥२३॥ व्याजहारपुनर्विप्रंब्रह्मिष्ठंब्रह्मवादिनम् ॥ त्वदीयंतुमयादत्तंकथंपुण्यंभवेन्मम ॥२४॥ प्रशंससिचवैशाखंहरिस्तुष्टोभवेदिति ॥ एतदाचक्ष्वमेब्रह्मन्कोवैशाखस्तुकोहरिः ॥२५॥ कोधर्मःकिंफलंतस्यशुश्रूषोर्मेदयानिधे ॥ इतिव्याधवचःश्रुत्वाशंखस्तुष्टमनाअभूत् ॥ २६॥ प्रशंसन्सचवैशाखंपुनर्विस्मितमानसः॥ इदानींदत्तवान्पादत्राणेमेलुब्धकःशठः ॥ २७ ॥ यद्दुर्बुद्धेश्चवैषम्यंजातंचित्रमहोबत ॥ सर्वेषामेवधर्माणांफलंजन्मांतरेषुवै ॥ २८ ॥ वैशाखमासधर्माणांफलंसद्यःक्षणंनृणाम् ॥ पापाचारस्यदुर्बुद्धेर्व्याधस्यापिदुरात्मनः ॥ २९ ॥

आगे कहौ धर्म क्याहै और उसका फल क्याहै हे दयानिधे ! यह मेरी सुननेकी इच्छाहै व्याधके यह वचन सुन शंख प्रसन्नमन होताहुआ ॥ २६ ॥ फिर मनमें विस्मयकर वैशाखकी प्रशंसा करताहुआ इस लुब्धक शठने मेरे लिये अभी पादत्राण दिये ॥ २७ ॥ इस दुर्बुद्धिकी बडी विचित्र विषमता हुई है संपूर्ण धर्मोंका फल जन्मान्तरमें मिलै है ॥ २८ ॥ परन्तु वैशाखके धर्मोंका फल तत्काल मिलताहै पापाचारी दुर्बुद्धि दुरात्मा

व्याधकी भी दैवयोगसे पादत्राणका दान करनेसे सत्वशुद्धि होयगई जो कर्म विष्णुको प्रियहै और जिससे निर्मल संतोषकी प्राप्ति होती है वही धर्म है मनुसे आदि लेकर सब धर्मवेत्ता उसीको धर्म कहें हैं वैशाखमासके धर्म विष्णुभगवान्को अतीव प्रियहैं ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ केशव भगवान् जैसे माधवमासके धर्मोंसे प्रसन्न होयहैं वैसे संपूर्ण दान, तप और बडे बडे यज्ञोंसे भी प्रसन्न नहीं होयहैं ॥ ३२ ॥ संपूर्ण धर्मोंमें इसकी बराबर कोई धर्म नहीं

दैवादुपानहोर्दानात्सत्वशुद्धिरभूदहो ॥ यच्चविष्णोःप्रियंकर्मयत्तत्संतोषनिर्मलम् ॥ ३० ॥ तदेवधर्ममित्याहुर्मन्वाद्याधर्मवित्तमाः ॥ धर्मामाधवमासीयाःप्रियाविष्णोरतीवते ॥ ३१ ॥ धर्मैर्माधवमासीयैर्यथातुष्यतिकेशवः ॥ नतथासर्वदानैश्चतपोभिश्चमहामखैः ॥ ॥ ३२ ॥ नानेनसदृशोधर्मःसर्वधर्मेषुविद्यते ॥ मागयांयातुमागंगांमाप्रयागंतुपुष्करम् ॥ ३३ ॥ माकेदारंकुरुक्षेत्रंमाप्रभासंस्यमंतकम् ॥ मागोदांमाचकृष्णांचमासेतुंमामरुद्वृधाम् ॥ ३४ ॥ वैशाखधर्ममाहात्म्यंशंसंतीचकथापगा ॥ तत्रस्नातस्यवैविष्णुःसद्योहृद्यवरुद्ध्यते ॥ ३५ ॥ मासेमाधवसंज्ञेस्मिन्यत्स्वल्पेनैवसाध्यते ॥ एतद्बहुव्ययैर्दानैर्नधर्मैर्नापिवैमखैः ॥ ३६ ॥

है गयामें मतजाओ, गंगामें मतजाओ, प्रयाग और पुष्करमें मतजाओ ॥३३॥ केदारनाथ कुरुक्षेत्र और प्रभासादि तीर्थोंपर मतजाओ, गोदावरी, कृष्णा, सेतुन्बध रामेश्वर कावेरी आदि तीर्थोंमें जानेकी कुछ आवश्यकता नहीं है ॥३४॥ वैशाखके धर्मोंको निरूपण करनेवाली कथानदीमें जो कोई स्नानकरैहै विष्णु भगवान् उसके हृदयमें विराजेंहैं ॥३५॥ इस माधवमासमें जो कृत्य थोडेही द्रव्यसे सिद्ध होयहै वह बहुत खर्च करनेसे अथवा दानसे अथवा धर्मसे

अथवा यज्ञोंसे सिद्ध नहीं होयहै॥ ३६॥हे व्याध ! यह वैशाखमास पुण्योंका बढानेवालाहै इस मासमें तापके नाश करनहारी पादुका तैंने मेरे लिये दीनी हैं ॥३७॥ इससे तेरे पूर्व जन्मके कियेहुए सुकृत उदय होय आये हैं हे व्याध ! तेरे ऊपर भगवान् प्रसन्न होंयगे और तोहि कल्याणकी प्राप्ति होयगी ॥३८॥ नहीं तौ तेरी ऐसी शुभ बुद्धि होनी कठिन थी जब मुनीश्वर ऐसे कहरहेथे तबही मृत्यु करके प्रेरित बडा बली ॥ ३९ ॥ सिंह व्याघ्रको वधके

मासोयंमाधवोनामव्याधपुण्यविवर्धनः ॥ तस्मिन्मह्यंत्वयादत्तेपादुकेतापनाशने ॥ ३७ ॥ तेनतेपूर्वकालीनंपुण्यंपाकमुपागतम् ॥ तुष्टस्तुभगवान्प्रायःश्रेयोव्याधभविष्यति॥३८॥ अन्यथातेकथंभूयाद्बुद्धिरेतादृशीशुभा॥मुनावेवंब्रुवाणेचमृत्युनाप्रेरितोबली॥३९॥ सिंहोव्याघ्रवधार्थायप्राद्रवत्क्रोधविह्वलः ॥ मध्येहष्ट्वाचमातंगंदैवाद्देवेनकल्पितम् ॥ ४० ॥ तंहंतुमुद्यतोगच्छन्पदाक्रांतंव्यवस्थितम् ॥ तयोर्युद्धमभूद्राजन्सिंहमातंगयोर्वने ॥ ४१ ॥ श्रांतौयुद्धाच्चविरतौनिरीक्षंतौचतस्थतुः ॥ व्याधमुद्दिश्ययच्चोक्तंमुनिनाचमहात्मना ॥ ४२ ॥ समस्तपातकध्वंसिदैवाच्छुश्रुवतुश्चतौ ॥ तेनैवमासमाहात्म्यश्रवणेनामलाशयौ ॥ ४३ ॥

निमित्त क्रोधसे विह्वल होय दौडता हुआ बीचमें दैवयोगसे देवकल्पित हाथीको देखकर ॥ ४० ॥ उसके मारनेको महान् उद्योग करता हुआ उस वनमें उन दोनों सिंह और हाथियोंका ऐसा घोर संग्राम हुआ ॥ ४१ ॥ कि दोनों थकके गिर पडे युद्ध जिननें त्याग दिया और दोनों एक दूसरेको देखते पडेरहे और मुनीश्वरने जो कथा व्याधकेप्रति कही ॥ ४२ ॥ जो संपूर्ण पातकोंके नाश करनेवालीहै दैवयोगसे उन दोनोंने यह कथा सुनी

इस कथाके श्रवणमात्रसे इनके देह निर्मल होयगये पाप सब जाते रहे ॥ ४३ ॥ शापसे छूट जानेके कारण तत्काल पशुयोनिको त्यागकर स्वर्गको जाते हुए दोनोंको दिव्य देह मिलगये और सुंदर सुगंधित चन्दनादिसे लेपित ॥ ४४ ॥ दिव्य विमानपै बैठ जिनमें दिव्य स्त्री सेवा करती जांयहैं वे दोनों शिर झुकाय हाथ जोड ठाडे भये ॥ ४५ ॥ धर्मोपदेशक मुनिवर मार्गमें व्याधके निमित्त उन्हे देख विस्मित होय पूछने लगे तुम कौन हौ

शापान्मुक्तौचतौदेहात्सद्योमुक्तौदिवंगतौ ॥ दिव्यरूपधरौदिव्यौदिव्यगंधानुलेपनौ ॥ ४४ ॥ दिव्यंविमानमारूढौदिव्यनारीनिषेवितौ ॥ सद्योवनतमुर्द्धानौप्रांजलीचोपतस्थतुः ॥ ४५ ॥ मुनींद्रोधर्मवक्ताचव्याधमुद्दिश्यवैपथि ॥ तौदृष्ट्वाविस्मितःप्राहकौयुवामितिनिश्चलः ॥ ४६ ॥ दुर्योनौतुकुतोजन्मयुवयोर्वाकथंमृतिः ॥ अहेतुर्विपिनेचास्मिन्परस्परवधोद्यतौ ॥ ४७ ॥ एतत्सर्वंसुविस्तार्यसम्यग्वदतमेनघौ ॥ इत्युक्तौमुनिनातेनवचःप्रत्यूचतुःपुनः ॥४८॥ मतंगस्यमुनेःपुत्रौदंतिलःकोहलोपरः ॥ शापदोषेणतौजातौनाम्नादंतिलकोहलौ ॥ ४९ ॥ रूपयौवनसंपन्नौसर्वविद्याविशारदौ ॥ आवामुद्दिश्यप्रोवाचपिताधर्मार्थकोविदः ॥ ५० ॥

॥ ४६ ॥ तुह्मारा जन्म दुष्ट योनिमें कैसे हुआहै और निष्कारणही इस वनमें एक दूसरेके मारनेके उद्यत हुए तुह्मारी मृत्यु कैसे होती हुई ॥ ४७ ॥ हे निष्पापहो ! यह सब कथा विस्तारपूर्वक मेरे सामने कहौ जब मुनिने ऐसे कहा तब वे कहन लगे ॥ ४८ ॥ मतंगमुनिके दंतिल और कोहल दो पुत्र हुए शापके दोषसे दंतिल और कोहल ये दो नाम हुए ॥ ४९ ॥ रूपयौवनसे संपन्न संपूर्ण विद्याओंमें विशारद हमसे धर्म और अर्थमें निपुण

हमारे पिताने हमसे कही ॥ ५० ॥ मतंग नाम ब्रह्मर्षि संपूर्ण धर्मोंका जाननेहारा कहने लगा हे पुत्रो ! मधुसूदन भगवान्के प्रिय मासमें ॥ ५१ ॥ मार्गके शिरपर प्याऊ लगाऔ और मनुष्योंकी पंखासे हवा करो मार्गमें छायाके स्थान बनाऔ अन्न और शीतल जलका दान करौ ॥ ५२ ॥ प्रातः काल स्नान करौ भगवान्का पूजन करौ कथा श्रवण करौ जिससे संसारके बंधनकी निवृत्ति होय ॥ ५३ ॥ ऐसे अनेको प्रकारके वाक्यसे हमको सम झाया परन्तु हमारी बडी खोटी बुद्धि सो समझमें कुछभी नहीं आता हुआ पिताके वाक्य सुनकर मुझ दंतिलको अत्यन्त क्रोध हुआ और कोहल

मतंगोनामब्रह्मर्षिःसर्वधर्मविदुत्तमः ॥ वैशाखेमासितनयौमधुसूदनवल्लभे ॥ ५१ ॥ प्रपांकुरुतंमार्गेचजनान्वीजयतंक्षणम् ॥ मार्गे छायांविधत्तंचभूर्यन्नंशीतलांबुच ॥ ५२ ॥ कुरुतंस्नानमुष्ससितथैवार्चयतंविभुम् ॥ कथांचशृणुतंनित्यंययाबंधोनिवर्तते ॥ ५३ ॥ एवंचबहुभिर्वाक्यैर्बोधितावपिदुर्मती ॥ क्रुद्धोऽभवंदंतिलोहंमत्तोहंकोहलाह्वयः ॥ ५४ ॥ क्रुद्धःशशापतौसद्यःपिताधर्मेषुलालसः ॥ पुत्रंचधर्मविमुखभार्यां चाप्रियवादिनीम् ॥ ५५ ॥ अब्रह्मण्यंचराजानंत्यजेत्सद्योनचेत्पतेत् ॥ दाक्षिण्यादर्थलोभाद्वासंसर्गंयेप्रकुर्वते ॥ ॥ ५६ ॥ तेसर्वेनरकंयांतियावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ इतिज्ञात्वाशशापावांमदक्रोधपरिप्लुतौ ॥ ५७ ॥

मदोन्मत्त होयगया ॥ ५४ ॥ तब धर्ममें है लालसा जिनकी ऐसे हमारे पिताने क्रोधित हो शाप दिया कि धर्मसे विमुख पुत्र, कटुवाक्य कहने वाली स्त्री ॥ ५५ ॥ और अब्रह्मण्य राजाको तत्काल त्यागदे जो न त्यागे तो पापी होय जो दाक्षिण्यसे अथवा लोभके वशसे इनका संसर्ग करते हैं ॥ ५६ ॥ वे चौदह मन्वन्तर पर्य्यन्त नरक भोगेंहैं ऐसे विचार मद और क्रोधसे परिप्लुत हम दोनोंको शाप देतेहुए ॥ ५७ ॥

वै०मा०
॥८०॥

भा०टी०
अ० १७

हे दंतिल ! तू अपने क्रोधके कारण सिंहकी योनि प्राप्त करैगा और मदोन्मत्त कोहलको मतवाले हाथीकी योनि मिलैगी ॥ ५८ ॥ तब तौ हम बडे दुःखी हुए और शापसे निवृत्तिकेलिये प्रार्थना करते हुए हमारी प्रार्थना सुन पिताने शापमोक्षका उपाय बताया ॥ ५९ ॥ तुम दोनों पशुयोनिको प्राप्त होय थोडे दिन पीछे एक दूसरेको मारनेकेलिये उद्यत होओंगे ॥ ६० ॥ उसीसमय व्याध और शंखका संवाद वैशाखधर्मके विषयका तुम्हारे कानमें

क्रुद्धोहंदंतिलोभूयाःसिंहःक्रोधपरिप्लुतः ॥ मत्तस्तुकोहलोभूयान्मत्तोमातंगयूथपः ॥५८॥ कृतानुतापौपश्चात्तुप्रार्थयावोविमोचनम् ॥ आवाभ्यांप्रार्थितोभूयोविशापंचददौपिता ॥ ५९ ॥ युवांप्राप्यचदुर्योनिंकियत्कालांतरेपिच ॥ संगमोभवितातत्रपरस्परवधैषिणोः ॥ ६० ॥ तस्मिन्नेवहिसमयेसंवादंव्याधशंखयोः ॥ वैशाखधर्मविषयोदैवाद्वांश्रवणस्यच ॥ ६१ ॥ गमिष्यतिक्षणादेवतस्मान्मुक्तिर्भविष्यति ॥ शापान्मुक्तौपूर्वमेवरूपमास्थाय पुत्रकौ ॥ ६२ ॥ मामेवप्राप्यवसतंनान्यथामेवचोभवेत् ॥ इतिशप्तौचगुरुणा दुर्योनिंप्राप्यदुर्मती ॥ ६३ ॥ प्राप्यदैवात्संगतिंचपरस्परवधैषिणौ ॥ संवादंयुवयोर्दिव्यंशुभंतंशुश्रुवावहे ॥ ६४ ॥ तेनसद्योविमुक्तिश्चक्षणादेवावयोरभूत् ॥ इति सर्वंसमाख्यायप्रणम्यचमुनीश्वरम् ॥ ६५ ॥

दैवयोगसे जायगा ॥ ६१ ॥ तब तत्क्षण तुह्मारी मुक्ति होय जायगी और शापसे छूट पूर्वरूप धारण कर ॥ ६२ ॥ मेरे पास निवास करोगे मेरा वचन मिथ्या नहींहै ऐसे पिताके शापसे हमको पशुयोनि मिली ॥ ६३ ॥ आपसमें एक दूसरेके वधकी हमारी इच्छा हो दैवयोगसे यहां चले आये और आपके दिव्य संवादको सुनतेहुए ॥ ६४ ॥ उसीके प्रभावसे हमारी तत्काल मुक्ति होयगई ऐसे सब कथा कह मुनीश्वरको नमस्कार कर ॥ ६५ ॥

॥८०॥

मुझसे आज्ञा मांग अपने पिताके पास चलेगये सोई सब कथा दयानिधि मुनिने व्याधको सुनाई ॥ ६६ ॥ देख वैशाखका माहात्म्य कैसा है इसके श्रव
णका बडा फल है जो कोई क्षणभरभी सुनेहै उसे तत्काल मुक्ति मिलै है ॥ ६७ ॥ जब मुनिने ऐसे कही तब व्याध अपने शस्त्रोंको फेंक कृपालु, निस्पृह,
प्रबलबुद्धि, विशुद्धसत्व और पुण्यपात्र ऋषिसे कहने लगा ॥६८ ॥ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसंवादे दंतिलकोहलमुक्तिप्रा

समामंत्र्याभ्यनुज्ञातौजग्मतुःपितुरंतिकम् ॥ तदेवसंप्रदृश्याहमुनिर्व्याधंदयानिधिः ॥ ६६ ॥ पश्यवैशाखमाहात्म्यश्रवणस्यफलंम
हत ॥ मुहूर्तंश्रवणादेवतयोर्मुक्तिःकरेस्थिता ॥ ६७ ॥ इतिब्रुवाणंमुनिपुंगवंतंदयानिधिंनिस्पृहमग्र्यबुद्धिम् ॥ विशुद्धसत्त्वंसुकृतैकपा
त्रंसंन्यस्तशस्त्रःपुनराहव्याधः ॥ ६८ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेवैशाखमाहात्म्येनारदांबरीषसंवादेदंतिलकोहलमुक्तिप्राप्तिर्नामसप्तदशो
ऽध्यायः ॥ १७ ॥ व्याधउवाच ॥ भवतानुगृहीतोस्मिमुनेपापोतिदुष्टधीः ॥ दयालवोमहांतोहिस्वभावादेवसाधवः ॥ १ ॥ क्वव्या
धत्वाकुलीनोहंक्वचवामतिरीदृशी ॥ केवलंभवतामेवमन्येनुग्रहमुत्तमम् ॥ २ ॥ अथसाधोचशिष्योस्मिकृपापात्रोस्मिमानद ॥ अनु
ग्राह्योस्मिपुत्रोस्मिकृपांकुरुदयानिधे ॥ ३ ॥ यथामेनपुनर्भूयादसन्मतिरनर्थदा ॥ सद्भिस्तुसंगतिःक्वापिनभूयोदुःखमश्नुते ॥ ४ ॥

प्तिर्नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ व्याध बोला—हे मुने ! मैं बहुत पापी और दुष्टबुद्धि हूं आपने मेरे ऊपर बडी दया करी बडे साधुमहात्मा स्वाभाविक
दयालु होते हैं ॥ १ ॥ कहां मैं अकुलीन व्याध और कहां मेरी ऐसी बुद्धि यह सब केवल आपके अनुग्रहका कारण है ॥ २ ॥ हे साधो ! मैं आपका
शिष्यहूं आपका कृपापात्रहूं आपद्वारा अनुग्रहके योग्यहूं पुत्रहूं हे दयानिधे ! मेरे ऊपर ऐसी दया कीजिये जिससे फिर मेरी बुद्धि दुष्ट होयकर अनर्थं

कार्योंके करनेमें प्रवृत्त न होय सत्संगति होनेके पश्चात् फिर दुःख न भोगना पडै ॥ ३ ॥ ४ ॥ इससे हे प्रभो ! मुझे ऐसे पापनाशक मंत्रोंका उपदेश कीजिये जिससे मुमुक्षुजन इस संसारसागरसे सहजहीमें पार लगजांय ॥ ५ ॥ साधुमहात्मा समदृष्टा और प्राणीमात्रपर दया करें हैं उनकी दृष्टिमें न कोई अधमहै न उत्तमहै न अपनाहै न परायाहै ॥ ६ ॥ जो एकाग्रतासे विवेचना करें चित्तकी शुद्धतासे पूछें वे कैसेही दोषोंसे युक्त हों कैसेही धर्महीन

तस्माद्बोधयमांविप्रसूक्तैस्तैर्वृजिनापहैः ॥ येनचाद्धातारिष्यंतिसंसाराब्धिंमुमुक्षवः ॥ ५ ॥ साधूनांसमचित्तानांतथाभूतदयावताम् ॥ नहीनश्चोत्तमःकश्चिन्नात्मीयोहिपरस्तथा ॥ ६ ॥ एकाग्रेणविचिन्वतिचित्तशुद्धिंचपृच्छति ॥ सर्वदोषयुतोवापिसर्वधर्मोज्झितोपि वा ॥ ७ ॥ कृतानुतापश्चयदायदापृच्छतिवैगुरुम् ॥ तदैवोपदिशंत्यद्धाज्ञानंसंसारमोचकम् ॥ ८ ॥ यथागंगामनुष्याणांपापनाशस्व भाविनी ॥ तथामंदसमुद्धारस्वभावाःसाधवःस्मृताः ॥ ९ ॥ माविचारयमांबोद्धुंदयालोभक्तवत्सल ॥ शुश्रूषुत्वान्नतत्त्वाच्चशुद्धत्वा त्तवसंगतेः ॥ १० ॥ इतिव्याधवचःश्रुत्वापुनर्विस्मितमानसः ॥ साधुसाध्वितिसंभाष्यधर्मानेतानुवाचह ॥ ११ ॥

हों ॥ ७ ॥ परन्तु जब वे अपने कियेहुए दुष्कर्मोंका पश्चाताप करके गुरुसे पूछतेहैं तबही वे संसारबन्धनसे छुडानेवाले ज्ञानका उपदेश करेंहैं ॥ ८ ॥ जैसे गंगा स्वाभाविकही मनुष्योंके पापोंको दूर करै है ऐसेही दुर्बुद्धियोंके उद्धार करनेका स्वभाव महात्माओंका होताहै ॥ ९ ॥ हे भक्तवत्सल ! हे दयालो आपकी संमतिसे शुश्रूषा, नम्रता और चित्तकी शुद्धिद्वारा मैं शुद्धहूं मुझे उपदेश करिये ॥ १० ॥ व्याधकी ऐसी ऐसी बातें सुन बडे विस्मितचित्तसे

मुनिने कहा धन्यहै धन्यहै हे व्याध ! ऐसे कह धर्मोपदेश करने लगे ॥ ११ ॥ शंखमुनि बोले—हे व्याध ! जो तू शान्तिकी इच्छा करै है तौ वैशाखके धर्मोंको कर ये धर्म बडे दिव्य संसारके बन्धनोंसे छुडानेवाले हैं इनसे विष्णुभगवान् प्रसन्न होयहैं ॥ १२ ॥ हे व्याध ! यहां धूप बहुत सतावै है न यहां छायाहै न पाणी है चल दूसरी जगह चलें जहां छाया होय ॥ १३ ॥ वहां चलकर जल पीकर छायामें बैठके स्वस्थचित्तसे तेरे सामने यह पापना

॥ शंखउवाच ॥ विष्णुप्रीतिकरान्दिव्यान्संसाराब्धिविमोचकान् ॥ कुरुधर्मांश्चवैशाखेयदिव्याधशमिच्छसि ॥ १२ ॥ आतपोबाधतेघोरोनच्छायानांबुचात्रच ॥ तस्मात्स्थलांतरंयावोयत्रच्छायातुवर्तते ॥ १३ ॥ तत्रगत्वाजलंपीत्वासुच्छायांचसमाश्रितः ॥ तत्रतेवर्णयिष्यामिमाहात्म्यंपापनाशनम् ॥ १४ ॥ विष्णोर्माधवमासस्ययथादृष्टंयथाश्रुतम् ॥ इत्युक्तोमुनिनातेनव्याधःप्राहकृतांजलिः ॥ १५ ॥ इतोनिदूरेसलिलवत्तटंचसरोवरं ॥ कपित्थास्तत्रवैसंतिफलभारेणपीडिताः ॥ १६ ॥ गच्छावस्तत्रसंतुष्टिर्भवितानात्रसंशयः ॥ व्याधेनैवंसमादिष्टस्तेनसाकंययौमुनिः ॥ १७ ॥

शक माहात्म्य वर्णन किये जांयगे ॥ १४॥ विष्णुभगवान्के माधवमासका माहात्म्य जैसे सुनागयाहै और देखा गयाहै सो सब तेरे सामने वर्णन करूंगा मुनिकी यह बात सुन व्याध हाथ जोड कहताहुआ ॥ १५ ॥ यहांसे थोडीही दूरपर एक निर्मल सरोवर है उसके किनारेपर कैथके बहुतसे पेडहैं जो फलके बोंझसे नीचे झुकरहे हैं ॥ १६ ॥ वहां चलिये निश्चयही वहां चित्त प्रसन्न होयजायगा व्याधकी यह बात सुन शंख मुनि उसके संग चले ॥ १७॥

थोडी दूर चलकर क्या देखै हैं कि एक निर्मल सरोवरहै वहां बगुला राजहंस और चकवाचकवी शोभा दे रहे हैं॥ १८॥हंस सारस और कुंज चारों ओर फिर रहे हैं वांस वंग और बेत करके शोभितहै भ्रमर गुंजार कर रहेहैं ॥१९ ॥ मगर कछुआ मीन आदि जलजीवोंसे परम मनोहर है कमोदनी, उत्पल, कल्हार, पुंडरीक, शतपत्र, कोकनद आदि अनेक प्रकारके कमल शोभा देरहेहैं पक्षियोंके कलरवसे कान पडे शब्द सुनाई नहीं दें हैं नेत्रोंको बडा आनन्द होयहै

कियद्दूरंततोगत्वाददर्शाग्रेसरोवरम् ॥ बककारंडवाकीर्णंचक्रवाकोपशोभितम् ॥ १८ ॥ हंससारसक्रौंचाद्यैःसमंतात्परिशोभितम् ॥ कीचवंन[illegible]षाद्यैश्चकूजितंभ्रमरैरपि ॥ १९ ॥ नक्रकच्छपमीनाद्यैरगाह्यंसुमनोहरम् ॥ कुमुदोत्पलकल्हारपुंडरीकादिभिर्महत् ॥ २० ॥ शतपत्रैःकोकनदैःसमंतात्परिशोभितम् ॥ पक्षिणां च[illegible]लारावैर्मुखरन्नयनोत्सवम् ॥ २१ ॥ तटेकीचकगुल्मैश्चतथावृक्षैश्चशोभितम् ॥ वटैःकरंजैर्नीपैश्चचिंचिणीभिस्तथैवच ॥ २२ ॥ निंबप्लक्षप्रि[illegible]लैश्चचंपकैबकुलैःशुभैः ॥ पुन्नागैस्तुंबरैश्चैवकपित्थामलकैरपि ॥ २३ ॥ निष्पेषणैश्चजंबूभिःसमंतात्परिशोभितम् ॥ वन्यमातंगसारंगव[illegible]हमहिषादिभिः॥२४॥ शशैश्चशल्लकैश्चैवगवयैरुपशोभितम् ॥ खड्गनाभिमृगाद्यैश्चव्याघ्रैःसिंहैर्वृकैरपि ॥ २५ ॥ खरांतकैश्चशरभैश्चमर[illegible]भिःसुमंडितम् ॥ शाखाशाखांतरंशीघ्रंप्लवमानैःप्लवंगमैः ॥ २६ ॥

॥ २० ॥ २१ ॥ किनारेपर वांसके वृक्ष तथा अन्य वृक्ष चारों ओर अपूर्व शो[illegible] दे रहेहैं वड, कंजा, कदंब, इमली, नीम, पाकर, प्रियाल, चम्पा, बकुल, पुन्नाग, तुंबर, कैथ,आंवला और जामन आदि चारों ओर सुशोभित होय रहेहैं वनके हाथी, हिरन, सूकर और भेसा किलोल कर रहेहैं॥२२॥ ॥ २३ ॥ २४॥ सस्से, सेही, रोझ, गेंडा, कस्तूरिया मृग, व्याघ्र, सिंह, भेडिया, गधा, खिचर, शरभ, सुरह गाय आदि अनेक पशु विचर रहेहैं बन्दर

लंगूर आदि छलांग मारनेवाले जीव वृक्षकी शाखा शाखापर छलांग माररहेहैं ॥ २५ ॥ २६ ॥ बिल्ली, रीछ और रुरू फिररहेहैं झिल्ली झंकारेंहैं वांस शब्द कर रहेहैं प्रचंड पवनके वेगसे वृक्ष झुक रहेहैं एवंभूत दिव्य सरोवर व्याधने मुनिको दिखाया ॥ २७ ॥ २८ ॥ तृषासे पीडित मुनि उस सरोवरको देखतेहुए और इस रमणीक सरोवरमें दुपहरकेसमय स्नान करते हुए ॥ २९ ॥ फिर वस्त्र धारणकर मध्याह्न कृत्यकर देवपूजनसे निश्चिन्त होय फलोंको

मार्जारैश्चैवभल्लूकैर्भीषणंरुरुभिस्तथा ॥ झिल्लीशब्दैश्चक्रेंकारैःकीचकानांरवैस्तथा ॥ २७ ॥ घोरवायुविनिर्घातदारुभारैःसमन्वितम् ॥ एतादृशंसरोदिव्यंव्याधेनैवप्रदर्शितम् ॥ २८ ॥ ददर्शमुनिशार्दूलस्तृषयाबाधितोभृशम् ॥ स्नात्वामध्याह्नवेलायांसरस्यस्मिन्मनोरमे ॥ २९ ॥ वाससीपरिधायाथकृत्वामाध्याह्निकीःक्रियाः ॥ देवपूजांततःकृत्वाभुक्त्वाफलमतंद्रितः ॥ ३० ॥ व्याधोपनीतंसुस्वादकपित्थंश्रमहारि च ॥ सुखोपविष्टःपप्रच्छव्याधंधर्मरतंपुनः ॥ ३१ ॥ किंवक्तव्यंमयाह्यद्यतवादोधर्मतत्पर ॥ धर्माश्चबहवःसंतिनानामार्गाः पृथग्विधाः ॥ ३२ ॥ तत्रवैशाखमासोक्ताःसूक्ष्माअपिमहार्थदाः ॥ सर्वेषामेवजंतूनामिहामुत्रफलप्रदाः ॥ ३३ ॥ यत्प्रष्टव्यंमनसितेयच्चादौतच्चपृच्छताम् ॥ इत्युक्तोमुनिनातेनव्याधःप्रांजलिरब्रवीत् ॥ ३४ ॥

खातेहुए ॥ ३० ॥ ये कैथके फल बडे मीठे और श्रमनाशक थे इन्हीको व्याध लायाथा ऐसे शंखमुनि सुखपूर्वक बैठ व्याधसे पूछने लगे ॥ ३१ ॥ हे धर्मश्रवणमें तत्पर व्याध! तू कौन धर्म सुन नेकी इच्छा करैहै धर्म बहुतहैं और उनके करनेकी विधिभी जुदी जुदीहैं ॥ ३२ ॥ इनमेंसे वैशाखोक्त धर्म सूक्ष्म और बहुत फलदायक हैं ये संपूर्ण मनुष्योंको इस लोक और परलोक दोनों जगह फलके देनेवालेहैं ॥ ३३ ॥ जो तेरे मनमें पूछनेकी इच्छा होय सोई

पूछ तब तौ मुनिकी बात सुन हाथ जोड कहता हुआ ॥ ३४ ॥ व्याध बोले हे महाराज ! मुझे कौन कर्म करनेसे तमोगुणमयी यह व्याधकी योनि मिली और कौन कर्मसे मेरी ऐसी बुद्धि होयगई और महात्माकी संगति हुई ॥ ३५ ॥ हे प्रभो ! जो आपकी मेरे ऊपर कृपाहै तौ यह सब वृत्तान्त मेरे आगे कहिये यह सुन शंखमुनि हंसते हुए अपने मुखकमलसे मेघकीसी वाणीद्वारा कहनेलगे ॥ शंख बोले, हे व्याध ! तू शाकल नगरमें पहिले वेदपाठी ब्राह्मण

व्याधउवाच॥केनवाकर्मणाचासीद्व्याधजन्मतमोमयम् ॥ केनवाचेदृशीबुद्धिःसंगतिर्वामहात्मनः ॥३५॥ एतच्चान्यत्समाचक्ष्वयदि माभ[illegible]प्रभो ॥ [illegible]पुनरप्याहशंखोनाममहामुनिः ॥३६॥ मेघगंभीरयावाचास्मयमानमुखांबुजः ॥ शंखउवाच ॥ शाकलेनगरेपूर्वंद्विजस्त्वंवेदपारगः ॥३७॥ स्तंबोनाममहातेजा[illegible]श्रीवत्सगोत्रजः ॥ तवेष्टागणिकाकाचिदासीत्तत्संगदोषतः ॥३८॥त्यक्त्वा नित्यक्रियानित्यंशूद्रवद्गृहमागतः ॥ शून्याचारस्यदुष्टस्यप[illegible]त्यक्तक्रियस्यच ॥३९॥ ब्राह्मणीचतदाचासीद्भार्याकांतिमतीतव ॥ सा त्वांपर्यचरत्सुभ्रूःसर्वेश्यंब्राह्मणाधमम् ॥४०॥ उभयोःक्षालयंती[illegible]पादांस्त्वत्प्रियकारिणी ॥ उभयोरप्यधःशेतेउभयोर्वचनेरता॥४१॥

होता हुआ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ तेरा नाम स्तंब था और श्रीवत्सगोत्रमें तेरा ज[illegible]म हुआ तेरा प्रेम एक वेश्यासे था उसीकी संगतिके दोषसे ॥ ३८ ॥ तू नित्य कर्मोंका परित्याग कर शूद्रकेसमान घर आया क्रिया तैंने त्यागदी ऐसे आ[illegible]रहीन तुझ दुष्टकी एक स्त्री ब्राह्मणी बडी रूपवती थी वह वेश्यासहित तुझ नीचकी सेवा किया करती थी ॥ ३९ ॥ ४० ॥ तेरे प्रियके करनेवाली तुम[illegible] दोनोंके चरण धोती थी तुम दोनों पलंगपर सोते वह नीचे सोती

और तुम दोनोंकी आज्ञामें तत्पर रहती ॥ ४१ ॥ वेश्याके निषेध करनेपरभी वह पतिव्रता अपनें धर्ममें स्थिति रही और वेश्यासहित अपने स्वामीकी सेवा करते करते ॥ ४२ ॥तथा दुःख भोगते भोगते महान् काल व्यतीत होगया एकदिन उसके स्वामीने भेंसका दूध और मूली भक्षण किये ॥ ४३ ॥ तथा शूद्रोंके भक्षण करनेकी वस्तु निष्पाव और तिल खाये इस अपथ्य भोजनसे उसे दस्त और वमन होयगये ॥४४॥ इस अपथ्य सेवनसे दारुण भयं

वेश्ययावार्यमाणापिपातिव्रत्यव्रतस्थिता ॥ एवंशुश्रूषयंत्याहिभर्त्तारंवेश्ययासह ॥ ४२ ॥ जगामसुमहान्कालोदुःखितायामहीतले ॥ अपरस्मिन्दिनेभर्त्तामाहिष्यंमूलकान्वितम् ॥ ४३ ॥ अभक्षयच्छूद्रधर्मान्निष्पावांस्तिलमिश्रितान् ॥ तदपथ्यमशित्वातुवमंश्चैववि रेचयन् ॥ ४४ ॥ अपथ्याद्दारुणोरोगोव्यजायतभगंदरः ॥ सदह्यमानोरोगेणदिवारात्रंतुभूरिशः ॥ ४५ ॥ यावदास्तेगृहेवित्तंतावद्वे श्याचसंस्थिता ॥ गृहीत्वातस्यसावित्तंपश्चाद्गतावरमंदिरं ॥ ४६ ॥ अन्यस्यपार्श्वमासाद्यगताघोरासुनिर्घृणा ॥ ततःसदीनवचनो व्याधिबाधासुपीडतः ॥ ४७ ॥ उक्तवान्सरुदन्भार्यांरुजाव्याकुलमानसः ॥ परिपालयमांदेविवेश्यासक्तंसुनिष्ठुरम् ॥ ४८ ॥ नम योपकृतंकिंचित्त्वयिसुंदरिपापिना ॥ योभार्यांप्रणतांपापोनानुमन्येतगर्हितः ॥ ४९ ॥

कर भगंदर रोग होयगया इस रोगसे रातदिन उसके घोर वेदना होनेलगी ॥ ४५ ॥ जबतक घरमें धन विद्यमान रहा तबतक वेश्याभी रहिआई फिर सब धनको ले घर छोडकर चलीगई ॥ ४६ ॥ जब वह अन्यके पास चलीगई तब इसे घोर घृणा उत्पन्न हुई और रोगसे अत्यन्त दुःखी होय दीन वाणीसे व्याकुलचित्तसे रोताहुआ अपनी ब्राह्मणीसे कहता हुआ हे देवि ! मैं बहुत निष्ठुर और वैश्यासक्त हूं तू मेरी रक्षा कर ॥४७॥ ४८ ॥ हे सुंदरी !

मैं पापीने तेरा कुछभी उपकार नहीं कियाहै जो गर्हित पापी नम्र हुई अपनी भार्याका मान नहीं करै है ॥ ४९ ॥ वह पन्द्रह जन्मपर्य्यन्त नपुंसक होयगा हे महाभागे ! रातदिन साधुमहात्माओंसे निंदित तेरी अवज्ञा करनेसे मैं पापयोनिमें पडूंगा मैं तेरे विनीत भावपरभी क्रोधके मारे दग्ध हुवा ॥ ५० ॥ ५१ ॥ जब उसके स्वामीने ऐसे कही तब वह हाथ जोड बोली हे कांत ! तुम मेरे प्रति दीनता मत करौ और लज्जाभी मत करौ ॥ ५२ ॥

सषंढोभविताभद्रेदशजन्मसुपंचसु ॥ दिवारात्रंमहाभागेनिंदितःसाधुभिर्जनैः ॥५०॥ पापयोनिमवाप्स्यामित्वांसाध्वीमवमन्यवै ॥ अहंक्रोधनदग्धोस्मितवाशुभवर्तनैः ॥५१॥ एवंब्रुवाणंभर्तारंकृतांजलिपुटाब्रवीत् ॥ नदैन्यंभवताकार्यंनव्रीडाकांतमांप्रति ॥५२॥ नचापित्वयिमेक्रोधोयेनदग्धोस्मिवक्ष्यसि ॥ पुराकृतानिपापानिदुःखानीहभवंतिहि ॥५३॥ तानियाक्षमतेसाध्वीपुरुषोवासउत्तमः॥ यन्मयापापयापापंकृतंवैपूर्वजन्मनि ॥५४॥ तद्भुंजंत्यानमेदुःखंनविषादःकथंचन ॥ इत्येवमुक्त्वाभर्तारंसासुभ्रूस्तमपालयत् ॥५५॥ आनीयजनकाद्वित्तंबंधुभ्योवरवर्णिनी ॥ क्षीरोदवासिनंदेवंभर्तारंचाप्यचिंतयत् ॥ ५६ ॥

मैंने आपके ऊपर कभी क्रोध नहीं कियाहै जिससे आप दग्धहुए कहतेहो पहिले कियेहुए पापही यहां आकर उदय होंयहैं ॥ ५३ ॥ जो इनको सहन करै वही साध्वी स्त्री है और वही उत्तम पुरुष है मुझ पापिनीने पूर्वजन्ममें जो पाप किये हैं उनके भोगनेमें मुझे दुःख वा विषाद कुछ नहीं है ऐसे कह वह शोभनमुखी सेवा करनेलगी ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ अपने पिता और बंधुवर्गसे धन लायकर वह क्षीरशायी विष्णुभगवान् और अपने पतिको

सेवा शुश्रूषामें तत्पर होतीहुई ॥ ५६ ॥ दिनरात मलमूत्र धोयकर शुद्ध रक्खै और अपने स्वामीके जो कीडा पडगये उन्हें धीरे धीरे नखसे खेंचे ॥ ५७ ॥ रातदिन नींद त्याग दीनी भर्त्ताके दुःखके संतापसे दुःखी होय करने लगी ॥ ५८ ॥ हे देवताओं ! हे पित्रीश्वरो ! तुम मेरे भर्ता की रक्षाकरौ तुम मेरे स्वामीको रोगहीन और पापरहित करौ ॥ ५९ ॥ रक्त मांस और भेंसके दूधसे युक्त सुन्दर अन्न मैं अपने पतिकी आरोग्यताके

शोधयंतीदिवारात्रौपुरीषंमूत्रमेवच ॥ नखेनकर्षतीभर्तुःकृमीन्कष्टाच्छनैःशनैः ॥ ५७ ॥ नसास्वपितिरात्रौतुनदिवावरवर्णिनी ॥ भर्तुर्दुःखेनसंतप्तादुःखितेदमवोचत ॥ ५८ ॥ देवाश्चपांतुभर्तारंपितरोयेचविश्रुताः ॥ कुर्वंतुरोगहीनंमेभर्तारंगतकल्मषम् ॥ ५९ ॥ चंडिकायैप्रदास्यामिरक्तमांससमुद्भवम् ॥ सुष्ठन्नंमाहिषोपेतंभर्तुरारोग्यहेतवे ॥ ६० ॥ मोदकान्कारयिष्यामिविघ्नेशायमहात्मने ॥ मंदवारेकरिष्यामिचोपवासान्दशैवतु ॥ ६१ ॥ नोपभुंजामिमधुरंनोपभुंजामिवैघृतम् ॥ तैलाभ्यंगविहीनाहंस्थास्येनैवात्रसंशयः ॥ ६२ ॥ जीवतारोगहीनोयं भर्तामेशरदांशतम् ॥ एवंसाव्याहरद्देवीवासरेवासरेगते ॥ ६३ ॥ तदाचागान्मुनिःकश्चिन्महात्मादेवलाह्वयः ॥ वैशाखेमासिघर्मार्तःसायाह्नेतस्यवैगृहम् ॥ ६४ ॥ तदावैभार्ययाचोक्तंभिषग्वैगृहमागतः ॥ तेनवैरोगहानिः स्यात्तस्यातिथ्यंकरोम्यहम् ॥ ६५ ॥

निमित्त चंडिकाके अर्पण करूं ॥ ६० ॥ विघ्नविदारण श्रीगणेशजीके निमित्त मोदक करूंगी और दस शनिवारपर्यन्त उपवास करूंगी ॥ ६१ ॥ मिष्टान्न और घृतका भोजन नहीं करूंगी देहपर तैलमर्दन और उवटन लगाना छोडदूंगी ॥ ६२ ॥ मेरा भर्ता निरोग होकर सो वर्षतक जीवित रहे ऐसेही वह देवी प्रतिदिन करती रही ॥ ६३ ॥ तब एक महात्मा देवल नाममुनि वैशाखके महीनामें गर्मीके मारे संध्यासमय उसके घरआये ॥ ६४ ॥ तब वह स्त्री कहने

लगी यह वैद्य मेरे घर आये हैं इन्हीके द्वारा रोगका नाश होजायगा इनका मैं आतिथ्य करूंगी ॥ ६५ ॥ तुझे धर्मसे विमुख जान वैद्यने छलसे ठग लिया उसके चरण धोय उस जलको शिरपर छिडकती हुई ॥ ६६ ॥ और गर्मीसे व्याकुल उस महात्माको सर्बत पिवाती हुई जिससे उसकी शान्ति हुई ॥ ६७ ॥ दिन निकलनेपर वह मुनि जैसे आये वैसेही चलेगये थोडे दिन पीछे तुझे सन्निपात होगया ॥ ६८ ॥ जब तेरी स्त्री तोहि त्रिकुटा

ज्ञात्वात्वांधर्मविमुखंभिषग्व्याजेनवंचितः ॥ पादावनेजनंकृत्वातज्जलंमूर्ध्निसाक्षिपत् ॥६६॥ पानकंचददौतस्मैघर्मार्तायमहात्मने ॥ त्वया[illegible]मोदितासायंघर्मतापनिवारकम् ॥ ६७ ॥ सप्रातरुदितेसूर्येमुनिःप्रायाद्यथागतः ॥ अथचाल्पेनकालेनसन्निपातोऽभवत्तव ॥ ॥ ६८॥ त्रिकटुनायमानायाभर्ताङ्गुलि[illegible]॥ [illegible]भयोर्दंतयोःश्लेषःसहसासमपद्यत ॥ ६९ ॥ ततखंडमंगुलेर्वक्रेस्थितंभर्तुःसुकोमलम् ॥ खंडयित्वांगुलिंभर्तापंचत्वमगमत्तदा ॥ ७० ॥ श[illegible]य्यायांसुमनोज्ञायांस्मरँस्तांपुंश्चलींशुभाम् ॥ मृतंविज्ञायभर्तारंभार्याकांतिमतीतव ॥ ७१ ॥ विक्रीत्वाचापिवलयंगृहीत्वाचेंधनंबहु ॥ चक्रेचितिंतेनसाध्वी मध्येकृत्वापतिंतदा ॥ ७२ ॥ अवगुह्यभुजाभ्यांचपादौचाश्लिष्यपादयोः ॥ मुखेमुखंविनिक्षिप्यहृदयंहृदयेतथा ॥ ७३ ॥

प्यायवेकू लाई सोई स्त्रीकी उंगली तेने काटलीनी तभी तेरी दोनों दांती मिचगई ॥ ६९ ॥ वह कोमल उंगलीका एक टूक तेरे मुखमें रहगया उसी अवस्थामें तेरी मृत्यु आयगई ॥ ७० ॥ अपनी सुन्दर शय्यामें उसी वेश्याका ध्यान कर[illegible]हुआ मरगया तेरी रूपवती स्त्री तुझे मरा जान ॥ ७१ ॥ अपना कंकण बेच बहुतसा ईंधन लातीहुई बडी चिता बनाय बीचमें पतिको रख ॥ ७२ ॥ [illegible]से भुजा मिलाय पांवसे पांव, मुखमें मुख और हृदयमें हृदय

लगाय ॥ ७३ ॥ जंघानमें जंघाकर आत्माको सन्निवेशितकर अपने स्वामीके रोगपीडित देहका अग्निसंस्कार करतीहुई ऐसे वह कल्याणी अपने देहको भी जलाती अग्निमें जलतीहुई ॥ ७४ ॥ अपने देहको त्याग पतिका आलिंगनकर विष्णुलोकको तत्काल चलीगई वैशाखमासमें पानीका दान करनेसे और चरण धोयके जलको शिरपर छिडकनेसे योगियोंको भी दुर्लभ गति उसे मिलगई ॥ ७५ ॥ तू समस्त पापोंसे छूटनेपरभी अंतकालमें वेश्याका

जघनेजघनंदेवीह्यात्मानंसन्निवेश्यच॥ दाहयामासकल्याणीभर्तुर्देहंरुजान्वितम् ॥ आत्मनासहकल्याणीज्वलितेजातवेदसि ॥७४॥ विमुच्यदेहंसहसाजगामपतिंसमालिंग्यमुरारिलोकम् ॥ पानीयदानेनचमाधवेस्मिन्पादावनेजादपियोगिगम्यम् ॥ ७५ ॥ त्वमंतकालेगणिकाविचिंतयादेहंत्यक्त्वामुक्तसमस्तकिल्बिषः ॥ जन्मव्याधंप्राप्तवान्घोररूपंहिंसासक्तःसर्वदोद्वेगकारी॥ ७६ ॥ दत्तंत्वयापानकस्यापिदानंमत्तेनुज्ञामाधवसाधिर्वजाने ॥ व्याधोजातस्तेनजातासुबुद्धिर्धर्मान्प्रष्टुंसर्वसौख्यैकहेतून् ॥ ७७ ॥ धृतंमूर्ध्नापादशौचावशिष्टंजलंमुनेःसर्वपापापहारि ॥ तेनेयंतेसंगतिर्मेवनेस्मिन्ययाभूयात्संपदासंततिश्च ॥ ७८ ॥

स्मरण करनेसे देहको त्याग घोर व्याधका जन्म धारण करताहुआ जहां सदैव तुझे हिंसा प्यारी है और चित्तको सदा उद्वेग रहे ॥ ७६ ॥ तैंने वैशाखमें सर्बत पान करानेकी आज्ञा दीनी इसीसे व्याधयोनी पायकरभी तेरी ऐसी सुबुद्धि हुईहै जिससे तैंने संपूर्ण सुखोंके हेतु धर्म पूछे ॥७७॥ और तैंने उस मुनिके चरण धोनेका पापनाशक जल अपने मस्तकके ऊपर छिडका इसीसे तुझे सत्संगति प्राप्त हुईहै जिससे धन संतानकी वृद्धि होयहै ॥ ७८ ॥

ऐसे जो जो कर्म तैंने पूर्व जन्ममें किये सो सब कहे ये तेरे पाप और पुण्यके कर्म मैंने दिव्य दृष्टिसे देखेहैं ॥ ७९ ॥ अब जो कोई और गुप्त वार्ता पूछनेकी तेरी इच्छा होय सो तू पूछ तेरा चित्त शुद्ध होयगयाहै हे महामते ! तेरा कल्याण होय ॥ ८० ॥ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदांबरीषसंवादे व्याधस्य पूर्वजन्मकथनं नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ व्याध बोला हे ब्रह्मन् ! आपने संपूर्ण शुभ फलके दाता भागवत धर्म विष्णुके

इत्येतत्सर्वमाख्यातंपूर्वजन्मनियत्कृतम् ॥ कर्मपुण्यंपापकंचदृष्टंदिव्येनचक्षुषा ॥ ७९ ॥ गोप्यंवातेप्रवक्ष्यामियद्भवाञ्छ्रोतुमिच्छति ॥ जातातेचित्तशुद्धिर्वैस्वस्तिभूयान्महामते ॥ ८० ॥ ॥इतिश्रीस्कंदपुराणेवैशाखमाहात्म्येनारदांबरीषसंवादेव्याधोपाख्यानेव्याधस्य पूर्वजन्मकथननामअष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ व्याधउवाच ॥ ॥ विष्णुमुद्दिश्यकर्तव्याधर्माभागवताःशुभाः ॥ तत्रापिमाधवीयाश्चइत्युक्तंतुत्वयापुरा ॥ १ ॥ सविष्णुःकीदृशोब्रह्मन्किंवास्यहिलक्षणम् ॥ किंमानंतस्यसद्भावैःकैर्ज्ञेयोभगवान्विभुः ॥ २ ॥ कीदृशावैष्णवाधर्माःकेनासौप्रीयतेहरिः ॥ एतदाचक्ष्वमेब्रह्मन्किंकरायमहामते ॥ ३ ॥ इतिपृष्टस्तुव्याधेनपुनःप्राहसवैद्विजः ॥ प्रणम्य जगतामीशंनारायणमनामयम् ॥ ४ ॥

निमित्त बताये इनमेंभी जो वैशाखमासके धर्म हैं वे सबसे उत्तम हैं ॥ १ ॥ सो हे प्रभो ! वह विष्णु कैसाहै और उसके लक्षण क्याहैं उनका परिणाम क्याहै और कौन लोक अपने सद्भावोंसे उसे जान सकेंहैं ॥ २ ॥ वैष्णवधर्म कौनसे हैं जिनसे विष्णुभगवान् प्रसन्न होय हैं महामते ! यह सब मेरे सामने कहिये मैं आपका किंकर हूं ॥ ३ ॥ जब व्याधने ऐसे पूछा तब वह मुनि जगत्के ईश अनामय नारायणको नमस्कार करके फिर कहने लगे ॥ ४ ॥

शंख बोले हे व्याध ! सुन मैं विष्णुके कल्मषरहित रूपका वर्णन करूं हूं यह रूप ब्रह्मासे आदि लेकर किसी मुनि पर्य्यन्तके ध्यानमें नहीं आवै है॥ ५॥ विष्णुभगवान् पूर्ण शक्तियुक्त, पूर्णगुणविशिष्ट, सकलेश्वर, निर्गुण, निश्चेष्ट, अनंत, सच्चिदानंदरूप है ॥ ६ ॥ इस संपूर्ण चराचर विश्वका वही अधीश है यह इसीके आश्रय है और उसीके वशमें स्थित है॥ ७॥ अब मैं तेरे प्रति उसी परमात्मा ब्रह्मके लक्षण कहता हूं जिससे उत्पत्ति, स्थिति, संहार, आवृत्ति, नियम ॥ ८ ॥

शंखउवाच ॥ शृणुव्याधप्रवक्ष्यामिविष्णुरूपमकल्मषम् ॥ यदचिंत्यंविरिंचाद्यैर्मुनिभिर्भावितात्मभिः ॥ ५ ॥ पूर्णशक्तिःपूर्णगुणो निर्दिष्टःसकलेश्वरः ॥ निर्गुणोनिष्कलोनंतःसच्चिदानंदविग्रहः ॥ ६ ॥ यदेतदखिलंविश्वंसचराचरमीदृशम् ॥ साधीशंसाश्रयंयच्च यद्वशेनियतंस्थितम् ॥ ७ ॥ अथतेलक्षणंवच्मिब्रह्मणःपरमात्मनः ॥ उत्पत्तिस्थितिसंहाराद्यावृत्तिर्नियमस्तथा ॥ ८ ॥ प्रकाशोबंध मोक्षौचवृत्तिर्यस्माद्भवत्यमा ॥ सविष्णुर्ब्रह्मसंज्ञोसौकवीनांसंमतोविभुः ॥ ९ ॥ साक्षाद्ब्रह्मेतितंप्राहुःपश्चाद्ब्रह्मादिकानपि ॥ ब्रह्मशब्दं सोपपदंब्रह्मादिषुविदोविदुः ॥ १० ॥ नान्येषांब्रह्मताक्कापितच्छक्त्यैकांशभागिनाम् ॥ तदेतच्छास्त्रगम्यंहिजन्माद्यस्यमहाविभोः ॥ ११ ॥

प्रकाश, बंध, मोक्ष और वृत्ति होयहैं पण्डित लोग उसी विष्णुको ब्रह्म कहेंहैं ॥ ९ ॥ इसीको साक्षात् ब्रह्म कहेंहैं पीछे ब्रह्मादिकोंकोभी सोपपद ब्रह्मशब्दकी व्युत्पत्ति करेंहैं ॥ १० ॥ और जो उसके एक एक अंश करके युक्त हैं उनमें ब्रह्मत्व कहां इस परमात्माके जन्मादि तौ केवल शास्त्रसे जानने योग्यहैं॥ ११ ॥

वेद, स्मृति, पुराण, इतिहास, पंचरात्र और महाभारत ये विष्णुभगवान्के आत्मरूपी हैं ॥ १२ ॥ इन्हींके द्वारा विष्णुभगवान् जाने जांयहैं और किसी प्रकारसे नहीं जानेजांयहैं ये विष्णुभगवान् केवल वेदसेही जांने जांयहैं ॥ १३ ॥ वेदवेद्य सनातन नारायणभगवान् इन्द्रिय अनुमान और तर्क द्वारा जाननेमें नहीं आवे हैं ॥ १४ ॥ इसीके जन्म कर्म और गुणोंको जानकर प्राणी मोक्ष पावेहैं और सदा उसके आधीन रहें हैं ॥ १५ ॥

शास्त्रंचवेदाःस्मृतयःपुराणंचैतदात्मकम् ॥ इतिहासःपंचरात्रंभारतंचमहामते ॥ १२ ॥ एतैरेवमहाविष्णुर्ज्ञेयोनान्यैःकथंचन ॥ नावेदविदमुंविष्णुंमनुतेचनरःक्वचित् ॥ १३ ॥ नेंद्रियैर्नानुमानैश्चनतर्कैःशक्यतेविभुम् ॥ ज्ञातुंनाराणंदेवंवेदवेद्यंसनातनम् ॥ १४ ॥ अस्यैवजन्मकर्माणिगुणाञ्ज्ञात्वायथामति ॥ मुच्यंतेजीवसंघाश्चसदातद्वशवर्तिनः ॥ १५ ॥ क्रमाद्विष्णोश्चमाहात्म्यंयथासातिशयंभवेत् ॥ एकैकस्मिन् स्थिताशक्तिर्देवर्षिपितृमातृके ॥ १६ ॥ प्रत्यक्षागमेनापितथैवानुमयापिच ॥ आदौनरोत्तमंविद्याद्बलेज्ञानेसुखं तथा ॥ १७ ॥ तस्माद्भूपंशतगुणंविद्याज्ज्ञानादिभिर्वृतम् ॥ भूपान्मनुष्यगंधर्वान्विद्युच्छतगुणाधिकान् ॥ १८ ॥

क्रमसे विष्णुका माहात्म्य जैसे सातिशय होयहै ऐसेही देव ऋषि पिता और माता एक एकमे शक्ति स्थित रहेहैं ॥ १६ ॥ प्रत्यक्ष आगम वा अनुमानसे बल ज्ञान और सुखमें प्रथम मनुष्यको उत्तम जानै ॥ १७ ॥ फिर ज्ञानादि करके आवृत राजाको शतगुण जानै भूपसे मनुष्यगंधर्वोंको शतगुणाधिक

जाने ॥ १८ ॥ इनसे तत्त्वाभिमानी देवताओंको शतगुणाधिक जाने तत्त्वाभिमानी देवताओंसे सप्तऋषि बडेहैं सप्तऋषिसे अग्नि, अग्निसे सूर्यादिक, सूर्यसे बृहस्पति, बृहस्पतिसे वायु, वायुसे इन्द्र, इन्द्रसे पार्वती, पार्वतीसे जगद्गुरु महादेव, शंभुसे बुद्धिदेवि और बुद्धिसे प्राण बलिष्ठहै ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ २१ ॥ प्राणसे अधिक कुछ नहींहै प्राणहीमें सबहैं प्राणहीसे यह संसार स्थितहै और यह सब जगत् प्राणात्मकहै ॥ २२ ॥

तत्त्वाभिमानिनोदेवांस्तेभ्योविद्याच्छताधिकान् ॥ तत्त्वाभिमानिदेवेभ्यःसप्तैवऋषयोवराः ॥ १९ ॥ सप्तर्षिभ्योवरोह्यग्निरग्नेःसूर्यादयस्तथा॥सूर्याद्गुरुर्गुरोःप्राणःप्राणादिंद्रोमहाबलः ॥२०॥ इंद्राच्चगिरिजादेवीदेव्याःशंभुर्जगद्गुरुः ॥ शंभोर्बुद्धिर्महादेवीबुद्धेःप्राणोबलात्मकः ॥ २१ ॥ नप्राणात्परमेकिंचित्प्राणेसर्वंप्रतिष्ठितम् ॥ प्राणाज्जातमिदंविश्वंप्राणात्मकमिदंजगत् ॥ २२ ॥ प्राणेप्रोतमिदंसर्वंप्राणादेवहिचेष्टते ॥ सर्वाधारमिमंप्राहुःसूत्रंनीलांबुदप्रभम् ॥ २३ ॥ लक्ष्मीकटाक्षमात्रेणप्राणस्यास्यस्थितिर्भवेत् ॥ व्याधउवाच ॥ सालक्ष्मीर्देवदेवस्यकृपालेशैकभागिनी ॥ २४ ॥ नविष्णोःपरमंकिंचिन्नसमोवाकथंचन ॥ कथंजीवेष्वयंप्राणःसूत्रनामाधिकोभवत् ॥ २५ ॥ निर्णयोवाकथंह्यस्यप्राणाधिक्यंकथंविभो ॥ एतदाचक्ष्वमेब्रह्मन्कथंप्राणाद्विभुःपरः ॥ २६ ॥

यह सब प्राणसे प्रोतहै और प्राणहीसे सब जगत् चेष्टितहै नीलमेघके समान प्रभायुक्त सबका आधारभूत इसे सूत्र कहते हैं ॥ २३ ॥ लक्ष्मीके कटाक्षमात्रसे इसकी स्थिति है तब तो व्याध बोला—वह लक्ष्मी देवदेव विष्णुभगवान्की एकही कृपापात्र है ॥ २४ ॥ विष्णुभगवान्से अधिक वा समान कोई नहीं है जीवमें इस प्राणका नाम सूत्र कैसे हुआ हे ब्रह्मन् ! मेरे सामने इसका निर्णय कहो परमात्मा प्राणसे परे कैसे हैं ॥ २५ ॥ २६ ॥

शंख बोले—हे व्याध ! जो निर्णय तू पूछे हैं सो सुन मैं संपूर्ण जीवोंद्वारा प्राणाधिक्यके उद्देशसे कहूं हूं ॥ २७ ॥ प्राचीनकाल सनातन नारायण भगवा
नूने कमलयोनिमें ब्रह्मादिक देवता रचकर कहीं मैं ब्रह्माके तुह्मारा राजा बनाऊंगा और जो कोई तुममें अधिक होयगा उसे तुम युवराज बनाओ परन्तु
वह शील, शौर्य और औदार्यादिगुण करके युक्त होय जब भगवानने ऐसे कही तब सब देवता इन्द्रके आगे जाय ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

॥ शंखउवाच ॥ ॥ शृणुव्याधप्रवक्ष्यामियत्पृष्टं निर्णयंत्वया ॥ प्राणाधिक्यंसमुद्दिश्यजीवैश्चसकलैरपि ॥ २७ ॥ पुरानाराय
णोदेवः पद्मसृष्टोसनातनः ॥ सृष्ट्वाब्रह्मादिकान्देवानिदंप्राहजनार्दनः ॥ २८ ॥ साम्राज्येहंस्थापयेयंब्रह्माणंवःपतिंप्रभुम् ॥ योयुष्मा
स्वधिकोदेवोयौवराज्येसुरेश्वाः ॥ २९ ॥ तंस्थापयतशीलाढ्यंशौर्यौदार्यगुणान्वितम् ॥ इत्युक्ताविभुनादेवाःसर्वेशक्रपुरोगमाः ॥३०॥
एवंविवदिरेन्योन्यमहंभूयामहंत्विति ॥ सर्वेविवदमानाश्चसूर्यंकेचित्परंविदुः ॥ ३१ ॥ शक्रंकेचित्परंकामंकेचित्तूष्णींतुतस्थिरे ॥ तेनि
र्णयमपश्यंतःप्रष्टुंनारायणंययुः ॥ ३२ ॥ नमस्कृत्यपुनःप्राहुःसर्वेप्रांजलयोमराः ॥ विचारितंमहाविष्णोसर्वैरस्माभिरंजसा ॥३३॥
अस्मासुदेवमधिकंनैवविद्मःकथंचन ॥ त्वमेवनिर्णयंब्रूहिदेवाःसंशयिनस्त्विमे ॥ ३४ ॥

आपसमें विवाद करने लगे कि हम होंयगे हम होंयगे, सब विवाद करते करते कोई बोले सूर्य सबमें परे है ॥ ३१ ॥ कोई कहने लगा इन्द्र सबमें परे है
कोई चुपचाप खडे रहे जब वे किसी प्रकारसे निर्णय नहीं करसके तब नारायणके पास गये ॥ ३२ ॥ तब सब देवता नमस्कार कर
हाथ जोडकहते हुए हे महाराज ! हमने आपसमें बहुत विचार कियाहै ॥ ३३ ॥ परन्तु हममें कोईभी अधिक नहीं दीखेहै हे

प्रभो ! आपही इस बातका निर्णय करके हमारे संशयको दूर करिये ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ जब देवताओंने यह प्रश्न किया तब भगवान् हँसकर कहने लगे कि विराट्रूप इस देहमेंसे जिसके निकलनेसे देह गिर पडै और फिर उसके प्रवेश होनेसे देह खडा होजाय वही सब देवताओंमें अधिक है और कोई भी नहीं है ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ऐसे कहनेपर सब देवता बोले—तथास्तु ऐसेही होय फिर जयंतनाम पांवोंसे निकलताहुआ ॥ ३७ ॥ तब इसको

इतिपृष्टोमरैःसर्वैःप्रहसन्निदमब्रवीत् ॥ देहाद्यस्माच्चवैराजाद्यस्मिन्निष्क्रामतिह्ययम् ॥ ३५ ॥ पतिष्यतिप्रविष्टेतुयस्मिन्वैह्युत्थितोभवेत् ॥ सदेवोह्यधिकोनूनंनापरस्तुकथंचन ॥ ३६ ॥ इत्युक्तास्तेततःसर्वेतथास्त्वितिवचोब्रुवन् ॥ निश्चक्रामजयंताह्वःपादात्पूर्वंसुरेश्वरः ॥ ३७ ॥ तदापंगुममुंप्राहुर्नदेहःपतितस्तदा ॥ शृण्वन्पिबन्वदञ्जिघ्रन्पश्यन्नास्तेचलन्नपि ॥ ३८ ॥ पश्चाद्गुह्याद्विनिष्क्रांतोदक्षोनामप्रजापतिः ॥ तदाषंढममुंप्राहुर्नदेहःपतितस्तदा ॥ ३९ ॥ शृण्वन्पिबन्वदञ्जिघ्रन्पश्यन्नास्तेचलन्नपि ॥ पश्चाद्धस्ताद्विनिष्क्रांतइंद्रःसर्वामरेश्वरः ॥ ४० ॥ हस्तहीनममुंप्रहुर्नदेहःपतितस्तदा ॥ शृण्वन्पिबन्वदञ्जि० ॥ ४१ ॥ लोचनाभ्यांविनिष्क्रांतःसूर्यस्तेजस्विनांवरः ॥ तदाकाणममुंप्राहुर्नदेहःपतितस्तदा ॥ ४२ ॥

पंगु कहनेलगे परन्तु देह नहीं गिरा सुनै है पीवे है बोले है सूंघैं है देखे है चलै है ॥ ३८ ॥ फिर गुह्येन्द्रियसे दक्षनाम प्रजापति होताहुआ तब इसे षंढ कहनेलगे परन्तु देह न गिरा ॥ ३९ ॥ पहिलेकी नाईं सुनता पीता बोलता सूंघता देखता और चलतारहा फिर हाथोंसे सम्पूर्ण देवताओंका ईश्वर इंद्र निकला ॥ ४० ॥ तब इसे हस्तहीन कहनेलगे परन्तु देह नहीं गिरा पहिलेहीकी तरह सुनता पीता बोलता सूंघता रहा ॥ ४१ ॥ तदनन्तर नेत्रोंसे

सब तेजस्वियोंमें श्रेष्ठ सूर्य निकला तब इसे काण कहनेलगे परन्तु देह न गिरा ॥४२॥ पूर्ववत् सुनता पीता बोलतारहा पीछे घ्राणेंद्रियसे अश्विनीकुमार निकले इसे नासिकारहित कहनेलगे परन्तु देह न गिरा पूर्ववत् सब कृत्य करतारहा फिर कानोंसे दिशा निकलीं परन्तु देह न गिरा तब इसे बहरा कहने लगे परन्तु मृत न कहतेहुए ॥ ४३ ॥४४॥ पीछे जिह्वासे वरुण निकलगया तब इसे अरसज्ञ कहने लगे परन्तु देह न गिरा ॥ ४५ ॥ पूर्ववत् जीता,

शृण्वन्पिबन्वदञ्जिघ्रन्पश्यन्नास्तेचलन्नपि ॥ घ्राणात्पश्चाद्विनिष्क्रांतौनासत्यौविश्वभेषजौ ॥ अजिघ्राणममुंप्राहुर्नदेहःपतितस्तदा ॥ ४३ ॥ शृण्वन्पिबन्वदञ्जि० ॥ श्रोत्राद्दिशोविनिष्क्रांतानदेहःपतितस्तदा ॥ तदामुंबधिरंप्राहुर्नमृतेतिकथंचन ॥ ४४ ॥ शृण्वन्० ॥ वरुणोरसनायास्तुविनिष्क्रांतस्ततःपरम् ॥ तदारसज्ञमेवाहुर्नदेहःपतितस्तदा ॥ ४५ ॥ जीवंश्चलन्नदन्नास्तेतथाजानन्श्वसन्नपि ॥ ततोवाचोविनिष्क्रांतोवह्निर्वागीश्वरोविभुः ॥ ४६ ॥ तदामूकममुंप्राहुर्नदेहःपतितस्तदा ॥ जीवंश्चलन्नदन्नास्तेन० ॥ ४७ ॥ पश्चाद्रुद्रोविनिष्क्रांतोमनसोबोधनात्मकः ॥ तदा जडममुंप्राहुर्नदेहःपतितस्तदा ॥ ४८ ॥ जीवंश्चलन्न० ॥ पश्चात्प्राणोविनिष्क्रांतोमृतमेनंतदाविदुः ॥ पुनरेवंतदाप्राहुर्देवाविस्मितमानसाः ॥ ४९ ॥

चलता, खाता, जानता और श्वास लेतारहा फिर वाणीसे वागीश्वर अग्नि निकला ॥४६॥ तब इसे गुँगा कहनेलगे परन्तु देह न गिरा पूर्ववत् सब कृत्य करता रहा ॥ ४७ ॥ फिर मनको चैतन्य करनेवाले रुद्र मनसे निकलगये तब इसे जड कहने लगे परन्तु देह न गिरा ॥ ४८ ॥ पूर्ववत् चलता फिरता

रहा फिर प्राण निकला प्राणके निकलतेही इसे मृत कहनेलगे तब तो देवता विस्मित हो कहनेलगे ॥ ४९ ॥ जो कोई हममेंसे इस गिरीहुई देहके उठा नेमें समर्थ होयगा वही सबमें बडाहै और वही युवराज होयगा ॥ ५० ॥ ऐसे प्रतिज्ञाकर यथाक्रम प्रवेश करतेहुए प्रथमही जयंत चरणोंमें प्रविष्टहुआ परन्तु देह न उठा ॥ ५१ ॥ दक्ष गुह्येन्द्रियद्वारा प्रविष्टहुआ परन्तु देह न उठा इन्द्र हाथोंमें प्रवेशहुआ परन्तु देह न उठा ॥ ५२ ॥ सूर्यनारायण

देहमुत्थापयेद्यस्तुपुनरेवंव्यवस्थितः ॥ सएवह्यधिकोस्मासुयुवराजोभविष्यति ॥ ५० ॥ इत्येवंतुप्रतिश्रुत्यविविशुश्चयथाक्रमम् ॥ जयंतःप्राविशत्पादौनोत्तस्थौतत्कलेवरम् ॥ ५१ ॥ गुह्यंचप्राविशद्दक्षोनोत्तस्थौतत्कलेवरम् ॥ इंद्रोहस्तौविवेशाथनोत्तस्थौ० ॥५२॥ चक्षुःसूर्यःप्रविष्टोभून्नोत्तस्थौतत्क० ॥ दिशःश्रोत्रेप्रविविशुर्नोत्त० ॥ ५३ ॥ वरुणःप्राविशज्जिह्वांनोत्तस्थौ० ॥ नासांविविशतुर्दस्रौ नोत्तस्थौ० ॥ ५४ ॥ वह्निश्चप्राविशद्वाचंनोत्तस्थौतत्कलेवरम् ॥ मनश्चप्राविशद्रुद्रोनोत्तस्थौ० ॥ ५५ ॥ पश्चात्प्राणोविवेशासीत दोत्तस्थौकलेवरम् ॥ तदादेवाविनिश्चित्यप्राणंदेवाधिकंविभुम् ॥ ५६ ॥ बलेज्ञानेचधैर्येचवैराग्येप्राणनेपिच ॥ ततोभिषेचयांचक्रु र्यौवराज्येमहाप्रभुम् ॥ ५७ ॥

नेत्रोंमें प्रवेशहुए परन्तु देह ज्योंका त्यों पडारहा इसी तरह दिशा नेत्रोंमें, वरुण जिह्वामें, अश्विनीकुमार नासिकामें, अग्नि वाणीमें, रुद्र मनमें प्रवेशहुए परन्तु देह न उठा ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ सबसे पीछे प्राण घुसे प्राणोंके प्रवेश करतेही देह उठ खडाहुआ तब देवता निश्चय करते हुए कि प्राणही सम्पूर्ण देवताओंका अधीश और व्यापक है ॥ ५६ ॥ तथा बल, ज्ञान, धैर्य, वैराग्य और जीवनमें भी सबसे अधिक अतएव प्राणहीको युवराज बनाते

हुए ॥ ५७ ॥ उत्कृष्ट स्थितिके हेतुसे सामवेदका गान करतेहुए इसी हेतुसे स्थावर और जंगमात्मक यह विश्व प्राणात्मकहै ॥ ५८ ॥ पूर्ण अंशों करके युक्त और बलाढ्य यह प्राण सब जगत्का पतिहै प्राणहीन जगत् कुछभी नहीं है और विना प्राणोंके वृद्धिभी नहीं है ॥ ५९ ॥ विना प्राणोंके कुछ स्थिति नहीं है न संसारमें कुछभी है इसीसे प्राण सम्पूर्ण जीवोंमें अधिक बलवान् और सब जीवोंका अन्तरात्माहै ॥ ६० ॥ प्राणोंसे अधिक वा समान

उत्कृष्टस्थितिहेतुत्वादुक्थमेकंतदाजगुः ॥ तस्मात्प्राणात्मकंविश्वंसर्वस्थावरजंगमम् ॥ ५८ ॥ अंशैःपूर्णैर्बलाढ्यैश्चपूर्णोयंजगतां पतिः ॥ नप्राणहीनंजगदस्तिकिंचित्प्राणेनहीनंनचवैसमेधते ॥ ५९ ॥ प्राणेनहीनंस्थितिमन्नकिंचित्प्राणेनहीनंनचकिंचिदस्ति ॥ तस्मात्प्राणःसर्वजीवाधिकोभूद्बलाधिकःसर्वजीवांतरात्मा ॥ ६० ॥ प्राणात्कोपिह्यधिकोवासमोवाशास्त्रेदृष्टःश्रुतपूर्वोनचास्ते ॥ तत्तत्कार्यानुगःप्राणोह्येकोदेवोह्यनेकधा ॥ ६१ ॥ तस्मात्प्राणंवरंप्राहुःप्राणोपासनतत्पराः ॥ लीलयैवजगत्स्रष्टुंहंतुंपालयितुंप्रभुः ॥ ॥ ६२ ॥ शेषाहिशिवशक्राद्याश्चेतनाश्चजडाअपि ॥ वासुदेवादृतेकोपिनैनंपरिभविष्यति ॥ ६३ ॥ सर्वदेवात्मकःप्राणःसर्वदेवमयो विभुः ॥ वासुदेवानुगोनित्यंतथाविष्णुवशेस्थितः ॥ ६४ ॥

शास्त्रोंमें भी न पहिले कुछ देखाहै न सुनाहै भिन्नभिन्न कार्योंको सम्पादन करनेके निमित्त एक प्राणही अनेक प्रकारका होताहुआ ॥ ६१ ॥ अतएव प्राणकी उपासना करनेवाले प्राणोंको सबसे श्रेष्ठ मानें हैं यह लीला करकेही सम्पूर्ण जगत्के रचने संहार करने और पालनेमें समर्थ है ॥ ६२ ॥ शेष शिव और इन्द्रादि जड और चैतन्य कोई भी सिवाय वासुदेव भगवान्के इसका पराभव नहीं करसके हैं ॥ ६३ ॥ यह प्राण सर्वदेवात्मक और सर्व

देवमय व्यापकहै तथा वासुदेव भगवान्का अनुवर्ती और विष्णुका वशीभूतहै ॥ ६४ ॥ यह वासुदेवकी प्रतिकूलता न कभी सुने है न देखे है अन्य इन्द्रादि सब देवता प्रतिकूल करें हैं परन्तु सर्वान्तर्यामी प्राण कभी भी प्रतिकूलता नहीं करेहै इसीसे पंडितजन प्राणको विष्णुका बडा सहायक कहें हैं ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ऐसे विष्णुभगवान्के माहात्म्य और लक्षण जानकर जैसे सर्प जीर्ण काचलीको त्यागेहैं उसीतरह पूर्वजन्मानुबंध देहको त्या

वासुदेवप्रतीपंतुनश्शृणोतिनपश्यति ॥ देवाःप्रतीपंकुर्वंतिरुद्रेंद्राद्याःसुरेश्वराः ॥ ६५ ॥ प्रतीपंक्कापिकुरुतेनप्राणः सर्वगोचरः ॥ तस्मा त्प्राणोमहाविष्णोर्बलमाहुर्मनीषिणः ॥ ६६ ॥ एवंज्ञात्वामहाविष्णोर्माहात्म्यंलक्षणंतथा ॥ पूर्वबंधानुगंलिंगंजीर्णांत्वचमिवोरगः ॥ ॥ ६७ ॥ विसृज्यपरमंयातिनारायणमनामयम् ॥ श्रुत्वाशंखोदितंवाक्यंपुनर्व्याधःप्रसन्नधीः ॥ ६८ ॥ प्रश्रयावनतोभूत्वापुनःप्रपच्छ तंमुनिम् ॥ ब्रह्मन्महानुभावस्यप्राणस्यास्यजगद्गुरोः ॥ ६९ ॥ नख्यातोमहिमालोकेकथंसर्वेश्वरस्यवै ॥ देवानांचमुनीनांचभूपानांच महात्मनाम् ॥ ७० ॥ महिमाश्रूयतेलोकेपुराणेषुसहस्रशः ॥ एतदाचक्ष्वमेब्रह्मञ्छ्रोतुंकौतूहलंहिमे ॥ ७१ ॥ ॥ शंखउवाच ॥ ॥ पुराप्राणोहरिंदेवंनारायणमनामयम् ॥ अश्वमेधैर्यष्टुकामोगंगातीरंययौमुदा ॥ ७२ ॥

गकर नारायणके समीप परम धामको प्राप्त होयहै ऐसे शंख मुनिके वाक्य सुन व्याध अत्यन्त प्रसन्न हुआ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ और विनीतभावसे फिर पूछता हुआ हे ब्रह्मन् ! जगद्गुरु महानुभाव सर्वेश्वर प्राणकी महिमा कहींभी लोकमें विदित नहीं है,देवता मुनि राजा और महात्माओंकी महिमा तौ पुराण और लोकमें बहुत सुनाई देयहै, हे भगवन्!यह मेरे सामने कहौ इस बातके जाननेकी मेरी बडी इच्छाहै ॥६९॥७०॥७१॥ शंख बोले प्राचीनकालमें प्राण

देवदेव अनामय नारायण भगवान्का अश्वमेधद्वारा यजन करनेके निमित्त गंगाके किनारेपर गया॥ ७२॥और बहुतसे मुनियोंको संग ले हलसे भूमिको
शुद्ध करने लगा तहां एक पृथ्वीके नीचे बांबीमें कण्वनाम महात्मा समाधि लगाये बैठेहुए ॥ ७३ ॥ उस हलसे बाहर खिंच आये तब क्रोधसे यह बोले
और प्राणको अपने सामने स्थित देख शाप देतेहुए ॥ ७४ ॥ अबसे तेरी महिमा तीनों भुवनमेंसे जाती रहैगी और विशेष करके भूलोकमें तुझे कोई

हलैश्चकारभूशुद्धिंनानामुनिगणैर्युतः ॥ अंतर्वल्मीकलीनस्तुकण्वोनामसमाधिगः ॥ ७३ ॥ हलोत्कृष्टोविनिष्क्रांतःक्रोधादिदमुवा
चह॥ दृष्ट्वापुरःस्थितंप्राणंशशापहमहाविभुम् ॥ ७४ ॥ अद्यप्रभृतिविख्यातिंमहिमाभुवनत्रये ॥ तवनाप्नोतिदेवेशभूलोकेतुविशे
षतः ॥ ७५ ॥ प्रख्यातास्तेभविष्यंतिह्यवताराजगत्त्रये ॥ इत्युक्तोमुनिनातेनवायुःक्रोधात्तथाब्रवीत् ॥ ७६ ॥ विनापराधंशप्तोसिति
तिक्षुर्मांनिरागसम् ॥ तस्मात्कण्वमहाबाहोगुरुद्रोहीभवाशुच ॥ ७७ ॥ लोकेनिंदितवृत्तिश्चभवेत्याहसदागतिः ॥ ततःप्रभृतिलोके
स्मिन्प्राणस्यास्यमहाप्रभोः ॥ ७८ ॥ नख्यातोमहिमालोकेभूलोकेतुविशेषतः ॥ शापात्कण्वोगुरुंहत्वासूर्यशिष्योभवत्तदा ॥७९॥

नहीं मानैगा ॥ ७५ ॥ त्रिलोकीमें तेरा अवतार प्रख्यात होगये जब उस मुनिने ऐसे कही तब पवन क्रोध करके बोला मैं निरपराधी हूं ॥ ७६ ॥ और
विना अपराध तैंने शाप दियाहै इसलिये हे कण्व ! तू गुरुद्रोही हो ॥ ७७ ॥ और संसारमें तेरी वृत्ति निन्दित होय तबहीसे संसारमें इस प्राणकी महिमा
और विशेष करके भूलोकमें प्रसिद्ध नहींहै और शापके कारण कण्व गुरुको मारकर सूर्यका शिष्य होता हुआ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥

हे व्याध! जो कुछ तैंने पूछा सो सब तेरे सामने कहा अब जो कुछ तुझे पूछनाहै सो पूछ कुछ विचार मत करै॥ ८० ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदांब रीषसंवादे वायुशापकथनंनामएकोनविंशोऽध्यायः॥ १९ ॥ व्याध कहने लगा कि हे ब्रह्मन्! कहां परमेश्वरने करोडों हजारो जीव रचेहैं इनके भिन्न भिन्न कर्म देख नेमें आवेहैं और अनेक सनातन मार्गहैं॥ १ ॥ हे महामते! इन सबके एकसे स्वभाव क्यों नहीं है यह सब जाननेकी मेरी इच्छाहै आप विस्तारपूर्वक कहिये ॥ २ ॥

इत्येतत्कथितंसर्वंयत्पृष्टंतुत्वयाधुना ॥ यच्छ्रोतव्यमितोव्याधपृच्छमांमा विचारय॥ ८० ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदांबरीषसंवादे वायुशापकथनंनाम एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ व्याधउवाच ॥ ॥ किंजीवाविभुनासृष्टाःकोटिशोथसहस्रशः ॥ दृश्यंतेभिन्नकर्माणोनानामार्गाःसनातनाः ॥ १ ॥ नैकस्वभावाएतेहिकुतएवमहामते ॥ सर्वंतत्पृच्छतेमह्यंविस्तरात्तत्वतोवद ॥ २ ॥ ॥ शंखउवाच ॥ ॥ त्रिविधाजीवसंघाहिरजःसत्वतमोगुणाः ॥ राजसाराजसंकर्मतामसास्तामसंतथा ॥ ३ ॥ सात्विकाःसात्विकं कर्मकुर्वंत्येतेयथाक्रमम् ॥ क्वचिच्चगुणवैषम्यमेतेषांसंसृतौभवेत् ॥ ४ ॥ तेनैवोच्चावचंकर्मकुर्वंतः फलभागिनः ॥ क्वचित्सुखंक्वचिद्दुःखं क्वचिच्चाभयमेवच ॥ ५ ॥ गुणानामेववैषम्यात्प्राप्नुवंतिनराइमे ॥ प्रकृतिस्थाइमेजीवाबद्धाएतैर्गुणैस्त्रिभिः ॥ ६ ॥

यह सुन शंखमुनि कहनेलगे रजोगुणी सतोगुणी और तमोगुणी इन तीनप्रकारके जीव होयहैं इनमेंसे रजोगुणी रजोगुणके कर्म करेंहैं और तमोगुणी तमोगुणके कर्म करेंहैं ॥ ३ ॥ तथा सतोगुणी सतोगुणके कर्म करेंहैं कभी २ संसारमें इन गुणोंमें विषमताभी होय जाय है॥ ४ ॥ उसीसे ऊँचे नीचे कर्मोंको करके फलके

भोगनेवाले ये जीव गुणोंकी विषमतासे कभी सुख कभी दुःख कभी अभाव पावेंहैं और प्रकृतिस्थ जीव इन्ही तीनों गुणोंसे बद्धहैं॥५॥६ ॥गुण और कर्मके अनुकूलही कर्मोंका नाश और फलहै इन्ही गुणोंके अनुगुणी होयकर ये मनुष्य प्रकृतिको प्राप्त होयहैं॥७॥प्रकृतिस्थ मनुष्य प्राकृतिक गुणकर्मोंसे अभिमूर्तिहैं और वे प्राकृतिक गतिको प्राप्त होयहैं तथा प्रकृतिका कभी नाश नहींहै॥८॥तमोगुणी बहुत दुःखी रहेहैं इनकी वृत्ति सदा तमोगुणी रहेहै वे निष्ठुर निर्दयी

गुणकर्मानुरूपेणकर्मणांव्यत्ययःफलम् ॥ गुणानुगुण्यंभूयस्तेप्रकृतिंयांत्यमीजनाः ॥ ७ ॥ प्रकृतिस्थाःप्राकृतिकागुणकर्माभिमूर्तिताः ॥ गतिंप्राकृतिकींयांतिव्यत्ययःप्रकृतेर्नहि ॥ ८ ॥ तामसादुःखबहुलाःसदातामसवृत्तयः ॥ निर्दयानिष्ठुरालोकेसदाद्वेषैकजीविनः ॥ ९ ॥ राक्षसाद्याः पिशाचांतास्तामसींयांतिवैगतिम् ॥ राजसामिश्रमतयःकर्तारःपुण्यपापयोः ॥ १० ॥ पुण्यात्स्वर्गंप्राप्नुवंतिक्वचित्पापाच्चयातनाम् ॥ अतएतेमंदभाग्याआवर्ततेपुनःपुनः ॥ ११ ॥ धर्मशीलादयावंतःश्रद्धावंतोनसूयकाः ॥ सात्विकाः सात्विकींवृत्तिमनुतिष्ठंतआसते ॥ १२ ॥ तेचोर्ध्वंयांतिविमलागुणापायेमहौजसः ॥ अतोविभिन्नकर्माणःपृथग्भावाःपृथग्धियः ॥ १३ ॥

और सब प्राणियोंसे द्वेष रखते हैं॥९॥राक्षसोंसे लेकर पिशाचपर्य्यन्त सब तामसी गातिको प्राप्त होयहैं रजोगुणियोंकी बुद्धि मिश्रित होयहै ये पुण्य और पाप दोनों करें हैं ॥ १० ॥ पुण्यसे इन्हें स्वर्ग और पापसे नरककी प्राप्ति होयहै इससे ये मंदभागी संसारमें वारम्वार जन्म लेहैं ॥ ११ ॥ धर्मशील, दयावान्, श्रद्धावान्, पराई निन्दा न करनेवाले, सतोगुणी हैं इनकी वृत्ति सतोगुणी है ॥ १२ ॥ ऐसे महा ओजस्वी पापोंसे रहित ऊर्ध्वलोकको जाते हैं

अतएव भिन्नकर्म, भिन्नभाव और पृथक् बुद्धिवाले हैं ॥ १३ ॥ इन्हींके गुण और कर्मके अनुसार विष्णुभगवान् इनसे कर्म करावें हैं अपने स्वरूपकी प्राप्तिके निमित्त ॥ १४ ॥ पूर्ण हैं कामना जिनकी विष्णुभगवान्के विषमता नहीं हैं विष्णुभगवान् उत्पत्ति पालन और संहार समान भावसे करें हैं ॥ १५ ॥ वे सब अपने अपने गुणोंसे कर्मोंके फल भोगें हैं जैसे बगीचामें उत्पन्नभये सब वृक्षोंके ऊपर मेघ समान भावसे वरसै है और संपूर्ण

गुणकर्मानुरूपेणतेषांविष्णुर्महाप्रभुः ॥ कर्माणिकारयत्यद्धास्वस्वरूपाप्तयेविभुः ॥ १४ ॥ विष्णोर्वैषम्यनैर्घृण्येपूर्णकामस्यवैनहि ॥ सृष्टिंस्थितिंहृतिंचैवसमामेवकरोत्ययम्॥ १५ ॥ स्वगुणादेवतेसर्वे कर्मणःफलभागिनः ॥ आरामोप्तान्यथासर्वान्समंवर्षयतिद्रुमान् ॥ १६ ॥ एककुल्याजलाद्ध्यंगद्रुमाश्चप्रकृतिंगताः ॥ नारामोप्तरिवैषम्यंनैर्घृण्यंवाकथंचन ॥ १७ ॥ ॥ व्याधउवाच ॥ ॥ जनानांपूर्णभोगानांकदामुक्तिर्भवेन्मुने ॥ सृष्टिकालेथवाह्यंतकालेवास्थापनस्यच ॥ १८ ॥ क्वचिच्चसृष्टिकालस्यसंहारस्यापिवैस्थितेः ॥ एतद्विस्तार्यमेब्रह्मन्भगवच्चेष्टितंवद ॥ १९ ॥ ॥ शंखउवाच ॥ ॥ चतुर्युगसहस्राणिब्रह्मणोदिनमुच्यते ॥ रात्रिश्चैतावतीतस्य ह्यहोरात्रंदिनंभवेत् ॥ २० ॥

वृक्ष एकही नालीसे सींचे जायहैं परन्तु सब वृक्षनकी प्रकृति जुदी २ होयहै बागके लगावनहारेको कुछ विषमता वा निर्घृणता नहीं है ॥१६॥१७॥ व्याध कहने लगा हे मुने ! पूर्ण भोगवाले मनुष्योंकी मुक्ति कब होयहै, सृष्टिकालमें अथवा अन्तकालमें अथवा स्थितिकालमें ॥ १८ ॥ और सृष्टि, स्थिति तथा संहारके कालकी मर्यादा कितनी हैं सो हे ब्रह्मन् ! मेरे सामने आप विस्तारपूर्वक कहिये ॥ १९ ॥ शंखबोले—चारसहस्र युगका ब्रह्माका

एक दिन होयहै और इतनीही एक रात्रि है ऐसे दिनरात मिलकर ब्रह्माका दिन होताहै॥ २०॥ पन्द्रह दिनका एक पक्ष और दो पक्षका एक महिना होताहै दोमासकी एक ऋतु और तीन ऋतुका एक अयन होताहै॥ २१ ॥ दो अयनका एक वर्ष और ऐसे सौ वर्ष व्यतीत होनेपर ब्रह्मकल्प होताहै॥ २२॥ वही प्रलयकाल है यह वेदवेत्ताओंका मतहै. प्रलय तीनप्रकारकी होय है, एक मानव प्रलय, वह तब होयहै जब मनुष्योंका अंत होयहै ॥ २३ ॥ दूसरी

दशपंचदिनान्याहुः पक्षंमासोद्वयात्मकः ॥ मासद्वयंऋतुंप्राहुरयनंचऋतुत्रयम् ॥ २१ ॥ अयनेद्वेवत्सरःस्यात्ताद्दक्शतसमायदि ॥ गच्छंतिब्रह्मणोह्यस्यब्रह्मकल्पंतदाविदुः ॥ २२ ॥ तावान्हिप्रलयःकालइतिवेदविदांमतम् ॥ प्रलयस्त्रिविधःप्रोक्तोमानवोमानवात्यये ॥ २३ ॥ दैनंदिनोद्वितीयोहिब्रह्मणोदिवसात्यये॥ ब्रह्मणोथलयेपश्चाद्ब्राह्मंचप्रलयंविदुः ॥ २४ ॥ ब्रह्मणस्तुमुहूर्तेतुमनोस्तुप्रलयंविदुः ॥ प्रलयेषुव्यतीतेषुचतुर्दशसुवैक्रमात् ॥ २५ ॥ दैनंदिनलयंप्राहुः प्रलयानांस्थितिंपुनः ॥ त्रयाणामेवलोकानांलयोमन्वंतरेभवेत् ॥ २६ ॥ चेतनानांतदानाशोनलोकानांक्षयोभवेत् ॥ उदकैरेवपूर्तिश्चयथापूर्वंतथापुनः ॥ २७ ॥

ब्रह्माजीके दिनकी समाप्तिके समयमें होयहै वह दैनंदिन प्रलय कहावैहै उसके पीछे ब्रह्माजीके लयसमयमें जो प्रलय होयहै उसे ब्राह्मप्रलय कहे हैं ॥ २४ ॥ ब्रह्माजीके एक मुहूर्तमें एक मनुका प्रलय होयहै इसीतरह जब चौदह मनु प्रलय होयजायहैं ॥ २५ ॥ तब एक दैनंदिन प्रलय होयहै उन प्रलयोंकी उतनीही अवधि पर्यंत स्थिति रहती है मन्वन्तर प्रलयमें भूर्भुवःस्वःतीनोंलोकका लय होयहै ॥ २६ ॥ उस मन्वन्तर

प्रलयमें चेतन जीवोंहीका नाश होयहै परन्तु लोकोंके स्वरूपका नाश नहीं हौयहै केवल उन लोकोंकी पूर्वकी तरह जलसे पूर्ति होय जायहै ॥२७॥ फिर मन्वन्तरके अन्तमें चेतनजीवोंकी उत्पत्ति फिर होयहै और हे व्याध ! दैनंदिन प्रलयमें लोक और लोकस्थ सबका क्षय होयहै ॥ २८ ॥ केवल सत्यलोकके सिवाय और कोई लोक नहीं रहे है सब नष्ट होयजायहै और चेतन अधिभूत जीवोंसहित सब लोकोंका ब्रह्माजीके शयन करनेपर नाश होय जायहै

मन्वंतरांतेभूयात्तुचेतनानांपुनर्भवः ॥ दैनंदिनलयेव्याधसर्वस्यापिक्षयोभवेत् ॥ २८ ॥ सत्यलोकंविनासर्वेलोकानश्यंतिसाधिपाः ॥ सचेतनाःसाधिभूताःप्रसुतेचतुरानने ॥ २९ ॥ तत्त्वाभिमानिनोदेवाःकेचिच्चमुनयस्तथा ॥ शिष्यंतिसुप्ताःसर्वेपिसत्यलोकव्यवस्थिताः ॥ ३० ॥ तिष्ठंतिसुप्तिमापन्नायावत्कल्पमतींद्रियाः ॥ पुनर्निशात्ययेब्रह्मायथापूर्वमकल्पयत् ॥ ३१ ॥ ऋषीन्देवान्पितॄन्लोकान्धर्मान्वर्णान्पृथक्पृथक् ॥ पुनर्दशावताराहिविष्णोर्देवस्यचक्रिणः ॥ ३२ ॥ नियमेनभवंत्येतेतथान्येपिचभूरिशः ॥ देवताऋषयश्चैवआकल्पंचगिरांपतेः ॥ ३३ ॥

॥ २९ ॥ कोई कोई तत्वाभिमानी देवता और मुनि बाकी रहें हैं और सत्यलोकके शयन करनेहारेभी शेष रहेंहैं ॥ ३० ॥ वे सब कल्पपर्यन्त नींदमें पडे रहे हैं फिर रात्रिके समाप्त होनेपर पूर्वसृष्टिके अनुसार ब्रह्माजी सृष्टिकी रचना करे हैं॥ ३१॥ऋषि देव पितृलोक और वर्ण धर्मोंसहित चारोंवर्णकूं अलग अलग रचें हैं तब चक्रधारी विष्णुके फिर दशावतार नियमकरके होयहैं ॥ ३२ ॥ इसीतरह औरभी बहुतसे देवता ऋषि कल्पपर्यन्त ब्रह्माजीके द्वारा

फिर होयहैं ॥ ३३ ॥ और जो सर्व ब्रह्माजीके संग मुक्तिमें जानहारहैं वे ब्रह्मलोकहीमें रहें हैं और जो राजा साधु और सिद्धिको प्राप्त भये ब्रह्मलोकवासी हैं ॥ ३४ ॥ वे सब सत्यलोकहीमें स्थित रहें हैं यहां नहीं आवे हैं और जो उस राशिपर जानेवाले उसी नामकरके श्रुतिमें सम्यक् स्थितहैं वे फिर जांयहैं॥ ३५॥उन्ही उन्ही गोत्रोंमें उन्ही उन्ही कर्म करनेवाले जन्म लेते हैं और जब कलियुगकी समाप्ति होयहै तब सब दैत्योंका नाश होयहै तब वेभी सब

पुनरेवाभिवर्तंतेब्रह्मणासह मुक्तिगाः ॥ भूपाश्वसाधवोयेचसिद्धिंप्राप्ताःपरंगताः ॥ ३४ ॥ तेनैवचाभिवर्त्तंतेसत्यलोकव्यवस्थिताः ॥ तद्राशिगाःपुनर्यांतितन्नाम्नाश्रुतिसंस्थिताः ॥ ३५ ॥ तत्तद्गोत्रेषुजायंतेतत्तत्कर्मरताःसदा ॥ दैत्यानामपिसर्वेषांयदाकलियुगात्ययः ॥ ३६ ॥ कलिनासहगच्छंतिस्वांगतिंनिरयालयाः ॥ तेषांचराशिसंस्थायेतन्नामानोऽपरेपिच ॥ ३७॥ जायंतेकर्मणास्वेनतत्तत्कर्मविधायकाः ॥ सृष्टिकालंप्रवक्ष्यामिमुक्तिकालंतथैवच ॥ ३८ ॥ ब्रह्मादीनांचदेवानांसमाहितमनाभव ॥ निमेषोदेवदेवस्यब्रह्मकल्पसमोमतः ॥ ३९ ॥

कलियुगसहित अपनी गतिको जाय हैं उनका निरय स्थान होयहै और उनके नामके उन राशिस्थ औरभी हैं ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ वे अपने कर्मके अनुसार उन्हीं उन्हीं कर्मोंके करनेवाले होयहैं अब मैं तेरे साम्हने सृष्टिकाल और मुक्तिकालका वर्णन करूंगा ॥ ३८ ॥ सो सावधान होयकर सुनो देवदेव भगवान्का एक निमेष ब्रह्माजीके कल्पके समान होयहैं तदनन्तर देवोंके मुकुटमणि भगवान्का इतनाही उन्मेष अर्थात् पलकका खुलना होयहै ॥ ३९ ॥

निमेषके अंतमें अपने कुक्षिस्थ लोकोंके सृजनेको इच्छा होयहै ॥ ४० ॥ तब सब लोकोंको और अनेक जीवसमुदायोंको अपने उदरमें रखता हुआ उनमें कितनेही तो सृजने योग्यहैं कितनेही मुक्त हैं और कितनेही ऐसे हैं जिनका लिंगदेह छूट गयाहै॥ ४१ ॥ वे सुप्त हैं संसारमें स्थितहैं और वे सब तमोगुण संबंध युक्तहैं और ऐसेभी हैं जो पूर्वकल्पमें विधिपूर्वक जे लिंगभंगकूं प्राप्त भये हैं ॥ ४२ ॥ मानवपर्य्यन्त जीवकोश जीवन्मुक्त और मुक्तिगामी जो पूर्वकल्पमें विभु

तस्यावसानेचोन्मेषोदेवदेवशिखामणेः ॥ निमेषांतेभवेदिच्छास्त्रष्टुंलोकांश्चकुक्षिगान् ॥ ४० ॥ सोपश्यत्स्वोदरेसर्वान्जीवसंघानने कशः ॥ सृज्यान्मुक्तानमुंसर्वान्लिंगभंगमुपागतान् ॥ ४१ ॥ सुप्ताःसृतिस्थाःसर्वेपितमोगाअपिसर्वशः ॥ पूर्वकल्पेलिंगभंगमापन्ना विधिपूर्वकम् ॥ ४२ ॥ मानवांताजीवकोशाजीवन्मुक्ताश्चमुक्तिगाः ॥ पूर्वकल्पेविमुक्ताश्चब्रह्माद्यामानवांतकाः ॥ ४३ ॥ ध्यानसंस्था हितिष्ठंतिविष्णुकुक्षिगताअपि ॥ उन्मेषप्रथमेभागेचतुर्व्यूहात्मकोविभुः ॥ ४४ ॥ भूत्वातुपूर्वषाड्गुण्याद्वासुदेवाच्चव्यूहगात् ॥ दत्वातु ब्रह्मणेमुक्तिंसायुज्याख्यांमहाविभुः ॥ ४५ ॥ दत्वातदनुसायुज्यंतत्त्वज्ञानंमहात्मनाम् ॥ सारूप्यंचैवकेषांचित्सामीप्यंचतथाविभुः ॥ ४६ ॥ सालोक्यंचतथान्येषांदत्वादेवोजनार्दनः ॥ अनिरुद्धवशेसर्वान्स्थितांल्लोकानलोकयत् ॥ ४७ ॥

कही ब्रह्मासे लेकर मनुष्यपर्यन्त ॥ ४३ ॥ विष्णुकी कुक्षिमें गत होनेपरभी ध्यानावस्थित रहें हैं उन्मेषके प्रथमभागमें चतुर्व्यूहात्मक विभु षाड्गुण्य होयकर व्यूहमें स्थित वासुदेवसे ब्रह्माको सायुज्यमुक्ति देयकर महाविभु ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ तत्पश्चात् महात्माओंको तत्वज्ञानरूप सारूप्य मुक्ति देयहै और किसी किसीको सामीप्य मुक्ति देयहैं ॥ ४६ ॥ तथा अन्य मनुष्योंको देवदेव जनार्दन सालोक्य मुक्ति देयकर अनिरुद्धरूपसे संपूर्ण स्थित लोकोंको

देखेंहैं ॥ ४७ ॥ प्रद्युम्नरूपसे सृष्टिके रचनेका विचार करतेहुए और स्वयं हरिभगवान् माया जया कृति और शान्तिसे विवाह करते हुए ॥ ४८ ॥ वासुदेवसे आदि लेके पूर्ण गुणसे युक्त चतुर्व्यूह उन माया जया आदि शक्तिसे युक्त चतुर्व्यूहात्मक महाविष्णुभगवान् ॥ ४९ ॥ भिन्नहै कर्म और आशय जिसका ऐसा लोकको करते हुए स्वयं पूर्णकाम हैं नेत्र खोलनेके अंतमें फिर विष्णुभगवान् योगमायाका आश्रय लेय ॥ ५० ॥ व्यूहस्थ संकर्षणद्वारा

प्रद्युम्नस्यवशेदत्वासृष्टिंकर्तुंमनोदधे ॥ मायांजयांकृतिंशांतिमुपयेमेस्वयंहरिः ॥ ४८ ॥ चतुर्व्यूहैःपूर्णगुणैर्वासुदेवादिकैःक्रमात् ॥ ताभिर्युक्तोमहाविष्णुश्चतुर्व्यूहात्मकोविभुः ॥ ४९ ॥ भिन्नकर्माशयंलोकंपूर्णकामोव्यजीजनत् ॥ उन्मेषांतेपुनर्विष्णुर्योगमायांसमाश्रितः ॥ ५० ॥ संकर्षणाद्व्यूहगाच्चहरत्यंतेचराचरम् ॥ तदेतत्सर्वमाख्यातंकार्यंचिंत्यंमहात्मनः ॥ ५१ ॥ यदचिंत्यंदुर्विभाव्यंब्रह्माद्यैरपियोगिभिः ॥ ॥ व्याधउवाच ॥ ॥ केवाभागवताधर्माःकैर्विष्णुश्चप्रसीदति ॥ तानहंश्रोतुमिच्छामिसांप्रतंवदनोमुने ॥ शंखउवाच ॥ ॥ ५२ ॥ येनचित्तविशुद्धिःस्याद्यःसतामुपकारकः ॥ ५३ ॥ तंविद्धिसात्विकंधर्मंयश्चकेनाप्यनिंदितः ॥ श्रुतिस्मृत्युदितोयस्तुयदिनिष्कामिकोभवेत् ॥ ५४ ॥

चराचरका नाश करतेहुए ये सब उस महात्माका अकथनीय कामहै ॥ ५१ ॥ यह कार्य ब्रह्मादिक और योगियोंद्वाराभी अकथनीयहै यह सुन व्याध पूछताहुआ हे महाराज ! भागवतधर्म कौनसे हैं और कौनसे धर्मोंसे विष्णुभगवान् प्रसन्न होंयहैं ॥ ५२ ॥ उनके मेरे सुननेकी इच्छाहै सो मेरे सामने कहिये शंख बोले–जिस धर्मसे चित्त शुद्ध होय और सज्जनोंका उपकार होय वहीकू सतोधर्म जान तथा जिसकी कोई निन्दा न करै जो धर्म श्रुति और

स्मृतिके अनुकूल होय और कामनारहित होय ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ जो लोकसे विपरीत न होय उसे सात्विक धर्म समझना चाहिये वर्णाश्रमके विभागसे सो धर्म चार प्रकारकाहै ॥ ५५ ॥ और प्रत्येक धर्म नित्य नैमित्तिक और काम्य इन भेदोंसे तिन प्रकारकाहैं जब वे सब धर्म विष्णुभगवानके समर्पण करे जांयहैं ॥ ५६ ॥ तब वे सतोगुणयुक्त भागवत धर्म कहावैं हैं जब किसी कामनाके निमित्त अन्यदेवताके समर्पण होंयहैं तब रजोगुणी

यस्तुलोकाविरुद्धोपितंधर्मंसात्विकंविदुः ॥ चतुर्विधाहितेधर्मावर्णाश्रमविभागतः ॥ ५५ ॥ नित्यनैमित्तिकाः काम्याइतितेच त्रिधामताः ॥ तेसर्वेस्वस्वधर्माश्चयदाविष्णोःसमर्पिताः ॥ ५६ ॥ तदावैसात्विकाज्ञेयाधर्माभागवताःशुभाः ॥ देवतांतरदैवत्याः सकामाराजसामताः ॥ ५७ ॥ यक्षरक्षःपिशाचादिदैवत्यालोकनिष्ठुराः ॥ हिंसात्मकानिंदिताश्चधर्मास्तेतामसाःस्मृताः ॥ ५८ ॥ सत्वस्थाःसात्विकान्धर्मान्विष्णुप्रीतिकराञ्छुभान् ॥ कुर्वंत्यनीहयानित्यंतेवैभागवताःस्मृताः ॥ ५९ ॥ येषांचित्तंसदाविष्णौजिह्वायांनामवैविभोः ॥ पादौचहृदयेयेषांतेवै० ॥ ६० ॥ सदाचाररतायेचसर्वेषामुपकारकाः ॥ सदैवममताहीनास्तेवै० ॥ ६१ ॥

होयहैं ॥ ५७ ॥ यह राक्षस पिशाचादि लोकमें निष्ठुर देवताओंका पूजन करना, हिंसा करना ये सब निन्दित तमोगुणी कर्म हैं ॥ ५८ ॥ सतोगुणीमनुष्य जो विष्णुभगवान्के प्यारे सात्विक धर्मोंको करें हैं वे धर्म भागवत धर्म कहावें हैं ॥ ५९ ॥ जिनका चित्त सदा विष्णुभगवान्में रहै और जिह्वासे भगवान्के नाम रटें और भगवान्के चरण हृदयमें रहैं सोई भागवत धर्म है ॥ ६० ॥ जो सदाचाररतहैं सबके संग उपकार

करें हैं और सदा ममताहीन रहें सोई भागवत धर्म हैं ॥ ६१ ॥ जिनको शास्त्र, गुरु, साधु और कर्ममें विश्वासहै और जो सदा विष्णुके भक्तहैं वेही भागवत धर्मवाले हैं ॥ ६२ ॥ जिन्हें विष्णुभगवान्के प्रिय करनेहारे धर्म सदा मन्तव्यहैं और श्रुति तथा स्मृतिमें कथित धर्म हैं सोई धर्म उत्तमहैं ॥ ६३ ॥ सब देशोंमें भ्रमण करना सब कर्मोंको देखना सब धर्मोंका श्रवण करना परंतु विषयमें चित्त है उनकू कुछ भी नहीं करसकें हैं जैसे

येषांचशास्त्रेविश्वासोगुरौसाधुषुकर्मसु ॥ येविष्णुभक्ताः सततंतेवै० ॥ ६२ ॥ येषांहिसंमताधर्माःशाश्वताविष्णुवल्लभा ॥ श्रुतिस्मृत्युदितायेचतेधर्माःशाश्वतामताः ॥ ६३ ॥ अटनंसर्वदेशेषुवीक्षणंसर्वकर्मणाम् ॥ श्रवणंसर्वधर्माणांविषयासक्तचेतसाम् ॥ ६४ ॥ अकिंचित्करमेतेषांषंढस्येववरस्त्रियः ॥ साधूनांदर्शनेनैवमनोद्रवतिवैसताम् ॥ ६५ ॥ चंद्रस्यकौमुदीसंगाच्चंद्रकांतशिलायथा ॥ क्वचित्सच्छास्त्रश्रवणाद्विषयेभ्यश्चलंमनः ॥ ६६ ॥ तिष्ठत्येवसतांपुंसांतेजोरूपंह्यकल्मषम् ॥ पद्मबंधोःप्रभासंगात्सूर्यकांतशिलायथा ॥ ६७ ॥ निष्कामैर्हिजनैर्यैस्तुश्रद्धयासमुपाश्रितः ॥ योविष्णुवल्लभोनित्यंधर्मोभागवतोमतः ॥ ६८ ॥ तैर्दृष्टाबहवोधर्माइहामुत्रफलप्रदाः ॥ विष्णुप्रीतिकराःसूक्ष्माःसर्वदुःखविमोचकाः ॥ ६९ ॥

उत्तम स्त्री नपुंसककू कुछ भी नहीं करसकें हैं साधुओंके दर्शनहीसे सत्पुरुषोंका मन द्रवीभूत होयजायहै ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ जैसे चांदनीके संग चन्द्रकांतमणि द्रवीभूत होयहै यह चंचल मन सच्छास्त्रोंके श्रवणमात्रसे विषयोंसे अलग होयकर कल्मषरहित तेजोमय रहै हैं ॥ ६६ ॥ जैसे सूर्यकी किरणके संग सूर्यकांतमणि रहै है ॥ ६७ ॥ कामनारहित श्रद्धापूर्वक जो विष्णुसंबंधी धर्म किये जायहैं सोई भागवत धर्म हैं ॥ ६८ ॥ इस लोक और

परलोकमें सुख देनेहारे बहुतसे धर्म देखे हैं परन्तु विष्णुभगवान्को प्रसन्न कर्त्ता धर्म सूक्ष्म और संपूर्ण पापोंके नाश करनहारे हैं ॥ ६९ ॥ क्षीर सागरमें सबकी हितकी कामनासे जैसे दहीमेंसे मक्खन निकालते हैं ऐसे वैशाखके धर्म भगवान्ने लक्ष्मीके प्रति कहे ॥ ७० ॥ मार्गमें छाया लगावना, प्याऊ बनवाना, पंखासे हवा करना वा योग्योंको दान करना ॥ ७१ ॥ छत्री, जूता, कपूर और सुगंधित द्रव्योंका दान करना और धन

दध्नःसारमिवोद्धृत्यधर्मंवैशाखसंभवम् ॥ रमायैभगवानाहक्षीराब्धौहितकाम्यया ॥ ७० ॥ मार्गच्छायाविनिर्माणंप्रपादानंचवैतथा ॥
व्यजनैर्वीजनंचैवप्रश्रयाणांसमर्पणम् ॥ ७१ ॥ छत्रस्योपानहोर्दानंदानंकर्पूरगंधयोः॥ वापीकूपतडागानांनिर्माणंविभवेसति॥७२॥
सायाह्नेपानकस्यापिदानंतुकुसुमस्यच ॥ तांबूलदानंपापघ्नंगोरसानांविशेषतः ॥ ७३ ॥ लवणान्विततक्रस्यदानंश्रांतायवैपथि ॥
अभ्यंगकरणंचैवद्विजपादावनेजनम् ॥ ७४ ॥ कटकंबलपर्यंकदानंगोदानमेवच ॥ मधुयुक्तं तिलानांचदानंपापविनाशनम् ॥७५॥
सायाह्नेचेक्षुदंडानांदानमुर्वारुकस्यच ॥ रसायनप्रदानंचपितृनिर्वापणंतथा ॥ ७६ ॥

पायकर बावडी कूआ तलाव बनवाना ॥७२॥ सायंकालके समय शर्बत और फूलका दान करना,तांबूल दान करना और गोरसका दान तौ सब दानोंसे उत्तम है ॥ ७३ ॥ रस्ताके थकेहुएको नमक मिली छाछका दान करै उहटन करना थकेहुए ब्राह्मणके चरण धोना ॥ ७४ ॥ चटाई कंबल पलंग इनका दान और गोदान तथा शहत और तिलका दान संपूर्ण पापोंका नाश करनेहाराहै ॥ ७५ ॥ सायंकालके समय ईख ककडीका दान करै

तथा पित्रीश्वरोंके निमित्त रसायनका दान करै ॥ ७६ ॥ ये सब वैशाखके कर्त्तव्य धर्म हैं प्रातःकाल उठ स्नान कर ब्राह्मणके मुखसे कथा सुने फिर नित्यकर्म कर मधुसूदन भगवान्का पूजन करै और वैशाखमाहात्म्यकी कथा मन लगायके सुने ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ तेल और उबटनेको छोडदे कांसीके पात्रमें भोजन न करै निषिद्ध भोजन और वृथा बकवाद न करै॥ ७९ ॥ घीया, गाजर, लहसन, तिलपिष्ट, कांजी, फूट, घीयातोरई, पोई, कलिंदा, सहजना,

एतेधर्माविशिष्योक्तामासेस्मिन्माधवप्रिये ॥ प्रातःसूर्योदयेस्नात्वाशृण्वन्द्विजकुलेरितम् ॥ ७७ ॥ नित्यकर्माणिकृत्वैवंमधुसूदनमर्च येत् ॥ कथांमाधवमासीयांशृणुयाच्चसमाहितः ॥ ७८ ॥ तैलाभ्यंगंवर्जयेच्चकांस्यपात्रेतुभोजनम् ॥ निषिद्धभक्षणंचैववृथालापंतुवर्ज येत् ॥ ७९ ॥ अलाबुंगृंजनंचैवलशुनंतिलपिष्टकम् ॥ आरनालंभिस्सटंचघृतकोशातकींतथा ॥ ८० ॥ उपोदकींकलिंगंचशिग्रुशा कंचवर्जयेत् ॥ निष्पावानिकुलित्थानिमसूराणिचवर्जयेत् ॥ ८१ ॥ वृंताकानिकलिंगानिकोद्रवाणिचवर्जयेत् ॥ तंदुलीयकशाकंच कौसुंभंमूलकंतथा ॥ ८२ ॥ औदुंबरंबिल्वफलंतथाश्लेष्मातकीफलम् ॥ सर्वथावर्जयेद्विद्वान् मासेस्मिन्माधवप्रिये ॥ ८३ ॥ एतेष्व न्यतमंभुक्त्वासचांडालोभवेद्ध्रुवम् ॥ तिर्यग्योनिशतंयातिनात्रकार्याविचारणा ॥ ८४ ॥ एवंमासव्रतंकुर्यात्प्रीतयेमधुघातिनः ॥ एवंव्रतेसमाप्तेतुप्रतिमांकारयेद्विभोः ॥ ८५ ॥ मधुसूदनदैवत्यांसवस्त्रांचसदक्षिणाम् ॥ स्वर्चितांविभवैःसर्वैर्ब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ ८६ ॥

चौराई, कुलथी और मसूर त्याग देय॥ ८० ॥ ८१ ॥ बैगन, कलींदा, कोदो, चौलाई, कसूम, मूली, गूजर, बेलफल, ल्हिसौडा इनका सेवन वैशाखमें भूल कर भी न करै॥ ८२ ॥ ८३ ॥ जो इन्हे खाय तौ चांडालकी योनिमें जन्मे व सो जन्मपर्य्यन्त पशु बने इसमें संदेह नहींहै॥ ८४ ॥ ऐसे मधुसूदन भगवान्की

प्रसन्नताके निमित्त व्रत करै और व्रतके समाप्त होनेपर विष्णुभगवान्की प्रतिमा बनवाय वस्त्र पहराय दक्षिणासहित ब्राह्मणको निवेदन करै ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ वैशाखसुदी द्वादशीके दिन दही और अन्नका दान करै और जलका घडा तांबूल फल और दक्षिणासहित देय॥८७॥फिर जूता और छत्रीका दान कर ब्राह्मण भोजन करावै ठंडा जल दही अन्न तांबूल और दक्षिणासहित लेकर कहै कि यह मैं धर्मराजाके निमित्त दान करूं हूं यमराज मेरे ऊपर प्रसन्न होउ

वैशाखसितद्वादश्यांदद्याद्दध्यन्नमंजसा ॥ सोदकुंभंसतांबूलंसफलंचसदक्षिणम् ॥ ८७ ॥ दद्यादुपानहौछत्रंब्राह्मणान्भोजयेत्ततः॥शीतलोदकदध्यन्नंसताम्बूलंसदक्षिणम् ॥ ८८ ॥ ददामिधर्मराजायतेनप्रीणातुवैयमः॥ अपसव्यात्समुच्चार्यनामगोत्रेपितुस्ततः ॥ ८९ ॥ दद्याद्दध्यन्नक्षमय्यंपितॄणांतृप्तिहेतवे ॥ गुरुभ्यश्चतथादद्यात्पश्चाद्दद्याच्चविष्णवे ॥ ९० ॥ शीतलोदकदध्यन्नंकांस्यपात्रस्थमुत्तमम् ॥ सदक्षिणंसतांबूलंसभक्ष्यंचफलान्वितम् ॥ ९१ ॥ ददामिविष्णवेतुभ्यंविष्णुलोकजिगीषया ॥ इतिदत्वायथाशक्त्यागांचदद्यात्कुटुंबिने ॥ ९२ ॥ एवंमासव्रतंकुर्यात्सदादंभविवर्जितः ॥ ससर्वैःपातकैर्हीनःकुलमुद्धृत्यवैशतम् ॥ ९३॥

अपसव्य होय गोत्रसहित ऐसे उच्चारण कर ॥ ८८ ॥८९॥ पहिले दही और अन्न पित्रीश्वरोंकी तृप्तिको अक्षय दे फिर गुरुको फिर विष्णुको दे ॥९०॥ शीतल जल और कांसीके पात्रमें दही अन्न दक्षिणा तांबूल और फल रखकर कहै हे विष्णो ! मैं वैकुंठकी प्राप्तिके निमित्त ये दान करूं हूं फिर कुटुंबी ब्राह्मणको यथाशक्ति गोदान करै ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ऐसे दंभकू छोड सदा व्रत करै वह सब पापोंसे छूट अपने सौ कुलका उद्धार कर सब प्राणियोंके

वै॰मा॰

॥१९८॥

देखते देखते सूर्यमंडलको पारकर योगियोंकोभी दुर्लभ जो विष्णुका परम धामहैं उसमें चलाजांय है॥ ९३ ॥ ९४ ॥ जब व्याधकरके पूछेभये तब वैशाख मासके धर्मोंकी कथा श्रुतदेवजी कह रहेहैं तबही सबके देखते देखते वह पंचशाख वृक्ष पृथ्वीपर गिरता हुआ और उस वृक्षकी खोंतरमेंसे एक बडा भयंकर सर्प तत्काल पापरूप देहका परित्याग कर हाथ जोड शिर झुकाय वहां बैठता हुआ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदांबरीष

पश्यतामेवभूतानांभित्त्वावैसूर्यमंडलम् ॥ यातिविष्णोःपरंधामयोगिनामपिदुर्लभम् ॥ ९४ ॥ व्याख्यात्येवंद्विजकुलवरेमाधवीयां श्चधर्मान्विष्णवादिष्टानतिमहितरान्व्याधपृष्टान्समस्तान् ॥ वृक्षःसद्यःपश्यतामेवभूमौपपाताहोपंचशाखीद्रुमोयम् ॥ ९५ ॥ वृक्षात्त स्मात्कोटरेसंस्थितोहिव्यालःकश्चिद्दीर्घदेहीकरालः ॥ हित्वादेहंपापयोनिंचसद्यःसर्वेतस्थौप्रांजलिर्नम्रमूर्धा ॥ ९६ ॥ इति श्रीस्कंद पुराणेवैशाखमाहात्म्येनारदांबरीषसंवादेभागवतधर्मकथनंनामविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ ॥ श्रुतदेवउवाच ॥ ॥ ततस्तुविस्मितोभू त्वाशंखोव्याधसमन्वितः ॥ कोभवानितितंप्राहदशैषाचकुतस्तव ॥ १ ॥ केनवाकर्मणासौम्यमतिस्तवशुभावहा ॥ अकस्मात्तेकथं मुक्तिरेतदाचक्ष्वविस्तारत् ॥ २ ॥ शंखेनैवंतदापृष्टोदंडवत्पतितोभुवि ॥ प्रश्रयावनतोभूत्वाप्रांजलिर्वाक्यमब्रवीत् ॥ ३ ॥

संवादे भागवतधर्मकथनं नाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥ तब तौ श्रुतदेवजी कहने लगे कि शंखमुनि बडे विस्मित हुए और व्याधभी विस्मित होताहुआ तब शंख मुनिने पूछा तुम कौन हो और तुह्मारी दशा ऐसी कैसे होयगई है ॥ १ ॥ हे सौम्य ! कौन कर्मसे तेरी ऐसी शुभ बुद्धि हुईहै और अकस्मात् तेरी मुक्ति कैसे हो यगई यह तू सब विस्तारपूर्वक हमारे सामने कह॥ २ ॥ जब शंखने ऐसे पूछा तब वह दंडकीनाई पृथ्वीपर गिर शिर झुकाय हाथ जोड कहता हुआ॥ ३ ॥

भा॰टी॰

अ॰ २१

॥१९८॥

मैं प्रयागराजमें एक ब्राह्मण था बहुत बकबक करता था रूप और यौवन करके युक्त विद्याके मदसे गर्वित॥ ४ ॥ धनवान् पुत्रवान् सदा अहंकारसे दूषित कुसीद मुनिका पुत्र मेरा नाम रोचन हुआ ॥ ५॥ आसन, शयन, निद्रा, व्यवाय, अक्षपरिक्रिया, लोकचर्या, व्याज लेना, यही मेरा व्यापार होता हुआ ॥ ६ ॥ लोककी निन्दासे शंकारहित दंभयुक्त और क्रूर मेरी किसी बातमें श्रद्धा नहीं रही ॥ ७ ॥ ऐसे मुझ दुष्ट दुर्बुद्धिका बहुतसा समय नष्ट होयगया तब

अहंपुराद्विजःकश्चित्प्रयागेबहुभाषकः ॥ रूपयौवनसंपन्नोविद्यामदसुगर्वितः ॥ ४ ॥ धनाढ्योबहुपुत्राढ्यःसदाहंकारदूषितः ॥ कुसीदस्यमुनेःपुत्रोनाम्नारोचनइत्यहम् ॥ ५ ॥ आसनंशयनंनिद्राव्यवायोक्षपरिक्रियाः ॥ लोकवार्ताकुसीदंवाव्यापारास्तेममाभवन् ॥ ६ ॥ तंतुमात्राणिकर्माणिलोकनिंदाविशंकितः ॥ सदंभश्चसदाक्रूरोनश्रद्धामेकदाचन ॥ ७ ॥ दुर्बुद्धेर्ममदुष्टस्यकियान्कालोगतोऽभवत् ॥ तदावैशाखमासेस्मिञ्जयंतोनामवैद्विजः ॥ ८ ॥ श्रावयामासतन्मासधर्मान्भागवतप्रियान् ॥ तत्क्षेत्रवासिनांपुण्यकर्मणांचद्विजन्मनाम् ॥ ९ ॥ नारीनराःक्षत्रियाश्चवैश्याःशूद्राःसहस्रशः ॥ प्रातःस्नात्वासमभ्यर्च्यमधुसूदनमव्ययम् ॥ १० ॥ कथांशृण्वंतिसततंजयंतेनसमीरिताम् ॥ शुचिभूतामौनधरावासुदेवकथारतः ॥ ११ ॥

वैशाखके महीनेमें जयन्त नाम ब्राह्मण ॥ ८ ॥ भगवान्के प्यारे वैशाखमासके धर्म सुनाते हुए उस क्षेत्रमें रहनेवाले पुण्यकर्मा द्विज ॥ ९ ॥ पुरुष स्त्री हजारों वैश्य क्षत्री शूद्र प्रातःकाल स्नानकर अविनाशी मधुसूदन भगवान्का पूजन कर रातदिन कथा सुनें और जयंत कथा बांचै सब लोग मौनधार

णकर वासुदेवभगवान्की कथामें मन लगाय॥ १० ॥ ११ ॥वैशाखधर्ममें निरत दंभ और आलस्यको छोड सब कथा सुनेहैं मैं उस सभामें कौतुक देखनेकी इच्छासे जाताहुआ॥ १२ ॥मेरे शिरपर पगडी बंधरही ही सोई सबको नमस्कार करी मुखमें पान चबाये हुए कंचुक धारण किये हुए ॥ १३ ॥इस प्रकार सभामें जाय लोकचर्चासे कथामें विक्षेप करताहुआ उस लोकवार्तासे सब श्रोताओंका मन चलायमान होगया ॥ १४ ॥ कभी मैं कपडा फैलाऊ कभी निन्दा करूं

वैशाखधर्मनिरतादंभालस्यविवर्जिताः ॥ तांसभांचप्रविष्टोहंकौतुकाच्चदिदृक्षया ॥ १२ ॥ सोष्णीषेणमयामूर्ध्नानमस्कारोर्पितोजने॥ तांबूलंचमुखेकृत्वाकंचुकंचमयाधृतम् ॥ १३ ॥ कथाविक्षेपमकरवंलोकवार्ताभिरंजसा ॥ सर्वेषांचित्तचांचल्यमभूद्वैलोकवार्तया ॥ ॥ १४ ॥ क्वचिद्वासःप्रसार्याहंक्वचिन्निंदन्क्वचिद्धसन् ॥ एवंकालोमयानीतःकथायावत्समाप्यते ॥ १५ ॥ पश्चात्तेनैवदोषेणसद्योल्पायुर्विनष्टधीः ॥सन्निपातेनपंचत्वंप्राप्तोहंचपरेदिने ॥ १६ ॥ यमदूतैश्चनीतोऽहंनरकेचभयंकरे ॥ घोरांचयातनांभुक्त्वामन्वंतानि चतुर्दश ॥ १७ ॥ युगेष्वथचलक्षेषुतथाचतुरशीतिभिः ॥ क्रमाद्योनिषुजातोहमिदानींचावसंद्रुमे ॥ १८ ॥ दशयोजनविस्तीर्णे शतयोजनमुन्नते ॥ व्यालोहंतामसःक्रूरःसप्तयोजनकोटरे ॥ १९ ॥

कभी हँसू ऐसा जबतक कथा समाप्त हुई तबतक मैं ऐसेही करता हुआ ॥ १५ ॥ फिर उसी दोषके कारण मेरी बुद्धि नष्ट होयगई अवस्था क्षीण होगई और सन्निपातमें आय मेरे प्राण जाते रहे॥ १६ ॥और वाहीसमय यमके दूत पकडकर भयंकर नरकमें लेगये वहां चौदह मन्वन्तरपर्य्यन्त अनेक दुःख भोगे॥ १७ ॥ ऐसे क्रमसे चौरासी लाख योनि भोगकर अब मैं इस वृक्षमें निवास करूंहूं ॥ १८ ॥ यह वृक्ष दश योजन लम्बा चौडा और सौ योजन

ऊंचाहै इस वृक्षमें सात योजनकी खोतरमें मैं बडे क्रूर सर्पकी योनि पाय वास करूंहूं ॥ १९ ॥ हे विप्रर्षे ! ये मेरे प्राचीन कर्मोंका फलहै इस प्रकार इस कोटरमें निवास करते विना कुछ खाये दससहस्र वर्ष व्यतीत होयगयेहैं ॥ २० ॥ दैवयोगसे आपके मुखकमलसे निकली कथाको चक्षुगोलकद्वारा सुननेसे मेरे सब पाप जाते रहे हैं ॥ २१ ॥ और सर्पकी योनिको छोड दिव्य देह धारणकर हाथ जोड नमस्कार कर आपकी शरणमें प्राप्त हुआ हूं

भूत्वावसामिविप्रर्षेकर्मणाबाधितःपुरा ॥ अयुतंचसमायातंनिराहारस्यकोटरे ॥ २० ॥ दैवात्तवमुखांभोजसमीरितकथामृतम् ॥ श्रुत्वाचचक्षुश्रुलकैः सद्योध्वस्ताशुभोमुने ॥ २१ ॥ व्यालयोनिंविसृज्याहंदिव्यरूपधरःपुमान् ॥ प्रांजलिःप्रणतोभूत्वापादौते शरणंगतः ॥ २२ ॥ कस्मिञ्जन्मनित्वंबंधुर्नजानेमुनिसत्तम ॥ नमयोपकृतंक्कापिसानुबंधःकुतःसताम् ॥ २३ ॥ साधूनांसम चित्तानांसदाभूतदयावताम् ॥ परोपकारप्रकृतिर्नचैषामन्यथामतिः ॥ २४ ॥ मामद्यानुगृहाणत्वंयथाधर्मेमतिर्भवेत् ॥ यथाचसुग तिर्भूयाद्यथाविष्णौरतिर्भवेत् ॥ २५ ॥

॥ २२ ॥ हे मुनिसत्तम ! मैं नहीं जानू हूं आप कौनसे जन्ममें मेरे बन्धु हुएहो मैंने तौ कहीं भी उपकार नहीं किया फिर सज्जनोंका अनुबन्ध कैसे हुआ ॥ २३ ॥ समानहैं चित्त जिनके ऐसे दयावान् साधुमहात्माओंकी प्रकृति सदा परोपकारमें प्रवृत्त रहै हौ इनकी मति कभी अन्यथा नहीं होयहै ॥ २४ ॥ आप आज मेरे ऊपर बडा अनुग्रह करौ जिससे धर्ममें मेरी बुद्धि होय जैसे सुन्दर गति मिलै और विष्णुभगवान्की प्रीति होय ॥ २५ ॥

सुदर्शन चक्रधारी विष्णुभगवान्की कभी विस्मृति न होय और सच्चरित्र साधु महात्माओंकी संगति सदा बनी रहै ॥ २६ ॥ कभी मुझसे अधर्म न होय अहंकार न होय सदा मैं दरिद्री रहूं क्योंकि दरिद्र धन मदांधोंके लिये अंजनरूप है ॥२७॥ इसप्रकार अनेक रीतिसे स्तुति कर वारम्वार नमस्कार कर हाथ जोड शिरनवाय मुनीश्वरके आगे चुपचाप खडारहा ॥ २८ ॥ शंखमुनि पूर्ण प्रेमसे भरगये और दोनों हाथोंसे उठाय उसके देहको अपने

नभूयाद्विस्मृतिःक्कापिविष्णोर्देवस्यचक्रिणः ॥ महतांसाधुवृत्तानांसंगतिश्चसदाभवेत् ॥ २६ ॥ नाधर्मःक्कापि मेभूयान्नाहंकारोमदान्वितः ॥ दारिद्र्यमेवमेभूयान्मदांधानांयदंजनम् ॥ २७ ॥ इतितंबहुधास्तुत्वाप्रणम्यच पुनःपुनः ॥ प्रांजलिःप्रणतस्तस्थौतूष्णीमेवतदग्रतः ॥ २८ ॥ शंखोदोर्भ्यांसमुत्थाप्यपूर्णप्रेमपरिप्लुतः ॥ पस्पर्शपाणिनाचांगंशंतमेनगताध्वसः ॥ २९ ॥ चक्रेसोनुग्रहंतस्मिन्दिव्यरूपधरेद्विजे ॥ प्राहतंकृपयाविष्टोभाविवृत्तांतमंजसा ॥३०॥ द्विजत्वंमासमाहात्म्यश्रवणाच्चहरेरपि ॥ माहात्म्यश्रवणात्सद्योध्वस्तनष्टाखिलाशुभः ॥३१॥अतिवाहिकलोकांश्चक्रमाद्गत्वापुनर्भुवि॥दशार्णेविषयेपुण्येभवितात्वंद्विजोत्तमः ॥३२॥ वेदशर्मेतिविख्यातःसर्वविद्याविशारदः ॥ तत्रतेभविताजातिस्मृतिरात्यंतिकीशुभा॥ ३३ ॥

हाथ स्पर्श करतेहुए जिससे उसके सब पाप नष्ट होयगये ॥ २९ ॥ और उस दिव्यरूपधारी ब्राह्मणपर अनुग्रह कर कृपाविष्ट होय भावी वृत्तान्त कहने लगे ॥ ३० ॥ हे द्विज ! वैशाखमासका माहात्म्य और विष्णुभगवान्का माहात्म्य श्रवण करनेसे तेरे सब पाप नष्ट होयगयेहैं ॥ ३१ ॥ तू क्रमसे अतिवाहिक लोकोंको जाकर फिर दशार्ण देशमें ब्राह्मणके घर जन्म लेयगा ॥ ३२ ॥ और वेदशर्म्मा नामसे विख्यात होयगा और सब विद्याओंमें

विशा[illegible] होयगा उस जन्ममें तेरी अत्यन्त जातिस्मृति होयगी ॥ ३३ ॥ इस स्मरणके अनुबन्धसे तू संपूर्ण इच्छाओंका परित्याग कर वैशाखोक्त विष्णु[illegible]प्रिय धर्मोंको करैगा ॥ ३४ ॥ निर्द्वंन निःस्पृह गुरुभक्त और जितेन्द्रिय होकर उस जन्म तू सदा विष्णुभगवान्‌की कथामें तत्पर रहैगा ॥ ३५ ॥ तब तू सिद्धि प्राप्त करैगा और संपूर्ण बन्धनोंसे छूटकर योगियोंकोभी दुर्लभ परमधामकी प्राप्ति तुझे होयगी ॥ ३६ ॥ हे पुत्र !

तथास्मृतानुबंधस्त्वंत्यक्तसर्वेषणः शुभः ॥ करोषिसकलान्धर्मान्वैशाखोक्तान्हरिप्रियान् ॥ ३४ ॥ निर्द्वंद्वोनिःस्पृहोसंगोगुरुभक्तो जितेंद्रियः ॥ सदाविष्णुकथालापोभवितातत्रजन्मनि ॥३५॥ ततःसिद्धिंसम्यगाप्यविध्वस्ताखिलबंधनः ॥ प्राप्नोषिपरमंधामयोगैरपिदुरासदम् ॥ ३६ ॥ माभैषीःपुत्रभद्रंतेभवितामत्प्रसादतः ॥ हास्याद्भयात्तथाक्रोधाद्द्वेषात्कामादथापिवा ॥ ३७ ॥ स्नेहाद्वासकृदुच्चार्यविष्णोर्नामाघहारिच ॥ पापिष्ठाअपिगच्छंतिविष्णोर्धामनिरामयम् ॥ ३८ ॥ किमुतश्रद्धयायुक्ताजितक्रोधाजितेंद्रियाः ॥ दयावंतःकथांश्रुत्वागच्छंतीतिद्विजोत्तम ॥ ३९ ॥ केचित्केवलयाभक्त्याकथालापैकतत्पराः ॥ सर्वधर्मोज्झितावापियांतिविष्णोःपरंपदम् ॥ ४० ॥

डरो मत अब मेरी प्रसन्नतासे तेरा कल्याण होयगा हँसीसे डरसे क्रोधसे द्वेषसे कामसे ॥ ३७ ॥ स्नेहसे विष्णुभगवान्‌के नामका उच्चारण करै तौ पापीभी निर्मल हो विष्णुलोकको चले जांयहैं ॥ ३८ ॥ जो श्रद्धापूर्वक क्रोधको जीत जितेन्द्रिय होय सुने हैं उनका तौ कहनाही क्याहै जो दयावान् होय श्रवण करें हैं वेभी मोक्ष पावें हैं ॥ ३९ ॥ कोई केवल भक्तिसे कथालापमें तत्पर होयहैं और संपूर्ण धर्मोंको त्याग देयहैं वे भी विष्णुके परमपदको

पावें हैं ॥ ४० ॥ जो कोई द्वेषादिसे अथवा भक्तिसे विष्णुकी उपासना करें हैं वे भी विष्णुलोकको चले जांयहैं जैसे प्राणोंके नाश करनेवाली पूतना मुक्त होयगई ॥ ४१ ॥ महात्माओंकी नित्य संगति वाग्विसर्ग और उनका आश्रय यह मुमुक्षु पुरुषोंको सदा कर्त्तव्यहै यही विधि वेदोक्त है ॥ ४२ ॥ यह वाग्विसर्ग जिसमें संपूर्ण पाप दूर होयजांयहैं भगवान्के भिन्न भिन्न यशसे अंकित जो अनेक नाम हैं उन्हें साधुमहात्मा श्रवण करें हैं गान करें हैं

द्वेषादिनाचभक्त्यावाकेचिद्विष्णुमुपासते ॥ तेपियांतिपरंधामपूतनेवासुहारिणी ॥ ४१ ॥ महद्भिःसंगतोनित्यंवाग्विसर्गस्तदाश्रयः ॥ मुमुक्षूणांचकर्तव्यःसविधिःश्रुतिचोदितः ॥ ४२ ॥ सवाग्विसर्गोजनताघविप्लवोयस्मिन्प्रतिश्लोकमबद्धवत्यपि ॥ नामान्यनंतस्यय शोंकितानियच्छृण्वंतिगायंतिगृणंतिसाधवः ॥ ४३ ॥ यःकष्टसेवांनचकांक्षतेविभुर्नवाधनंभूरिनरूपयौवने ॥ स्मृतःसकृद्वांछतिधा मभास्वरंकंवादयालुंशरणंव्रजेम ॥ ४४ ॥ तमेवशरणंयाहिनारायणमनामयम् ॥ भक्तवत्सलमव्यक्तंचेतोगम्यंदयानिधिम् ॥ ४५ ॥ कुरुसर्वानिमान्धर्मान्वैशाखोक्तान्महामते ॥ तेनतुष्टोजगन्नाथःशर्मतेचविधास्यति ॥ ४६ ॥

और मनन करें हैं ऐसी जो भगवान्की सेवाहै इसमें न कष्ट उठानेकी आवश्यकताहै न अधिक धन खर्च होयहै न भगवान् रूप और यौवनपर प्रसन्न होयहैं जिसके [illegible]णमात्रसे प्रकाशमय धाम मिलै है उस दयालु परमात्माकी हम शरणमें जांयहैं ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ उसी अनामय नारायणकी शरण जा य[illegible] भक्तवत्सल अव्यक्त मन करके गम्य और दयाके समुद्र हैं ॥ ४५ ॥ हे महामते ! वैशाखोक्त इन संपूर्ण धर्मोंको करौ इनसे जगदी

श्वर [illegible] प्रसन्न होयकर सब प्रकारसे तुह्मारा मंगल करेंगे ।। ४६ ।। ऐसे कह मुनीश्वर तौ चुप होयगये तब व्याधको देख विस्मित होय वह दिव्य पुरुष मुनीश्व[illegible]हने लगा।।४७।। दिव्य पुरुष बोला हे महाराज ! मैं धन्य हूं आपने कृपालु होय मेरे ऊपर बडा अनुग्रह कियाहै आपकी कृपासे और मेरे पूर्ण भाग्योद[illegible]से मेरी दुष्ट योनि जाती रही और उत्तम गति मिली ।। ४८ ।। ऐसे परिक्रमा देय आज्ञा मांग स्वर्गलोकको जाताहुआ हे राजन् !

इत्युक्त्वाविरराम[illegible]व्याधंदृष्ट्वासुविस्मितः ॥ सदिव्यःपुरुषःप्राहपुनस्तंमुनिपुंगवम् ॥ ४७ ॥ ॥ दिव्यपुरुषउवाच ॥ ॥ धन्योस्म्यनुगृहीतोस्मि[illegible]याशंखदयालुना ॥ दिष्ट्यागतामेदुर्योनिर्यामिचैवपरांगतिम् ॥ ४८ ॥ इतितंचपरिक्रम्यह्यनुज्ञातोदिवंययौ ॥ ततःसायमभूद्राजञ्छंखोव्याधेनतोषितः ॥ ४९ ॥ संध्यांसायंतनींकृत्वारात्रिशेषंनिनायच ॥ नानाख्यानैश्चभूपानांदेवानांचमहात्मनाम् ॥ ५० ॥ लीलाभिरवताराणांदृष्टगोष्टिभिरेवच ॥ ब्राह्मेमुहूर्तेचोत्थायपादौप्रक्षाल्यवाग्यतः ॥ ५१ ॥ ध्यायेच्चतारकंब्रह्मकृत्वाशौचादिसत्क्रियाम् ॥ वैशाखेमेषगेसूर्येस्नात्वाप्राक्चभगोदयात् ॥ ५२ ॥ कृत्वासंध्यादिकंकर्मतथासंतर्प्यचाखिलान् ॥व्याधमाहूयहृष्टात्मामूर्ध्निप्रोक्ष्यनिरीक्ष्यच ॥ ५३ ॥

तब सायंकाल होयगया और शंखमुनि व्याधसे संतुष्ट होय ।। ४९ ।। सायंकालकी संध्या कर राजा देवता और महात्माओंके अनेक इतिहास सुनाय तथा विष्णुभगवान्के अवतारोंकी देखी और सुनी कथा सुनाय रात्रिके शेष भागको व्यतीत कर ब्राह्म मुहूर्त्तमें उठ चरण धोय मौन साध ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ तारक ब्रह्मका ध्यान कर शौचादि क्रियाओंसे निश्चिन्त होय सूर्योदयसे पहिले स्नान कर ।।५२।। संध्यावन्दन कर सबका तर्पण कर प्रसन्न

मनसे व्याधको बुलाय उसके शिरपर प्रोक्षण कर देखके ॥ ५३ ॥ वेदसेभी अधिक शुभ फलदायक राम ये दो अक्षर देतेहुए विष्णुभगवान्का प्रत्येक नाम वेदसेभी अधिक शुभ फलदायक है॥५४॥ और ऐसे अनन्त नामोंसे अधिक विष्णुके सहस्रनाम हैं उन सहस्रनामोंसेभी अधिक रामनाम है॥५५॥ इससे हे व्याध ! तू निरन्तर इस रामनामका जप कर और हे व्याध ! मरणपर्यन्त इन धर्मोंको करता रह ॥ ५६ ॥ इससे तेरा जन्म वल्मीकऋषिके



रामेतिद्व्यक्षरंनामददौवेदाधिकंशुभम् ॥ विष्णोरेकैकनामापिसर्ववेदाधिकंमतम् ॥ ५४ ॥ तेभ्यश्चानंतनामभ्योधिकंनाम्नांसहस्रकम् ॥ तादृङ्नामसहस्रेणरामनामसमंमतम् ॥ ५५ ॥ तस्माद्रामेतितन्नामजपव्याधनिरंतरम् ॥ धर्मानेतान्कुरुव्याधयावदामरणांतिकम् ॥ ५६ ॥ ततस्तेभविताजन्मवल्मीकस्यऋषेःकुले ॥ वाल्मीकिरितिनाम्नाचभूमौख्यातिमवाप्स्यसि ॥ ५७ ॥ इतिव्याधंसमादिश्यप्रतस्थेदक्षिणांदिशम् ॥ व्याधोपितंपरिक्रम्यप्रणम्यचपुनःपुनः ॥ ५८ ॥ किंचिद्दूरानुगोभूत्वासरुदन्विरहातुरः ॥ यावद्दृष्टिपथंतावत्पश्यंस्तस्थातिंपुनः ॥ ५९ ॥ पुनार्निववृतेकृच्छ्रात्तमेवहृदिचिंतयन् ॥ वनंनिर्मायतन्मार्गेप्रपांकृत्वासुनिर्मलाम् ॥ ६० ॥

कुलमें होगया और तू वाल्मीकि इस नामसे लोकमें प्रसिद्ध होगया ॥ ५७ ॥ ऐसे व्याधको समझाय बुझाय आप दक्षिणदिशाको चले गये व्याधभी परिक्रमा दे[illegible]र नमस्कार कर ॥ ५८ ॥ थोडी दूरतक पीछे पीछे जाता हुआ फिर उनके वियोगमें हायहाय कर रोने लगा जब तक [illegible]स दीखता रहा तबतक शंखमुनिकी चालको देखता रहा ॥ ५९ ॥ फिर हृदयमें उन्हींका ध्यान करताहुआ कठिनतासे रुका और

वनको स्वच्छ कर उस मार्गमें प्याऊ लगाय ॥ ६० ॥ अत्यन्त योग्य इन वैशाखोक्त धर्मोंको करता रहा वनके कैंथ पनस जामन आम आदिके फल ॥ ६१ ॥ श्रमसे थके रस्तागीरोंको भोजन कराता रहा जूता चन्दन छत्री पंखा ॥ ६२ ॥ बालूके बिछोना और छाया आदिसे रस्तागीर जिनके पसीना आय रहे उनके श्रमको दूर करने लगा ॥ ६३ ॥ प्रातःकाल स्नानकर रातदिन नामका जप करै ऐसे व्याधके जन्मको पूर्ण कर

अतियोग्यानिमान्धर्मान्वैशाखोक्तांश्चकारह ॥ वन्यैःकपित्थपनसैर्जंबुचूतादिभिःफलैः ॥ ६१ ॥ मार्गगानांश्रमार्तानामाहारंपर्यकल्पयत् ॥ उपानद्भिश्चंदनैश्चछत्रैश्चव्यजनैरपि ॥ ६२ ॥ वालुकास्तरणोपेतच्छायाभिश्चक्वचित्क्वचित् ॥ आजहारचपांथानांश्रमंस्वेदोद्भवंतथा ॥ ६३ ॥ प्रातःस्नात्वादिवारात्रंजपन्रामेतिवैमनुम् ॥ व्याधजन्मनिनायासौवल्मीकस्यसुतोभवत् ॥६४॥ कृणुर्नाममुनिःकश्चित्तस्मिन्नेवसरोवरे ॥ तपोवैदुस्तरंतेपेबाह्यव्यापारवर्जितः ॥ ६५ ॥ वल्मीकमभवद्देहेतस्यकालेनभूयसा ॥ वाल्मीकइतितंप्राहुरतोवैमुनिपुंगवम् ॥ ६६ ॥ पश्चात्तपोविरामांतेकृणोस्मृतिपथंगते ॥ स्त्रियोविरावतोराजन्स्खलितंचेंद्रियंमुनेः ॥ ६७ ॥ जग्राहशैलूषीकाचित्तस्यांजज्ञेवनेचरः ॥ वाल्मीकिरितिविख्यातोभुवनेषुमहायशाः ॥ ६८ ॥ योवैरामकथांदिव्यांस्वैःप्रबंधैर्मनोहरैः ॥ लोकेप्रख्यापयामासकर्मबंधनिकृंतनीम् ॥ ६९ ॥

वल्मीकके घर जन्म लेता हुआ ॥ ६४ ॥ उसी सरोवरमें कृणु नाम कोई ऋषि दुस्तर तप करता था जिनने बाहरके सब काम छोड दीने ॥ ६५ ॥ उसके देहपर बहुत कालमें सर्पकी बांवी बनगई इसी हेतुसे उसे वाल्मीकऋषि कहने लगे ॥ ६६ ॥ पीछे तपके अन्तमें जब कृणुऋषिके कानमें

---

१ जग्राहचोरगीकाचिदितिवापाठः ।

स्त्रियोंके प्रिय शब्द सुनाई देने लगे तब तौ उनका चित्त चलायमान होताहुआ और एक भीलजातिकी स्त्रीकू लाय वाल्मीक नामक पुत्र उत्पन्न करते भये हे राजन् ! ये वाल्मीक संसारमें बडे यशस्वी और विख्यात होते भये इन्होंने मनोहर छन्दमें रामकथा रचकर संसारमें प्रसिद्ध करी यह रामकथा सब कर्मबंधनोंको काटनेहारी है ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ श्रुतदेवजी बोले वैशाखके माहात्म्यको देख थोडे देनेपर बहुत फलैहै ऐसेही व्याध जूताओंका दान करनेसे दुर्लभ ऋषि होता हुआ ॥ ७० ॥ जो कोई रोमोत्पादक इस पापनाशक आख्यानको सुनैगा और औरोंको सुनावैगा उसका जन्म

॥ श्रुतदेव उवाच ॥ पश्यवैशाखमाहात्म्यंभूपलब्ध्वपिभूरिदम्॥व्याधोप्युपानहौदत्वाऋषित्वंप्रापदुर्लभम् ॥ ७० ॥ यइदंपरमाख्यानं पापघ्नंरोमहर्षणम्॥ शृणुयाच्छ्रावयेद्वापिनभूयःस्तनपोभवेत् ॥ ७१ ॥ ॥ इतिश्रीस्कं०वै० नारदांबरीषसं० व्याधोपाख्यानेवाल्मीकेर्जन्मकथनंनामैकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ ॥ ॥ मैथिलउवाच ॥ ॥ काह्यस्मिंस्तिथयःपुण्यामासेवैशाखसंज्ञके ॥ कानिदानानिशस्तानितासुतासुविशेषतः ॥ कैःप्रख्याताश्चवैलोकेएतदाचक्ष्वविस्तरात् ॥ १ ॥ ॥ श्रुतदेवउवाच ॥ ॥ त्रिंशच्चतिथयःपुण्या वैशाखेमेषगेरवौ ॥ २ ॥

संसारमें फिर न होयगा॥७१॥इति श्रीस्कन्दपुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदांबरीषसंवादे व्याधोपाख्याने वाल्मीकेर्जन्मकथनंनाम एकविंशोऽध्यायः॥२१॥ मैथिल बोले इस वैशाखमासमें कौन कौनसी तिथीएं अत्यन्त पुण्यकारक हैं और उन तिथियोंमें कौनकौनसे दान विशेष करके उत्तमहैं और संसारमें ये किसने प्रख्यात की हैं यह सब विस्तारपूर्वक कहिये ॥ १ ॥ यह सुनके श्रुतदेवजी कहने लगे वैशाखमें मेषके सूर्यकी तीसों तिथि बडी उत्तमहैं ॥ २ ॥

एक एक तिथिमें जो दान किया जायहै उसका कोटि कोटि गुणित फल मिलैहै संपूर्ण दानोंका जो फलहै और संपूर्ण तीर्थोंके करनेसे जो फल मिलैहै ॥ ३ ॥ सोई फल एक एक तिथिमें स्नान दान तप होम देवपूजनादि कर्मोंसे प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥ कथाके श्रवण करनेसे भी तत्काल मुक्ति मिलैहै जो कोई रोग अथवा दरिद्रसे पीडित होय ॥ ५ ॥ सो भी इस पुण्यकथाको श्रवण कर कृतकृत्य होयजाताहै जो कोई विनादान किये वा विनास्नान किये

एकैकस्यांकृतंपुण्यंकोटिकोटिगुणंभवेत् ॥ सर्वदानेषुयत्पुण्यंसर्वतीर्थेषुयत्फलम् ॥ ३ ॥ तत्फलं समवाप्नोतिह्येकैकस्यांजलाप्लुतः ॥ स्नानंदानंतपोहोमोदेवतार्चनसत्क्रियाः ॥ ४ ॥ कथायाःश्रवणंचैवसद्योमुक्तिविधायकम् ॥ रोगाद्युपहतोयस्तुदरिद्रेणापिपीडितः ॥ ॥ ५ ॥ श्रुत्वाकथामिमांपुण्यां कृतकृत्योभवेन्नरः ॥ अस्नात्वाचाप्यदत्वाचयेननीताइमाःशुभाः ॥ ६ ॥ सगोघ्नश्चकृतघ्नश्चपितृघ्नश्चा महास्मृतः ॥ जलाशयाश्चस्वाधीनाःस्वाधीनंचकलेवरम् ॥ ७ ॥ माधवोमनसासेव्यःकालश्चसुगुणोत्तमः ॥ साधवश्च दयावंतःको नसेवेतमाधवम् ॥ ८ ॥ दरिद्रैश्चधनाढ्यैश्चपंगुभिश्चांधकैस्तथा ॥ षंढैश्चविधवाभिश्चनारीभिश्चनरैस्तथा ॥ ९ ॥ कुमारयुववृद्धैश्चरो गार्तैरपिभूमिप ॥ अतीवसुखसाध्योहिधर्मोवैशाखगोचरः ॥ १० ॥

किये इन तिथियोंको व्यतीत करै ॥ ६ ॥ वह गोघाती कृतघ्न पितृघाती और आत्मघातीहोयहैं जलाशय स्वाधीनहैं और देहभी स्वाधीन है ॥ ७ ॥ माधवभगवान् मन करके सेव्यहैं और यह काल सर्व गुणयुक्तहै और साधु दयावान् होतेहैं ऐसे अवसरमें माधवका अवश्य सेवन करना चाहिये ॥ ८ ॥ दरिद्री धनवान् लंगडा अंधा नपुंसक विधवा स्त्री ॥ ९ ॥ बालक वृद्ध युवा सबहीको इस माधवमासका सेवन कर्त्तव्यहै वैशाखोक्त

धर्म अत्यन्त सुखसाध्यहैं ॥ १० ॥ वैशाखमासको पाय कर इन सब शुभ धर्मोंको कर ऐसे समयको पाय कोन यत्न नहीं करैहै इससे शुभ और कुछ नहींहै ॥ ११ ॥ जो कोई नीच नर इन बहुतही सुलभ धर्मोंको नहीं करैहै उसको नरक सहजहीमें मिलजांयहै इसमें कोई संदेह नहींहै ॥ १२ ॥ हे राजन् ! जैसे दहीको मथकर माखन अलग कर लेंयहैं ऐसेही इस मासमेंसे उस तिथिको निकालकर वर्णन करूं हूं ॥ १३ ॥

मासमेनमनुप्राप्यधर्मान्कुरुइमाञ्छुभान् ॥ कोनयत्नंचकुरुतेतस्मात्कोन्वपरःशुभः ॥ ११ ॥ योतीवसुलभान्धर्मान्न करोतिनराधमः ॥ तस्यैवसुलभालोकानरकानात्रसंशयः ॥ १२ ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामितस्मिन्मासे नृपोत्तम ॥ तांतिथिंसर्वपापघ्नींदध्नःसारमिवोद्धृताम् ॥ १३ ॥ चैत्रेमासिमहापुण्येमेषसंस्थेदिवाकरे ॥ पापघ्नीपितृदैवत्यागयाकोटिफलप्रदा ॥ १४ ॥ अत्रैवश्रूयतेपुण्यापितृगाथापुरातनी ॥ नरकपितॄनुद्दिश्यसावर्णौ शासतिक्षितिम् ॥ १५ ॥ त्रिंशत्कलियुगस्यांतेसर्वधर्मविवर्जिते ॥ आनर्तेतुद्विजःकश्चिद्धर्मवर्णइतिश्रुतः ॥ १६ ॥ दृष्ट्वाकलियुगेघोरेजनान्पापरतान्मुनिः ॥ तस्यैवप्रथमेपादेवर्णधर्मविवर्जिते ॥ १७ ॥

चैत्रके महीनामें जब मेषकी संक्रान्ति होय उस समय पापनके नाश करनहारी जो अमावास्याहै सो कोटि गयाकरनेके फलको देयहै ॥ १४ ॥ यह एक पित्रीश्वरोंके संबंधकी पुरानी कहानी चली आवैहै कि जब पृथ्वीपर सावर्णि मन्वन्तरका राज्य था यह कथा नरक और पित्रीश्वरोंकी है ॥ १५ ॥ तीसवें कलियुगके अन्तमें जब संपूर्ण धर्म नष्ट होयगये उस समय आनर्त्त देशमें धर्मवर्ण नामका कोई ब्राह्मण हुआ ॥ १६ ॥ उसने इस घोर कलियुगमें

मनुष्योंको पापसे युक्त देखा उसी कलियुगके प्रथम पादमें जब सब मनुष्य अपने २ वर्णके धर्मोंसे रहित होयगये ॥ १७॥ तब एक दिन मुनी महात्माओंके सत्रयज्ञके दर्शनके निमित्त पुष्कर क्षेत्रमें जाते हुए ॥ १८ ॥ वहां ऋषि मुनि लोग शास्त्रविहित पुण्यवर्द्धक कथाओंका वर्णन कर रहे उनमेंसे कोई धृतव्रत कलियुगकी प्रशंसा करने लगे ॥ १९ ॥ कि सत्ययुगमें जो वरसभरमें माधव भगवान् प्रसन्न होय सो त्रेतामें एक मासमें और द्वापरमें एक पक्षहीमें होयहै

सकदाचित्सत्रयागेमुनीनांतुमहात्मनाम् ॥ अगमत्पुष्करेक्षेत्रेकुर्वतांमौनधारिणाम् ॥ १८ ॥ तत्रचासन्पुण्यकथाऋषीणांशास्त्रगोचराः ॥ तत्रकेचित्कालियुगंप्रशशंसुर्धृतव्रताः ॥१९॥ कृतेयद्वत्सरात्साध्यंपुण्यंमाधवतोषणम्॥ त्रेतायांमासतः साध्यं द्वापरेपक्षतोनृप ॥ २० ॥ तस्माद्दशगुणंपुण्यंकलौविष्णुस्मृतेर्भवेत् ॥ अत्यल्पमपिवैपुण्यंकलौकोटिगुणंभवेत् ॥ २१ ॥ दयापुण्यविहीनेतुदानधर्मविवर्जिते ॥ दयादानंनकुरुतेसकृदुच्चार्यवैहरिम् ॥ २२ ॥ सएवचोर्ध्वं गोनूनंदुर्भिक्षेचान्नदस्तथा ॥ एतत्प्रसंगावसरेनारदोभ्येत्यवैमुनिः ॥ २३ ॥ करेणैकेनशिश्नंचजिह्वां चैकेनवैहसन् ॥ प्रगृह्योन्मत्तवत्तत्रननर्तमुनिसत्तमः ॥ २४ ॥

॥२०॥उससे दसगुण पुण्य कलियुगमें विष्णुका स्मरण करनेसे होयहै कलियुगमें कृत थोडा पुण्यभी कोटिगुणित होयहै ॥२१॥ जो दया पुण्य दान धर्म कुछ नहीं करसकेहैं उनको केवल एक हरिनामका उच्चारणही करना उचितहै ॥ २२ ॥ जो कोई अकालमें अन्नदान करेहै वह वैकुंठको जायहै जब यह प्रसंग होय रहाथा तबही नारदमुनि आयकर एक हाथसे शिश्न और एक हाथसे जिह्वाको पकड खूब हंसने लगे और उन्मत्तकी तरह नाचने लगे ॥ २३ ॥२४॥

तव सब सभाके लोग कहने लगे हे नारद ! कहौ तौ सही यह क्या बातहै तब बुद्धिमान् नारद हंसते और नाचते कहनेलगे ॥ २५ ॥ नृत्य करते हुए भावितात्माओंने जो संतोषपूर्वक कहाहै उससे हम सिद्ध होय गये हैं निःसन्देह यह कलियुग पुण्यरूप आयाहै ॥२६॥ वह सत्यही है इसमें संदेह नहीं है यह बहुतही थोडे परिश्रमसे सिद्ध होयहै केशव भगवान् क्लेश नाश करनेवाले स्मरणमात्रहीसे प्रसन्न होंयहै॥२७॥ तथापि मैं तुमसे कहूं हूं हे पुत्रो! शिश्न

सभ्यास्तदातमित्यूचुःकिमेतदितिनारद ॥ प्रत्युवाचसतान्सर्वान्नृत्यन्नृत्यन्हसन्सुधीः ॥ २५ ॥ संतोषाद्यदिहप्रोक्तंनृत्यद्भिर्भावितात्मभिः ॥ सिद्धावयंनसंदेहः पुण्योयंकलिरागतः ॥ २६ ॥ तत्सत्यंनचसंदेहोबहुस्वल्पेनसाध्यते ॥ स्मरणात्तोषमायातिकेशवःक्लेशनाशनः ॥ २७ ॥ तथापिवःप्रवक्ष्यामिदुर्घटंचद्वयंध्रुवम् ॥ शिश्नस्यनिग्रहःपुत्राजिव्हायाअपिनित्यशः ॥ २८ ॥ द्वयंयस्यवशेभूयात्स एवस्याज्जनार्दनः ॥ भवद्भिर्नात्रस्थातव्यंतस्मात्कलियुगागमे ॥ २९ ॥ पाखंडभारतंहित्वासंचरध्वंयथासुखम् ॥ यत्रकुत्रापिदेशेषु मनोयत्रप्रसीदति ॥ ३० ॥ इतितद्वचनंश्रुत्वामुनयःशांसितव्रताः॥ सत्रंसमाप्यसहसाययुस्तेचयथासुखम् ॥ ३१ ॥

और जिह्वा इन दोका निग्रह करना बहुत कठिनहै ॥ २८ ॥ जिसके वशमें वे दोनों बातहैं वही जनार्दनके तुल्यहै अतएव कलियुगके आगमनमें आप लोगोंका ठहरना यहां उचित नहीं है॥२९॥ इस पाखंडमय भारतको छोडकर सुखपूर्वक अन्यत्र विचरौ जहां कहीं मन प्रसन्न होय ॥ ३० ॥ऐसे व्रत

धारण करनेवाले मुनि यह वचन सुन यज्ञको समाप्तकर शीघ्रही सुखपूर्वक चलेगये ॥ ३१ ॥ धर्मवर्णने भी यह सुन पृथ्वीके त्यागनेका विचार किया व्रतधारी तेजवान् दंड कमंडलु धारणकर जटा और छालके वस्त्र पहर मनमें आश्चर्य करता कलियुगमें अनाचारोंके देखनेके लिये जाताहुआ॥ ३२॥ ३३॥ वहां जाय क्या देखै है कि संपूर्ण मनुष्य घोर पापोंमें निमग्न हैं ब्राह्मण शूद्र और संन्यासी पाखंडी होय गये हैं ॥ ३४॥ भार्या अपने पतिसे विरोध रक्खै

धर्मवर्णोपितच्छ्रुत्वात्यक्तुंभूमिंमनोदधे ॥ सव्रतंचोर्ध्वतेजस्कंधृत्वादंडकमंडलू ॥२२॥ जटावल्कलधारीचभूत्वाचैवंययौ पुनः ॥ कलौ युगेत्वनाचारान्द्रष्टुं विस्मितमानसः ॥ २३ ॥ तत्रापश्यज्जनान्घोरान्पापाचाररतान्खलान् ॥ पाखंडिनोद्विजाःसर्वे शूद्राःप्रव्रजिन स्तथा ॥२४॥ भर्त्तारंद्वेष्टिभार्याचशिष्योद्वेष्टिगुरुंतथा ॥ भृत्यश्चस्वामिहंताचपुत्रःपितृवधेरतः ॥ २५ ॥ शूद्रप्रायाद्विजाःसर्वे बस्तप्रा याश्चधेनवः ॥ गाथाप्रायास्तथावेदाःक्रियासाम्याःशुभाः क्रियाः ॥ २६ ॥ भूतप्रेतपिशाचाद्याःफलदास्तत्रदेवताः ॥ ताएवश्रद्धयार्चं तिजनाःपापरताःखलाः ॥ २७ ॥ सर्वेव्यवायनिरतास्तदर्थेत्यक्तजीविताः ॥ कूटसाक्षिप्रवक्तारःसदाकैतवमानसाः ॥ २८ ॥

है शिष्य अपने गुरुसे द्रोह करै है सेवक स्वामीको और पुत्र पिताके मारनेमें तत्परहै ॥ ३५ ॥ सब ब्राह्मण शूद्रवत् होयगये हैं गौ बकरीके समान होयगई हैं वेद कहानीके समानहैं वेदविहित कर्म साधारण काम होयगये हैं ॥ ३६ ॥ भत प्रेत पिशाचादि प्रत्यक्ष देवताओंका रूप धारणकर फल दे रहे है और पापी मनुष्य श्रद्धापूर्वक इन्हीका पूजन करें हैं ॥ ३७ ॥ संपूर्ण कुकर्ममें निरतहैं और कुकर्महीमें अपने प्राण त्याग देयहैं झूंठी गवाही देंय

हैं मनमें सदा कपट रक्खैं हैं ॥३८॥ कलियुगमें मनमें एक विचारहै वाणीमें एकहै कर्ममें एकहै ऐसे सबकी पाखंडमयी विद्याही राजभवनमें प्रतिष्ठा पावै है नृत्य गीतादि कला राजओंको प्रिय लगे हैं अधम और नीच पूज्य होयगये हैं उत्तम मनुष्य अधम होयगये हैं ॥ ३९ ॥ ४० ॥ कलियुगमें वेद पाठी ब्राह्मण दरिद्री होयगये हैं मनुष्योंके हृदयमेंसे विष्णुकी भक्ति जाती रही है ॥ ४१ ॥ यह पुण्य क्षेत्र प्रायः पाखंडसे भरगई है शूद्र धर्मका उपदेश

मनस्येकंवचस्येकंकर्मण्येकंसदाकलौ ॥ सर्वेषांहैतुकीविद्यासापूज्यानृपमंदिरे ॥ ३९ ॥ गीताद्याश्चकलाविद्यानृपाणांचप्रियावहाः ॥ हीनाश्चपूज्यतांयांतिनोत्तमाश्चकलौयुगे ॥ ४० ॥ श्रोत्रियाश्चद्विजाःसर्वेदरिद्राःस्युःकलौयुगे ॥ विष्णुभक्तिर्नराणांतुप्रायशोनैववर्तते ॥ ४१ ॥ प्रायःपाखंडभूयिष्ठंपुण्यक्षेत्रंभविष्यति ॥ शूद्राधर्मप्रवक्तारोजटिलास्तापसाःकलौ ॥ ४२ ॥ सर्वेचाल्पायुषोमर्त्यादयाहीनाःशठाजनाः ॥ सर्वेधर्मप्रवक्तारःसर्वेचैवहतोत्सवाः ॥ ४३ ॥ स्वार्चनंचापिहीच्छंतिवृथानिंदापरायणाः ॥ असूयानिरताःसर्वेपरेप्रभौगृहंगते ॥ ४४ ॥ भ्राताचभगिनींगंतापितापुत्रींचवैकलौ ॥ सर्वेपिशूद्रीनिरताः सर्वेवारांगनारताः ॥ ४५ ॥

करें हैं और जिनने जटा बढाय लीनी हैं वेही तपस्वी हैं ॥ ४२ ॥ संपूर्ण मनुष्य अल्पायु दयाहीन और शठ होयगये हैं सबही धर्मोपदेशक बनगये हैं सबही उत्साहहीन हैं ॥ ४३ ॥ पराई वृथा निन्दा करकरके अपनीही पूजाकी इच्छा करें हैं अपने मालिकके घर चले जानेपर उसकी निन्दा करें हैं ॥ ४४ ॥ इस कलियुगमें भ्राता भगिनीसे और पिता पुत्रीसे संगम करें हैं सब मनुष्य शूद्रा और वेश्याओंमें निरत रहें हैं ॥ ४५ ॥

साधुमहात्माओंकी अवज्ञा करें हैं बडे बडे पापियोंका सत्कार करें हैं और साधुओंमें एक भी दोष होय तौ उसेः प्रकट करें हैं ॥ ४६ ॥ पापियोंके दोषोंको गुण समझकर उनका वर्णन करें हैं और निर्गुणी लोग इस कलियुगमें केवल दोषहीको ग्रहण करते हैं जैसे स्तनमें लगी हुई जीक केवल रुधिपानही करै है सब ओषधी सत्वहीन होयगई हैं ऋतुओंमें विपरीतता आयगई है ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ सब राज्यभरमें घोर दुर्भिक्ष पडे हैं

साधून्नैवावजानंतिबहुपापांश्चमन्वते ॥ व्यक्तीकुर्वंतिसाधूनांदोषमेक दुराग्रहाः ॥ ४६ ॥ पापानांदोषजातानिगुणत्वेनवदंतिहि ॥ दोषमेवप्रगृह्णंतिकलौतुविगुणाजनाः ॥ ४७ ॥ जलूकःस्तनसंयुक्तोरक्तं पिबतिनोपयः ॥ ओषध्यःसत्त्वहीनाहिऋतूनांव्यत्ययस्तथा ॥ ४८ ॥ दुर्भिक्षंसर्वराष्ट्रेषुकन्याकालेनसूयते ॥ नटनर्तकविद्यासुप्रीतिमंतोनराःकलौ ॥ ४९ ॥ वेदवेदांतविद्यासुनिरतायेगुणाधिकाः ॥ भृत्यान्पश्यंतितान्मूढास्तेभ्रष्टाश्चाखिलाशिषः ॥ ५० ॥ त्यक्तश्राद्धक्रियाःसर्वेत्यक्तवेदोदितक्रियाः ॥ जिह्वायांविष्णुनामानिनवर्ततेकदाचन ॥ ५१ ॥ शृंगाररसनिर्वाणास्तद्गीतान्येवतेजगुः ॥ नविष्णुसेवानचशास्त्रवार्तानयोगदीक्षानविचारलेशः॥ ५२ ॥

कन्याके गर्भंकी उत्पत्ति होयहै कलियुगमें सब मनुष्य नट और नर्तकोंमें अनुराग करे हैं ॥ ४९ ॥ जो वेद और वेदान्तके वेत्ताहैं उन्हें मूढ लोक सेवक मानेंहैं ऐसे ये मूढ सब आचरादिसे भ्रष्ट होयगयेहैं ॥ ५० ॥ श्राद्धादिक सब कर्म और वेदोक्त सब कर्म परित्याग करदियेहैं जिनकी जिह्वापर विष्णुका नाम कभी नहीं आवैहै ॥ ५१ ॥ सदा शृंगाररसमें मग्न रहेंहैं और वैसेही गीत गावैंहै जिनके न विष्णुकी सेवाहै न शास्त्रकी चर्चाहै न

योगकी दीक्षाहै और विचारका तौ लेशमात्रभी नहींहै ॥ ५२ ॥ न तीर्थयात्राहै न दान धर्महै ऐसे कलियुगकी मनुष्याकी विचित्र दशा देख धर्मवर्णभी बहुत भयभीत और शंकित होताहुआ ॥ ५३ ॥ वंशको पापसे क्षीण होता देख द्वीपांतरमें जाय संपूर्ण लोकोंमें विचरता आश्चर्यसे युक्त पितृ लोकको जाताहुआ वहां जाय बडे बडे घोर कर्मोंद्वारा भ्रमणकरते हुए दौडते रोते और गिरते हुए तथा अंधकूपमें पडे हुए अपनेही पितृगण देखे ॥ ५४ ॥

नतीर्थयात्रानचदानधर्माःकलौजनेक्वापिबभूवचित्रम् ॥ तान्दृष्ट्वाधर्मवर्णोपिसुभीतोत्यंतविस्मितः ॥ ५३ ॥ वंशंपापात्क्षयंयातंदृष्ट्वा द्वीपांतरंययौ ॥ संचरन्सर्वद्वीपेषुलोकेष्वेवतुसर्वशः ॥ ५४ ॥ पितृलोकंययौधीमान्कदाचित्कौतुकान्वितः ॥ तत्रापश्यन्महाघोरा न्भ्राम्यमाणांश्चकर्मभिः ॥ ५५ ॥ धावतोरुदमानांश्चपततःपातितानपि ॥ तत्रापश्यच्चांधकूपेपतितान्स्वान्पितॄनधः ॥ ५६ ॥ दूर्वा ग्रलंबिनोदीनान्दूर्वाच्छेदेहिशंकिता॥ तदाखुःखादयत्यद्धाद्दूर्वामूलंतदाश्रयम् ॥५७ ॥ तेनभागत्रयंचात्तमेकोभागोवशेषितः ॥ तं दृष्ट्वाते क्षीयमाणंमूलंदुःखेनकर्शिताः ॥५८॥ अधोदृष्ट्वाचांधकूपंतटपातादिभीषणम् ॥ दुरुत्तारंमहाघोरंकर्मणातंसुदुःखिताः ॥ ५९॥

॥५५॥५६॥कोई तौ ऐसेहैं जो एक दूबके सहारे खडेहैं और दूबके उखडने अथवा टूटनेसे शंकित होयरहेहैं और उनके आश्रय भूत उस दूबकी जडको मूषक कुतरैहै:॥५७॥ उस दूबके तीन भाग तौ मूसेने कुतर गेरेहैं एक बाकीहै उसे देख वे दुःखसे कर्षितहोयरहेहैं ॥५८॥ नीचे अंधकूपमें कोई पडेहैं यह

अत्यन्त भयंकरहै दुर्गम और महा घोरहै जिसमें कर्मसे अभिभूत दुःखी होयके पडेहैं ॥ ५९ ॥ यह कूप आगेकी ओर दुर्गमहै जिसमें किसी प्रकारका अवलंब नहींहै उन्हें देख बहुत विस्मित हुआ और दयालु होय यह वाक्य बोला ॥ ६० ॥ तुम कौन हौं तुमने ऐसे कौनसे घोर दुष्कर्म कियेहैं जिनसे तुम यहां पडे हो तुम कौनसे गोत्रमें उत्पन्न हो और तुह्मारी मुक्ति कसे होयगी ॥ ६१ ॥ यह तुम सब मेरे सामने कहो तुम्है आजही कल्याण मिलैगा ऐसे

अग्रेचापिदुरुत्तारमवलंबविवर्जितम् ॥ तान्दृष्ट्वाविस्मितोभूत्वादयालुर्वाक्यमब्रवीत् ॥ ६० ॥ केयूयंपतिताह्यस्मिन्केनदुस्तरकर्मणा ॥ कस्यगोत्रेसमुत्पन्नाःकथंवोमुक्तिरूर्जिता ॥ ६१ ॥ एतद्यूयंवदध्वंमेशर्मवोद्यभविष्यति ॥ इत्येवमुदितास्तेनपितरोथसुदुःखिताः ॥ तमूचुःकरुणांवाचंधर्मश्रुतिपुरःसराः ॥६२॥ ॥ पितरऊचुः॥ ॥ वयंश्रीवत्सगोत्रीयाभुविसंतानवर्जिताः ॥ ६३ ॥ पिंडश्राद्धविहीनाश्चतेनपच्यामहेवयम् ॥ निःसंतानोपिनोवंशोजातःपापैःकलौयुगे ॥ ६४ ॥ नास्माकंपिंडदश्चास्तिवंशेपापात्क्षयंगते ॥ तेनांधकूपेपतनंनिस्तंतूनांदुरात्मनाम् ॥६५॥ एकोहिवर्ततेवंशेधर्मवर्णोमहायशाः ॥ सविरक्तश्चरन्नेकोनगार्हस्थ्यमुपेयिवान् ॥६६॥

उसके वाक्यको सुन दुःखसे व्याकुल पित्रीश्वर प्रसन्न हो धर्म और वेदको आगेकर दीनवाणीसे कहने लगे हम श्रीवत्स गोत्री हैं हमारे संतान नहीं उससे कोई हमारे पिंडदान और श्राद्धादिक नहीं करैहैं इससे हम यह दुःख भोगरहेहैं और कलियुगमें पपोंके कारण हमारा वंश निःसंतान हुआ ॥६२॥६३॥ ॥६४॥ हमारा वंश पापसे क्षीणहै सो हमारे लिये कोई पिंड देनेवाला नहींहै इसीसे हम दुरात्मा अंधकूपमें पडे हैं ॥६५॥ हमारे कुलमें एक धर्मवर्णही

बडा यशस्वीहै वह सबको छोड छाड अकेलाही विचरैहै उसने गृहस्थाई नहा करी ॥ ६६ ॥ वही दूर्वाका तंतुरूपहै जिसे पकडकर हम लटक रहे हैं वह तंतुहीनहै इसीसे उसकी जडको चूहा नित्य भक्षण करैहै॥६७॥वह एकही शेष रहाहै इसीसे थोडीसी जड बचीहै सो देखौ उसेभी मूषक भक्षण करैहै॥६८॥ धर्मवर्णकी आयुके क्षीण होनेपर दूर्वाके शेषभागको मूषक भक्षण करलेगा और हम अंधतम इस दुर्गम कूपमें गिर पडेंगे ॥ ६९ ॥ इससे हे तात !

तंतुनातेनबध्रामोदूर्वानालावलंबिताः ॥ निस्तंतुत्वाच्चतन्मूलमाखुःखादतिप्रत्यहम् ॥ ६७ ॥ एकस्यैवावशिष्टत्वात्किंचिन्मूलावशेषितः ॥ आखुनाखाद्यमानश्चवर्ततेसौम्यपश्यताम् ॥ ६८ ॥ तस्यचायुःक्षयेतातशेषमाखुर्हरिष्यति ॥ पश्चात्कूपेपतिष्यामोदुरुत्तारेंधतामसे ॥ ६९ ॥ तस्मात्त्वंचभुवंगत्वाधर्मवर्णंप्रबोधय ॥ अस्मद्वाक्यैर्दयापात्रैर्गार्हस्थ्येविमुखंमुनिम् ॥ ७० ॥ पितरस्तेभृशार्ताहिनरकेपतितामया ॥ अंधकूपेदुरुत्तारेदृष्टादूर्वावलंबिताः ॥ ७१ ॥ सादूर्वावंशरूपाहितन्मूलंसततंमुने ॥ कालाख्योमूषकस्तस्यमूलंखादतिप्रत्यहम् ॥ ७२ ॥ वंशनाशोनुक्रमतएकस्त्वंत्ववशेषितः ॥ तेनमूलस्यदूर्वायानष्टभागत्रयंमुने ॥ ७३ ॥

तू पृथ्वीमें जाय धर्मवर्णको समझाओ गृहस्थाईसे विमुख उस मुनिको हमारी दीनता दिखायके समझाओ कि ॥ ७० ॥ दुःखसे पीडित तेरे पित्रीश्वर दुर्गम अंधकूप नरकमें पडे मैंने देखेहैं केवल एक दूबके सहारे लटक रहेहैं ॥ ७१ ॥ हे मुने ! यह वंशरूपी दूबहै इसकी जडको कालरूपी मूषक प्रतिदिन भक्षण करैहै ॥ ७२ ॥ ऐसेही क्रमसे सब वंश क्षीण होयगयाहै केवल तूही एक शेषहै इससे इस दूबके तीन भाग नष्ट होयगयेहैं ॥ ७३ ॥

केवल जो तू पृथ्वीपर बचाहै सो एकही भाग शेष रहाहै उससेभी थोडा थोडा प्रतिदिन चूहा भक्षण करैहै सोई तेरी आयु प्रतिदिन क्षीण होयहै ॥७४॥ तेरे मरनेपर और संतानके क्षीण होनेपर हम और तू सब अंधतामिस्र कूपमें पडेंगे ॥ ७५ ॥ इस लिये गृहस्थाई ग्रहण करके संतानको बढाओ इसीसे तुझको और हमको ऊर्ध्वगति प्राप्त होयगी॥७६॥ बहुतसे पुत्रोंके लिये यजन करना चाहिये यदि उनमेंसे कोई भी गयाको जाय अथवा अश्वमेध यज्ञ

एकोभागोवशिष्टोत्रयत्तस्त्वंवर्तसेभुवि ॥ किंचित्खादतिवैत्वाखुस्तवचायुःक्षयःक्रमात् ॥ ७४ ॥ परेतेत्वयिचास्माकंतवापिपतनंभवेत् ॥ कूपएवांधतामिस्रेसंतानेपिक्षयंगते ॥ ७५ ॥ तस्माद्गार्हस्थ्यमासाद्यकुरुसंततिवर्द्धनम् ॥ तेनास्माकंतवापिस्याद्गतिरूर्ध्वानसंशयः ॥ ७६ ॥ एष्टव्याबहवःपुत्रायद्येकोपिगयांव्रजेत् ॥ यजेतवाश्वमेधेननीलंवावृषमुत्सृजेत् ॥ ७७ ॥ यद्येकोपिचवैशाखेमाघेवाकार्तिकेपिवा ॥ अस्मानुद्दिश्यवैस्नानंश्राद्धंदानंकरिष्यति ॥ ७८ ॥ तेनचोर्ध्वगतिर्भूयान्नरकादुद्धृतिश्चनः ॥ एकोवाविष्णुभक्तःस्यादेकःस्याद्धरिवासरी ॥७९॥ एकोवाशृणुयाद्विष्णोःकथांपापविनाशिनीम् ॥ तस्यांतीतंकुलशतंभाविचापिकुलंशतम् ॥ ८० ॥ अपिपापवृतंक्कापिनरकंनैवपश्यति ॥ किमन्यैर्बहुभिःपुत्रैर्दयाधर्मविवर्जितैः ॥ ८१ ॥

करै अथवा नीलवर्णका सांड छोडै ॥ ७७ ॥ यदि कोई भी वैशाख माघ वा कार्तिकमें हमारे निमित्त स्नान श्राद्ध वा दान करै तौ ॥ ७८ ॥ निश्चयही हमें ऊर्ध्व गति मिलैगी और नरकोंसे उद्धार होयगा कोई एक भी विष्णुभक्त होय अथवा कोई एक भी एकादशी व्रत करै वा पापोंके नाश करनेहारी विष्णुकी कथा श्रवण करै तौ उसकी सौ बीती हुई पीढी और सौ पीढी आगेकी जो पापाचारी होय तौ भी नरकके दर्शन नहीं करैगी दया और धर्मसे हीन

बहुतसे पुत्रोंके होनेसे क्याहै ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥जो कुलमें उत्पन्न होयकर विष्णुभगवान्की पूजा नहीं करें हैं उन पुत्रहीनोंको यह लोक कुछ भी नहीं है ॥ ८२ ॥ इसमें भी दयायुक्त संतान दुर्लभ है सो तुम ऐसे ऐसे सत्य वाक्योंसे समझायकर विरक्त और ऊर्ध्वरेता धर्मवर्णको समझायकर गृहस्थ धर्ममें प्रवृत्त करौ ॥ ८३ ॥ ऐसे पित्रीश्वरोंके वाक्य सुन धर्मवर्ण बडे अचंभेमें आया ॥ ८४ ॥ तब तौ धर्मवर्ण कांपने लगा और रोताहुआ हाथ जोड

येजीवानार्चयंत्यद्धाविष्णुंनारायणंकुले॥ नापुत्रस्यहिलोकोस्तिसर्वमेतज्जनाविदुः ॥ ८२ ॥ तत्रापिचदयायुक्तंतत्संतानंचदुर्लभम् ॥ इतितंबोधयित्वातुवाक्यैरेतैश्चसूनृतैः ॥ ८३॥ विरक्तस्योर्ध्वरेतस्यगार्हस्थ्येत्वंमतिंकुरु ॥ पितॄणांवचनंश्रुत्वाधर्मवर्णोतिविस्मितः ॥ ॥ ८४ ॥ प्रणम्यप्रांजलिःप्राहरुदन्वैजातवेपथुः ॥नाम्नाहंधर्मवर्णश्चयुष्मद्वंश्योदुराग्रही ॥८५॥ सत्रेश्रुत्वातुवचनंनारदस्यमहात्मनः ॥ जिह्वादार्ढ्यंगुह्यदार्ढ्यंनकस्यापिकलौयुगे ॥ ८६ ॥ दृष्ट्वाभुविचपापिष्ठांस्तान्जनानपिशंकितः ॥ भीतो दुर्जनसंगत्याचरन्द्वीपांतरेव सन् ॥ ८७ ॥ पादास्त्रयोगताह्यस्यकलेःपादेंतिमेपिच ॥ गताःसार्द्धत्रयोभागाइदानीं जनकाइमे ॥ ८८॥ नाहंवेद्मिभवद्दुःखंवृथाज न्मगतंमम ॥ यस्मिन्कुलेत्वहंजातऋणंपित्रोर्नवैहतम् ॥ ८९ ॥

नमस्कारकर कहनेलगा हे महाराज ! मैं ही दुराग्रही तुह्मारा वंशधर धर्मवर्ण हूं ॥ ८५ ॥ यज्ञमें नारद महात्माके वचन सुने कि कलियुगमें किसीकी भी जिह्वा और शिश्न वशमें नहीं रहै ॥ ८६ ॥ और पृथ्वीमें बहुतसे पापी मनुष्योंको देख दुर्जनोंकी संगतिके डरके मारे द्वीपांतरमें विचरताहुआ ॥ ८७ ॥ सो तीन पाद तौ व्यतीत होयगये और इस कलिके अंतिम पादमें भी हे पितरो ! साढेतीन भाग व्यतीत होयगये ॥ ८८ ॥ अबतक मैंने

अपका क्लेश नहीं जाना सो मेरा जन्म वृथाही गया जिस कुलमें उत्पन्न हुआ और पित्रीश्वरोंका ऋण दूर नहीं हुआ॥ ८९॥ तौ पृथ्वीके भाररूप अन्नके शत्रु मेरे जन्मसे क्या हुआ और जो विष्णु पित्रीश्वर देवता ऋषियोंका पूजन नहीं करै तौ उसका जन्म लेना वृथा है ॥ ९० ॥ मैं आपकी आज्ञा पालन करूंगा परन्तु यह आज्ञा करौ कि पृथ्वीमें संसारी कर्त्तव्योंके करनेपर भी मुझे कलियुगकी बाधा न होय जब बुद्धिमान् धर्मवर्णने यह कही तब

किंतेनजातमात्रेणभूभारेणान्नशत्रुणा ॥ योजातोनार्चयेद्विष्णुंपितॄन्देवानृषींस्तथा ॥ ९० ॥ युष्मदाज्ञांकरिष्यामिमामाज्ञापयत क्षितौ ॥ यथानकलिबाधास्यात्तत्रसंसारतोपिवा ॥ ९१ ॥ कर्तव्यान्यपिकृत्यानिमयापुत्रेणभूतले ॥ इत्युक्तास्तेनवंश्येनधर्मवर्णे नधीमता ॥ ९२ ॥ किंचिदाश्वस्तमनसइदमूचुर्महीपते ॥ पुत्रपश्यदशामेतांपितॄणांतेमहात्मनाम् ॥ ९३ ॥ संतत्यभावात्पततांदूर्वा मात्रावलंबिनाम् ॥ त्वंगार्हस्थ्यमुपालभ्यसंतत्यास्मान्समुद्धर ॥ ९४ ॥ येचविष्णुकथारक्तायेस्मरंत्यनिशंहरिम् ॥ येसदाचारनिर तानतान्वैबाधतेकलिः ॥ ९५ ॥

॥ ९१ ॥ ९२ ॥ हे राजन् ! कुछ मनमें संतोषकर पित्रीश्वर बोले—हे पुत्र ! तू अपने महात्मा पितरकी यह दशा देख ॥ ९३ ॥ कि संतानके अभावसे गिर रहेहैं केवल एक दूबके सहारेसे ठहर रहे हैं सोई तू गृहस्थ धर्ममें प्रवृत्त होय संतान उत्पन्न करके हमारा उद्धार कर ॥ ९४ ॥ जो विष्णुकथामें तत्परहैं और रात्रिदिन हरिस्मरण करें और सदाचारमें निरतहैं उनको कलियुग बाधा नहीं पहुँचावैहै ॥ ९५ ॥

हे मानद ! जिसके घरमें शालिग्रामकी मूर्तिहै अथवा भारतहै उसे कलियुग बाधा नहीं पहुँचावै है ॥ ९६ ॥ जिसके उदरमें विष्णुभगवान्के निवेदन किया हुआ अन्न वर्त्तमान है और कानमें तुलसीपत्र है उसे कलियुग बाधा नहीं पहुंचावै है ॥ ९७ ॥ जिसके हाथमें तुलसीकी मालाहै हाथमें पवित्रहै और जिसकी जिह्वापर हरिनामहै उसे कलियुग बाधा नहीं पहुंचावै है ॥ ९८ ॥ जो वैशाख और माघमें स्नान करै



शालिग्रामशिलायस्यगृहेतिष्ठतिमानद ॥अथवाभारतंगेहेनतंवैबाधतेकलिः ॥ ९६ ॥ विष्णोर्निवेदितान्नंचवर्ततेयस्यचोदरे ॥ कर्णे वातुलसीपत्रंनतंवै० ॥ ९७ ॥ यत्करेतुलसीमालायद्धस्तेचपवित्रकम् ॥ यज्जिह्वायांहरेर्नामनतंवै० ॥ ९८ ॥ यश्चवैशाखनिरतो माघस्नानपरश्चयः ॥ कार्तिकेदीपदातायोनतंवै० ॥ ९९ ॥ प्रत्यहंशृणुयाद्यस्तुकथांविष्णोर्महात्मनः ॥ पापघ्नींमोक्षदांदिव्यांनतंवै० ॥ १०० ॥ यद्गृहेवैश्वदेवश्चयद्गृहेतुलसीशुभा ॥ यदंगणेशुभागौश्चनतंवै० ॥ १ ॥ तस्मान्मावसपुत्रत्वंयुगेपापात्मकेपिच ॥ शीघ्रं गच्छभुवंपुत्रमासोयंमाधवाह्वयः ॥ २ ॥

है कार्तिकमें दीपक जोडे है उसे कलियुग बाधा नहीं पहुंचावै है ॥ ९९ ॥ जो विष्णुभगवान्की कथा नित्यप्रति सुने है कैसी कथाहै पाप नाशिनी मोक्षकी देनेहारी और दिव्यहै उसे कलियुग बाधा नहीं पहुंचावै है ॥ १०० ॥ जिसके घरमें वैश्वदेवहोताहै सुन्दर तुलसी है जिसके आंगनमें शुभगौ है उसे कलियुग बाधा नहीं पहुंचावै है ॥ १०१ ॥ हे पुत्र ! इसलिये तू पापात्मक युगमें भी निवास मत करै तू शीघ्र घर जा; यह माधवमा

सहै॥१०२॥सबके उपकारके निमित्त मेषकी संक्रान्तिकी ये तीस तिथिहैं ये बडी उत्तम हैं और इनमें जो पुण्य कियाहै उनका फलभी बहुत मिलैहै॥३॥ एक एक तिथिमें जो पुण्य कियाजाय उसको करोड गुणा फल मिलैहै ॥ इनमेंभी चैत्रकी अमावास्या तो साक्षात् मुक्तिकी दाताहै ॥ ४ ॥ पितृगण और देवताओंकी प्यारी तत्काल मुक्तिकी देनहारीहै इस दिन जो पित्रीश्वरोंके निमित्त श्राद्धादिक करेंहैं ॥ ५ ॥ जलका घडा वा पिंडदान करें उन्हे

सर्वेषामुपकारायमेषसंस्थेदिवाकरे ॥ त्रिंशच्चतिथयःपुण्यामहापुण्यप्रदायकाः॥ ३॥ एकैकस्यांकृतंपुण्यंकोटिकोटिगुणंभवेत् ॥ तत्रा पिचैत्रबहुलोदर्शोनॄणांचमुक्तिदः ॥ ४ ॥ प्रियश्चपितृदेवानांसद्योमुक्तिविधायकः ॥ येवैपितॄन्समुद्दिश्यश्राद्धंकुर्वंतितद्दिने ॥ ५ ॥ सोदकुंभंपिंडदानंतदक्षय्यफलंभवेत् ॥ येचकुर्वंतिवैश्राद्धममायांचमधौसुत ॥ ६ ॥ तैःकृतंतुगयाक्षेत्रेश्राद्धंकोटिगुणंभवेत् ॥ यदिश्रा द्धंमधौदर्शेशाकेनापिकरोतिच ॥ ७ ॥ कोटिश्राद्धंगयायांतुकृतंतेननसंशयः ॥ कुंभंचपानकैःपूर्णंकर्पूरागरुवासितम् ॥ ८ ॥ योनदद्यान्मधौदर्शेसपितृघ्नोनसंशयः ॥ योदद्याच्चमधौदर्शेसपानीयंकरीरकम् ॥ ९ ॥

अक्षय फल मिलैहै जो चैत्रमासमें गयामें जाय श्राद्ध करेंहैं वह श्राद्ध करोड श्राद्धके समान होयहै जो मधुमासकी अमावास्याके दिन शाकसेभी श्राद्ध करैं हैं उनको गयामें कोट श्राद्ध करनेका फल मिलैहै इसमें संदेह नहींहै जलसे पूर्ण घट जिसमें कपूर और अगरुकी वासना होय॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ऐसे घटका दान जो मधुमासकी अमावास्याको न करै वह पितृघातीहै इसमें संदेह नहींहै जो मधुमासमें पानीसहित करीरका दान करै ॥ ९ ॥

और भक्तिपूर्वक श्राद्ध करै तो वह अपने कुलका उद्धार करताहै तब पितृलोकमें कुंभदानसे अमृतवर्षिणी नदी वहतीहै जो श्राद्धदानके देनहारी है अन्न, दाल, घृत, अपूप, लेह्य, खीर आदिका प्रसार करैहै ॥ ११० ॥ ११ ॥ अतएव तू अमावास्या होनेसे पहिले शीघ्र जा और श्राद्ध पिंडदान तथा घटदान कर ॥ १२ ॥ और सबके उपकारके निमित्त गृहस्थाईका सेवन कर फिर धर्म अर्थ और कामसे संतुष्ट होय उत्तम संतान पाय फिर

श्राद्धंचभक्तिसंयुक्तःकुरुतेचकुलोद्धृतिम् ॥ पितॄणांचतदालोकेनदीचामृतवर्षिणी ॥ ११० ॥ कुंभदानात्प्रसरतिश्राद्धदानादिदायिनी ॥ अन्नसूपघृतापूपलेह्यपायसकर्दमान् ॥ ११ ॥ तस्माज्झटितित्वंगच्छयदाचामाभविष्यति ॥ कुरुश्राद्धंपिंडदानंसोदकुंभंमहामते ॥ १२ ॥ सर्वेषामुपकारायगार्हस्थ्यंचसमाश्रय ॥ धर्मार्थकामैःसंतुष्टःप्राप्यसंतानमुत्तमम् ॥ १३ ॥ पुनश्चमुनिवृत्तिस्त्वंसुखंद्वीपेसुसंचर ॥ इत्यादिष्टःपितृभिश्चतूर्णंभूमिंययौमुनिः ॥ १४ ॥ चैत्रेमासिमेषसंस्थेपुण्येतस्मिन्दिवाकरे ॥ प्रातःस्नात्वाचसंतर्प्यपितॄन्देवानृषींस्तथा ॥ १५ ॥ सोदकुंभंतथाश्राद्धंकृत्वापापविनाशनम् ॥ तेनदत्वापितॄणांचमुक्तिमावृत्तिवर्जिताम् ॥ १६ ॥

मुनिकी वृत्ति धारणकर सुखपूर्वक द्वीपमें विचरौ जब पित्रीश्वरोंने ऐसे आज्ञा करी तब वह धर्मवर्ण शीघ्रही पृथ्वीमें आताहुआ ॥ १३ ॥ १४ ॥ चैत्रमासमें मेषकी संक्रान्तिके दिन प्रातः काल स्नानकर पित्रीश्वर देवता और ऋषियोंका तर्पण कर ॥ १५ ॥ उदकुंभसहित पापका नाश करनेवाला

श्राद्धकरके अपने पितृवर्गको ऐसी मुक्ति देताहुआ जिससे आवागमन छूटजाय॥ १६ ॥ फिर अपना विवाह किया जिससे सुंदर संतान हुई और संसारमें उस पापनाशिनी तिथिको प्रख्यात करता हुआ ॥ १७ ॥ फिर आप प्रसन्न होय गंधमादनपर जाता हुआ इसीसे यह मधुमासकी अमावास्या बडी शुभ है ॥ १८ ॥ इसकेसमान संसारमें कोई तिथि न देखी गईहै न सुनी गई है ॥ ११९ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदाम्बरीषसंवादे

स्वयंविवाहमकरोत्संततिंप्राप्यवैसतीम् ॥ लोकेप्रख्यापयामासतांतिथिंपापनाशिनीम् ॥ १७ ॥ स्वयंपुनर्मुदाभक्त्यागंधमादनमा ययौ ॥ तस्मात्पुण्यतमश्चैषमधोर्दर्शःशुभावहः ॥ १८ ॥ नानेनसदृशीलोकेतिथिर्दृष्टाश्रुतापिवा ॥ ११९ ॥ ॥ इति श्रीस्कं दपुराणेवैशाखमाहात्म्येनारदांबरीषसंवादेकलिधर्मनिरूपणेपितृमुक्तिर्नामद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ ॥ श्रुतदेवउवाच ॥ ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामिमाहात्म्यंपापनाशनम् ॥ अक्षय्यायास्तृतीयायाःसितेपक्षेचमाधवे ॥ १ ॥ येकुर्वंतिचतस्यांवैप्रातःस्नानंभगोदये ॥ तेसर्वेपापनिर्मुक्तायांतिविष्णोःपरंपदम् ॥ २ ॥ देवान्पितॄन्मुनीन्यस्तुकुर्यादुद्दिश्यतर्पणम् ॥ तेनाधीतंचतेनेष्टंतेनश्राद्धशतंकृतम् ॥ ॥ ३ ॥ मधुसूदनमभ्यर्च्यकथांशृण्वंतियेनराः ॥ अक्षय्यायांतृतीयायांतेनरामुक्तिभागिनः ॥ ४ ॥

कलिधर्मनिरूपणं पितृमुक्तिर्नाम द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ श्रीश्रुतदेवजी बोले अब मैं पापके नाशकर्त्ता इस माहात्म्यका वर्णन करूं हूं माधवमासमें शुक्लपक्षकी अक्षयतृतीयाके दिन जो सूर्योदयपर प्रातःकाल स्नान करें वे संपूर्ण पापसे छूटकर विष्णुलोकको चले जांयहैं ॥ १ ॥ २ ॥ जो देवता, पित्रीश्वर और ऋषियोंके निमित्त तर्पण करै उसने संपूर्ण वेदादि शास्त्र पढलिये उसने सब यज्ञ करलिये और सौ श्राद्ध करलिये ॥ ३ ॥ जो मधुसूदन

भगवान्का पूजन कर कथा सुनैंहैं अक्षयतृतीयाके दिन वे मुक्ति पावैंहैं ॥ ४ ॥ जो मधुसूदन भगवान्की प्रसन्नताके निमित्त दान करैंहैं वे मधुसूदन भगवान्की आज्ञासे अक्षय फलके देनेवाले होयहैं ॥ ५ ॥ यह तिथि देवता ऋषि और पित्रीश्वरोंकीहै इसमें सनातन धर्म करनेपर देवता पित्रीश्वर और ऋषियोंकी तृप्ति होयहै ॥ ६ ॥ इस तिथिकी प्रख्याति कैसे हुई सोभी मैं वर्णन करूं हूं हे राजन् ! तू सावधान होय सुन ॥ ७॥ प्राचीन समयमें राजा

येदानंतत्रकुर्वंतिमधुद्विट्प्रीतयेशुभम् ॥ तदक्षय्यंफलत्येवमधुशासनशासनात् ॥ ५ ॥ देवर्षिपितृदैवत्यातिथिरेषामहाशुभा ॥ त्रयाणांतृप्तिदात्रीचकृतेधर्मेसनातने ॥ ६ ॥ प्रख्यातिश्चतिथेरस्याःकेनचासीत्तदप्यहम् ॥ वक्ष्यामिनृपशार्दूलसावधानमनाःशृणु ॥ ७ ॥ पुरापुरंदरस्यासीद्युद्धंचबलिनासह ॥ देवानांचैवदैत्यानांद्वंद्वयुद्धमभूत्ततः ॥ ८ ॥ सनिर्जित्यबलिंदैत्यंपातालतलवासिनम् ॥ पुनर्भुवंसमासाद्यचोतथ्यस्याश्रमंययौ ॥ ९ ॥ तत्रापश्यच्चतत्पत्नींगुर्विणींमंदगामिनीम् ॥ चलच्छ्रोणितटाबद्धकांचीदाम्नासुमंडिताम् ॥ ॥ १० ॥ क्वणत्कंकणनिर्घोषजितमत्तालिकोकिलाम् ॥ वल्गुचित्रांबरांरामांमंजुवाचाशुचिस्मिताम् ॥ ११ ॥

बलिके संग इन्द्रका युद्ध हुआ और देवता और दैत्योंका भी आपसमें द्वन्द्वयुद्ध होताहुआ ॥ ८ ॥ वह पातालवासी बलिको जीतकर फिर पृथ्वीपर आय उतथ्यके आश्रममें जाताहुआ ॥ ९ ॥ वहां जाय मन्द मन्द चलनेवाली उसकी गुर्विणी पत्नीको देखताहुआ इसके कटिदेशमें सुवर्णके सूत्रमें बद्ध किंकिणी शोभा देरही ॥ १० ॥ उसके कंकणोंकी झनकारने मदोन्मत्त भ्रमर और कोकिलाओंके शब्दको जीतलियाथा अनेक प्रकारके वस्त्र धारण

कर रक्खे मिष्ट वाणी और मन्द मन्द हास्यसे युक्त शोभा दे रही थी ॥ ११ ॥ कुंभस्थल और पीनकुचोंसे जिसकी अपूर्व शोभा होरही थी विकसित कमलके समान उसका मुखथा और नीलकमलके समान नेत्र थे॥ १२॥ केतकीके उदरके समान पीत और मनोहरहैं गंडस्थल जिसके ऐसी परिश्रमसे श्वास भरतीहुई दीनाक्षी पर्णशालाकी ओर मुख किये बैठी ॥ १३ ॥ पर्यंकपर शयन करतीहुई इन्द्रको मोह उत्पन्नहुआ और बलपूर्वक उस गुर्विणीस्त्रीसे भोग

लसत्कुंभस्थलाभ्यांचकुचाभ्यामुपशोभिताम् ॥ हसत्पद्ममुखांदिव्यांनीलोत्पलसुलोचनाम् ॥ १२ ॥ केतक्युदरपांडुभ्यांगंडाभ्यां चमनोरमाम् ॥ श्रमोच्छ्वसंतींदीनाक्षींपर्णशालामुखेस्थिताम् ॥ १३ ॥ स्वपतींशयनेक्वापितांदृष्ट्वामोहमागतः ॥ बलात्कारेणबुभुजे गुर्विणींपाकशासनः ॥ १४ ॥ गर्भस्थस्तुतदापिंडःस्वस्यपातविशंकया ॥ छादयामासवैयोनिद्वारंपादेनदुःखितः ॥ १५ ॥ ततश्चस्कं दवीर्यंतद्भूमावेवबलद्विषः ॥ गर्भस्थायचुकोपासौभगवान्पाकशासनः ॥ १६ ॥ तंशशापचगर्भस्थंरुषाताम्रांतलोचनः ॥ जात्यंधो भवदुर्बुद्धेमावमंस्थायतःपदा ॥ १७ ॥ प्रच्छाद्ययोनिद्वारंचततोदीर्घतमाह्वयः ॥ पदाप्रस्कंदितात्वीर्याज्जयंतेनसमोभवत् ॥ १८ ॥

करनेमें प्रवृत्त होनेलगा॥ १४॥ तब गर्भस्थ पिंडने अपने गिरनेके भयसे दुःखी होय अपने पांवसे योनिमार्गका आच्छादन करलिया॥ १५॥ तब तौ इन्द्रका वीर्य पृथ्वीहीमें गिरपडा और गर्भस्थ शिशुपर इन्द्रको महान् क्रोधहुआ ॥ १६॥ और रोषके मारे लाललाल नेत्रकर शाप देताहुआ हे दुर्बुद्धे! जो तैने पांवसे

योनिद्वारको रोकाहै इससे तू जन्मांध हो तब दीर्घतमाह्व पांवोंसे वीर्यके संचरणसे जयन्तके समान होताहुआ ॥१७॥१८॥ तब इन्द्र ऋषिके शापके डरके मारे शीघ्रही भागा उस भागते हुएको देख संपूर्ण शिष्य हंसने लगे ॥ १९ ॥ तब तो लज्जाके मारे मेरुकी कन्दरामें जाय घुसा और वहां बैठकर उग्र तप करनेलगा॥२०॥जब इन्द्र लज्जाके मारे मेरुमें जाय घुसा तब तौ राजा बलि और संगी दैत्यगण गुप्तदूतों द्वारा भेद लेकर॥२१॥देवताओंपर आक्रमणकर

पश्चादिंद्रोययौशीघ्रमृषेःशापविशंकितः ॥ पलायंतंहरिंदृष्ट्वाजहसुर्बटवोऽखिलाः ॥ १९ ॥ ततस्तुव्रीडितोभूत्वाययौमेरोर्गुहांशुभाम् ॥ तत्रलीनश्चचारासौदुस्तरंवैतपोमहत् ॥ २० ॥ मेरौविलीयवसतिदेवेंद्रेलज्जयान्विते ॥ गूढैर्विज्ञायतांवार्तांदैतेयाबलिपूर्वकाः ॥ २१ ॥ सुरानाक्रम्यबुभुजुर्बलींद्राश्चामरावतीम् ॥ दिक्पालानांविभूतीश्चशंबराद्याबलीसः ॥ २२ ॥ बलाद्बुभुजिरेहीननाथंराष्ट्रंदिवौकसाम् ॥ रक्षितारमजानंतोदेवाश्चाग्निपुरोगमाः ॥२३॥ गत्वातुधिषणंदेवंदेवाचार्यमकल्मषम् ॥ पप्रच्छुरिंद्रवृत्तांतंक्कचतिष्ठतिनःप्रभुः ॥ २४ ॥ दैत्याक्रांतमिदंराष्ट्रंहीननाथंदिवौकसाम् ॥ कुतोनायातिदेवोसौभूयान्कालोगतोविभो ॥ २५ ॥ तंयामोयत्रमघवाप्रार्थयामश्चतंविभुम् ॥ इतिपृष्टस्तदादेवैर्धिषणस्तानुवाचह ॥ २६ ॥

अमरावतीपुरी दिक्पालोंकी विभूति और शंबरादिक तथा स्वामीरहित देवताओंके राज्यको बलपूर्वक भोगने लगे तब तौ अग्निसे आदि लेकर सब देवता अपने रक्षकको न देखते भये और बृहस्पतिके पास जाय इन्द्रका वृत्तान्त पूछनेलगे कि हमारा स्वामी कहां हैं ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ विना स्वामीके हमारे राज्यपर दैत्योंने आक्रमण कियाहै हे विभो ! बहुत दिन होयगये इन्द्र क्यों नहीं आवै है ॥ २५ ॥ हे महाराज ! हमें बताओ

जहां इन्द्र होय हम वहीं जांय और प्रार्थना करें जब देवताओंने ऐसे पूछा तब बृहस्पतिजी बोले ॥ २६ ॥ रसातलमें बलिको जीतकर इन्द्र उतथ्यके आश्रममें गया और वहां जाय उतथ्यकी स्त्रीसे बलपूर्वक संगम किया इसपर उसके शिष्योंने बडी निन्दा की ॥ २७॥ लज्जाके मारे स्वर्गमें तौ न आया और मेरुकी गुफामें घुसगया वहीं शचीके संग निवास करै है: और अपने कियेहुए कर्मपर चिन्ता करै है ॥ २८ ॥ बृहस्पतिके ऐसे वाक्य सुनकर

रसातलेबलिंजित्वाचोतथ्यस्याश्रमंययौ ॥ भुक्त्वापत्नींचधाष्टर्येनतच्छिष्यैरेवनिंदितः ॥ २७ ॥ व्रीडितस्तुदिवंयातुंगुहांमेरोर्विवेशह ॥ तत्रैवास्तेशचीयुक्तःस्वकृतंचिंतयन्विभुः ॥ २८ ॥ इतितस्यवचःश्रुत्वादेवाअग्निपुरोगमाः ॥ गुहांमेरोर्ययुःशीघ्रंदृष्ट्वाप्रार्थयितुंविभुम् ॥ २९ ॥ तत्रदृष्ट्वागुहालीनंदेवेंद्रंपाकशासनम् ॥ तुष्टुवुर्विविधैःस्तोत्रैस्तद्वीर्यैर्लोकविश्रुतैः ॥ ३० ॥ इंद्रतुभ्यंनमस्तेस्तुसर्वदेवाधिपायते ॥ वयंदैत्यैरर्दिताश्चत्वयाहीनाभृशार्दिताः ॥ ३१ ॥ स्थानभ्रष्टाश्चरामोंगनानादेशेषुदुःखिताः ॥ तस्मादागत्यदेवेंद्रजहिशत्रूनरिंदम ॥ ३२ ॥

अग्निको आदि लेकर सब देवता इन्द्रको ढूँढने और प्रार्थना करनेके लिये मेरुकी कन्दरामें पहुंचे ॥ २९ ॥ कन्दरामें बैठेहुए इन्द्रको देख उसके बलवीर्यको प्रकाश करनेवाले लोकविख्यात स्तोत्रोंसे उसे प्रसन्न करने लगे ॥ ३० ॥ हे इन्द्र ! हे सब देवताओंके अधीश ! तुह्मारे अर्थ नमस्कार है तुह्मारे विना हमको दैत्योंने बडा क्लेश दियाहै ॥ ३१ ॥ हम स्थानभ्रष्ट हो होकर दुःखके मारे जगह जगह भ्रमें हैं इस लिये तुम चलकर शत्रुओंका दमन

करौ ॥ ३२ ॥ यह स्तुति सुन इन्द्र गुहासे बाहर आया लज्जाके मारे नेत्र पृथ्वीकी ओर कर राखे और कमर झुकाय रक्खी ॥ ३३ ॥ दुःखके मारे कंठ भर आये सो कुछभी मुखसे न कह सका यह दशा देख बृहस्पतिजी बोले ॥ ३४ ॥ हे इन्द्र ! तू शंका क्यों करै है यह संपूर्ण जगत् कर्माधीन मान अपमान सुख दुःख लाभ हानि हार जीत ॥ ३५ ॥ ये सर्व पूर्वजन्मार्जित कर्मोंके अनुरोधसे होंय हैं जीव कर्मके अनुसार चलै है और जो दुःख

इतिस्तुतस्तदादेवैर्निश्चक्रामगुहामुखात् ॥ लज्जयावनतोभूत्वापश्यन्भूमिंचचक्षुषा ॥ ३३ ॥ नाकिंचिदपिचोवाचदुःखाद्गद्गदभाषणः ॥ तज्ज्ञात्वाधिषणःप्राहतंसुरेंद्रंभयानतम् ॥ ३४ ॥ माशंकातेसुरपतेकर्माधीनमिदंजगत् ॥ मानामानौसुखंदुःखंलाभालाभौजयाजयौ ॥ ३५ ॥ पूर्वकर्मानुरोधेनभवंत्येवनसंशयः ॥ जीवःकर्मानुगोदुःखंदिष्टंदैवेनकालतः ॥ ३६ ॥ प्राज्ञाःप्राप्यनशोचंतिनप्रहृष्यंतिवैसुखात् ॥ तस्मात्प्रारब्धतःप्राप्तंदुःखंचेदंतवप्रभो ॥ ३७ ॥ तत्प्राप्यमघवन्दुःखंनैवशोचितुमर्हसि ॥ इत्युक्तोगुरुणाचाहमघवानमराधिपः ॥ ३८ ॥ ॥ इंद्रउवाच ॥ ॥ परस्त्रीसंगदोषेणबलंवीर्ययशोमम ॥ मंत्रशक्तिःशास्त्रशक्तिर्विद्याशक्तिश्चमानद ॥ ३९ ॥ अभवंनष्टवीर्योहंतूष्णींतेनवसाम्यहम् ॥ पाकशासनवाक्यंतुश्रुत्वास्वाचार्यसंयुताः ॥ ४० ॥

है सो दैवयोगसे काल पायकर अपने आप उपस्थित होयहै ॥ ३६ ॥ बुद्धिमान् मनुष्य दुःख पडनेपर कुछ शोच नहीं करैहैं और सुखसे प्रसन्न नहीं होयहैं इसलिये हे प्रभो ! यह दुःख तुमको प्रारब्धसे मिलाहै ॥ ३७ ॥ हे इन्द्र ! इस दुःखको पाकर तुम शोच करनेके योग्य नहीं हो गुरुकी बात सुने इन्द्रने कहा ॥ ३८ ॥ हे मानद ! परस्त्रीगमनके दोषसे मेरी बल वीर्य यश मंत्रशक्ति शास्त्रशक्ति विद्याशक्ति॥ ३९ ॥ सब नष्ट होयगईं इन सबको

खोयकर मैं यहां गुप्त निवास करू हूं इन्द्रकी यह बात सुन बृहस्पतिजी समेत ॥ ४० ॥ सब आपसमें उसको फिर बल देनेकेलिये विचार करने लगे तब बृहस्पतिजी कहने लगे यह मधुसूदन भगवान्का प्रिय वैशाखमासहै इस मासमें संपूर्ण तिथि बडी पुण्यरूपहैं ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ इसमें शुक्लपक्षकी तृतीया अक्षयतृतीया है जो इस तिथिमें श्रद्धापूर्वक स्नान दानादि करैहै ॥ ४३ ॥ उसके निस्सन्देह सहस्रों पाप नष्ट होजातेहैं तथा बहुत बल धैर्य

मंत्रयामासुरेकांतेपुनस्तस्यबलाप्तये ॥ तदागुरुश्वतान्प्राहकरुणंचविदुत्तमः ॥ ४१ ॥ ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ ॥ मासोवैशाखनामायं प्रियो वैमधुघातिनः ॥ सर्वाश्चतिथयःपुण्यामासेस्मिन्माधवप्रिये ॥ ४२ ॥ तत्रापिचसितेपक्षेतृतीयाचाक्षयाह्वया ॥ यस्तस्यांस्नानदानादिश्रद्धयाचकरोतिवै ॥ ४३ ॥ तस्यपापसहस्राणिनश्यंत्येवनसंशयः ॥ अनवद्यंतथैश्वर्यंबलंधैर्यंभवंतिच ॥ ४४ ॥ तस्मात्तस्यांतृतीयायां हरिणाबलिविद्विषा ॥ स्नानदानादिसद्धर्मान्कारयामोहिताप्तये ॥ ४५ ॥ भविष्यतिचसाशक्तिर्विद्यायांमंत्रशास्त्रयोः ॥ बलंधैर्यंयशश्चैवयथापूर्वंभविष्यति ॥ ४६ ॥ इत्येवंतुविचार्याथगुरुर्देवैःसमाहितः ॥ इंद्रेणकारयामासधर्मानेतान्हरिप्रियान् ॥ ४७ ॥

और ऐश्वर्य बढैहैं ॥ ४४ ॥ अतएव अक्षयतृतीयाके दिन बलिके वैरी इन्द्रद्वारा स्नान दानादिक सद्धर्म कराने चाहिये जिससे उसका हित साधन होय ॥४५॥ इसके प्रतापसे विद्या और मंत्रशास्त्रमें पूर्ववत् शक्ति होय जायगी बल धैर्य और यशभी पूर्ववत् बढ जायगा ॥ ४६ ॥ ऐसे देवताओंसमेत बृहस्प

तिने विचार कर इन्द्रसे वैशाखमासके धर्म कराये॥४७॥अक्षयतृतीयाके दिन भुक्ति और मुक्तिके देनहारे धर्मोंसे पूर्ववत् बल और धैर्यादि बढगये॥४८॥ और परस्त्रीगमनका दोषभी तत्काल नष्ट होयगया इस कर्मसे इन्द्र अपने पापकर्मोंसे ऐसे छूटगया जैसे चंद्रमा राहुसे छूटैहै ॥ ४९ ॥ और देवताओंके मध्यमें पूर्ववत् शोभाको प्राप्त हुआ इन्द्र देवताओंको संग ले असुरोंको जीत ॥ ५० ॥ अक्षयतृतीयाके माहात्म्यसे सब वैभवोंसे युक्त होय अमरावती

अक्षयायांतृतीयायांभुक्तिमुक्तिफलप्रदान् ॥ तेनपूर्ववदेवासीद्बलंधैर्यादिकं विभोः ॥ ४८ ॥ परस्त्रीसंगदोषोपिसद्यएवव्यलीयत ॥ पश्चाद्गताशुभःशक्रोराहोर्मुक्तइवोडुपः ॥ ४९ ॥ देवतानांतथामध्येशुशुभेचहरिर्यथा ॥ पश्चाद्देवैःसमायुक्तोविनिर्जित्यतथासुरान् ॥ ॥ ५० ॥ तृतीयायाश्चमाहात्म्याद्भाग्ययुक्तोमरावतीम् ॥ विवेशविभवैःसार्द्धंशंखतूर्यादिनिःस्वनैः ॥ ५१ ॥ अनुज्ञाताश्चशक्रेण स्वधामानिययुःसुराः ॥ ततस्तेयज्ञभागांश्चलेभिरेचयथापुरा ॥ ५२ ॥ पिंडभागांश्चपितरोयथापूर्वंप्रपेदिरे ॥ स्वाध्यायेमुनयस्तु ष्टादैत्यानांचपराजये ॥ ५३ ॥

पुरीमें प्रवेश करताहुआ आगे शंख तूर्यादि बाजे बजते चलेंहैं ॥ ५१ ॥ फिर इन्द्रसे आज्ञा मांग सब देवता अपने अपने घर गये और पूर्ववत् यज्ञादिकमें अपना अपना भाग लेने लगे ॥५२॥ और पित्रीश्वर पूर्ववत पिंडभाग प्राप्त करते हुए मुनि स्वाध्यायमें तुष्ट हुए राक्षसोंके पराजित होनेपर॥५३॥

तबहीसे इस लोकमें अक्षयतृतीया प्रख्यात है यह देवता ऋषि पितृगण सबको संतोष देनेवालीहै इससे यह सब कर्मोंके काटनेवाली सबसे पुण्य तमहै यह अक्षयतृतीया मनुष्योंको भुक्ति और मुक्ति देनेवालीहै ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाखमाहात्म्ये नारदांबरीषसंवादे अक्षय तृतीयायाः श्रेष्ठत्वकथनंनाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ श्रुतदेवजी बोले हे राजन् ! इन सब पुण्यवर्द्धिनी तिथियोंमें वैशाखमासमें शुक्लपक्षकी द्वादशी

तदाप्रभृतिलोकेस्मिन्तृतीयाचाक्षयाह्वया ॥ प्रख्यातासर्वलोकेषुदेवर्षिपितृतुष्टिदा ॥५४॥ तस्मात्पुण्यतमाचैषासर्वकर्मनिकृंतनी ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदानॄणांतृतीयाचाक्षयाह्वया ॥५५॥ इति श्रीस्कंदपु॰वै॰ माहात्म्येनारदांबरीषसंवादेअक्षयतृतीयायाःश्रेष्ठत्वकथनंनाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ श्रुतदेवउवाच ॥ ॥ तिथिष्वेतासुपुण्यासुद्वादशीसितपक्षिणी ॥ वैशाखमासेराजेंद्रसर्वाघौघ विनाशिनी ॥ १ ॥ किंदानःकिंतपोभिश्चकिमुपोष्यैर्व्रतैश्चकिम् ॥ किमिष्टैश्चैवपूर्तैश्चद्वादशीयैर्नसेविता ॥ २ ॥ गंगायामुपरागेतु योदद्याद्गोसहस्रकम् ॥ द्वादश्यांमाधवेमासियोग्यायब्राह्मणेर्पणात् ॥ ३ ॥ गंगायांचैवदुर्भिक्षेप्रत्यहंकोटिभोजनात् ॥ तत्फलंसमवा प्नोतिद्वादश्यामेकभोजनात् ॥ ४ ॥

संपूर्ण पापोंको नाश करनेवालीहै ॥ १ ॥ जिसने इस द्वादशी सेवन नहीं किया उसके दान तप और उपोषण व्रतादिके करनेसे क्या फलहै इष्टापूर्तसे क्या फलहै ॥ २ ॥ जो गंगापर ग्रहणकेसमय सहस्र गौदान करनेसे फल मिलैहै वही फल वैशाखमासमें द्वादशीके दिन योग्य ब्राह्मणको अर्पण करनेसे होताहै ॥ ३ ॥ गंगामें दुर्भिक्षके समय प्रति दिन जो करोडोंको भोजन करनेसे मिलताहै वही फल द्वादशीके दिन एकबार भोजन करनेसे मिलैहै ॥ ४ ॥

जो शुक्लपक्षकी द्वादशीके दिन एक एक चुकटी अन्न योग्यके लिये देयहै उसे कोटि ब्राह्मणभोजनका फल मिलैहै ॥ ५ ॥ जो मधुसहित तिलके पात्रका दान द्वादशीके दिन करै वह संपूर्ण बन्धनोंसे छूटकर विष्णुलोकको चला जायहै ॥ ६ ॥ शुक्लपक्षकी एकादशीके दिन रात्रिको जागरणकरै वह जीतेजीही मुक्ति पावै है और उसपर सब देवता प्रसन्न होयहैं ॥७॥ करोडन सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण में जो तीर्थोंमें स्नानादि करनेसे फल मिलै है सो एकादशीके

यद्दत्तंचार्हतेचान्नंद्वादश्यांचसितेशुभे ॥ सिक्थेसिक्थेभवेत्तस्यकोटिब्राह्मणभोजनम् ॥ ५ ॥ योदद्यात्तिलपात्रंतुद्वादश्यांमधुसंयुतम् ॥ निर्धूताखिलबंधस्तुविष्णुलोकेमहीयते ॥ ६ ॥ एकादश्यांसितेपक्षेकुर्याज्जागरणंहरेः ॥ सजीवन्नेवमुक्तःस्यात्तुष्टाःस्युःसर्वदेवताः ॥ ॥ ७ ॥ कोटींदुसूर्यग्रहणेतीर्थान्युत्प्राव्ययत्फलम् ॥ तत्फलंसमवाप्नोतिप्रातःस्नात्वाहरेर्दिने ॥ ८ ॥ तुलस्याःकोमलैःपत्रैर्द्वादश्यां विष्णुमर्चयेत् ॥ सप्तकुलमृद्धृत्यविष्णुलोकाधिपोभवेत् ॥ ९ ॥ द्वादश्यांमाधवेमासियोदद्याद्गांसवत्सकाम् ॥ सकोटिकुलमुद्धृत्य विष्णोर्लोकाधिपोभवेत् ॥ १० ॥

दिन प्रातःकाल स्नान करनेसे मिले है ॥ ८ ॥ द्वादशीके दिन तुलसीके कोमलपत्रोंसे विष्णुभगवान्का पूजन करै वह अपने सात कुलोंका उद्धार करके विष्णुलोकको चला जायहै॥९॥ जो कोई वैशाखमें द्वादशीके दिन बच्चासहित गौका दानकरै वह अपने कोटिकुलोंका उद्धार करके विष्णुलो

कका अधिकारी होयहै ॥ १० ॥ जो कोई शुक्लपक्षकी द्वादशीके दिन यम, पितृगण, गुरु, देवता और विष्णुके निमित्त दक्षिणासहित जलका घडा दानकरै दही और अन्नका भी दानकरै उसका फल सुनो उसको जो पुण्य प्रयागराजमें प्रतिदिन करोड मनुष्योंको एक वर्ष पर्य्यन्त षड्रसयुक्त सुन्दर भोजन करानेसे होताहै वही फल उसे मधुसूदन भगवान्की आज्ञासे मिलै है ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ जो द्वादशीके दिन शालिग्रामका दानकरै

यमंपितॄन्गुरून्देवान्विष्णुमुद्दिश्यमानवः ॥ माधवेशुक्लद्वादश्यांसोदकुंभंसदक्षिणम् ॥ ११॥ दध्यन्नंचैवयोदद्यात्तस्यपुण्यफलंशृणु ॥ प्रयागेप्रत्यहंचैवकुर्याद्यःकोटिभोजनम् ॥ १२ ॥ यावत्संवत्सरं पुण्यं षड्रसान्नैर्मनोरमैः ॥ तत्फलंसमवाप्नोतिमधुसूदनशासनात् ॥ ॥ १३॥ शालिग्रामशिलादानंयःकुर्याद्द्वादशीदिने ॥ वैशाखेशुक्लपक्षेतुसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ १४ ॥ सप्तद्वीपवतींभूमिंगंगायांचरवि ग्रहे ॥ योदद्यात्कोटिवारंतुतेनतुल्यंफलंविदुः ॥ १५ ॥ द्वादश्यांपयसायस्तुस्नापयेन्मधुसूदनम् ॥ राजसूयाश्वमेधाभ्यांयत्फलंपरि जायते ॥ १६ ॥ तत्फलंसमवाप्नोतिगंगायांनात्रसंशयः ॥ त्रयोदश्यांयजेद्विष्णुंपयोदधिविमिश्रितैः ॥ १७ ॥

वह संपूर्ण पापोंसे छूट जायहै ॥ १४ ॥ जो गंगामें ग्रहणके समय सप्तद्वीपवती पृथ्वीका कोटिबार दानकरै उसके समान फल मिलताहै ॥ १५ ॥ द्वादशीके दिन जो मधुसूदन भगवान्को दूधसे स्नान करावै उसको राजसूय और अश्वमेध यज्ञ करनेके समान फल मिलताहै ॥ १६ ॥ सोई फल गंगामें मिलै है इसमें संदेह नहीं है त्रयोदशीके दिन जो दूध और दही मिलायकर विष्णुभगवान्का यजन करै ॥ १७ ॥

उसीमें शर्करा मधु और घृत मिलाय मधुसूदन भगवान्की प्रसन्नताके निमित्त भक्तिपूर्वक पंचामृतसे विष्णुभगवान्को स्नान करावै ॥ १८ ॥ वह अपने सब कुलोंका उद्धारकर विष्णुलोकको चला जायहै, जो सायंकालके समय विष्णुभगवान्की प्रसन्नताके निमित्त शर्बत दानकरै ॥ १९ ॥ उसके प्राचीन पाप ऐसे दूर होयजांयहैं जैसे सर्प अपनी पुरानी काचलीको छोड देयहै सायंकालके समय जो रसीली काकडीका दान करै ॥ २० ॥ वह उसके रसके

शर्करामधुभिर्द्रव्यैर्मधुसूदनप्रीतये ॥ पंचामृतैश्चयोविष्णुंभक्त्यासंस्नापयेद्विभुम् ॥ १८ ॥ ससर्वंकुलमुद्धृत्य विष्णुलोकेमहीयते ॥ योदद्यात्पानकंह्यस्यांसायाह्नेप्रीतयेहरेः ॥ १९ ॥ जीर्णपापंजहात्याशुजीर्णांत्वचमिवोरगः ॥ सायाह्नेचैवयोदद्यादुर्वारुकरसायनम् ॥ २० ॥ भवेन्मुक्तःकर्मबंधादुर्वारुकरसायनात् ॥ इक्षुदंडंचूतफलंदद्याद्द्राक्षाफलानिच ॥ २१ ॥ नविच्छित्तिःसंततेःस्यात्तस्यवै शतपूरुषम् ॥ योदद्याद्गंधलेपंतुसायाह्नेद्वादशीदिने ॥ २२ ॥ बाह्योपघातैःसकलैर्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥ यत्किंचित्कुरुतेपुण्यंद्वादश्यां राजसत्तम ॥ २३ ॥ माधवेतुसितेपक्षेतदक्षय्यफलंभवेत् ॥ प्रख्यातिमस्यावक्ष्यामिकेनजातेतिभूमिप ॥ २४ ॥

प्रतापसे कर्मबन्धनोंसे मुक्ति पाताहै जो कोई ईख अथवा आमके फलोंका दान करै उसके कुटुंबमें सौ पीढी तक बराबर सन्तान होती रहै जो द्वादशीके दिन सायंकालके समय चन्दनादिका दानकरै ॥ २१ ॥ २२ ॥ वह आगन्तुक व्याधियोंसे सदैव निर्मुक्त रहताहै हे राजन् ! द्वादशीके शुक्लपक्षमें जो कुछभी पुण्य कियाजाय सो अक्षय फलका दाता होयहै ॥ २३ ॥ हे राजन् ! इसकी प्रख्याति क्यों हुई है सो मैं तेरे सामने कहूं हूं ॥ २४ ॥

इसके श्रवण करनेसे संपूर्ण पाप दूर होयहैं और अत्यन्त मंगलकारी है प्राचीन समयमें काश्मीरदेशमें एक देवव्रतनाम ब्राह्मण होताहुआ ॥२५॥ इसकी मालिनीनाम एक पापरूषा पुत्री भई वह कन्या सत्यशीलनाम बडे विद्वान् ब्राह्मणसे व्याहीगई उससे विवाह करके वह अपने यवननाम देशको जाता हुआ वह रूप यौवन करके संयुक्त कभी भी उसकी प्यारी. न भई ॥ २६ ॥ २७ ॥ और वह निष्ठुर उससे सदा द्वेष रक्खै और उसके सिवाय किसी

श्रवणात्सर्वपापघ्नीं सर्वमंगलदायिनीम् ॥ पुराकाश्मीरदेशेतुद्विजोदेवव्रताह्वयः ॥ २५ ॥ तस्यासीन्मालिनीनामतनयापापरूपिणी ॥ ददौतांसत्यशीलायविप्रवर्यायधीमते ॥ २६ ॥ तामुद्वाह्ययौधीमान्स्वदेशंयवनाह्वयम् ॥ रूपयौवनसंपन्नातस्यनैवप्रियाभवत् ॥ २७ ॥ सदाविद्वेषसंयुक्तस्तस्यांतिष्ठतिनिष्ठुरः ॥ नान्यस्यकस्यचिद्वेषीतांविनानृपतेपतिः ॥ २८ ॥ तस्मिन्साक्रोधसंयुक्तावशीकरणलंपटा ॥ आपृच्छत्प्रमदाराजन्यास्त्यक्ताःपतिभिःपुरा ॥ २९ ॥ ताभिरुक्तातुसाभूपवश्योभर्ताभविष्यति ॥ अस्माकंप्रत्ययोजातोभर्तृत्यागावमानिनाम् ॥ ३० ॥ प्रयुज्यभेषजंवश्यंनीताहिपतयःपुरा ॥ योगिनींत्वंतुगच्छाद्यदास्यतेभेषजंशुभम् ॥३१॥ नविकल्पस्त्वयाकार्योभवितादासवत्पतिः ॥ योगिनीमंदिरेगत्वातासांवाक्येनभूपते ॥ ३२ ॥

सेभी कुछ द्वेष नहीं रक्खै ॥ २८ ॥ उस अपने पतिपर क्रोधकर वशीकरण करनेकी इच्छासे उन अन्य स्त्रियोंसे पूछतीहुई जिनको पहिले उनके पति त्याग देतेहुए ॥ २९ ॥ तब वे बोलीं तेरा पति वशीभूत होजायगा हमको अच्छी तरह विश्वासहै ॥ ३० ॥ हमने तौ वशीकरण औषध देकर अपने पति वश करलिये तू योगिनीके पास जा वह सुंदर औषध दे देयगी ॥ ३१ ॥ तू सोच विचार मत करै तेरा पति दासके समान होय जायगा तब तौ

हे राजन् ! वह उनके वाक्यके अनुसार योगिनीके मंदिरमें जाय ॥ ३२ ॥ योगिनीको अत्यन्त प्रसन्न करती हुई और वह दुराचारिणी बहुत शीघ्रही उस कुटीमें पहुंची जहां सौ खन लग रहे ॥ ३३ ॥ वह कुटी बहुत लम्बी चौडी कान्तिमान् थी जिसके चारों ओर झालरदार कपडा लग रहे जिनमें गोटा किनारी लग रहे ॥ ३४ ॥ बडी बडी भींत जिनमें चारों ओर सफेदी होय रही दीपक जगर मगर कर रहे ऐसे शोभायमान स्थानमें विराजित

प्रसादमतुलंतस्यालेभेदुश्चारिणीसती ॥ शतस्तंभसमायुक्तांकुटींभेजेत्वरान्विता ॥ ३३ ॥ सुविस्तृतांसुवर्चस्कांतथैवापातपालिकाम् ॥ प्रावृतांदीर्घवस्त्रेणसन्धितेनाजवंतिना ॥ ३४ ॥ दीर्घाभिःशुभ्रभित्तीभिःप्रावृतादीप्तिसंयुता ॥ परिचारसमोपेतावीक्षमाणाशनैःशनैः ॥ ३५ ॥ अक्षसूत्रकरासातुजपंतीप्रार्थितातया ॥ ददौवश्यकरंमंत्रंक्षोभकंप्रत्ययात्मकम् ॥ ३६ ॥ ततःसाप्रणताभूत्वा पद्भ्यांदत्वांगुलीयकम् ॥ वज्रमाणिक्यसंयुक्तमतिरिक्तप्रभान्वितम् ॥ ३७ ॥ मृदुकांचनसंयुक्तंभानुरश्मिसमद्युति ॥ ततोदृष्ट्वातुसंतुष्टापादस्थंचांगुलीयकम् ॥ ३८ ॥

जो सेवा करनेकूं आवे तिन्हें देखरही ॥ ३५ ॥ और रुद्राक्षकी मालासे जप कररही ऐसी योगिनीकी जब वा स्त्रीने प्रार्थना करी तब तौ वह योगिनी प्रसन्न होय मनकूं क्षोभ करावनहारी वशीकरण मंत्र बतावती भई ॥ ३६ ॥ तब उनने नमस्कार कर पांवनसे हीरा जडीभई अंगूठी जो बडी चमक रही भेट धरी और जिसमें सुंदर सुवर्ण जडाहुआ सूर्यकी कान्तिके समान प्रकाशवान दीनी इस पांवकी अंगूठीको देख अत्यन्त प्रसन्न होय ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

पतिके अपमानसे व्यथितहृदयका वृत्तान्त जान वह योगिनी हितकी बात कहने लगी ॥ ३९ ॥ यह रक्षाका चूर्ण संपूर्ण प्राणियोंको वश
करनेवाला है यह चूर्ण अपने पतिको देय उसकी ग्रीवाकी रक्षा करियो ॥ ४० ॥ तब तेरा पति तेरे वश होयजायगा और किसीके पास नहीं जायगा
और तेरे दुश्चरित्रोंकोभी देख कुछ नहीं कहैगा ॥ ४१ ॥ उस चूर्णको लेय फिर वह अपने घर आई और संध्याके समय दूधमें मिलाय वह चूर्ण

हृदयंचतयाज्ञातंतत्पतेरवमानजम् ॥ तदोक्ताहितयाभूपतापस्याहितयुक्तया ॥ ३९ ॥ चूर्णोरक्षान्वितोह्येषसर्वभूतवशंकरः ॥ चूर्णंभर्त
रिसंयुज्यरक्षांग्रीवाश्रयांकुरु ॥४०॥ भविष्यतिपतिर्वश्योनान्यांयास्यतिसुंदरीम् ॥ नाप्रियंवदतिक्कापिदुश्चारिण्यास्तवापिच ॥४१॥
चूर्णरक्षांगृहीत्वासाप्राप्ताभर्तृगृहंपुनः ॥ प्रदोषेपयसायुक्तश्चूर्णोभर्तरियोजितः ॥ ४२ ॥ ग्रीवायांहिकृतारक्षानविचारःकृतस्तया ॥
तदासपीतचूर्णस्तुभर्त्तानृपवरोत्तम ॥ ४३ ॥ तच्चूर्णात्क्षयरोगोभूत्पतिःक्षीणोदिनेदिने ॥ गुह्येतुकृमयोजाताघोरादुष्टव्रणोद्भवाः॥४४॥
दिनैःकतिपयैराजन्पत्यावेवंव्यवस्थिते ॥ उवासस्वेच्छयासापिपुंश्चलीदुष्टचारिणी ॥ ४५ ॥ हततेजास्ततोभर्तातामुवाचाकुलें
द्रियः ॥ क्रंदमानोदिवारात्रंदासोऽस्मितवशोभने ॥ ४६ ॥

देतीहुई ॥ ४२ ॥ ग्रीवामें रक्षा करदीनी कुछ विचार न किया तब हे राजन् ! उस चूर्णके पीनेसे उसको क्षयरोग होगया और दिन दिन क्षीण
होने लगा और गुह्यस्थानमें दुष्ट घाव होनेसे कृमी पडगये ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ जब कुछ दिनमें पतिकी ऐसी दशा होयगई तब वह दुष्ट पुंश्चली
इच्छापूर्वक विचरने लगी ॥ ४५ ॥ तेजके क्षीण होजानेसे व्याकुल होयगईं इन्द्री जिसकी वह पति रातदिन त्राहि त्राहि पुकारने लगा और बोला हे

शोभने मैं तेरा दास हूं ॥ ४६ ॥ मैं तेरी शरण हूं तू मेरी रक्षाकर मैं परस्त्रीकी इच्छा नहीं करूं हूं हे राजन् ! ऐसे अपने पतिके वृत्तान्तकू जानकर बहुत घबडाई ॥ ४७ ॥ और सोचने लगी कि पति जीवित रहैगा तौ मैं गहने कपडा पहरती रहूंगी सोई दौडकर योगिनीकेपास गई और उससे सब वृत्तान्त कहती हुई ॥ ४८ ॥ तब उसने पहिली औषधिके दाह शान्त करनेके निमित्त दूसरी औषध दीनी औषधके देतेही तत्क्षण उसका पति

त्राहिमांशरणंप्राप्तंनेच्छेहमपरांस्त्रियम् ॥ तत्तस्यविदितंज्ञात्वाभीतासामेदिनीपते ॥ ४७ ॥ अलंकारकृतेपत्युर्जीवनेच्छुर्नवैहिसा ॥ योगिनींचययौशीघ्रंतस्यैसर्वंन्यवेदयत् ॥४८॥ तयाचभेषजंदत्तंद्वितीयंदाहशांतये ॥ दत्तेचभेषजेतस्मिन्स्वस्थोभूत्तत्क्षणात्पतिः ॥ ॥ ४९ ॥ पूर्वंचूर्णोद्भवो दाहःशांतस्तेनाभवत्तदा ॥ ततःप्रभृतिभर्ताचवश्योभूद्वेश्मसंस्थितः ॥ ५० ॥ तिष्ठत्युपपतिर्गेहेगृहकृत्यापदेशतः ॥ सर्ववर्णसमुद्भूताजारास्तिष्ठंतिवैगृहे ॥ ५१ ॥ नकिंचिद्वचनेशक्तिर्भर्तुर्जाताकथंचन ॥ ततस्तेनैवदोषेणसर्वांगेषुचजज्ञिरे ॥ ५२ ॥ कृमयश्चास्थिभेत्तारःकालांतकयमोपमाः ॥ तैर्नासाजिह्वयोश्चासीच्छेदःकर्णद्वयस्यच ॥ ५३ ॥

आरोग्य होगया ॥ ४९ ॥ पहिले चूर्णसे उत्पन्न हुआ दाह इससे शान्त हुआ तबसे वह पति घरहीमें रहै और उसके वशीभूत होयगया ॥ ५० ॥ घरके कामके बहानेसे उपपति घरमें आयकर निवास करै और सब जातिके व्यभिचारी मनुष्य घरमें रहें ॥ ५१ ॥ परन्तु उसके भर्ताके मुखमें कुछभी कहनेकी शक्ति न रही तब इसी पापके कारणसे प्राणनाशक बडे भयंकर कीडा उसके सब देहमें पडगये इन कीडाओंने उसके नाक जिह्वा और दोनों

कानमें छेद करदिये ॥५२॥५३॥ स्तन कटगये उंगलयोंकी टेंट बंधगई पांवोंसे लुली होयगई ऐसे ऐसे कष्ट भोग देह त्याग नरक भोगने लगी॥५४॥ और पन्द्रह सहस्र वर्षपर्य्यन्त ताम्रभांड नाम्न नरकमें दग्ध होती रही ॥ ५५ ॥ फिर वारंबार सौ जन्मतक कुत्ताकी योनिमें पडी नाक कटरही है कान फट रहे हैं मस्तकमें कीडा पड रहे हैं पूंछ कटगई है टांग लँगडी होयगई है ऐसे घरघरमें पिटती डोलेहै ॥ ५६ ॥ पीछे सौवीर देशमें पद्मबन्धुनाम

स्तनयोश्चांगुलीनांचपंगुत्वंचापिचागतम् ॥ तेनपंचत्वमापन्नागतानरकयातनाम् ॥ ५४ ॥ ताम्रभांडेचसादग्धायुतानिदशपंचच ॥ श्वानयोनिषुसंजाताशतवारंपुनःपुनः ॥ ५५ ॥ छिन्ननासाछिन्नकर्णाकृमिमूर्धानिरंतरम् ॥ छिन्नपुच्छाभग्नपादाताडिताचगृहेगृहे ॥ ॥ ५६ ॥ पश्चात्सौवीरदेशेषुपद्मबंधोर्द्विजस्यच ॥ दास्यागृहेशुनीजाताबहुदुःखसमाकुला ॥ ५७ ॥ छिन्नकर्णाछिन्ननासाछिन्नपुच्छांघ्रिरातुरा ॥ कृमिपूर्णशिरानित्यंकृमियोनिश्चतिष्ठति ॥ ५८ ॥ एवंक्लेशंसह्यमानातस्मिन्जन्मनिभूमिप ॥ दैवात्कर्मविपाकेनवैशाखेमेषगेरवौ ॥ ५९ ॥ शुक्लपक्षेतुद्वादश्यांपद्मबंधोस्तनूद्भवः ॥ नद्यांस्नात्वाशुचिर्भूत्वासार्द्रवस्त्रोगृहंययौ ॥ ६० ॥ तुलसीवेदिकांप्राप्यपादाववनिनेजह ॥ वेदिकायामधोदेशेसाशुनीस्वापमागता ॥ ६१ ॥

ब्राह्मणकी दासीके घर कुतिया बनी अत्यन्त दुःखसे व्याकुल ॥ ५७ ॥ कान टूटे रहे नाक फट रही और पूंछ छिन्न होय रहे मस्तकमें कीडा भररहे योनिमें भी कीडा पडरहे ॥ ५८ ॥ ऐसे उस जन्ममें अनेक क्लेशोंको सहन करती दैवयोगसे जब कर्मफल पूरे होयगये वैशाखमासमें मेषकी संक्रान्तिमें ॥ ५९ ॥ शुक्लपक्षकी द्वादशीके दिन पद्मबन्धुका पुत्र नदीमें स्नानकर पवित्र होय गीले वस्त्रोंसे घर जाताहुआ ॥ ६० ॥ वहां जाय तुलसी थांभलेके

पास उसने अपने चरण धोये उसी थांभलेके नीचे वह कुत्ती सोय रही ॥ ६१ ॥ सूर्य उदयसे पहिले वह कुतिया उस चरणधोयेके जलमें लोटगई सोई तत्काल उसके सब अशुभ कर्म नष्ट होयगये पूर्वजन्मकी याद होयआई ॥ ६२ ॥ तब अपने पूर्वजन्मके किये हुए कर्मोंको सोच सोच तापसे व्याकुल होतीभई और दीन होय करुणस्वरसे त्राहित्राहि करनेलगी ॥ ६३ ॥ और भयसे व्याकुल होय उस मुनिसे अपने कर्म कहने लगी कि मैंने अपने पतिको

प्राक्सूर्योदयवेलायांपादोदकपरिप्लुता ॥ सद्योध्वस्ताशुभाजाताजातिस्मृतिरभूत्क्षणात् ॥ ६२ ॥ स्मृत्वाकर्मकृतंपूर्वंसाशुनीतापसंयुता ॥ चुक्रोशकरुणंदीनामुनेत्राहीतिवैपुनः ॥ ६३ ॥ स्वकर्मचमुनींद्रायस्मृत्वाचख्यौभयाकुला ॥ भर्तुर्विषप्रयोगंतुस्वस्यदुश्चरितंतथा ॥ ६४ ॥ यान्यापियुवतीब्रह्मन्भर्तुर्वश्यंसमाचरेत् ॥ वृथाधर्मादुराचारापच्यतेताम्रभाजने ॥ ६५ ॥ भर्तानाथोगुरुर्भर्त्ताभर्त्तादैवतमुत्तमम् ॥ विक्रियांकृत्यसाध्वीसाकथंसुखमवाप्नुयात् ॥ ६६ ॥ तिर्यग्योनिशतंयातिकृमिकोटिशतानिच ॥ तस्माद्भूसुरकर्तव्यंस्त्रीभिर्भर्तुर्वचःसदा ॥ ६७ ॥

विष दिया फिर अनेक प्रकारके दुश्चरित्र किये॥६४॥हे ब्रह्मन् ! जो कोई धर्महीना दुराचारिणी स्त्री अपने पतिको वशमें करै वह मेरीही नाईं ताम्र भांड नामक नरकमें गेरके तपाई जायहै ॥ ६५ ॥ भर्ताही नाथहै भर्ताही स्वामी है भर्ताही देवताहै उसके संगमें अनर्थ करके सुख कैसे पावै ॥ ६६ ॥ जो कोई अपने पतिको दुःख देय वह सौ जन्म पर्य्यन्त कुत्ताकी योनि पावै और शरीरमें असंख्य कीडा पड जांयहैं हे ब्राह्मण ! अतएव स्त्रीको उचितहै कि सदा अपने

पतिकी आज्ञा माने ॥ ६७ ॥ मैं तेरे सन्मुख खडी हूं जो तुम आज मेरा उद्धार करौ, तौ फिर मुझे नीच योनि न मिलैगी ॥ ६८ ॥ हे ब्रह्मन् ! मैं बडी दुष्टा दुराचारिणी और खोटी हूं अपना सुकृत मेरे लिये देयकर मेरा उद्धार करौ, वैशाख शुक्लपक्षमें जो पुण्योंको बढानेहारी द्वादशी के दिन स्नान दानादि अन्न भोजन आदिसे जो सुकृत कियाहै सो मेरे लिये देउ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ हे ब्रह्मन् ! इस सुकृतके प्रभावसे मेरी मुक्ति

नाहंपश्येपुनर्योनिंकुत्सितांयातनान्विताम् ॥ यदिचोद्धरसेब्रह्मन्नद्यत्वद्दृष्टिसंमुखाम् ॥ ६८ ॥ तस्मादुद्धरमांब्रह्मन्दुष्कृतांपापचारिणीम् ॥ सुकृतस्यप्रदानेनवैशाखेशुक्लपक्षके ॥ ६९ ॥ याकृतातुत्वयाब्रह्मन्द्वादशीपुण्यवर्द्धिनी ॥ तस्यांत्वयाकृतंपुण्यंस्नानदानान्नभोजनैः ॥ ७० ॥ दुश्चारिण्याअपिब्रह्मन्तेनमुक्तिर्भविष्यति ॥ यस्यांतुभूसुरस्नातःस्वगृहेमनुजःकिल ॥ ७१ ॥ सर्वतीर्थफलावातिंलभतेनात्रसंशयः ॥ तत्तंदत्तंहुतंयत्रकृतंदेवर्चनादियत् ॥ ७२ ॥ तदक्षय्यफलंज्ञेयंयत्कृतंद्वादशीदिने ॥ एवंविधंफलंयत्स्यात्तद्देहिसकलंमम ॥ ७३ ॥ द्वादश्यामुपवासेनत्रयोदश्यांतुपारणात् ॥ यत्फलंस्यात्तदप्यद्धातेनमुक्तिर्भविष्यति ॥ ७४ ॥ दयांकुरुमहाभागदीनानांदीनवत्सल ॥ दीननाथोजगन्नाथोयुष्मन्नाथोजनार्दनः ॥ ७५ ॥

होयजायगी हे ब्राह्मण ! द्वादशीके दिन जो मनुष्य घरमें भी स्नान करलेय उसको संपूर्ण तीर्थोंका फल मिलजाताहै इसमें सन्देह नहीं है द्वादशीके दिन जो तप दान यज्ञ होम देवादिपूजन कियाजाय ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ उसका अक्षय फल मिलताहै ऐसा जो फलहै सो सब तुम मेरे लिये देहु ॥ ७३ ॥ द्वादशीके दिन उपवास करै और त्रयोदशीकेदिन पारण करै उस फलसे अवश्यही मोक्ष मिलैहै ॥ ७४ ॥ हे महाभाग ! हे दीनव

त्सल ! मैं दीनहूं मेरे ऊपर दया करे जनार्दन भगवान् दीनोंके नाथहैं जगत्के पतिहैं और तुह्मारे भी नाथहैं ॥ ७५ ॥ ऐसे भगवान्के जनभी वैसेही होयहैं जैसा राजा वैसेही प्रजा होयहैं हे वैवस्वतपदध्वंसिन् ! मैं अत्यन्त दुःखी हूं मेरी रक्षा करो ॥ ७६ ॥ हे दीनवत्सल ! मैं तुह्मारे द्वारपर रहनेहारी दीन कुतियाहूं, सहस्र ब्रह्महत्या सहस्र गोहत्या और करोडन गम्यागम्यके उत्पन्नहुए दोषोंको यह तिथि नष्ट कर देयहै हे महामुने !

तदीयास्तादृशाएवयथाराजातथाप्रजाः ॥ वैवस्वतपदध्वंसिन्परित्राहिसुदुःखिताम्॥७६॥ त्वाद्वारवासिनींदीनांशुनींमांदीनवत्सल॥ ब्रह्महत्यासहस्रंवागोहत्यानांसहस्रकम् ॥ ७७ ॥ अगम्यानांचकोट्यश्चदहत्येषाशुभातिथिः ॥ तस्यांकृतंमहापुण्यंमह्यंदत्वामहामुने ॥ ॥ ७८ ॥ मामुद्धरसमुद्विग्नांदीनांनाथसमुद्धर ॥ अंतेतुभ्यंद्विजेंद्रायनमउक्तिंवदाम्यहम् ॥ ७९ ॥ इतितस्यावचःश्रुत्वाशुनीमाहमुनेः सुतः ॥ स्वकृतंजंतवोश्नन्तिसुखदुःखात्मकंशुनि ॥ ८० ॥ तस्मातकिमुत्वयाकार्यंक्षुद्रयापापशीलया ॥ ययाभर्तावशंनीतोरक्षाचू र्णादिभिर्वृतः ॥ ८१ ॥ साधुभ्योयत्कृतंपापंस्वस्यदुःखकरंभवेत् ॥ साधुभ्योयत्कृतंपुण्यंस्वस्यदुःखहरंभवेत् ॥ ८२ ॥

इस तिथिमें जो आपने महापुण्य कियाहै वह मुझे देकर ॥ ७७ ॥७८॥ मेरा उद्धार करो मैं बडी दीनहूं व्याकुलहूं मेरी रक्षा करो और हे द्विजवर ! अन्तमें मैं तुमको नमस्कार करूं हूं ॥ ७९ ॥ ऐसे वचन सुन वह मुनिपुत्र कुत्तीसे कहने लगे हे कुत्ती ! प्राणी अपने कियेहुए कर्मोंके सुख दुःख रूपी फलोंको भोगेहैं ॥ ८० ॥ तू दुराचारिणी क्षुद्र कहा करैगी जिनने रक्षाचूर्णादिद्वारा अपना पति वशीभूत किया ॥ ८१ ॥ साधु जो पाप करेहैं

वह उन्हींको दुःखदाई है और जो वे पुण्य करें हैं वह उन्हींके दुःखको हरण करै है ॥ ८२ ॥ और पापी मनुष्य जो कुछ करें हैं वह पाप और पुण्य दोनोंकूं नष्ट करै है जैसे मिश्री मिलित दूध सर्पको पान करानेसे केवल विष बढताहै ऐसेही पापकर्म हैं जब मुनिपुत्रने ऐसे कही तब कुतिया अत्यन्त दुःख पाय ऊँचेको मुखकर चीत्कार करनेलगी और उसके पितासे कहने लगी ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ हे पद्मबन्धो ! तुह्मारे

उभयभ्रंशतामेतिपापेभ्योयत्कृतंभवेत् ॥ शर्करामिश्रितंक्षीरंकाद्रवेयनिवेदितम् ॥ ८३ ॥ विषवृद्धिकरंदुष्टमेवंपापकृतंभवेत् ॥ वदत्येवंमुनिसुतेशुनीदुःखैकरूपिणी ॥ ८४ ॥ पुनश्चुक्रोशोर्ध्वमुखीततपित्रेबहुभाषिणी ॥ पद्मबंधोपरित्राहिशुनींत्वद्वारवासिनीम् ॥ ८५ ॥ त्वदुच्छिष्टाशनीं नित्यंत्वंपाहीतिपुनःपुनः ॥ स्वपोष्यायेहिवर्तन्तेगृहस्थस्यमहात्मनः ॥ ८६ ॥ तेषामुद्धरणंकार्यमितिवेदविदांमतम् ॥ चांडालावायसाश्चैवसारमेयाश्वनित्यशः ॥ ८७ ॥ गृहस्थानांदयापात्रंप्रत्यहंबलिभोजिनः ॥ अशक्तंनोद्धरेत्पोष्यंरोगाद्युपहतंयदि ॥ सोधःपतेन्नसंदेहइतिवेदविदांमतम् ॥ ८८ ॥

द्वारपर पडी हुई जो मैं कुतियाहूं सो मेरी रक्षा करौ ॥ ८५ ॥ मैं तुह्मारे उच्छिष्ट रोटी नित्य खाऊं हूं सो मेरी रक्षा करौ गृहस्थी महात्माओंके घरमें जो पडें हैं ॥ ८६ ॥ उनका उद्धार करना अवश्य कर्त्तव्यहै यह वेदवेत्ताओंका मतहै चांडाल, कौआ, कुत्ता, ये गृहस्थियोंके दयापात्रहैं और बलिभुक्हैं ऐसे अपने पाले भये असमर्थका रोगसे पीडितका उद्धार नहीं करें हैं वे अवश्यही नरकमें पडेंहैं इसमें संदेह नहींहै यह वेदवेत्ताओंका

मतहै ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ सब संसारका कर्ता एकही परमात्माहै वह सबको रचकर स्वयं सब जीवोंको दारादिरूप व्यपदेशसे पालन करैहै अतएव अपने पालेभयेकी रक्षा करना भगवान्की आज्ञाहै ॥८९॥ ता पोष्य रक्षारूप भगवान्की आज्ञाको उल्लंघन कर जो अज्ञानी बने हैं वह भगवत्के कोपसे अपने सर्वस्वकू नष्टकर अंतमें नरकगामी होय हैं ॥९०॥ यह कर्म कर्त्तव्यहै और तुम दयालु हो अतएव मुझ दुर्बुद्धिका उद्धार करिये॥९१॥ ऐसे घरके भीतर

कर्त्तारमेकंजगतांहिकर्त्ताकृत्वात्मनापातिसमस्तजंतून् ॥ दारादिरूपव्यपदेशतोहरिस्तस्मात्तदाज्ञाखलुपोष्यरक्षा ॥ ८९ ॥ तांपोष्यरक्षांपरिहृत्यजंतुर्दैवेनक्लृप्तांयदिवर्ततेन्यधीः ॥ सदैवकोपात्सकलस्यहंताकीनाशलोकंनितरांप्रयाति ॥ ९० ॥ कर्त्तव्यत्वाद्दयालुत्वाद्दीनामुद्धरदुर्मतिम् ॥ ९१ ॥ इतितस्यावचःश्रुत्वादुःखार्त्तायागृहेसतु ॥ निश्चक्रामगृहात्तूर्णंपद्मबंधुर्दयानिधिः ॥ ९२ ॥ किमेतदितितांप्राहपुत्रःसर्वंन्यवेदयत् ॥ सतुपुत्रवचःश्रुत्वातमेवंप्राह विस्मितः ॥ ९३ ॥ पद्मबंधुरुवाच ॥ ॥ मामात्मजकथंवाक्यमीदृशंव्याहृतंत्वया ॥ नसाधूनामिदंवाक्यंभवतीहवरानन ॥ ९४ ॥ आत्मसौख्यकराःपापाभवंतिपरिभाविताः ॥ पश्यपुत्रजनाःसर्वेपरोपकरणायवै ॥ ९५ ॥ शशिःसूर्योथपवनोमेदिनीहुतभुग्जलम् ॥ चंदनंपादपाःसंतःपरोकरणेस्थिताः ॥ ९६ ॥

दुःखसे आर्त कुतियाके वाक्य सुनकर पद्मबन्धु शीघ्रही घरसे बाहर आये॥९२॥और कुतियासे पूछने लगे यह क्याहै तब पुत्रने सब कथा वर्णनकरी तब तौ अपने पुत्रके वचन सुन विस्मित होय कहने लगे॥९३॥तैने मेरा पुत्र होकर यह क्या कहा हे पुत्र ! साधुओंको ऐसा वाक्य कहना अनुचितहै॥९४॥ अपनी आत्माहीकू सुख देनेवाले पापी औरनसूं तिरस्कार किये जांयहैं हे पुत्र ! देखो सम्पूर्ण प्राणी परोपकारहीके लियेहैं ॥ ९५ ॥ चन्द्रमा सूर्य पवन

पृथ्वी अग्नि जल चन्दन वृक्ष और महात्मा लोग परोपकारमें स्थितहैं ॥ ९६ ॥ हे पुत्र ! दधीचिने देवताओंके उपकारके लिये दैत्योंको महाबली जान अपनी हड्डी निकालके देय दीनी ॥ ९७ ॥ राजा शिबिने कबूतरके निमित्त अपना मांस काटकर देय दिया जब भूखे श्येनने कबूतरके ऊपर छलांग मारी ॥ ९८ ॥ जीमूतवाहन नामकरके एक राजा पृथ्वीमंडलमें होताहुआ उनने भी महात्मा गरुडके निमित्त अपना जीवन दिया ॥ ९९ ॥ अतएव विद्वान् ब्राह्मणको तौ सदा दया करनीही चाहिये मेह शुद्ध स्थानपर बरसै हैं तौ कह अशुद्ध स्थानपर नहीं बरसै है ? ॥ १०० ॥

अस्थिदानंकृतंपुत्रकृपयाहिदधीचिना ॥ देवानामुपकारायज्ञात्वादैत्यान्महाबलान् ॥ ९७ ॥ कपोतार्थेस्वमांसानिशिबिनाभूभुजा पुरा ॥ प्रदत्तानिमहाभागश्येनायक्षुधितायवै ॥ ९८ ॥ जीमूतवाहनोराजापुरासीत्क्षितिमंडले ॥ तेनापिजीवितंदत्तंगरुडायमहात्मने ॥ ९९॥ तस्माद्दयालुनाभाव्यंभूसुरेणविपश्चिता ॥ शुद्धेवर्षतिदेवस्तुकिमशुद्धेनवर्षति ॥ १०० ॥ किन्नदीपयतेचंद्रश्चांडालानांगृहंसदा ॥ तस्मादहंशुनीमेतांयाचंतींचपुनःपुनः ॥ १ ॥ उद्धरिष्येनिजैःपुण्यैःपंकमग्नांचगांयथा ॥ इतिपुत्रंनिराकृत्यप्रतिजज्ञे महामतिः ॥ २ ॥ दत्तंदत्तंमहापुण्यंद्वादशीदिनसंभवम् ॥ शुनिगच्छहरेर्धामनिर्धूताखिलकल्मषा ॥ ३ ॥ तद्वाक्यात्सहसाभूपदिव्याभरणभूषिता ॥ विमुच्यदेहंजीर्णंतुदिव्यरूपधराशुभा ॥ ४ ॥

कहा चन्द्रमा चांडालके घरमें प्रकाश नहीं करै है अतएव वारंवार प्रार्थना करती हुई इस कुतियाके दुःखको अपने पुण्यके प्रभावसे दूर करूंगा ॥ १०१ ॥ जैसे कीचडमें फसी हुई गौको निकालें हैं ऐसे पुत्रका निराकरणकर स्वयं प्रतिज्ञाकर करताहुआ ॥ १०२ ॥ हे कुत्ती ! मैं तेरे निमित्त द्वादशीके दिनका कराहुआ पुण्य देताहूं तू अपने सब पापोंसे छूट विष्णुलोकको चली जा ॥ १०३ ॥ इतनी कहतेही हे

राजन् ! अपने जीर्ण शरीरको त्याग दिव्यरूप धारणकर व दिव्यवस्त्र आभूषण पहर ॥ ४ ॥ शतादित्यके सदृश प्रभावाली सावित्रीके समान होके ब्राह्मणसे आज्ञा मांग दसों दिशानमें प्रकाश करती चलीगई ॥ ५ ॥ वहां स्वर्गमें अनेक प्रकारके महाभोगोंको भोग पृथ्वीमें नरनारायण भगवान्के अनुग्रहसे उर्वशीनाम ॥ ६ ॥ वरांगना वैशाख शुक्ला द्वादशीके प्रभावसे देवताओंको प्यारी अप्सरा होतीहुई ॥ ७ ॥ जिसे योगीजन योगद्वारा

शतादित्यप्रभाजातासावित्रीप्रतिमायथा ॥ जगामामंत्र्यतंविप्रंद्योतयंतीदिशोदश ॥ ५ ॥ भुक्त्वादिविमहाभोगान्पश्चाज्जातामहीतले ॥ नरनारयणादेवादुर्वशीनामनामतः ॥ ६ ॥ वैशाखशुद्धद्वादश्याःप्रभावेणवरांगना ॥ देवानांचप्रियाजाताअप्सरस्त्वंचसाययौ ॥ ७ ॥ यद्योगिगम्यंहुतभुप्रक्काशंवरंवरेण्यंपरमार्थरूपम् ॥ यत्प्राप्यसंतोपिहियांतिमोक्षंतत्प्रापरूपंचशुनीहदेवी॥ ८ ॥पश्चात्सपद्मबंधुर्हितांतिथिंपुण्यवर्द्धिनीम् ॥ लोकेप्रख्यापयामासमधुद्विट्प्राणवल्लभाम् ॥ ९ ॥ कोटींदुसूर्यग्रहणाधिकासासमस्तरूपाधिकपुण्यरूपा ॥ यज्ञैःसमस्तैरतिरिच्यमानाद्विजेनख्याताभुवनत्रयेच ॥ ११० ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेवैशाखमाहात्म्येनारदांबरीषसंवादे शुनीमोक्षप्राप्तिर्नामचतुर्विंशोध्यायः ॥ २४ ॥

प्राप्त करें हैं ऐसे अग्निके समान प्रकाशित श्रेष्ठ परमार्थरूपको प्राप्तकर सन्तजन मोक्ष पावें हैं उसीरूपको वह कुतिया प्राप्त करतीहुई ॥ ८ ॥ तत्पश्चात् वह पद्मबन्धु मधुसूदन भगवान्की प्यारी पुण्यके बढावनहारी इस तिथिको संसारमें प्रख्यात करताहुआ ॥ ९ ॥ करोडों सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहणसे भी अधिक पुण्यरूप और सब यज्ञोंसे अधिक ऐसी यह तिथि ब्राह्मणने तीनों लोकमें प्रख्यात करदीनी ॥ ११० ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे

वैशाखमहात्म्ये नारदांबरीषसंवादे शुनीमोक्षप्राप्तिर्नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥ श्री श्रुतदेवजी कहने लगे हे राजन् ! वैशाखमें शुक्लपक्षके अंतकी जो तीन तिथि पूर्णमासीपर्य्यन्त हैं ये बडी शुभ फल देनेहारीहैं ॥ १ ॥ ये तीनों तिथि पुष्करिणी कहावें हैं ये संपूर्ण पापोंके दूर करनेहारी हैं जो कोई वैशाखमासमें महीनाभर तक स्नान नहीं करसके हैं ॥ २ ॥ तौ इन तीन तिथिमें स्नान करनेसे संपूर्ण फल मिलजायहैं संपूर्ण देवता त्रयोदशीके दिन

॥ श्रुतदेवउवाच ॥ ॥ यास्तिस्रस्तिथयःपुण्याअंतिमाःशुक्लपक्षके ॥ वैशाखमासिराजेंद्रपूर्णिमांताःशुभावहाः ॥ १ ॥ अंत्याःपुष्करिणीसंज्ञाःसर्वपापक्षयावहाः ॥ माधवेमासियःपूर्णंस्नानंकर्तुंनचक्षमः ॥२॥ तिथिष्वेतासुयःस्नायात्पूर्णमेवफलंलभेत् ॥ सर्वेदेवास्त्रयोदश्यांस्थित्वाजंतून्पुनंतिहि ॥ ३ ॥ पूर्णायांपर्वतीर्थैश्चविष्णुनासहसंस्थिताः ॥ चतुर्दश्यांसयज्ञाश्चदेवाएतान्पुनंतिहि ॥ ४ ॥ ब्रह्मघ्नंवासुरापंवासर्वानेतान्पुनंतिहि ॥ एकादश्यांपुराजज्ञेवैशाख्याममृतंशुभम् ॥ ५ ॥ द्वादश्यांपालितंतच्चविष्णुनाप्रभविष्णुना ॥ त्रयोदश्यां सुधांदेवान्पाययामासवैहरिः ॥ ६ ॥ जघानचचतुर्दश्यांदैत्यान्देवविरोधिनः ॥ पूर्णायांसर्वदेवानांसाम्राज्याप्तिर्बभूवह ॥ ७ ॥

इकट्ठे होयके जीवोंको पवित्र करें हैं ॥ ३ ॥ पूर्णमासीमें विष्णुभगवान्के संग संपूर्ण तीर्थ इकट्ठे होंयहैं चतुर्दशीके दिन यज्ञसहित ये देवता इन्हें पवित्र करें हैं॥ ४ ॥ कोई कैसाही ब्रह्मघाती अथवा मद्यपानकर्त्ता हो ये सबको पवित्र करदेंयहैं, प्राचीनकालमें वैशाखकी एकादशीके दिन विष्णुभगवान् अमृत उत्पन्न करके द्वादशीकेदिन उसकी रक्षा करते हुए त्रयोदशीकेदिन देवताओंको अमृतपान करातेहुए ॥ ५ ॥ ६ ॥ और चतुर्दशीकेदिन

देवताओंके विरोधी दैत्योंका नाश करतेहुए और पूर्णमासीकेदिन देवता अपने राज्यको प्राप्त करतेहुए ॥ ७ ॥ तब देवताओंने प्रसन्न होय इन तीनों तिथियोंको प्रीतिपूर्वक प्रफुल्लितचित्तसे वर दिया ॥ ८ ॥ वैशाखमासकी ये तीनों तिथि शुभहैं पुत्रपौत्रादि फलकी देनेवाली और मनुष्योंके पापोंको दूर करनेहारी हैं ॥ ९ ॥ जो मनुष्योंमें अधम संपूर्ण वैशाखमासमें स्नान नहीं करसकै है वह इन तीन तिथिमें स्नान करनेसे पूर्ण फल प्राप्त करै है ॥१०॥



ततोदेवाःसुसंतुष्टाएतासांचवरंददुः ॥ तिसृणांचतिथीनांवैप्रीत्योत्फुल्लविलोचनाः ॥८॥ एतावैशाखमासस्यतिस्रश्चतिथयःशुभाः ॥ पुत्रपौत्रादिफलदानराणांपापहानिदाः ॥ ९ ॥ योमाधवेत्वसंपूर्णे नस्नातोमनुजाधमः ॥ तिथित्रयेतुसंस्नात्वापूर्णमेवफलंलभेत् ॥ ॥ १० ॥ तिथित्रयेप्यकुर्वाणःस्नानदानादिकंनरः ॥ चांडालींयोनिमासाद्यपश्चाद्रौरवमश्नुते ॥ ११ ॥ उष्णोदकेनयःस्नातिमाधवे चतिथित्रये॥ रौरवंनरकंयातियावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ १२ ॥ पितॄन्देवान्समुद्दिश्यदध्यन्नंनददातियः ॥ पैशाचींयोनिमासाद्यतिष्ठत्या भूतसंप्लवम् ॥ १३ ॥ प्रवृत्तानांचकामानांमाधवेनियमेकृते ॥ अवश्यंविष्णुसायुज्यंयुज्यतेनात्रसंशयः ॥ १४ ॥

जो मनुष्य इन तीन तिथियोंमें भी स्नानदानादिक नहीं करें हैं वे चांडालकी योनि पावें हैं और फिर रौरव नरकमें जायकर पडें हैं ॥ ११ ॥ जो इन तीनों तिथियोंमें गरम जलसे स्नान करें हैं वे चौदह मन्वन्तर पर्य्यन्त रौरव नरकमें निवास करें हैं ॥ १२ ॥ जो पित्रीश्वर और देवताओंके निमित्त दही और अन्नका दान नहीं करें हैं वे पिशाचकी योनिको प्रलयकालतक भोगें हैं ॥ १३ ॥ जो वैशाखमासमें नियमपूर्वक कर्त्तव्य कर्मोंमें

प्रवृत्त होयहैं वे विष्णुकी सायुज्यताको प्राप्त होयहैं इसमें सन्देह नहीं हैं ॥ १४ ॥ वैशाखके संपूर्ण महीनामें नियमपूर्वक न रहकर इन तीन तिथियोंमें जो शास्त्रविहित कर्म करें हैं वे पूर्ण पायकर विष्णुलोकमें निवास करें हैं ॥ १५ ॥ जो मनुष्य देवता, पित्रीश्वर, गुरु और विष्णुभगवान्के निमित्त स्नान दान नहीं करें हैं उन्हें हम शाप देंयहैं ॥ १६ ॥ वे मनुष्य निःसन्तान, आयुहीन और दुःखी होंयगे ऐसे देवता वर देयकर अपने अपने धामकू चले गये ॥ १७ ॥ अतएव वे तीनों तिथि बडी पुण्यकारिणी और संपूर्ण पापोंका नाश करनेवाली हैं तथा ये तीनों पुष्कारिणी कहावें हैं पुत्र

आमासंनियमाशक्तःकुर्याद्यदिदिनत्रये ॥ तेनपूर्णफलंप्राप्यमोदतेविष्णुमंदिरे ॥ १५ ॥ योवैदेवान्पितॄन्विष्णुंगुरुमुद्दिश्यमानवः ॥ नस्नानादिकरोत्यद्धामुष्यशापप्रदावयम् ॥ १६ ॥ निःसंतानोनिरायुश्चनिःश्रेयस्कोभवेदिति ॥ इतिदेवावरंदत्वास्वधामानिययुःपुरा ॥ १७ ॥ तस्मात्तिथित्रयंपुण्यंसर्वाघौघविनाशनम् ॥ अंत्यंपुष्करिणीसंज्ञंपुत्रपौत्रविवर्द्धनम् ॥१८॥ यानारीसुभगापूपपायसंपूर्णिमादिने ॥ ब्राह्मणायसकृद्दत्वाकीर्तिमंतंसुतंलभेत ॥१९॥ गीतापाठंतुयःकुर्यादंतिमेचदिनत्रये ॥ दिनेदिनेश्वमेधानांफलमेतिनसंशयः॥ ॥२०॥ सहस्रनामपठनंयःकुर्याच्चदिनत्रये ॥ तस्यपुण्यफलंवक्तुंकःशक्तोदिविवाभुवि ॥ २१ ॥ सहस्रनामभिर्देवंपूर्णायांमधुसूदनम् ॥ पयसास्नाप्यवैयातिविष्णुलोकमकल्मषम् ॥ २२ ॥

और पौत्रके बढानेवाली हैं जो स्त्री पूर्णमासीकेदिन ब्राह्मणको मालपूआ और खीरका भोजन करावै तौ कीर्तिमान् पुत्रको पावै ॥ १८ ॥ १९ ॥ पिछले इन्ही तीन दिनमें जो कोई गीताका पाठ करै उसे प्रतिदिन अश्वमेध यज्ञ करनेका फल मिलै इसमें कोई संदेह नहीं है ॥२०॥ जो कोई इन्ही तीन तिथियोंमें विष्णुसहस्रनामका पाठ करैहै उसके पुण्यके फलको कहनेके लिये तौ किसीमेंभी स्वर्ग अथवा पृथ्वीमें सामर्थ्य नहीं है ॥ २१ ॥ पूर्णमासीके दिन

जो कोई सहस्रनामका पाठ करै और मधुसूदन भगवान्को एक एक नामपर दूधसे स्नान करावै तौ उसके सब पाप दूर होय जाय और वह विष्णुलोकको जायहै ॥ २२ ॥ जो संपूर्ण उत्तम उत्तम पदार्थद्वारा मधुसूदन भगवान्का पूजन करै तौ कल्पान्तमेंभी उसके लोक क्षीणताको प्राप्त नहीं होयहैं ॥ २३ ॥ जो कोई मनुष्य वैशाखमें न स्नान करै न दान करै वह ब्रह्महत्यारा, गुरुघाती और पित्रीश्वरोंका नाश करनेवाला होताहै ॥ २४ ॥ जो कोई नित्यप्रति श्रीमद्भागवतका एक श्लोक अर्द्ध श्लोक वा चौथाई श्लोक पढै सो ब्रह्मत्वको प्राप्त होताहै ॥ २५ ॥ जो इन तीन दिनमें श्रीमद्भा

समस्तविभवैर्यस्तुपूजयेन्मधुसूदनम् ॥ नतस्यलोकाःक्षीयंतेयुगकल्पादिव्यत्यये ॥ २३ ॥ अस्नात्वाचाप्यदत्वाचवैशाखश्चगतोयदि ॥ सब्रह्महागुरुघ्नश्च पितॄणांघातकस्तथा ॥ २४ ॥ श्लोकार्धंश्लोकपादंवानित्यंभागवतोद्भवम् ॥ वैशाखेचपठन्मर्त्योब्रह्मत्वंचोपपद्यते ॥ २५ ॥ योवैभागवतंशास्त्रंशृणोत्येतद्दिनत्रये ॥ नपापैर्लिप्यतेक्वापिपद्मपत्रमिवांभसा ॥ २६ ॥ देवत्वंमनुजैःप्राप्तंकैश्चित्सिद्धत्वमेवच ॥ कैश्चित्प्राप्तोब्रह्मभावोदिनत्रयनिषेवणात् ॥ २७ ॥ ब्रह्मज्ञानेनवैमुक्तिःप्रयागमरणेनवा ॥ अथवामासिवैशाखेनियमेनजलाप्लुतेः ॥ २८ ॥ नीलंवृषंसमुत्सृज्यवैशाख्यांचजलाप्लुतेः ॥ समस्तबंधनिर्मुक्तःपुमर्थान्यातिसर्वथा ॥ २९ ॥

गवतकी कथा श्रवण करै वह कभीभी पापसे लिप्त नहीं होयहै जैसे कमलके पत्रपै जल नहीं ठहरेहै॥ २६ ॥ इन तीन तिथियोंमें भगवत्पूजा, स्नान, दान, आदि विधिपूर्वक करनेसे बहुतसे मनुष्य देवता होय गयेहैं कितनेही सिद्ध बन गयेहैं कितनेही ब्रह्मभावको प्राप्त हुएहैं ॥ २७ ॥ ब्रह्मज्ञानसे अथवा प्रयागराजमें मरनेसे मोक्ष मिलैहै अथवा वैशाखमासमें नियमपूर्वक स्नान करनेसे मोक्ष मिलै है ॥ २८ ॥ वैशाखकी पूर्णमासीके दिन स्नान करके नीले वृष

भको छोडे तौ समस्त बंधनसे छूटकर धर्म अर्थ काम मोक्षकी प्राप्ति होयहै ॥ २९ ॥ जो गरीब कुटुंबी ब्राह्मणके लिये गौदान देयहै वह यहां अकाल मृत्युसे छूटकर परलोकमें परमपद पावै हैं ॥ ३० ॥ जो मनुष्य वैशाखकी पूर्णमासीकू विना स्नान दान किये व्यतीत कर देयहैं वह सौजन्मतक कुत्ताकी योनिमें पडकर विष्ठामें कीडा होयहैं ॥३१॥ तीनों भुवनमें साढे तीन करोडतीर्थहैं ये सब इकट्ठे होयके पापोंके समूहके डरसे सलाह करनेलगे ॥३२॥

गांदत्वायोद्विजेंद्रायसीदतेचकुटुंबिने ॥ इहापमृत्युनिर्मुक्तःपरत्रचपरंव्रजेत् ॥ ३० ॥ स्नानदानविहीनस्तुवैशाखींचैवयोनयेत् ॥ श्वान योनिशतंप्राप्यविष्ठायांजायतेकृमिः ॥३१॥ तिस्रःकोट्योर्द्धकोटिश्चतीर्थानिभुवनत्रये॥ संभूयमंत्रयांचक्रुःपापसंघातशंकिताः॥३२॥ जनाअस्मासुपापिष्ठाविसृजंतिस्वकंमलम् ॥ तदस्माकंकथंगच्छेदितिचिंतासमन्विताः ॥ ३३ ॥ तीर्थपादंहरिंजग्मुःशरण्यंशरणंवि भुम् ॥ स्तुत्वाचबहुभिःस्तोत्रैःप्रार्थयामासुरंजसा ॥ ३४ ॥ देवदेवजगन्नाथसर्वाघौघविनाशन ॥ जनाअस्मासुपापिष्ठाःस्नात्वापापा निसर्वशः ॥ ३५ ॥ विसृज्यत्वत्पदंयांतित्वदाज्ञाधारिणोभुवि ॥ अस्माकंचैवतत्पापंकथंगच्छेज्जनार्दन ॥ ३६ ॥

कि पापी मनुष्य अपने किये भये पाप हमारे बीचमें त्याग देय हैं सो हमारे पाप कैसे दूर होंयगे ऐसे चिन्ता करते ॥ ३३ ॥ तीर्थपाद हरिभगवान्की शरणमें जातेभये और अनेकन स्तोत्रद्वारा स्तुति करके प्रार्थना करतेहुए॥ ३४ ॥हे देवदेव ! हे जगन्नाथ ! हे सम्पूर्ण पापोंके नाश करनहारे ! पापी मनुष्य हममें स्नान कर करके ॥३५॥ पापनकूं हमारे बीचमें छोड आपके धामकूं चले जायहैं सो हे प्रभो ! हम तौ आपके आज्ञाकारी हैं ये पाप हे जनार्दन !

हमसे कैसे दूर होंयगे ॥३६॥ हे प्रभो ! हम आपके चरणकी शरणके अभिलाषी हैं सो यह उपाय हमारे सामने कहिये जब तीर्थनने ऐसे प्रार्थना करी तब तौ भुतभावन् भगवान् ॥३७॥ हँसते भये मेघकीसी गंभीरवाणीद्वारा बोले वैशाखके महीनामें मेषकी संक्रान्तिमें शुक्लपक्षमें जो अन्त्यके तीन दिनमें ॥३८॥ कैसे तीन दिनहैं सर्व तीर्थमय पुण्यरूप हैं और मेरे प्राणप्यारे हैं इनमें सूर्योदयसे पहिले स्नानकर जलसे बाहर आय जाओ जासे सब प्रकारसे

तदुपायंवदार्तानांत्वत्पादशरणैषिणाम् ॥ इतितीर्थैःप्रार्थितस्तुभगवान्भूतभावनः ॥ ३७ ॥ प्रहसन्प्राहतीर्थानिमेघगंभीरयागिरा ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ सितेपक्षेमेषसूर्येवैशाखांतेदिनत्रये ॥ ३८ ॥ सर्वतीर्थमयेपुण्येममापिप्राणवल्लभे ॥ यूयंभगोदयात्पूर्वंबहिःसंस्थजलाप्लुताः ॥ ३९ ॥ विमुक्ताघाःपुण्यरूपाभवंत्वाशुसुनिर्मलाः ॥ भवद्भिश्चविमुक्ताघैर्येनस्नातादिनत्रये ॥ ४० ॥ तेषुतिष्ठतुतत्पापंजनैर्युष्मद्भिरेचितम् ॥ इतितीर्थपदोविष्णुस्तीर्थानांचवरंददौ ॥ ४१ ॥ अनुज्ञाप्यचतान्योगात्तत्रैवांतरधीयत ॥ स्वधामानिपुनःप्राप्यतानितीर्थानिनित्यशः ॥ ४२ ॥ प्रतिवर्षंतुवैशाखेतथैवांत्यदिनत्रये ॥ तेनाघौघंविमुच्यैवयांतिनिर्मलतामहो ॥ ४३ ॥

पापनसे छूट पुण्यरूप और निर्मल होउ उन तीन दिवसके बीचमें जो कोई स्नान न करैं उन मनुष्योंमें वह पाप स्थित रहै जो पाप तुह्मारे बीचमेंसे निकल इकट्ठा हुआहै ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ऐसे जो मनुष्य पाप तुह्मारे बीचमें छोड गयेहैं सो उनमें रहेंगे ऐसे तीर्थहैं चरण जिनके ऐसे विष्णुभगवान् तीर्थोंको वर देतेहुए ॥ ४१ ॥ और ऐसे आज्ञा देय योगबलसे वहीं अन्तर्धान होगये और सब तीर्थ अपने अपने धामकू प्राप्त होय ॥ ४२ ॥ प्रतिवर्ष वैशाखके

महीनामें अन्त्यके तीन दिनमें संपूर्ण अपने अपने पापोंको छोड निर्मल होयहैं ॥ ४३ ॥ जो वैशाखके अन्त्यके तीन दिनमें स्नान नहीं करेहैं उन्हीके ऊपर सब मनुष्योंके पाप आयके ठहरेहैं ॥ ४४ ॥ ऐसे स्नान न करनेवाले मनुष्योंको तीर्थ शाप देयहैं जो इन तीन दिनमें स्नान न करै तौ इसके समान कोई पाप नहीं है ॥ ४५ ॥ किंसीभी शास्त्रमें याके समान पाप न देखोहैं न सुनो अतएव पिछले तीन दिवसमें स्नान दान और मधुसूदन भगवान्‌की पूजा न करै तौ इसके समान कोई पाप नहींहै ॥ ४६ ॥ और जो इन कर्मनकू न करै तौ चौदह मन्वन्तर पर्य्यन्त नरकमें

येतुस्नानंनकुर्वन्तिवैशाखांत्यदिनत्रये ॥ तेभवंतुसमस्तानांजनानांपातकाश्रयाः ॥ ४४ ॥ इतिशापंचतीर्थानिद्युस्नातानांददतिच ॥ नतेनसदृशःपापोयोनस्नातोदिनत्रये ॥ ४५ ॥ विचारितेषुशास्त्रेषुनदृष्टोनचवैश्रुतः ॥ तस्माद्दिनत्रयेकार्यंस्नानदानार्चनादिकम् ॥ ॥ ४६ ॥ अन्यथानरकंयातियावच्चाश्चतुर्दश ॥ इत्येतत्सर्वमाख्यातंश्रुतकीर्तेमहामते ॥ ४७ ॥ पृष्टंवैशाखमाहात्म्यंयथादृष्टंयथा श्रुतम् ॥ माहात्म्यस्यचलेखोयंमाधवस्यचवर्णितः ॥ ४८ ॥ कात्स्न्यार्द्वक्तुंब्रह्मणापिनालंवर्षशतैरपि ॥ पुराकैलासशिखरेपार्वत्यैशं करःस्वयम् ॥ ४९ ॥ प्राहमाधवमाहात्म्यं पृच्छत्यैशतवत्सरम् ॥ तच्चापिनांतमगमदशक्तोविरराम ह ॥ ५० ॥

पडै ऐसे सम्पूर्ण वैशाखको माहात्म्य महाबुद्धिमान् श्रुतिकीर्तिके सन्मुख कह्योगयो जैसे जैसे सुना वा देखा तदनुसारही माधवमासकी कथा वर्णन करी गई है ॥४७ ॥ ४८ ॥ इस माहात्म्यकू पूरी पूरी रीतिसे वर्णन करनेको तौ ब्रह्माकीभी सौवर्षमेंभी सामर्थ्य नहीं है ॥ पहिले कैलासकी शिखरपर बैठके पार्वतीजी महादेवसे पूछतीभई सो महादेवजी सौवर्षतक यह कथा कहते रहै तौ भी पूरी न भई तब असमर्थ होयके चुप होय गये ॥४९॥५०॥

विष्णुभगवान् जगन्नाथ श्रीनारायणके विना कोईभी पूर्णतया वैशाखमासकू वर्णन नहीं कर सकै है ॥ ५१ ॥ पहिले सब ऋषियोंने मनुष्योंके हितकी इच्छासे थोडा थोडा वैशाखमाहात्म्य वर्णन कियाहै ॥ ५२ ॥ परन्तु हे राजन्! किसीने अन्त नहीं पायौ असमर्थ होय होयके सब बैठ रहे तू वैशाखमासमें दानादि सत्कर्मोंको कर इसीसे निश्चयही भुक्ति और मुक्ति अवश्य मिलैगी ॥ ५३ ॥ ऐसे मिथिलापति राजा जनककू समझायकर श्रुतदेवजी राजासे

कोनुवर्णयितुंशक्तःकात्स्न्र्यान्माहात्म्यमुत्तमम् ॥ विनाविष्णुंजगन्नाथंनारायणमनामयम् ॥ ५१ ॥ पुरासर्वेपिऋषियोमाहात्म्यंपापनाशनम् ॥ लेशंचलेशंव्याचख्युः[illegible]नांहितकाम्यया ॥ ५२ ॥ नांतःकेनापिव्याख्यातोह्यशक्तत्वान्महीपते ॥ त्वंचमासेतुवैशाखे कुरुदानादिसत्क्रियाः ॥ ५३ ॥ तेनभुक्तिंचमुक्तिंचसंप्राप्नोषिनसंशयः ॥ इतितंबोधयित्वाचमैथिलंजनकाह्वयम् ॥ ५४ ॥ श्रुतदेवस्तमामंत्र्यगंतुंचक्रेमनोगतिम् ॥ जाताह्लादःसराजर्षिर्गलद्बाष्पाकुलेक्षणः ॥ ५५ ॥ उत्सवंकारयामास स्वाभिवृद्ध्यैमनोरमम् ॥ ग्रामंप्रदक्षिणीकृत्याशिबिका[illegible]धिरोप्यतम् ॥ ५६ ॥

पूछके जानेको विचार करनेलगे ॥ ५४ ॥ तब तौ एक संग राजाके आल्हाद उत्पन्न होय गया नेत्रनसे जल टपकता हुआ ॥ ५५ ॥ तब उत्सव करनेमें प्रवृत्त हुआ और अपनी वृद्धिके निमित्त ग्रामकी प्रदक्षिणा कर श्रुतदेवजीको पालकीमें बैठाय ॥ ५६ ॥

चतुरंगिणी सेनाके सं ॥७२ आपभी जाता हुआ पीछे अंतःपुरमें लेजाय वस्त्र, आभूषण, गौ, पृथ्वी, तिल, सुवर्ण आदि
सब प्रकारके वैभव हाथ जोड सन्मुख आय ठाडा हुआ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ तब तौ महातेजस्वी महायशस्वी श्रुतदेवजी
अत्यन्त संतुष्ट होय न धामको पधारे ॥ ५९ ॥ तब तौ नारदजी कहनेलगे हे राजा अंबरीष ! यह परम अद्भुत आख्यान मैंने

चतुरंगबलैर्युक्तःस्व धान्वगात् ॥ पुनश्चांतःपुरंप्राप्यसकलैर्विभवैरपि ॥ ५७ ॥ वस्त्रैराभरणैश्चैवगोभूतिलहिरण्यकैः ॥ प्रणम्य
चपरिक्रम्यतस्थौप्रांज ः ॥ ५८ ॥ ततस्तंतुमहातेजाःश्रुतदेवोमहायशाः ॥ संतुष्टःपरमप्रीतोययौधामस्वकंमुनिः ॥ ५९ ॥
॥ नारदउवाच ॥ ॥ ाख्यानमंबरीषतवोदितम् ॥ श्रवणात्सर्वपापघ्नंसर्वसंपद्विधायकम् ॥ ६० ॥ तेनभुक्तिंचमुक्तिंच
ज्ञानंमोक्षंचविंदति ॥ इतितस्य श्रुत्वाअंबरीषोमहायशाः ॥ ६१ ॥ प्रहृष्टांतरवृत्तिश्चबाह्यव्यापारवर्जितः ॥ प्रणनामतथाभू
र्ध्नादंडवत्पतितोभुवि ॥ ६२ ॥ रखिलैश्चापिपूजयामासतंपुनः ॥ संपूजितस्तमामंत्र्यनारदोभगवान्मुनिः ॥ ६३ ॥

तुह्मारे सन्मुख वर्णन किया इसके श्रवणमात्रसे संपूर्ण पाप नष्ट होय जायहैं और सब प्रकारकी संपत्ति मिलैहैं ॥ ६० ॥ इसीसे भुक्ति मुक्ति
ज्ञान और मोक्षकी प्राप्ति होयहै ऐसे नारदजीके वचन सुन महायशस्वी राजा अम्बरीष ॥ ६१ ॥ मनमें ऐसा प्रसन्न होता हुआ कि बाहरके
जितने व्यापारहैं सो सब छोडदिये और दंडकी तरह पृथ्वीपै गिरके शिरसे प्रणाम करता हुआ ॥ ६२ ॥ तथा सब प्रकारके ऐश्वर्यवान्

पदार्थोंसे नारदजीकी पूजा करता हुआ, पूजा हुए पीछे भगवान् नारदमुनि राजासे पूछ ॥ ६३ ॥ अन्य लोककू चलेगये क्योंकि शापके मारे वे एक जगह नहीं रहसकेंहैं राजर्षि अंबरीषभी नारदजीके कहे भये इन शुभ धर्मोंको आचरण करते निर्गुण परब्रह्ममें लीन होयगये ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ सूतजी बोले जो कोई पापके नाशकर्त्ता और पुण्यके बढावनहारे इस परम अद्भुत आख्यानको श्रवण करै अथवा पाठ करै सो परम गतिको प्राप्त होय है

लोकांतरंययौधीमाञ्छापान्नैकत्र[illegible]तिः ॥ अंबरीषोपिराजर्षिर्नारदोक्तानिमान्शुभान् ॥ ६४॥ धर्मान्कृत्वाविलीनोभूत्परेब्रह्मणि निर्गुणे ॥६५॥ ॥ सूतउवाच ॥ [illegible]इदंपरमाख्यानंपापघ्नंपुण्यवर्धनम्॥ शृणुयाद्वापठेद्वापिसयातिपरमांगतिम् ॥ ६६ ॥ लिखितं पुस्तकंयेषांगृहेतिष्ठतिमा[illegible]मुक्तिःकरस्थाहिकिमुतच्छ्रवणात्मनाम् ॥ ६७ ॥ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेवैशाखमाहात्म्येनारदांबरीषसंवादेफलश्रुति[illegible]मपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ इति वैशाखमाहात्म्यंसंपूर्णम् ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

और जाके घरमें हाथकी [illegible] पुस्तक होयहै उसके तौ हाथहीमें मुक्ति होयहै श्रवणसे भी कुछ नहींहै ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे वैशाख माहात्म्ये नारदांबरीष[illegible]तिकथनं नाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ इति वैशाखमाहात्म्यं संपूर्णम् ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

इदं[illegible]जश्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना स्वीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्–मुद्रणालये मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।
संवत् १९६६ शाके १८३१.

[OrderDescription]
,CREATED=09.07.20 10:13
,TRANSFERRED=2020/07/09 at 10:47:47
,PAGES=259
,TYPE=STD
,NAME=S0003278
,Book Name=M-2776-VAISHAKH MAS MAHATMAY
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF

FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF
,FILE14=00000014.TIF
,FILE15=00000015.TIF
,FILE16=00000016.TIF
,FILE17=00000017.TIF
,FILE18=00000018.TIF
,FILE19=00000019.TIF
,FILE20=00000020.TIF
,FILE21=00000021.TIF
,FILE22=00000022.TIF
,FILE23=00000023.TIF
,FILE24=00000024.TIF
,FILE25=00000025.TIF
,FILE26=00000026.TIF
,FILE27=00000027.TIF

FILE28=00000028.TIF
,FILE29=00000029.TIF
,FILE30=00000030.TIF
,FILE31=00000031.TIF
,FILE32=00000032.TIF
,FILE33=00000033.TIF
,FILE34=00000034.TIF
,FILE35=00000035.TIF
,FILE36=00000036.TIF
,FILE37=00000037.TIF
,FILE38=00000038.TIF
,FILE39=00000039.TIF
,FILE40=00000040.TIF
,FILE41=00000041.TIF
,FILE42=00000042.TIF
,FILE43=00000043.TIF
,FILE44=00000044.TIF
,FILE45=00000045.TIF

FILE46=00000046.TIF
,FILE47=00000047.TIF
,FILE48=00000048.TIF
,FILE49=00000049.TIF
,FILE50=00000050.TIF
,FILE51=00000051.TIF
,FILE52=00000052.TIF
,FILE53=00000053.TIF
,FILE54=00000054.TIF
,FILE55=00000055.TIF
,FILE56=00000056.TIF
,FILE57=00000057.TIF
,FILE58=00000058.TIF
,FILE59=00000059.TIF
,FILE60=00000060.TIF
,FILE61=00000061.TIF
,FILE62=00000062.TIF
,FILE63=00000063.TIF

FILE64=00000064.TIF
,FILE65=00000065.TIF
,FILE66=00000066.TIF
,FILE67=00000067.TIF
,FILE68=00000068.TIF
,FILE69=00000069.TIF
,FILE70=00000070.TIF
,FILE71=00000071.TIF
,FILE72=00000072.TIF
,FILE73=00000073.TIF
,FILE74=00000074.TIF
,FILE75=00000075.TIF
,FILE76=00000076.TIF
,FILE77=00000077.TIF
,FILE78=00000078.TIF
,FILE79=00000079.TIF
,FILE80=00000080.TIF
,FILE81=00000081.TIF

FILE82=00000082.TIF
,FILE83=00000083.TIF
,FILE84=00000084.TIF
,FILE85=00000085.TIF
,FILE86=00000086.TIF
,FILE87=00000087.TIF
,FILE88=00000088.TIF
,FILE89=00000089.TIF
,FILE90=00000090.TIF
,FILE91=00000091.TIF
,FILE92=00000092.TIF
,FILE93=00000093.TIF
,FILE94=00000094.TIF
,FILE95=00000095.TIF
,FILE96=00000096.TIF
,FILE97=00000097.TIF
,FILE98=00000098.TIF
,FILE99=00000099.TIF

FILE100=00000100.TIF
,FILE101=00000101.TIF
,FILE102=00000102.TIF
,FILE103=00000103.TIF
,FILE104=00000104.TIF
,FILE105=00000105.TIF
,FILE106=00000106.TIF
,FILE107=00000107.TIF
,FILE108=00000108.TIF
,FILE109=00000109.TIF
,FILE110=00000110.TIF
,FILE111=00000111.TIF
,FILE112=00000112.TIF
,FILE113=00000113.TIF
,FILE114=00000114.TIF
,FILE115=00000115.TIF
,FILE116=00000116.TIF
,FILE117=00000117.TIF

FILE118=00000118.TIF
,FILE119=00000119.TIF
,FILE120=00000120.TIF
,FILE121=00000121.TIF
,FILE122=00000122.TIF
,FILE123=00000123.TIF
,FILE124=00000124.TIF
,FILE125=00000125.TIF
,FILE126=00000126.TIF
,FILE127=00000127.TIF
,FILE128=00000128.TIF
,FILE129=00000129.TIF
,FILE130=00000130.TIF
,FILE131=00000131.TIF
,FILE132=00000132.TIF
,FILE133=00000133.TIF
,FILE134=00000134.TIF
,FILE135=00000135.TIF

FILE136=00000136.TIF
,FILE137=00000137.TIF
,FILE138=00000138.TIF
,FILE139=00000139.TIF
,FILE140=00000140.TIF
,FILE141=00000141.TIF
,FILE142=00000142.TIF
,FILE143=00000143.TIF
,FILE144=00000144.TIF
,FILE145=00000145.TIF
,FILE146=00000146.TIF
,FILE147=00000147.TIF
,FILE148=00000148.TIF
,FILE149=00000149.TIF
,FILE150=00000150.TIF
,FILE151=00000151.TIF
,FILE152=00000152.TIF
,FILE153=00000153.TIF

FILE154=00000154.TIF
,FILE155=00000155.TIF
,FILE156=00000156.TIF
,FILE157=00000157.TIF
,FILE158=00000158.TIF
,FILE159=00000159.TIF
,FILE160=00000160.TIF
,FILE161=00000161.TIF
,FILE162=00000162.TIF
,FILE163=00000163.TIF
,FILE164=00000164.TIF
,FILE165=00000165.TIF
,FILE166=00000166.TIF
,FILE167=00000167.TIF
,FILE168=00000168.TIF
,FILE169=00000169.TIF
,FILE170=00000170.TIF
,FILE171=00000171.TIF

FILE172=00000172.TIF
,FILE173=00000173.TIF
,FILE174=00000174.TIF
,FILE175=00000175.TIF
,FILE176=00000176.TIF
,FILE177=00000177.TIF
,FILE178=00000178.TIF
,FILE179=00000179.TIF
,FILE180=00000180.TIF
,FILE181=00000181.TIF
,FILE182=00000182.TIF
,FILE183=00000183.TIF
,FILE184=00000184.TIF
,FILE185=00000185.TIF
,FILE186=00000186.TIF
,FILE187=00000187.TIF
,FILE188=00000188.TIF
,FILE189=00000189.TIF

FILE190=00000190.TIF
,FILE191=00000191.TIF
,FILE192=00000192.TIF
,FILE193=00000193.TIF
,FILE194=00000194.TIF
,FILE195=00000195.TIF
,FILE196=00000196.TIF
,FILE197=00000197.TIF
,FILE198=00000198.TIF
,FILE199=00000199.TIF
,FILE200=00000200.TIF
,FILE201=00000201.TIF
,FILE202=00000202.TIF
,FILE203=00000203.TIF
,FILE204=00000204.TIF
,FILE205=00000205.TIF
,FILE206=00000206.TIF
,FILE207=00000207.TIF

FILE208=00000208.TIF
,FILE209=00000209.TIF
,FILE210=00000210.TIF
,FILE211=00000211.TIF
,FILE212=00000212.TIF
,FILE213=00000213.TIF
,FILE214=00000214.TIF
,FILE215=00000215.TIF
,FILE216=00000216.TIF
,FILE217=00000217.TIF
,FILE218=00000218.TIF
,FILE219=00000219.TIF
,FILE220=00000220.TIF
,FILE221=00000221.TIF
,FILE222=00000222.TIF
,FILE223=00000223.TIF
,FILE224=00000224.TIF
,FILE225=00000225.TIF

FILE226=00000226.TIF
,FILE227=00000227.TIF
,FILE228=00000228.TIF
,FILE229=00000229.TIF
,FILE230=00000230.TIF
,FILE231=00000231.TIF
,FILE232=00000232.TIF
,FILE233=00000233.TIF
,FILE234=00000234.TIF
,FILE235=00000235.TIF
,FILE236=00000236.TIF
,FILE237=00000237.TIF
,FILE238=00000238.TIF
,FILE239=00000239.TIF
,FILE240=00000240.TIF
,FILE241=00000241.TIF
,FILE242=00000242.TIF
,FILE243=00000243.TIF

FILE244=00000244.TIF
,FILE245=00000245.TIF
,FILE246=00000246.TIF
,FILE247=00000247.TIF
,FILE248=00000248.TIF
,FILE249=00000249.TIF
,FILE250=00000250.TIF
,FILE251=00000251.TIF
,FILE252=00000252.TIF
,FILE253=00000253.TIF
,FILE254=00000254.TIF
,FILE255=00000255.TIF
,FILE256=00000256.TIF
,FILE257=00000257.TIF
,FILE258=00000258.TIF
,FILE259=00000259.TIF
,